67

॥ ॐ ॥



हृदन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीष्टयम् ।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु ॥



श्रीगणेशाय नमः — श्रीलक्ष्म्यै नमः

श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पवारकुलभूषण श्रीमद्राजर्षि
श्री १०५ दुर्गासिंह जी बहादुर,
C.I.E. सोलन ।

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग
मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश॥

राजा भौम

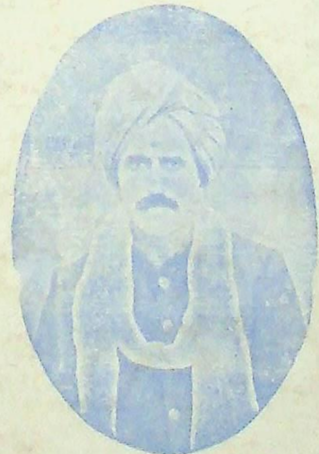


मन्त्री शनि

बघाटमहीमहेन्द्रधर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

कण्डाघाटा ध्रुवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयैः
सन् 1963-64
अलङ्कृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं च

बृहज्ज्योतिष सम्मेलन के अध्यक्ष
पञ्चाङ्ग-प्रवर्त्तक



दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

BAGHAT **श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम्** PANCHANG

श्री विक्रमार्कीय सं० २०२०, शाक १८८५, सन् १९६३-६४ ई०, जय हिन्द सं० १६ (१५ अगस्त से १७)

पञ्चाङ्गप्रवर्त्तक ...० गणकचक्रचूडामणि श्री गोविन्द सदाशिव 'आप्टे', श्री पं० केदारनाथ 'सिद्धान्तपञ्चानन' शिष्याः पं० श्री मुकुन्दवल्लभशर्माणो ज्योतिषाचार्याः
पञ्चाङ्गसारिणी-प्रवर्तकतनयौ—श्री सत्यव्रत शर्मा शास्त्री, साहित्याचार्यः, श्री शशिधर शास्त्री ज्योतिषाचार्य B.Sc. । संशोधकः—प्रियव्रत शास्त्री साहित्य ज्योतिषाचार्यः B. A.

बांकीपुर पटना — मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-६ — पो० बा० ७५

वि० सं० २०२१ ... प्रकाशित हो जायगा ।

विषयसूची

आशीराशंसना

जयन्ति श्री महाविद्यापदपङ्कजरेणवः ।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥ १॥
श्री दुर्गासिंहवर्माख्यो राजा राजगुणैर्युतः ।
सनातनीं धर्मधुरं वहन् भागवतोत्तमः ॥ २ ॥
बघाटेशः सोलनाख्य राजधान्यामुदारश्रीः ।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजकः ॥ ३ ॥
निदेशात्तस्य राजर्षेरिदं पंचाङ्गमुत्तमम् ।
प्रसृत्य मार्तण्डसममज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥ ४ ॥

१पुरानवपलान्यस्ति, रेखातः सोलन पुरम् ।
पत्र रुद्रव्यङ्गुलाद्रि (७।११)-मितांगुलपल प्रभा ॥

श्री १००८ आनन्दमयी माँ



मात्रे भवार्तिघनपाशविमुक्तिदायै ।
भक्तावनप्रमनसां शरणागतानाम् ॥
ज्ञानञ्च भक्तिममितां सततं ददत्यै ।
[illegible] नमस्ते ॥

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.=अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र), अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.=अंग्रेजी (तारीख—मास), अंश।
आव=आवश्यकता में।
उ.=उपरान्त, उदित, उत्तर।
क.=करण, कर्क, कला।
कृ.=कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)।
क्रां.सा.=क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.=गोधूलि (लग्न)।
घ.=घड़ी।
घं.=घण्टा।
चौ.=चौर (बाण)।
ति.=तिथि।
द.=दक्षिण।
दा.=दान-पूजन।
दि.=दिन।
दि. मा.=दिनमान।
न.=नक्षत्र।
नि.=निम्बार्कों के लिए।
नृ.=नृप (बाण)।
प.=पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प.=पर्व।
प्र.=प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा.=प्रारम्भ।
भ.=भद्रा, भरिणी (नक्षत्र)।
भा.=भारतीय, भाद्रपद।
मा.=मार्गी।
मि.=मिनट, मिथुन।
मृ.=मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.=यावत् (=तक)।
रा.=राष्ट्रीय (भारतसरकार द्वारा संचालित तारीख-मास), रात्रि, राशि, राहु।
रो.=रोग (बाण). रोहिणी
ल.=लग्न।
व.=वक्री, वक्रगति से, वणिक्-वज्र-वरीयान् (योग), वरुण (ग्रह)।
वा.=वार।
वि.=विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि.मु.=विवाह मुहूर्त्त।
वै.=वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र.=व्रत,
व्र.स.=व्रत सब के लिए।
शु.=शुक्ल पक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह), शुभ-शुक्ल (योग ३)।
स.=समाप्त।
सं.=संक्रान्ति (सौर), संवत्।
सां.का.=साम्पातिक काल।
सा.=सायन।
स्मा.=स्मार्त्तों के लिए।

नोटः—जिस सांकेतिक शब्द को अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया गया है, उसका विशेष स्थल पर उपयुक्त अर्थ प्रसंगवश जाना जा सकता है।

इस पञ्चाङ्ग के प्रयोग के लिये आवश्यक निर्देशन

(१) इस पंचांग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°।५३' एवं उत्तर अक्षांश ३०°।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहाँ जहाँ विशेष निर्देश न किया गया हो 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहाँ सर्वत्र निरयण पद्धति को अपनाया गया है, जहाँ सायन गणना की गई है, वहाँ निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक मान हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सम्मुख दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ५ शुक्रवार के आगे ४५।५५ लिखा है। इसका अभिप्राय है—यह तिथि (पंचमी) शुक्रवार को सूर्योदय के ४५ घड़ी ५५ पल बाद समाप्त होगी और उसी समय षष्ठी प्रारम्भ हो जाएगी।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) "चन्द्र संचार" वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ६ शनिवार (सं. २०२०) को चन्द्र सञ्चार' में मिथुन ४९।५२ लिखा है। इसका अभिप्राय है कि चन्द्रमा इस दिन सूर्योदय के ४९ घड़ी ५२ पल बाद मिथुन में प्रविष्ट होगा और इससे पूर्व वह वृष में ही था।

(६) चन्द्र संचार से आगेवाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जो कि भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। सूर्योदयास्त किरण की विक्षेपण संस्कार संस्कृत हैं।

(७) लस्टर में पंचक एवं भद्रा को समाप्ति तथा प्रारम्भ, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-पादप्रवेश आदि के सभी काल घटी पलों में हैं, जो सूर्योदय के बाद का काल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ७ रविवार को लस्टर में रेव० में बुध ९।३८ लिखा है। इसका अभिप्राय है—इस दिन सूर्योदय के ९ घड़ी ३८ पल बाद बुध रेवती में प्रविष्ट होगा।

(८) यहाँ दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य स्पष्ट हैं।

(९) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्ट ग्रहों के नीचे दैनिक गति, उससे नीचे मार्गी या वक्री, उससे नीचे उदित या अस्त, फिर चरणसहित नक्षत्र (जिसमें ग्रह है) और फिर सबसे नीचे ग्रह जिस नाड़ी में है उसका निर्देश किया गया है।

(१०) पंक्तियों की सभी कुण्डलिएं सूर्योदयकालिक हैं।

(११) दैनिक स्पष्ट ग्रहों के साथ दिया गया साम्पातिक काल उक्त रेखांश एवं अक्षांश-सम्बन्धी स्थल के स्थानीय मध्यमकाल ० घं. ० मि. का है।

(१२) तिथ्यादि पञ्चाङ्ग की गणित इकपक्षीय विधि के अनुसार की गई है।

सूचना :—इस वर्ष स्थूल गणित के अनुसार आश्विन मास दो होंगे, एवं मार्गशीर्ष शुक्ल तथा पौष कृष्ण ये दो पक्ष नहीं होंगे जो वेध गणित से अशुद्ध प्रमाणित हो रहा है, क्योंकि क्षयाधि मास ग्रहण पर्वादि यह सब स्पष्ट सूर्य चन्द्र के आश्रित हैं जिस गणित से आजकल सूर्य चन्द्रग्रहण प्रत्यक्ष सिद्ध नहीं हो सकते फिर उस गणित से इस काल में क्षयाधि-मास की गणना कैसे शुद्ध हो सकती है, (प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौयत्र साक्षिणी)।

क्षय मास एवं धार्मिक कृत्य

चान्द्रमास का महत्तम सावन मान २९ दिन ४६ घटी एवं अल्पतम सावन मान २९ दिन १८ घटी है। इसी प्रकार सौर मास का महत्तम सावन मान ३१ दिन २७ घटी तथा अल्पतम सावन मान २९ दिन २७ घटी है। जब शुक्लादि* चान्द्रमास सौरमास के अन्तर्गत हो जाता है (अर्थात् शुक्लादि चान्द्रमास में जब कोई सूर्य संक्रान्ति नहीं होती) तब वह शुक्लादि चान्द्रमास अधिक माना जाता है। जब कभी एक शुक्लादि चान्द्रमास के अन्तर्गत दो सूर्य संक्रान्तियां हो जाती हैं तब वह शुक्लादि चान्द्रमास क्षय संज्ञक हो जाता है। एक अधिक मास क्षय मास से पूर्व ३ मास के भीतर भीतर एवं दूसरा उसके (क्षय मास के) अनन्तर ३ मास के भीतर भीतर अनिवार्यतः पड़ता है (तदाक्षयमासात्पूर्वं मासत्रयान्तर एकोऽधिमासो ग्रतश्च मासत्रयान्तरितोऽन्यश्चाऽसंक्रान्तिमासःस्यात्—सि. शि.)। अधिक एवं क्षयमास को मलमास (या मलिम्लुच) भी कहा जाता है।

किस चान्द्रमास का क्या नाम होना चाहिए—इसके लिए दो पक्ष प्रचलित हैं—एक पूर्तिपक्ष और दूसरा आदि पक्ष।

पूर्ति पक्ष के अनुसार जिस शुक्लादि चान्द्रमास की अमावस्या के अन्त में मेषस्थ सूर्य होगा वह शुक्लादि चैत्र, जिसको अमावस्या के अन्त में वृषस्थ सूर्य होगा वह शुक्लादि वैशाख होगा—इसी प्रकार अन्य सभी मासों को नाम दिए गए हैं—"मेषादिस्थेसवितरि यो योमासः प्रपूर्यते चान्द्रः। चैत्राद्यः स ज्ञेयः ....।"

आदि पक्ष के अनुसार जिस शुक्लादि चान्द्रमास के प्रारम्भ (शुक्ल प्रतिपदा के प्रारम्भ) में मीनस्थ सूर्य होगा वह शुक्लादि चैत्र, जिसके प्रारम्भ में मेषस्थ सूर्य होगा वह शुक्लादि वैशाख होगा—इसी प्रकार शेष मासों का भी नामकरण किया गया है—"मीनादिस्थोरविर्येषामारम्भप्रथमे क्षणे। भवेत्ते ऽब्देचान्द्रमासाश्चैत्राद्या द्वादशस्मृताः॥"

एक संक्रान्ति से युक्त (अर्थात्—शुद्ध) चान्द्रमासों के नामकरण में इन दोनों पक्षों के अनुसार कोई वैमत्य उपस्थित नहीं होता। किन्तु इन दोनों पक्षों के अनुसार मलमासों (अधिक एवं क्षय मासों) के नामों में एकमत्य नहीं होता। इस वैमत्य का निराकरण धर्मशास्त्रकारों ने इस प्रकार किया है—

*क्षय एवं अधिक मास का निर्णय शुक्लादि पद्धति (जिसे मुख्य भी कहा जाता है) के अनुसार ही किया जाता है। जैसा कि "निर्णय सिन्धुकार" ने कहा है—"एकमात्र संक्रान्तिरहितः सितादिश्चान्द्रमासो मलमासः।" शुक्लादि चन्द्रमास की प्रथा दक्षिण भारत में एवं कृष्णादि चान्द्रमास की प्रथा उत्तर भारत में प्रचलित है। हमारी दृष्टि में चैत्रकृष्ण माना जाने वाला पक्ष उनकी (दाक्षिणात्यों की) दृष्टि में फाल्गुन कृष्ण एवं हमारी दृष्टि में वैशाख कृष्ण माना जाने वाला पक्ष उनकी दृष्टि में चैत्रकृष्ण होता है, इसी प्रकार हम सभी कृष्ण पक्षों को उत्तरवर्ती मास से सम्बद्ध मानते हैं जबकि दाक्षिणात्य उन्हें पूर्ववर्ती मास से सम्बद्ध मानते हैं।

पूर्तिपक्ष में संक्रान्तिरहित चान्द्रमास को तदुत्तरवर्ती चान्द्रमास का शेष मान लिया जाता है; 'कालमाधव' कार का वचन है "........अधिकमासस्योत्तरमासशेषत्वं स्वीक्रियते—"मेषादिस्थे सवितरि......." इत्युक्तेः शुद्धमास संज्ञां प्रत्येव प्रयोजकत्वम्।" अन्यत्र भी इस सिद्धान्त का समर्थन किया गया है —

"आद्योमलिम्लुचो ज्ञेयो द्वितीयः प्रकृतः स्मृतः।"

इस प्रकार अधिकमास का नाम पूर्तिपक्ष एवं आदिपक्ष (दोनों पक्षों) से एक ही सिद्ध होता है। जैसे—कृष्णादिपद्धति के अनुसार आश्विन कृष्ण अमावस्या के समय कन्या संक्रान्ति हो, इसके (आश्विन अमा के) बाद की अमावस्या के अनन्तर शुक्ल प्रतिपदा को तुला संक्रान्ति हो तो आदि पक्ष के अनुसार इस संक्रान्ति शून्य शुक्लादि चान्द्रमास की संज्ञा आश्विन सिद्ध होती है, क्योंकि इस मास के प्रारम्भिक क्षण में सूर्य कन्यास्थ है। पूर्तिपक्ष के अनुसार इसके दर्शान्त के समय कन्यास्थ सूर्य होने के कारण इस असंक्रान्त मास का नाम भाद्रपद होना चाहिए, परन्तु विशेष सिद्धान्त के अनुसार इसे उत्तर मास (आश्विन) का शेष मान लेने के कारण इस (पूर्ति) पक्ष के अनुसार भी यह आश्विन संज्ञक ही होगा।

क्षयमास (द्विसंक्रान्तियुक्त मास) के नामकरण में भी इसी प्रकार का मतभेद उपस्थित होता है आदि एवं पूर्ति पक्ष के अनुसार। परन्तु धर्मशास्त्रकारों ने इस मतभेद को भी एक विशेष सिद्धान्त के आधार पर दूर किया है—क्षयमास से पूर्ववर्ती तुला* संक्रान्ति से लेकर तदुत्तरवर्ती मेष तक को सभी संक्रान्तियों को स्वनिकटतम अमावस्या के समय घटित मान लिया जाता है, भले ही वे प्रतिपदा को घटित हुई हों—इसे "संक्रान्ति चालन" कहा जाता है। इस "संक्रान्ति चालन" के आधार पर क्षय मास के नामकरण में आदिपक्ष को पूर्ति पक्ष से संगति हो जाती है। जैसे:—कृष्णादि पद्धति के अनुसार मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या की समाप्ति के बाद प्रतिपदा को धनु संक्रान्ति तदनन्तर उसके बाद की अमावस्या को मकर संक्रान्ति घटित हुई। इस शुक्लादि द्विसंक्रान्त चन्द्रमास के अमान्त के समय मकरस्थ सूर्य होने से पूर्तिपक्ष के अनुसार इस मास का नाम पौष हुआ। परन्तु इसके प्रारम्भिक क्षण में सूर्य के वृश्चिकस्थ होने के कारण इसका नाम मार्गशीर्ष बन रहा है, अतः संक्रान्ति चालन द्वारा यहां धनु संक्रान्ति का सम्बन्ध पूर्ववर्ती अमा से मानलेने पर इस (द्विसंक्रान्त) मास के प्रारम्भिक क्षण में सूर्य धनुःस्थ हो जाता है, जिससे आदिपक्ष के अनुसार भी इस मास की संज्ञा पौष ही सिद्ध हो जाती है।

*यद्यपि—"यांतिथिसमनुप्राप्य तुलांगच्छति भास्करः। तथैव सर्वं संक्रान्तियीन्मवं न गच्छति॥"—इस आर्षवचन के अनुसार क्षयमास के प्रसङ्ग में जिस तिथि को तुला संक्रान्ति हो उसी तिथि से अन्य तदुत्तरवर्ती (तुलोत्तरवर्ती) मेष तक की सभी संक्रान्तियों को सम्बद्ध मानना चाहिए, तथापि कृष्ण भट्ट आदि अन्य आचार्यों के मत के अनुसार यह उत्तरपक्ष स्थापित किया गया है कि तुला से लेकर मेष तक की संक्रान्तियों को अनिवार्यतः स्वनिकटवर्ती अमा को ही घटित मानना चाहिए—विशेष स्पष्टीकरण के लिए 'निर्णय

प्रकार हम सभी कृष्ण पक्षों को उत्तरवर्ती मास से [illegible] हैं पूर्ववर्ती मास से सम्बद्ध मानते हैं। [illegible] —विशेष स्पष्टीकरण के लिए 'निर्णय

—क्षय एवं लुप्त मास—

बहुत से विद्वान् क्षयमास का अर्थ लुप्त (पञ्चाङ्ग से गायब होने वाला) मास समझते हैं। परन्तु वे भ्रान्त हैं—क्योंकि क्षय एवं लुप्त मास में अन्तर है। "क्षय" तो दो संक्रान्ति वाले मास की संज्ञा है, जैसा कि—आचार्य भास्कर ने कहा है—"द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः।" यहाँ "क्षयाख्यः" (क्षयः आख्या = नाम यस्य सः क्षयाख्यः) शब्द ही बतला रहा है कि संक्रान्ति द्वययुक्त मास को 'क्षय' नाम से पुकारा जाता है, वह वस्तुतः लुप्त (गायब) नहीं होता। "कृत्य सारसमुच्चय" में यही बात स्पष्ट रूप से लिखी है—"क्षयाख्यः क्षयनामकः, नतु वस्तुगत्या लुप्तःम सः"। लुप्त तो वह मास होता है कि जो कि पञ्चाङ्ग में नहीं लिखा होता। उपर्युक्त क्षयमास के उदाहरण में धनुस्थ सूर्य के काल में कोई दर्शान्त नहीं हुआ है, अतः वहाँ शुक्लादि मार्गशीर्ष लुप्त होगा (अर्थात् शुक्लादि मार्गशीर्ष पञ्चाङ्ग में नहीं लिखा जाएगा)। स्पष्ट है—क्षयमास का अस्तित्व होता है, लुप्त मास का नहीं। यदि लुप्तमास को ही क्षयमास मान लिया जाए तो कई आपत्तियाँ उपस्थित होंगी—एक आपत्ति यह है कि धर्मशास्त्र कारों ने क्षयमास में माङ्गलिक कृत्य करना निषिद्ध किया है—

जैसे—"यद्वर्षमध्येऽधिकमासयुग्मं तत्कार्त्तिकादित्रितयं क्षयाख्यम्।
मासत्रयंत्याज्यमिदं प्रयत्नाद् विवाह यज्ञोत्सव मङ्गलेषु॥"

यदि लुप्त मास ही क्षयमास होता तो लुप्त मास में (जिस मास का अस्तित्व ही नहीं है उस मास में) मांगलिक कार्यों के निषेध का प्रश्न ही उपस्थित न होता।

किञ्च क्षयमास का दूसरा नाम "अहंस्पति" भी है। इस "अहंस्पति" शब्द की व्युत्पत्ति "कालमाधव" में इस प्रकार की गई है—"एकमासग्रासित्वा दहरः पापस्य पतिरिति।" अर्थात्—"एक (स्वपूर्ववर्त्ती) मास को क्षयमास निगल जाता है, इसलिए यह पापी है।" स्पष्ट है—क्षयमास में "तिथ्यर्धे प्रथमेपूर्वो द्वितीयेऽर्धे तथोत्तरः। मासाविति बुधैश्चिन्त्यौ क्षयमासस्य मध्यगौ॥"——हेमाद्रि के इस वचनानुसार दो मास समाविष्ट माने गए हैं। अपना ही अस्तित्व न रखने वाले लुप्त मास में दो मास समाविष्ट कैसे हो सकते हैं?

अपिच—दो संक्रान्तिवाले चान्द्रमास को क्षय मास कहा गया है (द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः)। जो मास स्वयं लुप्त (नष्ट) है—उसमें दो संक्रान्तियों के होने की बात सोची भी नहीं जा सकती।

अतः क्षय एवं लुप्तमास सर्वथा भिन्न हैं। इसके और भी स्पष्टीकरण के लिए "कालमाधव" में दिया गया वह उदाहरण प्रदर्शित कर देना अप्रासंगिक न होगा जिसमें क्षय एवं लुप्त मास को पार्थक्येन निर्दिष्ट किया है—

"यदा धनुःस्थे रवौ दर्शपूर्त्तिस्तदा तस्यमेषादिस्थ वचनेन मार्गशीर्षत्वं प्राप्तम्। तथा सति पूर्वोदाहृते द्विसंक्रान्ते (धनुमंकर संक्रान्तिद्वय युक्ते) मासे धनुःस्थे रवौ दर्शो न समाप्तः, किन्तु मकरस्थे। अतः पौषमाघत्वं तस्य सम्पन्नम्। तथाच मार्गशीर्षस्य तत्र लुप्तत्वात्तस्य क्षयसंज्ञायुक्ता।"

—: कौन २ से मास क्षय होते हैं :—

आचार्य श्री भास्कर ने "सिद्धान्त शिरोमणि" में लिखा है—"क्षयःकार्त्तिकादित्रये" अर्थात्—कार्त्तिक, मार्गशीर्ष पौष ही क्षय हो सकते हैं। 'सिद्धान्त शिरोमणि' के वासनाभाष्य में इसकी उपपत्ति लिखते हुए आचार्य भास्कर ने लिखा है कि जब सूर्य की गति ६१ कला होती है तब कभी सौर मास चान्द्रमास के अन्तर्गत हो जा सकता है (अर्थात्—तब कभी एक चान्द्रमास में सूर्य दो संक्रमण कर सकता है), और सूर्य की ६१ कला गति वृश्चिक, धनु एवं मकर इन तीन राशियों में होती है, अतः कार्त्तिक आदि तीन मासों के क्षय की बात लिखी गई है ("यदार्कगति रेक षष्टिःकला स्तदा सार्धैकोनत्रिंशता दिनैः २९।३० राशि गच्छति। अतश्चान्द्रामासादल्पोऽर्कमासस्तदास्यात्। एवं रविमासस्य परमाल्पता २९।२०।४०, सा चैकषष्टिर्गतिर्वृश्चिकादित्रयेऽर्कस्य। सईदृशोल्पोऽर्कमासोयदा चान्द्रमासस्याऽनल्पस्याऽन्तःपाती भवति तदै कस्मिन्मासे संक्रमण द्वय मुपपद्यते—अत उक्तम्—"क्षयः कार्त्तिकादित्रये" इति" (सि. शि. वासनाभाष्य)।

वासना भाष्य के उपर्युक्त प्रघट्टक से स्पष्ट है कि आचार्य भास्कर चान्द्रमासों के नामकरण में आदिपक्ष को ही मानते थे, क्योंकि उन्होंने वृश्चिक-धनु, धनु मकर एवं मकर-कुम्भ—इन दो दो संक्रान्तियों के एक चान्द्रमास में घटित होने की संभावना के आधार पर ही कार्त्तिक, मार्गशीर्ष एवं पौष के क्षय की बात कही है। परन्तु हमने यहाँ अपने पञ्चाङ्ग में कालमाधवकार आदि धर्मशास्त्रकारों के मतानुसार पूर्तिपक्ष के आधार पर क्षय मास का नामकरण किया है और साथ ही आर्ष सिद्धान्तानुसार संक्रान्तिचालन द्वारा आदि पक्ष से भी वैमत्य नहीं होने दिया।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कार्त्ति. मार्ग. पौष ही क्षय हो सकते हैं। यह नियम आचार्य भास्कर ने तात्कालिक सूर्य नीच की स्थिति के आधार पर ही बनाया था। परन्तु सूर्यनीच अत्यल्प गति से चलता है, अतः नीच के परिवर्तन के अनुसार सुदीर्घ कालान्तर में क्रम से एकैकशः सभी राशियों की सावन दिन संख्या महत्तम चान्द्रमास की सावन दिन संख्या से अल्पतर होगी, जिससे समय समय पर क्रमशः सभी मासों के क्षय होने की संभावना बनेगी। इसी बात को कमलाकर ने "सिद्धान्ततत्त्व विवेक" में आचार्य भास्कर पर आक्षेप करते हुए कहा है—

"स्फुटैर्जक्षणैर्यैरयं तानि सर्वेष्वपि स्युर्मधोश्चान्द्रमासेषु काले।
अतोऽयं क्षयः सर्वचान्द्रेष्वपीत्थं न जानन्ति सद्वासना ज्ञान शून्याः॥"

सूर्यनीच की गति अत्यन्त अल्प है, जिससे सहस्राब्दियों तक उन्हीं मासों के क्षय की संभावना बनी रहती है—इसे दृष्टि में रखते हुए आचार्य श्री भास्कर ने एक स्थिरप्राय सानियम बना डाला—"क्षयः कार्त्तिकादित्रये"।

—संसर्प मास एवं धार्मिक कृत्य—

जैसा कि पहले बताया जा चुका है एक अधिक मास क्षय मास से पूर्व तीन मास के भीतर-भीतर और एक अधिक मास क्षय मास के बाद तीन मास के भीतर-भीतर आता है। यहाँ क्षय मास से पहले आने वाले अधिक मास को संसर्प कहा जाता है—"अस्मात्पूर्वभा-

व्यसंक्रान्तमासःसंसर्पः "(जयसिंह कल्पद्रुम) । संसर्प मास को चूड़ाकर्म, उपनयन, विवाह, अग्न्याधान, राजाभिषेकादि मांगलिक कृत्यों को छोड़ कर अन्य मासिक (मास सम्बन्धी) व्रतोत्सव आदि के लिए शुद्ध (कर्मार्ह) माना गया है । 'धर्मसिन्धु' कार का वचन है—

"क्षयात्पूर्वोऽधिमासः संसर्पसंज्ञकः पूर्वमुक्तस्तत्र चूडाकर्म-व्रतबन्ध-विवाहाग्न्याधान-यज्ञोत्सव-महालय-राजाभिषेका एव वर्ज्याः, नाऽन्यानि कर्माणि ।"

"जयसिंह कल्पद्रुम" में भी लिखा है—"संसर्पोऽसंक्रान्तोऽपि न मलमासः, किन्तु शुद्धतुल्यः ।"

जाबालि ने भी इसे प्राकृत (=शुद्ध=कर्मार्ह) माना है—

"मासद्वयेऽब्दमध्येतु संक्रान्तिर्नयदाभवेत् ।
प्राकृतस्तत्र पूर्वःस्यादधिमास स्तथोत्तरः ॥"

"कालमाधव" कार ने संसर्प शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है—'कर्मार्हः सन् सम्यक् सर्पतीति संसर्पः ।' अर्थात्—यह मास धार्मिक क्रियाकलाप के योग्य होता हुआ अच्छी तरह से चलता है ।

इस प्रकार धर्मशास्त्राचार्यों ने क्षयपूर्ववर्ती अधिकमास (संसर्प) को जो शुद्ध तुल्य कर्मार्ह माना है वह केवल उस मास से सम्बद्ध व्रत-पर्व आदि के ही लिए है—क्योंकि संसर्प में (जैसा कि ऊपर "धर्मसिन्धु"कार का वचन दिया गया है) विवाहादि शुभ कृत्य तो सर्वथा वर्जित हैं । अन्यत्र भी जहाँ संसर्प को शुभ कृत्यों के लिए वर्जित किया है वहाँ केवल विवाहादि के ही उद्देश्य से किया है । जैसा कि कृष्णभट्ट ने कहा है—"तत्र क्षय संसर्पयो निन्द्यत्वं विवाह यज्ञोत्सव मङ्गलेष्वेव ।"

कृष्णभट्ट का दूसरा वचन है—"मास विशेष-सापेक्षाणां प्रत्याब्दिकादीनां शुद्ध-मासे सम्भवत्कर्त्तव्यताकतयाऽधिकमासेऽकरणेऽपि न संसर्पार्हस्पत्योरकरणं, तद्वद् भागद्वया-ऽभावात् ।"

संसर्प में अधिकमास सम्बन्धी धार्मिक व्रत आदि का करना निषिद्ध किया है, क्योंकि उसे मलमास नहीं माना गया है—"संसर्पेनाऽधिमासिकम्, कालस्यानाधिक्यात् ।"

उपर्युक्त विवरण से सिद्ध है कि संसर्प को शुद्ध मान कर उसमें उस मास के व्रतोत्सव आदि करने चाहिएं ।

संसर्प को अधिक मास न मानने में एक सैद्धान्तिक हेतु है, वह है "संक्रान्तिचालन" पूर्वोक्त नियमानुसार संक्रान्तिचालन द्वारा संसर्प की परवर्ती संक्रान्ति सैद्धान्तिक रूप से संसर्प की अमावस्या को घटित मान ली जाती है, जिससे संसर्प मास संक्रान्तियुक्त (शुद्ध) हो जाता है ।

कई बार संसर्प एवं क्षयमासों के बीच कोई व्यवधान नहीं होता (अर्थात् वे दोनों परस्पर संलग्न रहते हैं) और कई बार इन दोनों के बीच अन्य मास पड़ जाते हैं । कुछ लोग—अव्यवहित संसर्प में ही उस मास के व्रतोत्सव करने चाहिएं, व्यवहित में नहीं—ऐसा कहते हैं । परन्तु उनका यह सिद्धान्त अशास्त्रीय है । इस विषय में कोई शास्त्रीय प्रमाण उपलब्ध नहीं है । धर्मशास्त्रकारों ने क्षयपूर्ववर्ती अधिकमास को (वह क्षयमास से व्यवहित हो या अव्यवहित) संसर्प संज्ञा दी है और उसे प्राकृत (शुद्ध) माना है, जिससे प्रत्येक अवस्था में उसे (संसर्प को) मास सापेक्ष व्रतोत्सवादि के लिए ग्राह्य मानना ही होगा । माससापेक्ष व्रतादि के लिए व्यवहित संसर्प को ग्राह्य न मानने वाले लुप्तमास के व्रतादि को क्षयमास में मनाने की बात कहते हैं, परन्तु ऐसा करने से लुप्त एवं क्षयमासों के व्रतोत्सवों में पौर्वापर्य का स्पष्ट व्यत्यय एवं उनके कई व्रतोत्सवों का लोप भी होगा—यह आगे स्पष्ट किया जाएगा ।

—संसर्प में आब्दिक श्राद्ध—

जिस मास में आब्दिक श्राद्ध पड़ता हो यदि वही मास संसर्प हो तो आब्दिक श्राद्ध को संसर्प एवं तदुत्तरवर्ती शुद्ध मास (दोनों मासों) में करना चाहिए । यदि संसर्प मास क्षयमास से अव्यवहित हो (अर्थात्–संसर्प के तुरन्त बाद क्षय मास हो) तो संसर्प मास से सम्बद्ध आब्दिक श्राद्ध को संसर्प एवं क्षय (दोनों) मासों में करना चाहिए—ऐसी शास्त्राज्ञा है । 'धर्म सिन्धु' कार का वचन है—

"यस्मिन्वर्षे क्षयमासाऽव्यवहितोऽधिकमासः, यथा कार्तिकोऽधिकमासः तदुत्तरो मासो वृश्चिक धनुःसंक्रान्तियुक्तत्वात् क्षय संज्ञकः, तत्र कार्तिकमासस्थं प्रत्याब्दिकं (श्राद्धं) पूर्वेऽधिमासे उत्तरे क्षयमासे च कार्यम् । तत्राऽपि क्षयव्यवहित पूर्वो मासो यथा-ऽऽश्विनोऽधिकमासो मार्गशीर्षः क्षयमासस्तत्राऽपि आश्विनमासगतं श्राद्धं मधिके शुद्धे चाऽऽश्विने कार्यम्—द्वयोरपि कर्मार्हत्वादितिभाति ।"

'दीपिका' में भी लिखा है—

"तत्प्राक्सङ्गयधिमासकोयदिभवेत्तत्रत्यसांवत्सरम् ।
तस्मिन् शुद्धतया क्षये च वचनात्कुर्याद्द्वयोः कोविदः ॥"

क्षय मास एवं धार्मिक कृत्य

संक्रान्तिशून्य (अधिक) मास में जो २ कृत्या-कृत्य का निर्णय है, वह सब क्षय मास पर भी लागू होता है । लिखा है—

"रविसंक्रमहीने योवर्ज्यविर्ज्यविधिः स्मृतः ।
स एव तु द्विसंक्रान्ते मलमासेऽप्युदीरितः ॥"

(काठकगृह्य)

यद्यपि मलमास होने के कारण क्षयमास में विवाहादि शुभकृत्य वर्जित हैं, तथापि क्षय मास के सभी मास सापेक्ष पर्वोत्सवादि क्षयमास में ही मनाए जाते हैं । जैसे—मार्ग-शीर्ष क्षयमास हो तो मार्गशीर्ष मास के सभी पर्वोत्सव उसी मास में मनाए जाएंगे । 'वसिष्ठ संहिता' का वचन है—

"मास प्रधानाखिलमेव कर्म मुक्त्वाखिलं कर्म न कार्यमत्र ।
यज्ञोपवास व्रत तीर्थ यात्रा विवाह कर्मादि विनाशमेति ॥"

कुछ लोग—"मास द्वयोदितं कर्म तत्र कुर्याद्धि निर्णयः । एकस्मिन्मासि द्वौ मासौ यदि स्यातां तयोर्द्वयोः ॥ तावेव पक्षौ ता एव तिथयस्त्रिंशदेव हि ।" —इत्यादि वचनों से परन्तु हेमाद्रि का यह वचन क्षयमास में उत्पन्न अथवा मृत व्यक्ति की जन्मतिथि अथवा मृत्युतिथि ... गया है, अतः इसे मास सम्बन्धी व्रतोत्सवों के निर्णय

कुछ लोग—"मास द्वयोदितं कर्म तत्र कु [illegible] यदि स्यातां तयोर्द्वयोः ।। तावेव पक्षौ ता एव तिथयस्त्रिंशदेव हि ।।"—इत्यादि वचनों के आधार पर क्षयमास को मास द्वयात्मक मानते हुए उसमें लुप्तमास के त्योहारों को भी मनाने की बात कहते हैं। परन्तु ऐसा करने से लुप्त एवं क्षय मासों के व्रतोत्सवादि के क्रम में अक्षम्य व्यत्यय हो जाता है और कई व्रतोत्सव लुप्त भी हो जाते हैं। उदाहरण के रूप देखिए—जब शुक्लादि कार्त्तिक का क्षय होगा तब शुक्लादि आश्विन के व्रतोत्सवों को क्षय कार्तिक में समाविष्ट करने पर नवरात्रों में अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, एवं भाई दूज मनानी होगी। दीवाली पर्व को अन्नकूट-गोवर्द्धन पूजा के लगभग एक मास बाद मनाना होगा। यहाँ भीष्म-पञ्चक दीवाली से पूर्व पड़ेगी। शरत्पूर्णिमा एवं कार्त्तिक पूर्णिमा दोनों एक ही दिन होंगी—जो कि पर्वों में स्पष्ट रूप से व्यत्यय है। इसी स्थिति में कार्त्तिक स्नान का प्रारम्भ एवं समाप्ति एक ही दिन पड़ जाएंगे, जिससे एक मास तक चलने वाला कार्त्तिक स्नान लुप्त हो जाएगा। इसी प्रकार माघ के क्षय होने पर उसमें लुप्त पौष के व्रतोत्सवों को भी समाविष्ट करने के प्रयास में माघ स्नान का प्रारम्भ जिस दिन होगा उसी दिन उसकी समाप्ति भी हो जाएगी, जिससे एक मास पर्यन्त चलने वाला माघ स्नान भी लुप्त हो जाएगा। किञ्च—सुदीर्घकालान्तर में सूर्यनीच की गति के कारण फाल्गुन के क्षय होने पर उसमें लुप्त माघ के त्योहार मनाने पर होलिकादहन के दिन माघ स्नान की समाप्ति करनी पड़ेगी एवं होलिकादहन के १५-१६ दिन बाद शिवरात्रि मनानी होगी। इससे स्पष्ट है—क्षयमास में लुप्तमास के त्योहारों को मनाने से धार्मिक कृत्यों में कितनी अव्यवस्था होगी। क्षयमास में लुप्तमास के त्योहार मनाए जाने की बात नहीं मानी जा सकती, क्योंकि जब—"यांतिथिं समनुप्राप्य...."इत्यादि आर्षवचन द्वारा प्रतिपादित 'संक्रान्ति चालन' से लुप्त मास के त्योहार पृथक् रूप से मनाए जा सकते हैं, तब उन्हें क्षयमास के त्योहारों के साथ क्यों मनाया जाए। संसर्प से लेकर क्षयमास तक के त्योहारों की सुव्यवस्था "संक्रान्ति चालन" द्वारा हो जाती है—इसका स्पष्टीकरण आगे किया जाएगा।

क्षय मास में मरने वाले की मृत्युतिथि एवं जन्म लेने वाले की जन्मतिथि का निर्णय :—क्षय मास में जन्म तिथि एवं मृत्युतिथि के ज्ञान के लिए क्षयमास की प्रत्येक तिथि के दो भाग (पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध) किए जाते हैं। वहाँ तिथि के पूर्वार्ध को लुप्त मास की एवं उत्तरार्ध को क्षयमास की तिथि माना जाता है। उदाहरण के रूप में क्षय मार्गशीर्ष की शुक्ल प्रतिपदा के पूर्वार्ध में जन्म लेने वाले या मरने वाले व्यक्ति की जन्म तिथि या मृत्यु तिथि कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा मानी जाएगी और आगामी वर्षों में उसका जन्म दिन (वर्धापन) या आब्दिक श्राद्ध कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा को किया जाएगा। इसी प्रकार क्षय मार्ग. शुक्ल प्रतिपदा के उत्तरार्ध में जन्म लेने वाले या मरने वाले व्यक्ति की जन्म तिथि या मृत्यु तिथि मार्ग. शुक्ल प्रतिपदा मानी जाएगी, और आगामी वर्षों में उसका वर्धापन या आब्दिक श्राद्ध मार्ग. शुक्ल प्रतिपदा को किया जाएगा। इसी तरह क्षय मास की अन्य तिथियों को भी समझना चाहिए। यही बात हेमाद्रि के इस श्लोक में कही गई है—

"तिथ्यर्धे प्रथमे पूर्वो द्वितीयेऽर्धे तदुत्तर :।
मासाविति बुधैश्चिन्त्यौ क्षय मासस्य मध्यगौ ।।"

कुछ भ्रान्त लोग हेमाद्रि के उपर्युक्त वचनानुसार क्षय मास में लुप्तमास को समाविष्ट मानते हुए क्षयमास में लुप्तमास के त्योहारों को भी मनाने की बात कहते हैं। [illegible] त्पन्न अथवा मृत व्यक्ति की जन्मतिथि अथवा मृत्यु तिथि के निर्णय के प्रसङ्ग में कहा गया है, अतः इसे मास सम्बन्धी व्रतोत्सवों के निर्णय के लिए प्रमाण रूप में उपस्थित नहीं किया जा सकता। "दुर्जन-तोषण-न्यायेन" हेमाद्रि के इस वचन को यहाँ मान कर क्षयमास की प्रत्येक तिथि के दो विभाग करके उसके पूर्वार्ध को लुप्तमास की एवं उत्तरार्ध को क्षयमास की तिथि समझते हुए भी तत्तत्मास के व्रतोत्सवों का निर्णय नहीं किया जा सकता, क्योंकि व्रतोत्सवादि के निर्णय में बहुत से (रात्रि, रात्र्यर्ध, मध्याह्न, पूर्वाह्न, अपराह्न, प्रदोष आदि) काल वर्जित एवं विहित होते हैं। यह ५० प्रतिशत सम्भव है कि अभीष्ट तिथ्यर्ध अभीष्ट व्रतोत्सव के लिए वर्जित काल में पड़ जाए अथवा विहित काल में न पड़े। अतः हेमाद्रि के इस वचन के आधार पर भी क्षयमास में लुप्तमास के व्रतोत्सवों को समाविष्ट नहीं किया जा सकता।

—क्षय मास में आब्दिक श्राद्ध—

क्षयमास में लुप्त एवं क्षय दोनों मासों के आब्दिक श्राद्ध करने की शास्त्राज्ञा है। जैसे—यदि मार्गशीर्ष क्षय हो (अर्थात् कार्त्तिक लुप्त हो) तो मार्ग शीर्ष एवं कार्त्तिक दोनों मासों के आब्दिक श्राद्ध क्षय मार्गशीर्ष में तिथि के पूर्वार्द्ध या उत्तरार्ध की कल्पना के बिना ही किए जाएंगे ("तथा पूर्वोक्त मार्गशीर्षगतं पौष गतंचाब्दिकमेकस्मिन्नेव मासे तिथि पूर्वार्धादि भागं विनैव कार्यम्"—धर्म सिन्धु)

—सं० २०२० में संसर्प एवं क्षय मास—

इस विगत कुम्भ पर हरिद्वार में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित ज्यौतिष सम्मेलन में भारत के प्रतिष्ठित ज्यौतिषियों द्वारा निर्णय किया गया कि क्षयाधिमासों के निर्णय के लिए दृश्यगणित का ही आश्रय लिया जाए। उसके सर्वसम्मत निर्णय के अनुसार हमने इस वर्ष (सं० २०२०) से मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग का निर्माण सूक्ष्म दृश्य गणित के आधार पर करना प्रारम्भ किया है। सं० २०२० में सूक्ष्म दृश्य गणित से कृष्णादि पद्धति के अनुसार कार्त्तिक कृष्ण अमावस्या को तुला संक्रान्ति है। तदनन्तर दो (शुक्ल-कृष्ण) पक्षों को छोड़ कर तृतीय पक्ष की शुक्ल प्रतिपदा का वृश्चिक संक्रान्ति एवं उसके बाद की अमावस्या को ही सूक्ष्म धनु संक्रान्ति भी है। इस प्रकार १८ अक्तूबर से १६ नवम्बर तक का संक्रान्ति शून्य शुक्लादि चान्द्रमास अधिक हुआ, जिसकी संज्ञा प्रारम्भिक क्षण में तुलास्थ सूर्य होने के कारण कार्त्तिक हुई*। १७ नवम्बर से १६ दिसम्बर तक के द्विसंक्रान्ति-युक्त शुक्लादि चान्द्रमास का क्षय हुआ, जिसकी संज्ञा प्रारम्भिक क्षण में तुलास्थ सूर्य होने के कारण आदि पक्ष के अनुसार कार्त्तिक एवं दर्शान्त काल में धनुःस्थ सूर्य होने के कारण मार्गशीर्ष बनती है। परन्तु पूर्वोक्त 'संक्रान्ति चालन' द्वारा वृश्चिक संक्रान्ति का सम्बन्ध पूर्व वर्त्ती (१६ नवम्बर वाली) अमावस्या से मान लेने पर

*पूर्त्ति पक्षानुसार इस असंक्रान्त मास की संज्ञा यद्यपि आश्विन बनती है तथापि पूर्व निर्दिष्ट विशेष सिद्धान्तानुसार इसे उत्तर मास (मासगणना में स्वपूर्ववर्त्ती मास से आगे आने वाले मास) का शेष मान लेने से पूर्त्ति पक्ष के अनुसार भी इसकी संज्ञा कार्त्तिक ही बनती है।

इस द्विसंक्रान्त शुक्लादि चान्द्रमास के प्रथम [illegible] में वृश्चिकस्थ सूर्य सिद्ध हो जाता है, जिससे इस (द्विसंक्रान्त) मास की संज्ञा आदि पक्ष से भी मार्गशीर्ष ही बनती है। इससे स्पष्ट है—सं० २०२० में दृश्यगणित के आधार पर कार्तिक संसर्प, शुद्ध शुक्लादि कार्तिक (कृष्णादि पद्धति के अनुसार कार्तिक शुक्ल एवं मार्गशीर्ष कृष्ण—ये दोनों पक्ष) लुप्त* तथा शुक्लादि मार्गशीर्ष (कृष्णादि पद्धति के अनुसार मार्ग. शुक्ल एवं पौष कृष्ण—ये दोनों पक्ष) क्षय है।

विशेष :—यद्यपि भास्कराचार्य के मतानुसार यहाँ वृश्चिक एवं धनु संक्रान्ति से युक्त शुक्लादि क्षय मास को कार्तिक संज्ञा देनी चाहिए तथापि संक्रान्ति चालन के अनुरोध पर तथा 'कालमाधवकार' एवं श्रीकृष्ण भट्ट आदि विद्वानों के मतानुसार इसको मार्गशीर्ष संज्ञा ही हमने स्वीकार की है। किञ्च ऐसा करने पर आदि पक्ष तथा पूर्ति पक्ष—दोनों पक्षों की संगति भी हो जाती है।

क्षय मास के निर्णय में "ज्योतिर्गणित" कार की भ्रान्ति :—

'ज्योतिर्गणित' कार श्री केतकराचार्य जी ने 'ज्योतिर्गणित' के पृष्ठ ७ पर लिखा है कि—"जिस चान्द्र मास में सूर्य मेष राशि में प्रविष्ट होता है उस चान्द्रमास का नाम चैत्र, जिस चान्द्रमास में सूर्य वृष राशि में प्रविष्ट होता है उस चान्द्रमास का नाम वैशाख—इसी प्रकार शेष मासों के भी नामकरण किए गए हैं।......जब कभी एक चान्द्रमास में सूर्य दो राशियों में संक्रमण करता है तब उपर्युक्त नियमानुसार उस मास के दो नाम बनते हैं। उन दो नामों में से प्रथम नाम को स्वीकार कर लिया जाता है और द्वितीय नाम को छोड़ दिया जाता है, यहाँ छोड़े गए नाम वाले मास को ही क्षय कहा जाता है।

"यस्मिंश्चान्द्रमासे सूर्यो मेष राशौ प्रविशति सचैत्रः, यस्मिन् वृषे प्रविशति सः वैशाखः—एवमग्रेऽपि "......तथैव कदाचित् सौरमासोऽपि चान्द्रमासाऽन्तः पाती भवति। तेन तन्मासस्य द्वे नाम्नी सम्पद्येते। तयोरादिमं स्वीकृत्य द्वितीयं निराकुर्वन्ति। एवं निराकृतो मास एव क्षयमासः।" (ज्योतिर्गणित पृष्ठ ७)

वैसे तो निराकृत मास क्षय मास नहीं हो सकता तथापि ज्योतिर्गणितकार के इस सिद्धान्त को मान लेने पर सं० २०२० में एक शुक्लादि चान्द्रमास में वृश्चिक एवं धनु ये दो संक्रान्तियाँ होने से धनु संक्रान्ति से सम्बद्ध मार्गशीर्ष को ही क्षय माना जाएगा, कार्तिक को नहीं। परन्तु श्री केतकरजी ने अपने इस सिद्धान्त के विरुद्ध 'ज्योतिर्गणित' में ही पृष्ठ ६७ पर सं० २०२० में कार्तिक को क्षय लिखा है—यह स्पष्टरूपेण "वदतो व्याघात" है।

सं० २०२० में संसर्प से लेकर क्षय तक के मासों के व्रतोत्सवादि की व्यवस्था :—

संसर्प से क्षय तक के मासों के त्योहारों की व्यवस्था के लिए पूर्वोक्त "संक्रान्ति-चालन" नितान्त आवश्यक है। यदि संक्रान्ति चालन को अनित्य माना जाय तो संसर्प मास का प्राकृतत्व विधान व्यर्थ सिद्ध होगा एवं लुप्त मास के व्रतोत्सव लुप्त हो जाएंगे, क्योंकि पूर्व निर्दिष्ट अव्यवस्था के कारण लुप्त मास के व्रतोत्सवादि क्षय मास में तो समाविष्ट नहीं किए जा सकते। संक्रान्ति चालन द्वारा संसर्प से लेकर क्षय तक के मासों के नाम सैद्धान्तिक रूप से (न तु वस्तुतः) बदल जाएंगे, जिससे लुप्त मास का पृथक् अस्तित्व बन जाएगा। संक्रान्तिचालन से सं० २०२० के संसर्प कार्तिक में सैद्धान्तिक रूप से वृश्चिक संक्रान्ति अमावस्या को मानी जाएगी, जिससे वह संसर्प मास शुद्ध तुल्य हो जाएगा। संक्रान्ति चालन से सं० २०२० में संसर्प कार्तिक के पक्षों के नाम कृष्णादि पद्धति के अनुसार इस प्रकार बदल जाएंगे।

दृश्यगणितानुसार पक्षों के वास्तव नाम	संक्रान्ति चालन द्वारा परिवर्तित पक्षों के नाम कृष्णादि पद्धति के अनुसार
प्रथम कार्तिक कृष्ण	कार्तिक कृष्ण
प्रथम (संसर्प) कार्तिक शुक्ल....	कार्तिक शुक्ल
द्वि० (संसर्प) कार्तिक कृष्ण....	मार्गशीर्ष कृष्ण
मार्गशीर्ष शुक्ल	मार्गशीर्ष शुक्ल
पौष कृष्ण.............	पौष कृष्ण

यहाँ संक्रान्ति चालन द्वारा परिवर्तित पक्षों के नामों के आधार पर ही तत्तत्पक्ष के व्रतोत्सव तत्तत् पक्ष में मनाए जाएंगे। उपर्युक्त परिवर्तन को देखने से स्पष्ट है लुप्त मास का भी पृथक् अस्तित्व हो गया है, और उसके व्रतोत्सव उसी में मनाए जाएंगे।

यह तो रही सूक्ष्म दृश्य गणित के आधार पर निर्णीत संसर्प-क्षय के व्रतोत्सवों की बात। अब रही सौर गणित के अनुसार निर्णीत सं० २०२० के संसर्प एवं क्षय तक के मासों के व्रतोत्सवादि के विषय में। प्राचीन सौर, मकरन्द आदि गणित के अनुसार सं० २०२० में संसर्प मास आश्विन एवं क्षय (द्विसंक्रम) मास शुक्लादि पौष '(कृष्णादि पौष शुक्ल एवं माघ कृष्ण पक्ष) है। यहाँ भी संक्रान्ति चालन के आधार पर संसर्प आश्विन से क्षय शुक्लादि पौष तक के मासों के व्रतोत्सवों का दृश्य गणित द्वारा निर्णीत व्रतोत्सवों से कोई मतभेद नहीं होता—यह सब संक्रान्ति चालन द्वारा परिवर्तित मासों को देखने से स्पष्ट हो जाता है—

प्राचीन गणितानुसार पक्षों के वास्तव नाम	संक्रान्ति चालन द्वारा परिवर्तित पक्षों के नाम, कृष्णादि पद्धति के अनुसार
प्रथम आश्विन कृष्ण....	आश्विन कृष्ण (४ सितं. से १७ सितं. तक)
प्र. (संसर्प) आश्विन शुक्ल..	आश्विन शुक्ल (१८ सितं. से ३ अक्तू. तक)
द्वि. (संसर्प) आश्विन कृष्ण..	कार्तिक कृष्ण (४ अक्तू. से १७ अक्तू. तक)
द्वि. आश्विन शुक्ल	कार्तिक शुक्ल (१८ अक्तू. से १ नवं. तक)
कार्तिक कृष्ण	मार्ग-कृष्ण (२ नवं. से १६ नवं. तक)
कार्तिक शुक्ल.........	मार्ग शुक्ल (१७ नवम्बर से ३० नवम्बर तक)
मार्ग कृष्ण.........	पौष कृष्ण (१ दिसम्बर से १६ दिसम्बर तक)
पौष शुक्ल.........	पौष शुक्ल (१७ दिसं. से ३० दिसं. तक)
माघ कृष्ण.........	माघ कृष्ण (३१ दिसं. से १४ जनवरी तक)

इस तालिका से स्पष्ट है कि संक्रान्ति चालन द्वारा परिवर्तित नामों के आधार पर तत्तत्पक्ष के त्योहारों को तत्तत्पक्ष में मनाने से सौरगणित का भी दृश्य गणित से कोई विरोध उपस्थित नहीं होगा—हाँ, केवल चान्द्रमासों के वास्तव नामों में अन्तर अवश्य होगा, जिससे शाब्दिक श्राद्धों में अन्तर पड़ जाएगा।

---

१४१ वर्षों के बाद इस वर्ष क्षय मास आया है।

*यहाँ वृश्चिकस्थ सूर्य में कोई दर्शान्त नहीं हुआ है अतः शुक्लादि शुद्ध कार्तिक लुप्त है।

सं० २०२० के संसर्प और क्षय मास में कृष्णादि पद्धति के अनुसार

शीत वर्षा और कुहरे के होते हुए भी बहुत सज्जनों ने प्रभु से अष्टग्रही के कुफल की शान्ति के लिए प्रार्थनाएं कीं कि संसार पर कोई आपत्ति न आए। इसी तरह सिंगापुर,

सं० २०२० के संसर्प और क्षय मास में कृष्णादि पद्धति के अनुसार वार्षिक श्राद्ध का निर्णय

कार्त्तिक कृष्ण का वार्षिक श्राद्ध प्रथम कार्त्तिक कृष्ण में, कार्त्तिक शुक्ल का वार्षिक श्राद्ध प्रथम (संसर्प) कार्त्तिक शुक्ल एवं मार्गशीर्ष (अहंस्पति) शुक्ल— इन दोनों पक्षों में तथा मार्गशीर्ष कृष्ण का वार्षिक श्राद्ध द्वि० (संसर्प) कार्त्तिक कृष्ण एवं पौष (अहंस्पति) कृष्ण—इन दोनों पक्षों में करें।

मार्ग शुक्ल का वार्षिक श्राद्ध मार्ग (अहंस्पति) शुक्ल पक्ष में एवं पौष कृष्ण का पौष (अहंस्पति) कृष्ण पक्ष में करें।

धार्मिक यज्ञों और प्रभु की सामूहिक प्रार्थनाओं का चमत्कार

(तात्कालिक विश्व संकट टल गया)

गत अष्टग्रही के समय साधारण जनता से लेकर विद्वानों तक सभी के हृदय में अमंगलहारी प्रभु की प्रसन्नता के लिए धार्मिक कृत्यों में शुभ संकल्प का उदय हुआ फिर क्या था—शहर शहर, ग्राम ग्राम में विश्व-कल्याणार्थ विश्व-शांति-यज्ञ, श्री भागवत रामायण-पारायण, कहीं जपानुष्ठान कहीं लक्ष-सहस्त्र-शतचण्डी कहीं अखण्ड पाठ कहीं एकोत्तरी कहीं अखण्ड नाम-संकीर्त्तन व कहीं दान यज्ञादि प्रारम्भ हो गए—जिनको गणना करना कठिन है। इतने यज्ञ इतने थोड़े समय में सत्ययुग में भी नहीं हुए होंगे। इसी समय महाबोधि सभा की ओर से परित्राणसूत्र का पारायण किया गया। मुसलमानों ने या अल्लाह के बड़े-बड़े वजीफे (जप) किए। यहां तक कि बूचड़ों ने भी बूचड़खाने बन्द कर दिए।

श्री महाराज शम्भु शंकरजी ने बताया कि एक अहमदाबाद के प्रान्त में ही ९ हजार, कलकत्ते में ४०० से भी अधिक विधि-विधानपूर्वक वैदिक यज्ञादि हुए। सम्पूर्ण भारत के यज्ञों की गणना करना तो असंभव ही है। इन यज्ञों के फलस्वरूप ही आने वाला अष्टग्रही जनित तात्कालिक संकट टल गया। अन्यथा—कहीं न कहीं महाविनाश निश्चित था। विपत्ति की पहले सूचना देकर ज्योतिषियों ने जनता को सचेत करके इस संकट से बचाया। कोई नास्तिक पुरुष माने या न माने यह सब यज्ञों का ही फल है कि जनता इस कुप्रभाव से मुक्त हो गई। जिन्होंने यज्ञार्थ धन-अन्नादि लगाया है वह उनका सद्व्यय सिद्ध हुआ क्योंकि इस धन से विश्व का कल्याण हुआ है।

गत सन् ११८६ ईस्वी में जब अष्टग्रह योग हुआ था तब भारत पर मुसलमानों के आक्रमण हुए इस बात का इतिहास साक्षी है। उस समय समाचार पत्रादि के अभाव से ज्योतिषी लोग इस तरह जनता से यज्ञादि नहीं करवा सके थे। इसके परिणामस्वरूप भारत कई शताब्दियों तक दासता की कड़ी बेड़ियों में जकड़ा रहा।

पाठक महोदयों! इस अष्टग्रही के प्रभाव से केवल भारतीय ही नहीं यहां तक कि उन्नतिशील अमेरिका एवं ब्रिटेनादि भी चिन्तित थे। अमेरिका के ज्योतिषियों ने तो इस अष्टग्रही के समय खण्ड प्रलय की भविष्यवाणी भी की थी। उन्होंने भूकम्प आदि से बचने के लिए विशेष प्रकार के मकान भी बनवाए थे। ब्रिटेन में इस योग के भय से, ४ फरवरी को एक ऊंचे पहाड़ (जो कि वहां का पवित्र स्थान माना जाता है) पर चढ़ कर भयानक शीत बर्फ और कुहर के होते हुए भी बहुत सज्जनों ने प्रभु से अष्टग्रही के कुफल की शांति के लिए प्रार्थनाएँ कीं कि संसार पर कोई आपत्ति न आए। इसी तरह सिंगापुर, बैंकाक और हांगकांग आदि विश्व भर में सामूहिक प्रार्थनाएं हुईं। जिसके फलस्वरूप विश्व में शांति स्थिर है।

ज्योतिश्शास्त्र के अनुसार सप्तग्रही व अष्टग्रही के अनन्तर दुर्भिक्ष अवश्य पड़ता है। जैसे लिखा भी है —

"दुर्भिक्षं राष्ट्रपीडा च तस्मिन् योगे न संशयः।" इसका प्रमाण, संवत् १९५६ विक्रमी का प्रसिद्ध महा दुर्भिक्ष है। यदि इस समय ऐसे यज्ञ न होते तो हम लोग सुख-शांति से न रहते। निश्चित ही दुर्भिक्ष महामारी से काफी हानि होती। "त्यजति पुत्रं च जननी" वाली उक्ति चरितार्थ होती।

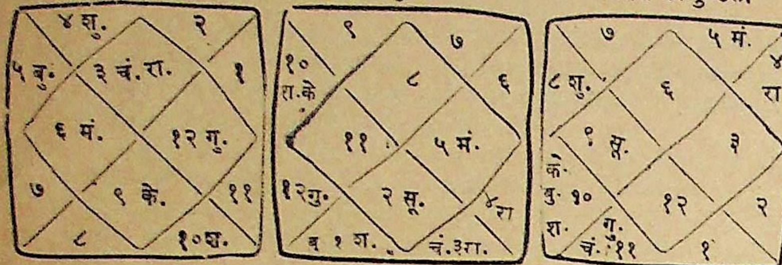
यदि भारत में कहीं इस योग से हानि होती तो नास्तिक लोग यज्ञादि की निन्दा करते कि इनसे शांति सम्भव नहीं। सन् १९३४ ई० (वि० १९९०) में जब मकर राशि पर सप्तग्रही योग बना था तब कोई यज्ञादि नहीं हुए इसके फलस्वरूप बिहार में भूकम्प से भारी क्षति हुई। १९६२ ईस्वी के अष्टग्रह योग में असंख्य यज्ञ पुण्यदान के होने पर भी अष्टग्रही का संकेत थोड़े रूप में हुआ। यह प्रभाव नगण्य सा रहा।

देखिए—ठीक अष्टग्रही के समय हांगकांग तथा भारत के पूना नगर से लेकर लूनावाड़ा, देहरोड एवं पीडा आदि गांवों तक में भूकम्पों के हल्के धक्के लगे। इस समाचार को उस समय प्रचारित तक नहीं होने दिया गया। ४ फरवरी १९६२ को नई दिल्ली में भूकम्प यन्त्रों ने भी भूकम्प का एक हल्का झटका अंकित किया था। २ फरवरी को भयंकर तूफान व झंझावात के कारण सम्पूर्ण स्वेज नहर पर व्यवहार रुका रहा। अष्टग्रही के उत्तर के रूप में काठमाण्डू नेपाल में भी १ मिनट २७ सैकिंड तक हल्का भूकम्प आया, जमीन के नीचे से भयंकर आवाज आई लोग कुछ तो अत्यधिक भयभीत होने के कारण एकदम खिड़कियों से कूद पड़े थे। इसी योग के समय बिहारादि में बर्फीले तूफान एवं शीत के कारण सैकड़ों व्यक्ति तथा लाखों पशु मर गए। यूरोप में अनेक विनाशकारी समुद्री तूफान, भयंकर आन्धी से हानि हुई। पीरू में हिमशिलाएं चार हजार मनुष्यों को क्षण भर में समेट ले गईं और सैकड़ों व्यक्ति लापता हो गए। युगोस्लाविया के सुकराज नगर को भूकम्प से भारी क्षति पहुँची थी। वहां ९० प्रतिशत घर वास-योग्य नहीं रहे। हवाई द्वीप के अनेक गांवों का तो सफाया ही हो गया। हजारों व्यक्तियों को इधर उधर भागना पड़ा। उस समय ब्रिटेन में भी भयंकर तूफानी हवाओं से बहुत हानि हुई। लन्दन के दक्षिणी तट पर जहाज डूबे। स्टाक होम में सैकड़ों मोटरों की दुर्घटनाएं हुईं। इन सबके प्रमाण हमारे पास हैं। ये दुर्घटनाएं यदि अष्टग्रही के कारण न थीं तो अन्य किस कारण से थीं? हम पर उस दयामय यज्ञेश्वर प्रभु की बड़ी कृपा हुई कि अष्टग्रही के तात्कालिक भयंकर फल को हल्के भूकम्पों के धक्कों में ही परिणत करके भारत को अभय कर दिया।

इस योग में प्रलय की भविष्यवाणी जिन्होंने की थी वे गल्ती पर थे हमने इस भ्रम का खण्डन इसी पञ्चाङ्ग में पहिले ही कर दिया था।

ज्योतिष एवं मीमांसोक्त यज्ञ भी एक प्रकार के विज्ञान हैं। विज्ञान के अन्य सिद्धान्तों की तरह ये दोनों विज्ञान भी ऋषियों की प्रखर बुद्धि एवं सुनिश्चित गुह्य सिद्धान्तों पर आधारित हैं। जो मनुष्य इस शास्त्र का संज्ञाप्रकरण भी न जानता हो यदि वह इस शास्त्र के सिद्धान्तों की हंसी उड़ावे तो ज्ञानीजन उसकी अज्ञानपूर्ण चेष्टा पर हंसेंगे ही

आकाशी कौंसिल का विचार सं० २०२०



आकाशी कौन्सिल ये सूर्य को स्थिति से देश का राजकीय शुभाशुभ, चन्द्रमासे राजा प्रजा की मानसिक भावनाएं मंगल से वस्तुओं के मूल्य कंट्रोल तथा उत्पातादि, बुध से व्यापारिक हालात गुरू से देश की शांति और विश्व को अर्थ व्यवस्था धन सम्पत्ति, शुक्र से धर्माचार्यों की स्थिति, शनि से श्रमिक वर्ग व यवनादिकों को गतिविधि,राहु से अन्त्यजों का उत्थानादि, केतु से देशों की आकस्मिक भयंकर उथल-पुथल देखी जाती है, इस वर्ष सब राष्ट्रों की कुण्डलियों एवं अन्य ग्रह योग देखते हुए ज्ञात होता है कि कुछ राष्ट्रों में परस्पर विग्रह अशांति रक्त पातादि के बाद वहाँ कोई विशेष परिवर्तन होगा और ९ जून के बाद २६ जुलाई के अंदर किसी दो राष्ट्रों के परस्पर सम्बन्ध बिगड़ते और कहीं प्राकृतिक उत्पातादि के होने के भी योग हैं. गत वर्ष की अपेक्षा साम्यवादियों का बल और बढ़ेगा अमेरिका को चिन्ता व्यापेगी, ब्रिटेन अमेरिका को अर्ब जैसे राज्यों के भी झगड़ों में उलझना पड़ेगा। श्रावण के बाद खुराशान में उत्पात भय होगा। इस वर्ष क्षयमास भी है इसका फल विश्व में कहीं दुर्भिक्ष कहीं युद्ध, विग्रह छत्र भगादि से पीड़ा देने वाला लिखा है। गत कूट योग का कुफल भी अभी विश्व में सन् १९६५ तक रहेगा। हम पहले गत वर्ष के पञ्चाङ्गों में लिख चुके हैं।

भारत सरकार—इस वर्ष की ग्रह स्थिति से भारत के शासक शत्रु देशों से हैरान व चिन्तित होते हुए भी अपने आन्तरिक बल को दृढ़ बनाए रखेंगे। सीमा के झगड़े इस वर्ष भी निबृत्त नहीं होंगे कहीं उग्ररूप बनेगा। मिथुन के राहु आने पर कहीं सैनिक संघर्ष भी संभव है। समुद्र तटवर्ती स्थानों पर सरकार को विशेष व्यय करना पड़ेगा, ३५ अक्षांश के आगे तथा १९ से २४ अक्षांश तक की पृथ्वी से सरकार को खनिज की आवश्यकीय कीमती वस्तुओं की प्राप्ति होने के योग हैं, उत्तर भारतीय किसी विशिष्ट व्यक्ति को अपना यहां का पद छोड़ अन्यत्र जाकर अन्य पद ग्रहण करना पड़ेगा, विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा पूर्ववत् बनी रहेगी, १६ मार्च के बाद टैक्स वसूल नीति में कुछ परिवर्तन होने के योग हैं।

भारत—इस वर्ष मध्यम वर्ग के जनसमूह एवं कई प्रदेशों में व्यापारी वर्ग की आर्थिक स्थिति खराब रहेगी पैसे की तंगी का विशेष अनुभव होगा। जनता इधर-उधर के उपद्रवों के भय का व अन्य नई नई चिन्ताओं से ग्रस्त रहेगी और राज्य सत्ता से श्रद्धा विश्वास कम होता जायगा। अन्य प्रदेशों की अपेक्षा भारत के ईशान कोणस्थ कृषक लोग सुखी व लाभ में रहगे, उद्योग धंधों से भी जनता लाभ में रहेगी। मारवाड़ गुजरात में साम्यवाद का असर बढ़ेगा, जिसका कुछ प्रभाव अन्यत्र भी पड़ेगा, कर्मचक्रोक्त ग्रह स्थिति नेपाल में रक्तपात और अक्षांश २७ रेखांश ९० के करीब सैनिक संघर्ष व युद्ध से आतंक उत्पन्न करेगी।

भारत के ३४ अक्षांश के लगभग एक बार अकस्मात् भय चिन्ता व्यापेगी जो अल्प समय में ही दूर हो जावेगी।

विश्व के अन्य प्रमुख राष्ट्र—रूस में इस वर्ष उन्नति के योग हैं यहाँ की विदेश नीति में कुछ परिवर्तन होंगे, उत्तरीय भाग में कुछ साधारण-सी गड़बड़ी होगी प्रधानमंत्री के स्वास्थ्य में बिगाड़ होगा।

चीन—यह वर्ष इस देश के लिए अच्छा नहीं है जन धन की हानि होगी जापान व नेपाल से भी सम्बन्ध बिगड़ेगा। भारत से विशेष शत्रुता बढ़ेगी, यहाँ की गरीब जनता कष्ट में रहेगी।

ब्रिटेन अमेरिका—इस वर्ष ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी और धंधा उद्योगों में कठिनाइयें पेश आएंगी प्रजा के विचारों में विशेष परिवर्तन होगा, किसी विशिष्ट व्यक्ति को मृत्यु से शोक भी सहन करना पड़ेगा। अमेरिका के लिए वर्ष चिन्ताप्रद और विशेष खर्च कराने वाला है।

पाकिस्तान—इस वर्ष शनि राहु के भ्रमण वशात यद्यपि उन्नति के योग हैं पर कहीं राज्य सत्ता के विरुद्ध विद्रोह और कुछ शासकों के प्रभाव कम होने और पदच्युत होने के भी योग हैं, अपने पड़ोसी अफगानिस्तान तथा भारत से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। प्रत्युत १५ मई या २० अगस्त के बाद और भी बिगड़ेंगे।

व्यापारिक जगत—इस वर्ष दक्षिण भारत में ज्वार, बाजरा, मकई, कपास, तम्बाकू की उपज अच्छी होने के योग हैं, ता० ७ अगस्त से ४ दिसम्बर तक बर्तन, वस्त्र, खाण्ड शक्कर, लवण, घृत, तेल तथा अनाज यह सब तेज हों इनके संग्रहकर्ता व्यापारी लाभ में रहेंगे। २६ अप्रैल से जिन जिन वस्तुओं में मंदी चलने लगे तो समझ लो कि वह वस्तु विशेष मंदी हो जाएगी।

रूई—इस वर्ष रुई कपास के व्यापारी अच्छे लाभ में रहेंगे, रुई से भारी लाभ उठाना हो तो पत्र व्यवहार करें, लाभ का अचूक अवसर मिलेगा। १७ मार्च से २६ मार्च तक रुई के वायदे में मंदी की लाईन रहेगी। अच्छी किस्म की रुई की उत्पत्ति कम, नीचे दर्जे की कुछ ज्यादा होगी।

शेयर—१२ जुलाई के करीब जिन जिन शेयरों में अच्छी मंदी नजर आए उनकी खरीद आगे लाभप्रद रहेगी। २८ जुलाई के लगभग शेयरों में तेजी होगी। आगे १३ अगस्त के करीब शेयरों में जो तेजी चलेगी उसका लाभ शीघ्र उठा लेना अन्यथा लाभ हाथ से निकल जावेगा। (अगला मैटर पृ० ११८ पर देखें)

—:लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की पद्धति:—

—:लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्त्तन की पद्धतिः—

इस पञ्चाङ्ग में दी गई दैनिक लग्न सारिणी, सूर्य चन्द्र के उदयास्त एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल चण्डीगढ़ एवं रोपड़ (पंजाब) तथा इनके निकटवर्ती स्थानों के लिए हैं। इन पर से भारत के प्रमुख २४ नगरों के लग्न समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल तथा सूर्य चन्द्र के उदयास्त ज्ञात करने के लिए आगे पृ० १०-११ पर "पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी" दी गई है। इस सारिणी के आधार पर इन २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न की समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल एवं सूर्य चन्द्र के उदयास्त काल, अत्यन्त सरलता पूर्वक बिना किसी प्रकार की गणित के ज्ञात किए जा सकते हैं। विधिएं नीचे दी जा रही हैं—

लग्न समाप्ति काल के परिवर्तन की विधिः—'पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी' में अभीष्ट नगर के नीचे एवं अभीष्ट लग्न (जो सारिणी के बाईं ओर सर्व प्रथम कालम में है) के आगे लिखे मिनटों को दैनिक लग्न सारिणी में दिए गए अभीष्ट प्रविष्टे (हिन्दी सौर तारीख) को अभीष्ट लग्न के समाप्ति काल में चिन्हानुसार जोड़ने से अभीष्ट नगर में अभीष्ट प्रविष्टे को अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल प्राप्त होगा। जैसे १ वैशाख (वैशाख प्रविष्टे १) को कलकत्ता में सिंह लग्न का समाप्ति काल जानना है। 'पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन-सारिणी' में कलकत्ता के नीचे एवं सिंह लग्न के आगे −४५ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें "दैनिक लग्न सारिणी" में १ वैशाख को दिए गए सिंह के समाप्ति काल १६ घंटा २५ मिनट में से घटाने पर कलकत्ता में इस दिन सिंह लग्न का समाप्ति काल १५ घंटा ४० मिनट निकल आया।

सूर्योदयास्त परिवर्त्तन की विधिः—अभीष्ट तारीख का सूर्योदय और तात्कालिक (सूर्योदयकालिक) सूर्यक्रान्ति इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें। तदनन्तर "पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी" में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदयकालिक दक्षिण या उत्तर क्रान्ति (जो सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में दी गई है) के आगे दिए गए मिनटों को इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात किए सूर्योदय में चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्योदय काल ज्ञात होगा। जैसे बम्बई में १० मई को सूर्योदय काल ज्ञात करना है—इस पञ्चाङ्ग में १० मई को सूर्योदय ५ घं० ३१ मि० लिखा है। इस समय सूर्यकान्ति + १७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में उदयकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश के आगे बम्बई के नीचे + ३३ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें ५ घं० ३१ मि० में जोड़ने पर इस दिन बम्बई में सूर्योदय काल ६ घं० ४ मि० प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सूर्यास्तकालिक सूर्य की क्रान्ति से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्यास्त काल जाना जा सकता है। सूर्यास्तकाल जानने के लिए सारिणी का प्रयोग करते समय क्रान्ति के अंश सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखने चाहिएँ। जैसे—बम्बई में १० मई को सूर्यास्त ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में इस दिन सूर्यास्त काल ७ घं० ७ मि० लिखा है। इस समय सूर्य क्रान्ति + १७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश (जो सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में दिए गए हैं) के बाईं ओर बम्बई के नीचे −२ मिनट लिखे हैं। इन्हें इस पञ्चाङ्ग से उपलब्ध सू[र्या]स्त काल ७ घं० ७ मि० में से घटाने पर १० मई को बम्बई में सूर्यास्त काल ७ घं० ५ मि० निकल आया।

चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की विधिः—सूर्योदयास्त के परिवर्त्तन की तरह चन्द्रोदयास्त भी चन्द्रक्रान्ति के आधार पर परिवर्तित किए जा सकते हैं। यहाँ भी सूर्योदयास्त के परिवर्त्तन की भान्ति चन्द्रोदय परिवर्त्तन के लिए उदयकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में एवं चन्द्रास्त परिवर्त्तन के लिए अस्तकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखें। जैसे—१ मई १९६३ को काशी में चन्द्रोदय ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में चन्द्रोदय १२ घं० २९ मि० लिखा है। इसी समय चन्द्रक्रान्ति + १७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में काशी के नीचे एवं उदयकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश के आगे −१६ मि० लिखा है। इस पञ्चाङ्ग में लिखे चन्द्रोदय १२ घं० २९ मि० में से १६ मि० घटाने पर १ मई को काशी में चन्द्रोदय का समय १२ घ० १३ मिनट हुआ। चन्द्रास्त काल-परिवर्तन का उदाहरण भी लीजिए—१ मई १९६३ को इस पञ्चाङ्ग में चन्द्रास्त १ घं० ३६ मि० लिखा है। इस समय चन्द्रक्रान्ति + १९ अंश (उत्तर क्रान्ति १९ अंश) है। सारिणी में काशी के नीचे अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १९ अंश के आगे −३४ मिनट लिखा है। इस दिन के चन्द्रास्त १ घं० ३६ मि० में से ३४ मि० घटाने पर १ घं० २ मि० १ मई को काशी में चन्द्रास्त-काल प्राप्त हुआ।

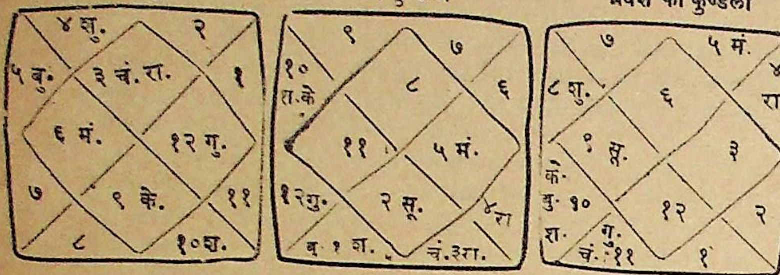
तिथ्यादि समाप्ति काल के परिवर्त्तन की विधिः—जिस दिन तिथि, नक्षत्र, योग के समाप्ति काल को अभीष्ट नगरीय बनाना हो उस दिन की सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति ज्ञात करो। तदनन्तर सारिणी में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति के आ[गे] दिए ग[ए] मिनटों को घड़ी पल बनाकर चिन्ह के विपरीत तिथ्यादि क[े] समाप्ति काल में जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगरीय तिथ्यादि समाप्ति काल प्राप्त होंगे।

नोटः—इस पञ्चाङ्ग में सूर्य की दैनिक क्रान्ति दैनिक स्पष्ट ग्रहों के बाद मंगल आदि ग्रहों की क्रान्ति शरों के अनन्तर और चन्द्रमा की दैनिक क्रान्ति दैनिक चन्द्रमा के साथ चन्द्रोदयास्त के निकट ही दी गई है। क्रान्ति के साथ दिया गया + यह चिन्ह उत्तर क्रान्ति एवं − यह चिन्ह दक्षिण क्रान्ति को बतलाता है। इस पञ्चाङ्ग में दी गई क्रान्तिएं ० घं. ० मि. की है। इन्हें उदयकालिक या अस्तकालिक बनाने के लिए जबानी ही अनुपात बड़ी सरलता से किया जा सकता है।

—:०:—

आकाशी कौंसिल का विचार सं० २०२०

स्वतन्त्र भारत के १७ वें वर्ष-प्रवेश की कुण्डली — मुस्लिम राष्ट्रों के नववर्ष प्रवेश की कुण्डली — यूरोपीय राष्ट्रों के नववर्ष-प्रवेश की कुण्डली



आकाशी कौन्सिल ये सूर्य को स्थिति से देश का राजकीय शुभाशुभ, चन्द्रमासे राजा प्रजा की मानसिक भावनाएं मंगल से वस्तुओं के मूल्य कंट्रोल तथा उत्पातादि, बुध से व्यापारिक हालात गुरू से देश की शांति और विश्व को अर्थ व्यवस्था धन सम्पत्ति, शुक्र से धर्माचार्यों की स्थिति, शनि से श्रमिक वर्ग व यवनादिकों को गतिविधि, राहु से अन्त्यजों का उत्थानादि, केतु से देशों की आकस्मिक भयंकर उथल-पुथल देखी जाती है, इस वर्ष सब राष्ट्रों की कुण्डलियों एवं अन्य ग्रह योग देखते हुए ज्ञात होता है कि कुछ राष्ट्रों में परस्पर विग्रह अशांति रक्त पातादि के बाद वहाँ कोई विशेष परिवर्तन होगा और ९ जून के बाद २६ जुलाई के अंदर किसी दो राष्ट्रों के परस्पर सम्बन्ध बिगड़ने और कहीं प्राकृतिक उत्पातादि के होने के भी योग हैं गत वर्ष की अपेक्षा साम्यवादियों का बल और बढ़ेगा अमेरिका को चिन्ता व्यापेगी, ब्रिटेन अमेरिका को अर्ब जैसे राज्यों के भी झगड़ों में उलझना पड़ेगा। श्रावण के बाद खुराशान में उत्पात भय होगा। इस वर्ष क्षयमास भी है इसका फल विश्व में कहीं दुर्भिक्ष कहीं युद्ध, विग्रह छत्र भगादि से पीड़ा देने वाला लिखा है। गत कूट योग का कुफल भी अभी विश्व में सन् १९६५ तक रहेगा। हम पहले गत वर्ष के पञ्चाङ्गों में लिख चुके हैं।

भारत सरकार--इस वर्ष की ग्रह स्थिति से भारत के शासक शत्रु देशों से हैरान व चिन्तित होते हुए भी अपने आन्तरिक बल को दृढ़ बनाए रखेंगे। सीमा के झगड़े इस वर्ष भी निवृत्त नहीं होंगे कहीं उग्ररूप बनेगा। मिथुन के राहु आने पर कहीं सैनिक संघर्ष भी संभव है। समुद्र तटवर्ती स्थानों पर सरकार को विशेष व्यय करना पड़ेगा, ३५ अक्षांश के आगे तथा १९ से २४ अक्षांश तक की पृथ्वी से सरकार को खनिज की आवश्यकीय कीमती वस्तुओं की प्राप्ति होने के योग हैं, उत्तर भारतीय किसी विशिष्ट व्यक्ति को अपना यहां का पद छोड़ अन्यत्र जाकर अन्य पद ग्रहण करना पड़ेगा, विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा पूर्ववत् बनी रहेगी, १६ मार्च के बाद टैक्स वसूल नीति में कुछ परिवर्तन होने के योग हैं।

भारत--इस वर्ष मध्यम वर्ग के जनसमूह एवं कई प्रदेशों में व्यापारी वर्ग की आर्थिक स्थिति खराब रहेगी पैसे की तंगी का विशेष अनुभव होगा। जनता इधर-उधर के उपद्रवों के भय का व अन्य नई नई चिन्ताओं से ग्रस्त रहेगी और राज्य सत्ता से श्रद्धा विश्वास कम होता जायगा। अन्य प्रदेशों की अपेक्षा भारत के ईशान कोणस्थ कृषक लोग सुखी व लाभ में रहेंगे, उद्योग धंधों से भी जनता लाभ में रहेगी। मारवाड़ गुजरात में साम्यवाद का असर बढ़ेगा, जिसका कुछ प्रभाव अन्यत्र भी पड़ेगा, कर्मक्कोक्त ग्रह स्थिति नेपाल में रक्तपात और अक्षांश २७ रेखांश ९० के करीब सैनिक संघर्ष व युद्ध से आतंक उत्पन्न करेगी।

भारत के ३४ अक्षांश के लगभग एक बार अकस्मात् भय चिन्ता व्यापेगी जो अल्प समय में ही दूर हो जावेगी।

विश्व के अन्य प्रमुख राष्ट्र--रूस में इस वर्ष उन्नति के योग हैं यहाँ की विदेश नीति में कुछ परिवर्तन होंगे, उत्तरीय भाग में कुछ साधारण-सी गड़बड़ी होगी प्रधानमंत्री के स्वास्थ्य में बिगाड़ होगा।

चीन--यह वर्ष इस देश के लिए अच्छा नहीं है जन धन की हानि होगी जापान व नेपाल से भी सम्बन्ध बिगड़ेगा। भारत से विशेष शत्रुता बढ़ेगी, यहाँ की गरीब जनता कष्ट में रहेगी।

ब्रिटेन अमेरिका--इस वर्ष ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी और धंधा उद्योगों में कठिनाइयें पेश आएंगी प्रजा के विचारों में विशेष परिवर्तन होगा, किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक भी सहन करना पड़ेगा। अमेरिका के लिए वर्ष चिन्ताप्रद और विशेष खर्च कराने वाला है।

पाकिस्तान--इस वर्ष शनि राहु के भ्रमण वशात यद्यपि उन्नति के योग हैं पर कहीं राज्य सत्ता के विरुद्ध विद्रोह और कुछ शासकों के प्रभाव कम होने और पदच्युत होने के भी योग हैं, अपने पड़ोसी अफगानिस्तान तथा भारत से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। प्रत्युत १५ मई या २० अगस्त के बाद और भी बिगड़ेंगे।

व्यापारिक जगत--इस वर्ष दक्षिण भारत में ज्वार, बाजरा, मकई, कपास, तम्बाक की उपज अच्छी होने के योग हैं, ता० ७ अगस्त से ४ दिसम्बर तक बर्तन, वस्त्र, खाण्ड शक्कर, लवण, घृत, तेल तथा अनाज यह सब तेज हों इनके संग्रहकर्ता व्यापारी लाभ में रहेंगे। २६ अप्रैल से जिन जिन वस्तुओं में मंदी चलने लगे तो समझ लो कि वह वस्तु विशेष मंदी हो जाएगी।

रूई--इस वर्ष रूई कपास के व्यापारी अच्छे लाभ में रहेंगे, रूई से भारी लाभ उठाना हो तो पत्र व्यवहार करें, लाभ का अचूक अवसर मिलेगा। १७ मार्च से २६ मार्च तक रूई के वायदे में मंदी की लाईन रहेगी। अच्छी किस्म की रूई की उत्पत्ति कम, नीचे दर्जे की कुछ ज्यादा होगी।

शेयर--१२ जुलाई के करीब जिन जिन शेयरों में अच्छी मंदी नजर आए उनकी खरीद आगे लाभप्रद रहेगी। २८ जुलाई के लगभग शेयरों में तेजी होगी। आगे १३ अगस्त के करीब शेयरों में जो तेजी चलेगी उसका लाभ शीघ्र उठा लेना अन्यथा लाभ हाथ से निकल जावेगा। (अगला मैटर पृ० ११८ पर देखें)

—:लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्त्तन की पद्धति:—

इस पञ्चाङ्ग में दी गई दैनिक लग्न सारिणी, सूर्य चन्द्र के उदयास्त एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल चण्डीगढ़ एवं रोपड़ (पंजाब) तथा इनके निकटवर्ती स्थानों के लिए हैं। इन पर से भारत के प्रमुख २४ नगरों के लग्न समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल तथा सूर्य चन्द्र के उदयास्त ज्ञात करने के लिए आगे पृ० १०-११ पर "पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी" दी गई है। इस सारिणी के आधार पर इन २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न की समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल एवं सूर्य चन्द्र के उदयास्त काल, अत्यन्त सरलता पूर्वक बिना किसी प्रकार की गणित के ज्ञात किए जा सकते हैं। विधिएं नीचे दी जा रही हैं—

लग्न समाप्ति काल के परिवर्तन की विधि:—'पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी' में अभीष्ट नगर के नीचे एवं अभीष्ट लग्न (जो सारिणी के बाईं ओर सर्व प्रथम कालम में है) के आगे लिखे मिनटों को दैनिक लग्न सारिणी में दिए गए अभीष्ट प्रविष्टे (हिन्दी सौर तारीख) को अभीष्ट लग्न के समाप्ति काल में चिन्हानुसार जोड़ने से अभीष्ट नगर में अभीष्ट प्रविष्टे को अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल प्राप्त होगा। जैसे १ वैशाख (वैशाख प्रविष्टे १) को कलकत्ता में सिंह लग्न का समाप्ति काल जानना है। 'पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी' में कलकत्ता के नीचे एवं सिंह लग्न के आगे −४५ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें "दैनिक लग्न सारिणी" में १ वैशाख को दिए गए सिंह के समाप्ति काल १६ घंटा २५ मिनट में से घटाने पर कलकत्ता में इस दिन सिंह लग्न का समाप्ति काल १५ घंटा ४० मिनट निकल आया।

सूर्योदयास्त परिवर्त्तन की विधि:—अभीष्ट तारीख का सूर्योदय और तात्कालिक (सूर्योदयकालिक) सूर्यक्रान्ति इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें। तदनन्तर "पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी" में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदयकालिक दक्षिण या उत्तर क्रान्ति (जो सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में दी गई है) के आगे दिए गए मिनटों को इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात किए सूर्योदय में चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्योदय काल ज्ञात होगा। जैसे बम्बई में १० मई को सूर्योदय काल ज्ञात करना है—इस पञ्चाङ्ग में १० मई को सूर्योदय ५ घं० ३१ मि० लिखा है। इस समय सूर्यक्रान्ति +१७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में उदयकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश के आगे बम्बई के नीचे +३३ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें ५ घं० ३१ मि० में जोड़ने पर इस दिन बम्बई में सूर्योदय काल ६ घं० ४ मि० प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सूर्यास्तकालिक सूर्य की क्रान्ति से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्यास्त काल जाना जा सकता है। सूर्यास्तकाल जानने के लिए सारिणी का प्रयोग करते समय क्रान्ति के अंश सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखने चाहिएं। जैसे—बम्बई में १० मई को सूर्यास्त ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में इस दिन सूर्यास्त काल ७ घं० ७ मि० लिखा है। इस समय सूर्य क्रान्ति +१७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश (जो सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में दिए गए हैं) के बाईं ओर बम्बई के नीचे −२ मिनट लिखे हैं। इन्हें इस पञ्चाङ्ग से उपलब्ध सूर्यास्त काल ७ घं० ७ मि० में से घटाने पर १० मई को बम्बई में सूर्यास्त काल ७ घं० ५ मि० निकल आया।

चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की विधि:—सूर्योदयास्त के परिवर्त्तन की तरह चन्द्रोदयास्त भी चन्द्रक्रान्ति के आधार पर परिवर्तित किए जा सकते हैं। यहां भी सूर्योदयास्त के परिवर्त्तन की भान्ति चन्द्रोदय परिवर्त्तन के लिए उदयकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में एवं चन्द्रास्त परिवर्त्तन के लिए अस्तकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखें। जैसे—१ मई १९६३ को काशी में चन्द्रोदय ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में चन्द्रोदय १२ घं० २९ मि० लिखा है। इसी समय चन्द्रक्रान्ति +१७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में काशी के नीचे एवं उदयकालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश के आगे −१६ मि० लिखा है। इस पञ्चाङ्ग में लिखे चन्द्रोदय १२ घं० २९ मि० में से १६ मि० घटाने पर १ मई को काशी में चन्द्रोदय का समय १२ घं० १३ मिनट हुआ। चन्द्रास्त काल-परिवर्त्तन का उदाहरण भी लीजिए—१ मई १९६३ को इस पञ्चाङ्ग में चन्द्रास्त १ घं० ३६ मि० लिखा है। इस समय चन्द्रक्रान्ति +१९ अंश (उत्तर क्रान्ति १९ अंश) है। सारिणी में काशी के नीचे अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १९ अंश के आगे −३४ मिनट लिखा है। इस दिन के चन्द्रास्त १ घं० ३६ मि० में से ३४ मि० घटाने पर १ घं० २ मि० १ मई को काशी में चन्द्रास्त-काल प्राप्त हुआ।

तिथ्यादि समाप्ति काल के परिवर्त्तन की विधि:—जिस दिन तिथि, नक्षत्र, योग के समाप्ति काल को अभीष्ट नगरीय बनाना हो उस दिन की सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति ज्ञात करो। तदनन्तर सारिणी में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति के आगे दिए गए मिनटों को घड़ी पल बनाकर चिन्ह के विपरीत तिथ्यादि के समाप्ति काल में जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगरीय तिथ्यादि समाप्ति काल प्राप्त होंगे।

नोट:—इस पञ्चाङ्ग में सूर्य की दैनिक क्रान्ति दैनिक स्पष्ट ग्रहों के बाद मंगल आदि ग्रहों की क्रान्ति शरों के अनन्तर और चन्द्रमा की दैनिक क्रान्ति दैनिक चन्द्रमा के साथ चन्द्रोदयास्त के निकट ही दी गई है। क्रान्ति के साथ दिया गया + यह चिन्ह उत्तर क्रान्ति एवं − यह चिन्ह दक्षिण क्रान्ति को बतलाता है। इस पञ्चाङ्ग में दी गई क्रान्तिएं ० घं. ० मि. की है। इन्हें उदयकालिक या अस्तकालिक बनाने के लिए जबानी ही अनुपात बड़ी सरलता से किया जा सकता है।

—:०:—

पंचाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग १ म)

(लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन के लिए)

लग्न	उदयकालिक दक्षिण क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मंडी (हि.प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर	हरिद्वार	हिसार	अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	।	म.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं.
	०	+ ८	+ ५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	− ५	+८	+४	−१	− ९	−३३	+२	+ ५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+ ८	−५	+ ४	०
	१	८	४	१२	४७	२५	२	०	६	८	४	२	१०	३४	२	५	२१	१५	०	१५	१	१	८	५	४	१
कुम्भ	२	८	३	१२	४७	२५	३	०	६	८	३	२	११	३४	२	५	२१	१४	०	१७	+१	१	९	६	४	२
	३	८	३	११	४८	२६	३	०	६	८	३	२	१२	३५	२	५	२१	१३	०	१८	०	१	९	६	४	३
	४	९	२	१०	४९	२६	३	०	७	९	३	२	१२	३५	२	५	२२	१२	०	१९	०	१	९	६	४	४
	५	९	१	१०	५०	२७	३	०	७	९	२	२	१३	३६	२	५	२२	११	०	२१	०	१	१०	६	४	५
	६	९	+ १	९	५०	२७	३	०	८	९	२	२	१४	३६	२	६	२३	१०	०	२२	०	१	१०	६	४	६
	७	९	०	९	५१	२८	३	०	८	९	२	३	१५	३७	२	६	२३	९	०	२४	०	१	१०	६	३	७
	८	९	− १	८	५२	२८	३	०	९	९	१	३	१६	३७	२	६	२४	८	०	२५	०	१	११	६	३	८
कन्या	९	९	१	८	५३	२९	३	०	९	१०	१	३	१७	३८	२	६	२४	७	०	२७	०	१	११	६	३	९
	१०	९	२	७	५३	२९	४	०	९	१०	+१	३	१८	३८	२	६	२५	६	०	२८	−१	१	११	६	३	१०
	११	९	३	७	५४	३०	४	०	१०	१०	०	३	१८	३८	२	६	२५	५	+१	३०	१	१	१२	६	३	११
	१२	९	३	६	५५	३०	४	०	१०	१०	०	४	१९	३९	२	७	२६	४	१	३१	१	१	१२	६	३	१२
मकर	१३	९	४	५	५६	३१	४	०	११	१०	०	४	२०	३९	२	७	२६	३	१	३३	१	१	१२	६	३	१३
	१४	९	५	५	५६	३१	४	०	११	११	−१	४	२१	४०	२	७	२७	+ २	१	३४	१	१	१३	६	२	१४
	१५	१०	५	४	५७	३२	४	०	११	११	१	४	२२	४०	२	७	२७	०	१	३६	१	१	१३	६	२	१५
	१६	१०	६	४	५८	३२	४	०	१२	११	२	४	२३	४१	२	७	२८	− १	१	३८	२	१	१४	६	२	१६
	१७	१०	७	३	५९	३३	५	−१	१२	११	२	५	२४	४१	२	८	२८	२	१	३९	२	१	१४	७	२	१७
	१८	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	२	५	२५	४२	१	८	२९	३	२	४१	२	१	१४	७	२	१८
तुला	१९	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	३	५	२६	४२	१	८	२९	४	२	४३	२	१	१५	७	२	१९
	२०	१०	९	+ १	६१	३५	५	१	१४	१२	३	५	२७	४३	१	८	३०	५	२	४४	२	१	१५	७	१	२०
धनु	२१	१०	१०	०	६२	३५	५	१	१४	१२	३	६	२८	४४	१	८	३०	६	२	४६	२	१	१५	७	१	२१
	२२	१०	११	०	६३	३६	५	१	१५	१२	४	६	२९	४४	१	८	३१	८	२	४८	३	१	१६	७	१	२२
वृश्चि.	२३	१०	१२	− १	६४	३६	५	१	१५	१३	४	६	३०	४५	१	९	३१	९	२	४९	३	१	१६	७	१	२३
	२४	१०	१३	२	६५	३७	६	१	१६	१३	५	६	३१	४५	१	९	३२	१०	२	५१	३	१	१७	७	१	२४
	२५	१०	१४	२	६६	३८	६	१	१६	१३	५	७	३२	४६	१	९	३३	११	२	५३	३	−१	१७	७	+ १	२५
	२६	११	१४	३	६७	३८	६	१	१७	१४	६	७	३३	४६	१	९	३३	१३	२	५५	४	०	१८	७	०	२६
	२७	११	१५	४	६८	३९	६	१	१७	१४	६	७	३४	४७	१	१०	३४	१४	३	५७	४	०	१८	७	०	२७
	२८	११	१६	५	६९	४०	६	१	१८	१४	७	८	३६	४८	१	१०	३५	१५	३	५९	४	०	१९	७	०	२८
	२९	११	१७	५	७०	४०	७	२	१९	१४	७	८	३७	४८	१	१०	३५	१७	३	६१	४	०	१९	७	०	२९

पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग २ य)

लग्न	उदय कालिक उत्तर क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मण्डी (हि.प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर (का.)	हरिद्वार	हिसार	अस्त कालिक दक्षिण क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं.
	०	+८	+५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	−५	+८	+४	−१	−९	−३३	+२	+५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+८	−५	+४	०
	१	८	५	१३	४५	२४	२	१	५	८	४	१	८	३३	२	४	२०	१७	०	१२	१	१	८	५	५	१
सिंह	२	८	६	१४	४५	२४	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१९	१८	−१	११	१	१	७	५	५	२
	३	८	७	१४	४४	२३	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१८	१९	१	९	१	१	७	५	५	३
	४	८	७	१५	४३	२३	२	१	४	७	५	−१	६	३१	२	४	१८	२०	१	८	२	२	७	५	५	४
	५	८	८	१५	४२	२२	२	१	३	७	६	०	५	३१	२	४	१८	२१	१	६	२	२	६	५	५	५
	६	८	९	१६	४०	२२	१	१	३	७	६	०	४	३०	२	४	१७	२२	१	५	२	२	६	५	५	६
	७	८	९	१६	४१	२१	१	१	२	६	६	०	३	३०	२	४	१६	२३	१	३	२	२	६	५	५	७
	८	८	१०	१७	४०	२१	१	१	२	६	७	०	२	३०	२	३	१६	२४	१	−२	२	२	५	५	५	८
मीन	९	७	११	१८	४०	२०	१	१	२	६	७	०	२	२९	२	३	१६	२५	१	०	२	२	५	५	६	९
	१०	७	११	१८	३९	२०	१	१	१	६	७	+१	−१	२९	२	३	१५	२६	१	+१	२	२	५	५	६	१०
	११	७	१२	१९	३८	१९	१	१	−१	६	८	१	०	२८	२	३	१५	२७	१	३	३	२	४	५	६	११
	१२	७	१३	१९	३७	१९	१	१	०	६	८	१	+१	२८	२	३	१४	२८	२	४	३	२	४	५	६	१२
कर्क	१३	७	१३	२०	३६	१८	+१	१	०	५	८	१	२	२७	२	३	१४	२९	२	६	३	२	४	५	६	१३
	१४	७	१४	२०	३६	१८	०	१	+१	५	९	२	३	२७	२	२	१४	३०	२	७	३	२	३	४	६	१४
	१५	७	१५	२१	३५	१७	०	१	१	५	९	२	४	२६	२	२	१३	३१	२	९	३	२	३	४	७	१५
	१६	७	१५	२२	३४	१७	०	२	२	५	१०	२	५	२६	२	२	१३	३२	२	१०	३	२	३	४	७	१६
	१७	७	१६	२२	३३	१६	०	२	२	४	१०	२	६	२५	२	२	१२	३३	२	१२	४	२	२	४	७	१७
	१८	७	१७	२३	३३	१५	०	२	२	४	१०	२	७	२५	२	२	११	३५	२	१४	४	२	२	४	७	१८
मेष	१९	७	१८	२४	३२	१५	०	२	३	४	११	३	८	२४	[illegible]	१	११	३६	२	१५	४	२	१	४	७	१९
	२०	७	१८	२४	३१	१४	०	२	३	४	११	३	९	२४	२	१	१०	३७	३	१७	४	२	१	४	७	२०
मिथुन	२१	६	१९	२५	३०	१४	−१	२	४	४	११	३	१०	२३	२	१	१०	३८	३	१९	४	२	+१	४	७	२१
	२२	६	२०	२५	२९	१३	१	२	४	३	१२	३	११	२३	२	१	९	३९	३	२०	५	२	०	४	८	२२
वृष	२३	६	२१	२६	२८	१३	१	२	५	३	१२	३	११	२२	२	+१	९	४१	३	२२	५	२	०	४	८	२३
	२४	६	२२	२७	२७	१२	१	२	५	३	१३	४	१३	२१	२	०	८	४२	३	२४	५	२	−१	४	८	२४
	२५	६	२३	२८	२६	११	१	२	६	२	१३	४	१४	२१	२	०	८	४३	३	२६	५	२	१	४	८	२५
	२६	६	२४	२८	२६	११	१	२	६	२	१४	४	१५	२०	२	०	७	४४	३	२८	५	२	२	४	८	२६
	२७	६	२५	२९	२५	१०	२	२	७	२	१४	५	१६	२०	२	०	६	४६	३	३०	६	२	२	३	९	२७
	२८	६	२५	३०	२४	९	२	३	७	२	१५	५	१७	१९	२	−१	६	४७	४	३२	६	२	२	३	९	२८
	२९	६	२६	३१	२२	९	२	३	८	१	१५	५	१८	१८	२	१	५	४९	४	३४	६	२	३	३	९	२९
	३०	+५	+२७	+३२	−२१	−८	−२	+३	+९	+१	+१६	+५	+२०	−१७	+२	−१	−४	+५०	−४	+३६	+६	−३	−४	−३	+९	३०

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।२३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

ता०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२८	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क.
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२४	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्ट	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१८।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१८।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१८।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१८।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१८।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१८।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१७।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१७।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१७।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१७।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१७।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१७।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१७।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१७।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१७।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१७।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१७।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१७।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१७।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१७।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१७।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१६।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१६।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१६।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१६।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१६।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१६।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१६।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१६।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१६।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्ट	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१८।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१८।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१८।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१८।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१८।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१७।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१७।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१७।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१७।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१७।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१७।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१७।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१७।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१७।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१७।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१७।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१७।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१७।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१७।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१६।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१६।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१६।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१६।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१६।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१६।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१६।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१६।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१६।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१६।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५६	७।१६
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	[illegible]	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४५	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४१	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४५	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:— मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्न सारिणी देखने की रीति

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं वे रेलवे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये है। जैसे रात के १ को १ लिया गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खत्म होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की सन्धि में एक आध मिनट का कहीं कहीं अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि

जिस लग्न में नवांश काल जानना हो, उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्नसारणी द्वारा निकालें। फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवें, शेष घण्टा मिनट बचेंगे। घंटा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार वह सम्पूर्ण लग्नमान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट जानें। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो, उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आवेंगे। यह मिनट और सेकेंड एक नवांश का मान होगा। तुम्हें जो नवांश लेना हो, उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों, उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल में जोड़ने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आ जावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा।

उदाहरण—वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुए के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घंटा ३४ मिनट में से घटाया तो १ घंटा ३३ मिनट शेष बचे। १ घंटा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़े तो ९३ मिनट हुए। अर्थात् मेष लग्न का कुल मान ९३ मिनट है। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सेकेण्ड एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारंभकाल का ज्ञान करना है। यहाँ मेष से लेकर कर्क तक अर्थात् ४ नवांश गत हुए, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सैकेण्ड) को ४ से गुणा किया, तो ४१ मिनट २० सेकेण्ड हुआ। इस (४१ मिनट २० सेकेण्ड) को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट में जोड़ा तो ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेण्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भकाल हुआ। इसी प्रारम्भकाल ६ घंटा ४२ मिनट २० सेकेण्ड में एक नवांश का मान १० मिनट २० सेकेण्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांश का समाप्ति (अन्त) काल ६ घंटा ५२ मिनट ४० सेकेण्ड हुआ। इसी प्रकार अन्य नवांशों को भी निकालें।

विवाह, यज्ञोपवीत, गृहप्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश प्रभृति शुभ मुहूर्तों में उपयुक्त सूक्ष्म विधि से सिद्ध किये गये नवांशों को प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है। अथ चन्द्रोदयास्तज्ञानम्–तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमानं च यूतं भुजाभ्याम्॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभवतनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो, तो उनमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटीपलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्ण पक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द करण" से जानें।

अथ प्रसूतिलग्नविचारः

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में शिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।-३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल, छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन-सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई ... जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मत ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन से बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैर्ऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया छींक भी किया, दीर्घकेश, घरके पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक दीर्घवर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया. और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला, भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्तिहवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्षज्ञानम्—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय
रविस्थान में दीप कहीं शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैर्ऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादिविचारः

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए। दो०—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को ग्र। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तेल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो, तो बहुत ही कम तेल कहना। सो०-तनुस्थान शशि जाइ, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं। सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुपे चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब बाम, दीपक तैल सों युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञान—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों, और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसको संख्या जोड़ें अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि

स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईसानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो तो वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गबचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वाम कर्ण वा मस्तकें अवश चिह्न दरशाहु॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पाचें भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

बालारिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहें शशीजो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यमलीन। बसे चन्द्रमा द्वादसै अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लनाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत. ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशें वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥

मूकयोगः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरुसिह अज, दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विस्वाबीस। पापग्रहयुत लग्नपति, परे लग्न में आय। बीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहैं धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर

सुखदयोगाः—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह में परै तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीव (नपुंसक) योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीव योग तब जान। शुक्र भवन ते रिष्फक षट बस बिलव भानु॥

कुष्ठयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय॥ केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमलजन्मयोगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हो तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिनका लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिए किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल मे पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातःसूर्योदय से पहिले सहदेवी या अपामार्ग (पुटकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम स कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे,। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे तब कष्ट

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्ट्या भानुभानुप्रकीर्तिता । नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् ।

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह२ घड़ियां नन्दा, भद्रा जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं । यदि अमावस्या का स्पष्ट घटचादि मान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जाना ।

तीस का यन्त्र

१६	५	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	शूरअंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	२	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत	५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु	८	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	१०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिवान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ	११	धनी	धनी	धनो	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	१२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	२	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज	३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत	४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत	५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकान्तियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुत
पति	७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	[illegible]
कर्म	१०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	११	सधना	गुणज्ञा	सलाभ	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	१२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अथमातृसुखनाशयोग:–(१) पापग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो ; . इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग:–(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाशयोगा:– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय ।
जाके ऐसो योग है भ्रातृ हीन नर होय ॥

सन्तानसुखनाशयोग

गुरु ने पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगा :–शुक्र और सूर्य सप्तम पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगा:—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल । जिनके बुध भृगु राहु संग सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज ।

जारजयोग :–भानु चन्द्र तनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है परपुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुल गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।५।८ स्थान में क्रूर ग्रह हो, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना । इस प्रकार यदि चन्द्र के साथ २।१२।४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो माता को कष्ट जानना ।

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामि दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल गरल हैं भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमें बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहैं कुज नीच॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेछाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहें पति को तजे तमारि॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करि है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम। पाप ग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द। सो त्रिय नाशै कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि॥

वैधव्यविषकन्यायोगा:—चौ० रविवार द्वितीया, जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार॥ साते तिथि का करो विचार॥२॥ होय शत-भिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय॥४॥ जन्म लग्न द्वैशुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥८॥ रविबार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥१०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान॥११॥

वैधव्यविषकन्याभंगयोगा:—जन्म लग्नया चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोगा:—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगा:—चौपाई-केन्द्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई हैं सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ धन गुरु आवें धाई॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई। ऐसे योग जन्म सुकुमारी॥ रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूर युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत॥

स्त्री आदि के लिए अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, बैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। [illegible]

दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्में तो कार्तिक शांति करे, तो शुभ रहे।

त्रिखलजन्मफल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चाँदी, सोना, ताँबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्में तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शांति करे। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९ में धनी, १० वें में सुख, ११ वें में सुख, १२ वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते है कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	वाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जान्वोः	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला	दयाव	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वसुरहानि	२।३।४ च०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुत: सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलज:। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादज:॥

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की आदि की दो दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी । आश्लेषा । मघा । ज्येष्ठा । मूल । रेवती

होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय
शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र [illegible]

ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए. त्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	"	मातृनाश	३	"	मातृनाश
३	"	धननाश	२	"	धननाश
४	"	शान्ति से सुख	१	"	शान्ति स शुभ

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिवा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पादे	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा, आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पताले	भूमौ	स्वर्ग
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत् ॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृती। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥
बालकम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृतं स्यान्मांगलं ध्रुवम्॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेमेप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये०	मू० श्ले०	रे० अश्वि०	फल
पिता को भय	माता को भय	शरीर भय	

मघाफलम—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापादफलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्यष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों

कृष्ण चतुर्दशी जन्मफलम्

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुलहानि	कुलनष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है। तदनुसार फल जानें, अशुभ हो तो शान्ति करें। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होता है। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों, कुहू—जिसमें चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि; वैधृति में पितृ कष्ट वा दारिद्रय, सूर्यग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जप, होम शान्ति कराने स कल्याण हो।

बालकष्टावली

प्रत्येक मंत्र को २१ बार पढ़े और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती हैं?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलिविधान व समय	स्नान पूजामार्जनमन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, खेद, मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, श्वेतभात,५ रंग की झँडी ५, ५ दीपक, ४ आटे के सतिये,	५ पूर्णपोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरस्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्चरुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई,खस,आक के फल,बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथपैर अकड़ना, संकोच, दांतचबाना, नेत्रखुले, नेत्ररोग, भय, कृशता।	एक सेर चावल का आटा	कपूर, लोबान, १० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलके आटे के सतिये१०, रक्तचन्दन, रक्त-	भात, १ सर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिम में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्लां ह्लीं ह्लीं ह्लूं ह्लूं दुष्टा ग्रहां गच्छन्त्वत स्थानद्रु दाशायांस्वाहा।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हडफूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावल का आटा	पुष्प, श्वेतध्वजादीपक १०, गेहुँ के आटे के सतिये १०।	१ सेर लालभात, आधेसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिलचूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेत ध्वजा ५ दीपक मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात १सेर, आटे के पूड़े आधसेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन, गोशृंग सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	एक सेर चावल का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐभगवती ह्लीं ह्लीं ह्लं ह्लूं मुंचरक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठ चामुण्ड सर्वारिचण्डिके ठः ठः स्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हडफूटन, हंसना, कभी२ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, एक पहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना।	योगिनीविधानोक्त	कूट
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा।	भात, ७ पूड़ियाँ, सायंकाल पश्चिम में चौरस्ते पर मौन होकर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	गुग्गुल, राई,
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झन्डी, ५ दीपक।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	हाथीदांत, घृत।
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूँ का आटा	चन्दन, पुष्प ५, दीपक५, रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्य,मांस, पापड़ी,सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलि मादाय हन्हन्हुं फट्स्वाहा	
दशम दिन मास वर्ष में खेती	ज्वर, हडफूटन,शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुनें चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	गोशृंग,लसुन, सांप की कांचली,
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हडफूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प २५, दीपक २५, सफेद झण्डी २५, आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७पूड़े, सुहाली ७ सायं को प्रातः दक्षिण में चौरस्ते पर रखना।	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्राहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा।	निम्बपत्र, मनुष्य और
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांतचबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, झंडी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण [illegible]	ॐनमोनारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहनशोषय २ मर्दय२ शोषय २ हुं३ हन २ दुष्टानां [illegible] फट् स्वाहा।	बिल्ली के बाल,राई, गोघृत।

वर्ष में अद्भुता | बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप। | एक सेर | ... में चौरस्ते पर रखना। | ...हनहनशोषय २ मर्दय २ शोषय २ हूं ३ हन २ दुष्टानां हूं हूं फट् स्वाहा। | बाल, राई, गोघृत।

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम्

यस्मिन्नृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा। तद्विष्णुपूजा कर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिङ्गमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः। वस्त्रा तैर्गुग्गुलधूपदीपै नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक्। पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्यादतुलं धनञ्च ॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जपसंख्या
अश्विनी (दस्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडाअनिद्रा-भङ्ग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध. कमलपुष्प गुग्गुलधूपघृतदीप मोदक गुड़ नैवेद्य	घृत-क्षीर	गुडौदन खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐअश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥१॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र-ज्वर आलस्य छर्दिरोग।	अगरगंध करवीरपुष्प धूप घृतदीप गुडौदन नैवेद्य	घृतगुग्गल कृसरान्न (खिचड़ी)	तिलाक्षत घृतमधु शर्करा	गोमहिषीघृत छायापात्र ब्राह्मणभोजन	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देवस्त्वा-सवितामध्वानक्तु। पृथिव्याः संस्पृशस्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोऽसि। ॐयमाय नमः।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्.	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प धूप घृतदीप तिलमाषान्नबड़ाधीकानैवेद्य	घृतगुग्गुल पायस	तिल घृतयव	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पति पृथिव्या अयम्। अपां ॅ रेतांसि जिन्वति। ॐअग्नये नमः ॥३॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीड़ाकुक्षि शूरशिरःपीड़ा प्रलाप	श्वेतचंदनगंधकमलपुष्प धूप घृतदीपपायस नैवेद्य	दशांग-मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यान्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णगोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमपुरस्ताद्विसीमितः सुरुचोवेनआवः। सुबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च-योनिमसतश्च विव्वः। ॐब्रह्मणे नमः ॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीड़ा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध. कमलपुष्प धूप घृतदीपपायस नैवेद्य	दशांग दधि अपूपमध्वोदन	दधिपायस शर्करा शाल्य	दधितण्डल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐइमंदेवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमहते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रमुष्यैपुत्रमस्यविशएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ॅ राजा। ॐचन्द्रमसे नमः ॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेत चंदनगंध सौरभपुष्पदशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन	घृतमधु मध्वाज्य	कृष्णवृषभकृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवउतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐरुद्रायनमः ॥६॥	१ हजार
पुनर्वसु (अदितिः)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्धधूपघृतदीप पीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-घृताक्त पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐअदितिरदितिरन्तक्षिमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वदेवा अदितिःपंचजना अदिति र्जातमदितिजनित्वम्। ॐअदितये नमः ॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल कष्ट	महाकुंकुमगन्ध कमलपुष्प धूपघृतदीपघृतपायसशर्करा नैवेद्य	घृतगुग्गुल-समण्डक	घृत मोदक पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐबृहस्पतेअदितिर्योअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुम-ज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रयातदस्मासु द्रविणं हि चित्रम्। ॐबृहस्पतये नमः ॥८॥	१० हजार

बालकष्टावली

प्रत्येक मंत्र को २१ बार पढ़े और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलिविधान व समय	स्नान पूजामार्जनमन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, खेद, मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, श्वेतभात,५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ४ आटे के सतिये,	५ पूर्णपोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरस्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्चरुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥	राई,खस,आक के फल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथपैर अकड़ना, संकोच, दांतचबाना, नेत्रखुले, नेत्ररोग, भय, कृशता।	एक सेर चावल का आटा	कपूर, लोबान, १० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलके आटे के सतिये १०, रक्तचन्दन, रक्त-पुष्प, श्वेतध्वजादीपक १०, गेहुँ के आटे के सतिये १०।	भात, १ सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिम में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्लां ह्लीं ह्लीं ह्लूं ह्लूं दुष्टा ग्रहां गछन्त्वत स्थानद्रु दाज्ञायांस्वाहा।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड्फूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावल का आटा		१ सेर लालभात, आधेसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिलचूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेत ध्वजा ५ दीपक मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात १सेर, आटे के पूड़े आधसेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन, गोशृंग सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	एक सेर चावल का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐभगवती ह्लीं ह्लीं ह्लं ह्लूं मुंचरक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठ चामुण्ड सर्वारिचण्डिके ठः ठः स्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड्फूटन, हंसना, कभी२ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, एक पहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना।	योगिनीविधानोक्त	
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा।	भात, ७ पूड़ियाँ, सायंकाल पश्चिम में चौरस्ते पर मौन होकर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झन्डी, ५ दीपक।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूँ का आटा	चन्दन, पुष्प ५, दीपक५, रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्य,मांस, पापड़ी,सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबल्कि मादाय हन्हन्हुं फट्स्वाहा	गोशृंग,लसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल,राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में खेती	ज्वर, हड्फूटन,शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुनें चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वैश्वदेवाय हुं हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड्फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प २५, दीपक २५, सफेद झण्डी २५, आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७पूड़े, सुहाली ७ सायं को प्रातः दक्षिण में चौरस्ते पर रखना।	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्राहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांतचबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, झंडी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण	ॐनमोनारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहनशोषय २ मर्दय२ शोषय २ हूं३ हन २ दुष्टानां [illegible] फट् स्वाहा।	

...ज्वर, दांतचबाना, रोमांच, ... चावलों का आटा ... १२ दीपक, झंडा, १२ सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य ... ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय ... बलि, राई,

वर्षे में अद्भुता ... बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप। ... में चौरस्ते पर रखना। ... हनहनशोषय २ मर्दय २ शोषय २ हुं३ हन २ दुष्टानां हुं हुं फट् स्वाहा। ... गोघृत।

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम्

यस्मिन्नृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा। तद्विष्णुपूजा कर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः।
वस्त्रा तैर्गुग्गुलधूपदीपै नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक्। पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्यादतुलं धनञ्च ॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जपसंख्या
अश्विनी (दस्त्री)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भङ्ग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध. कमलपुष्प गुग्गुलधूपघृतदीप मोदक गुड़ नैवेद्य	घृत-क्षीर	गुडौदन खाड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐअश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥१॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र-ज्वर आलस्य छर्दिरोग।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गल धूप घृतदीप गडौदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचड़ी) तिलाक्षत	घृतमधु शर्करा	गोमहिषीघृत छायापा ब्राह्मणभोजन	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देवस्त्वा-सवितामध्वानक्तु। पृथिव्याः संस्पृशस्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोऽसि। ॐयमाय नमः।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्.	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीपतिलमाषान्नवडाधीकानैवेद्य	पायस	तिल घृतयव	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पति पृथिव्या अयम्। अपां ᳫ रेतांसि जिन्वति। ॐअग्नये नमः॥३॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीड़ाकुक्षि शूरशिरःपीड़ा प्रलाप	श्वेतचंदनगंधकमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीपपायस नैवेद्य	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यान्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णगोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमपुरस्ताद्विसीमितः सुरुचोवे-नआवः। सुबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च-योनिमसतश्च विव्वः। ॐब्रह्मणे नमः ॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीड़ा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध. कमलपुष्प दशांग धूप घृतदीपपायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधितण्डुल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐइमंदेवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमहते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममष्यपुत्रमुष्यैपुत्रमस्यविषएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ᳫ राजा। ॐचन्द्रमसे नमः॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्यमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेत चंदनगंध सौरभपुष्पदशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभकृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवउतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः॥ ॐरुद्रायनमः॥६॥	१ हजार
पुनर्वसु (अदितिः)	७	१४	२	२१	अर्क—मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्धधूपघृतदीप पीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-घृताक्त पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐअदितिरदितिरन्तक्षिमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वदेवा अदितिःपंचजना अदिति र्जातमदितिजनित्वम्। ॐअदितये नमः ॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल कष्ट	महाकुंकुमगन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपघृतपायसशर्करा नैवेद्य	समण्डक	घृत मोदक	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र पायस ब्राह्मणभोजन	ॐबृहस्पतेअदितिर्योअहाद्द्युमद्विभातिक्रतुम-ज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रयातदस्मासु द्रविणं हि चित्रम्। ॐबृहस्पतये नमः ॥८॥	१० हजार

आश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल-मूलम्	सर्वाङ्गपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप	हवि घृतक्षीर नैवेद्य	दध्योदन	शर्करा घृत	संवत्साकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु येअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ १० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्र पीड़ा तथा शिर पीड़ा	श्वेतचन्दनगन्ध चम्पकपुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप	घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः । प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपि पितरः पितरःशुन्धध्वम् । ॐपितृभ्योनमः । १०ह०
पू. फा. (भगः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि मूलम्	ज्वर शिरपीड़ा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालती पुष्प बिल्व धूप घृतदीप	घृत अपूपोदन मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु कंगनी तिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदान भोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां वियमुदवादन्न० भगप्रणोजनगो गभिरश्वर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम ॥ ॐ भगायनमः ॥११॥ १० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल-मूलम्	कुक्षिशूल शिरशूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप	घृतपायस नैवेद्यं	घृतशर्करा शाल्यन्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐदेव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा ।मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रम् । ॐ अर्यम्णे नमः ॥१२॥ १० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति-मूलम्	अफारा उरु शूल सर्वाङ्ग पीड़ा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप	घृत नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्रा० भोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता वविह्रुतम् । वात जूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति । ॐसवित्र नमः॥ ५हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव-मूलम्	विचित्रानेक-रोग, अतिकष्ट	केसर अगरगन्ध विचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गलधूपघृतदीप	विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्यतिलगुड़ तण्डुल	विचित्र व. प. छा. पा. ब्रा. भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रयमक्षागौनवियोदधुः ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥१४॥ १० हजार
स्वाती. (वायुः)	६०	१७	३०	०	जाति-मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगन्धदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप	घृतपायस नैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्यस्वर्ण यव	रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान सोमपीतये ॥ ॐवायवे नमः ॥१५॥ १ हजार
विशाखा (इंद्राग्नी)	१५	०	४	१३	गुन्जा-मूलम्	कुक्षिशूल सर्वाङ्गपीड़ा	चन्दनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृत धूप घृतदीप	घृतपायस नैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्र कु. ब. छायापा. दा. ब्रा. भो.	ॐइन्द्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् अस्यपात धियापिता॥ ॐइन्द्राग्निभ्यां नमः ॥ १० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुपुष्प-मूलम्	तीव्र ज्वर शिरपीड़ा	केसरगन्ध कमलपुष्प चन्दन धूप घृतदीप	घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड़ यवाज्य	स्वर्णगोछाया पात्र दान ब्रा० भोजन	ॐनमोमित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महादेवाय तदृतं सपर्यत दूरदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत ॥ ॐमित्राय नमः ॥१७॥ १० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५५	९	६	४	अपामार्ग मूलम्	व्याकुलता पित्त रोगकम्पन	श्वेतचन्दन गंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप	मनोहर चित्रान्न नैवेद्य	दध्योदन सुपुष्प	तण्डुलतिल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्रा० भोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवंशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः । ॐ शक्राय नमः ॥१८॥ १० हजार

					मूलम्	रोगकम्पन	कर्पूर धूप घृतदीप मनोहर मिष्टान्न नैवेद्य	सुपुष्प	घृत ब्रा० भोजन	ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धा- त्विन्द्रः। ॐ शक्राय नमः ॥१८॥ १० हजार
मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दार मूलम्	उदरतथामुख रोगसन्निभय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृत- कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्न-नैवेद्य	सहवि माषान्न	घृत स्वर्ण ब. कु. गौछा कन्दमूल पात्र दा. कु. पू. वि	ॐ मातेव पुत्रं पृथ्वीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुखा। ताविश्वदेवऋतुभिः संवदानः प्रजा-पतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐ निर्ऋतये नमः॥१९॥ ५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पासि मूलम्	शिरपीड़ाकम्पन महाकष्ट	श्वेतचंदन गंधकमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप दीप घृत पायस नैवेद्य	घृतपायस तिलतण्डुल मिष्ठान्न घृत	स्वर्णाव. ति.त.ज. कु. गो. दा. ब्रा. भो.	ॐ अपाघमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्यं सुव॥ ॐ अद्भ्योनमः ॥२०॥ ५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवाः)	३०	२४	२६	१६	कार्पासि मूलम्	उरुशूल कटि- पीड़ा प्रलाप	श्वेतचन्दन गन्धकमलपुष्प घृतगग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविषा. तिलाज्य तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मण भोजन	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतम हवंयम अन्तरिक्षे यउपद्यविष्ठाय अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्वर्हिषिमादयध्वम्। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥ १० हजार
श्रवणः (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वाङ्ग पीड़ादि. भय	श्वेतचन्दनगन्धमालतीपुष्पकर्पूरगु. धूप घृतदीपषड्रस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि तिलाज्य पायस यवं	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मण भोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। ॐ विष्णवे नमः॥२२॥ १० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृङ्गराज मूलम्	मूत्रकच्छ ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचन्दन गन्ध कमलपुष्प गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस वेद्य	पायसभो. तिलाज्य पूपतिपि पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व गो. दा. ब्रा. भो.	ॐ वसोःपवित्रमसि शतधारं वसोःपवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॥वसुभ्योनमः १० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल मूलम्	सन्नि पातभय वातज्वर कष्ट	केसर अगरगन्ध कमलपुष्प कर्पूर चं. घृत. धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	आज्य चित्रान्न दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्र गोदान कु. पू. ब्रा. भो.	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसियसिवरुणस्यस्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतऽसदन्यसि वरुणस्य-ऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद ॐ वरुणाय नमः ॥२४॥ १० हजार
पू. भा. (अजैकपाः)	०	१२	२१	११	भृङ्गराज मूलम्	शरीरपीड़ार्ति व्याकुलतावमन	केसरचन्दनगन्ध श्वेतार्कपुष्प शतीष. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायस नैवेद्य	दध्योदन क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजतअश्वश्वेत छा पात्र. दान ब्रा. भोजन	ॐ उतनो हिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी-समुद्रः। विश्वेदेवाः ऋतावृधोहुवानः स्तुतामंत्रा कविशस्ताअवन्तु। ॐ अजैकपदे नमः। १० हजार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्यः)	१०	२	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसार कामला रोग	चन्दनकर्पूरगन्ध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य स्वर्ण रजत तिल यव कृष्णवस्त्र दान ब्रा. भोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिंसीः। निवर्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्याय प्रजननायसयस्पोषायसुप्रजास्त्वा-यसुवीर्याय। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥ १० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ मूलम्	चित्तभ्रम उ मू.ज्वर वा.पि.	रक्तचन्दनगंधमन्दारपुष्प घृतगग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य रजतवस्त्रपत्तल तण्डुल पा. ब्र. छा. दा. ब्रा. भो.	ॐ पूषन् तवव्रते वयंन रिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ॐ पूष्णे नमः। ५ हजार

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता (४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त व पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान, तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	उ. फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग-त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०—१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ें) होती है। काल के मुख दाड़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयंत्र

ॐ

प	व	क	०
३	४९	८	३३
२५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यन्त्र सिद्ध कर लेवे फिर लिखकर देना शुरू करे। विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिखकर आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि	व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि	उत्तमान्नभो.

बारकष्टावलीयन्त्रम्

बा.	बारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के सिर में मेषराशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में सिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठ भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

जपनीय मन्त्राः | समय-समिध.

दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में सिर, द्वितीय ... वह अंग रोगादि से युक्त होता है अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त

ग्रहगोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः														जपनीय मन्त्राः	समय-समिध.	
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्यायनमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेत बैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रायनमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	ध. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	सन्ध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुश।
मन्धा	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मसरी	श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मंधेशवत्	ॐ मन्धेशमंत्रः	मन्धेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि---(यथा सिद्धौषधै रोगा नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रशाम्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचंदन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुदृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
खस	श्वेतचंदन	सिंगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लाँ		
रक्तकनेर								

शनिविचार:---अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्---कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे, व्याधिं बन्धुविरोधदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि बद्धेभयं, लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्---राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः, नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनभयं पुत्रान्नशून्पीडयेत्। हानिः स्थानमरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य---उदड़ १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तंदुल) ६, कंकनी ७

अष्टागन्ध--अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कर्पूर, दोनों चन्दन।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्त्यै सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु वचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम, तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

॥ देश-भेद से दशानिर्णय ॥

शुक्लगेऽर्के होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा। कृष्णे चन्द्रस्य होरायां रात्रावष्टोत्तरी मता ॥
अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥१॥

अर्थ---देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली, राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब, युक्तप्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है, किन्तु विशेष निर्णय में तथा समय के फल विकास कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हों तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी। कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना। अन्यथा योगिनी दशा से विचार करना।

अथ कार्यसिद्धि-प्रश्न

६	१	८
७	५	३
२	९	४

प्रश्नकर्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे। यदि १।५।९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो। ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे। ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे। २।८अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है।

॥ श्रीरामायणादि कथा प्रारम्भ करने का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि लाभप्रद, २४ तक मृत्यु, राजभयप्रद, २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थं शुक्लपक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थ कृष्णपक्ष में करे।

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधचक्रम्

ग्रहः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	असला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोकः	धनलाभ	धनना.
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनलाभ	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी.	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैर	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुख	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों को अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है । केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है ।

अथग्रहाणामेकगेभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.के.	ग्रहाः
मा.१	दि.२।	मा१॥	मा१	मा.१२	मा.१	मा३०	मा.१८	एकर्क्षभोग
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमयः
दि.५	घ. ३	दि. ८	दि.७	मा.१	दि.७	मा.६	मा.६	गंतव्यराशेः प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्टयर्थं धारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालः	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	राजवर्तः	राजवर्तः

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. मं. बृ.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. मं. चं	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.	समाः
शु. श.	० ०	बु.	चं	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

शनि यन्त्र

यह यन्त्र शनिवार को भोजपत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है ।

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्लाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते । नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च । नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो । नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते । प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साढ़ेसाती व ढैयाकी दुःखद पीड़ा नहीं होती । अथ शनैश्चरपादविचारः—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर क राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनि रसे रुद्रसुवर्णहानिः) १।६।११ वें स्थान में हो तो सवर्ण पाद जानना, फल-हानि ॥ यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना, फल–शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना, फल-कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना, फल-शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्र शुभञ्च) अथ सुवर्णपादफलम्—कुटम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम् । द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम् ॥ अथ रजतपादफलं—व्यापारमुग्रं धनधान्यसम्पन्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम् । तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मङ्गलं वै यदि रौप्यपादे ॥२२॥ अथ ताम्रपाद-फलं—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदा [illegible] ॥ अथ लोहपादफलं

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखराज	मध्येसू मणि	दे. भौम मूंगा
वा. केतु	प. शनि	नै. राहु

रजतपादफलं—व्यापारमुद्यं धनधान्यसम्पन्नमहत्प्रतापः [illegible] अथ ताम्रपाद-
फलं—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम् । लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादः ॥३॥ अथ लोहपादफलं [illegible]

पुखराज	मणि	मूंगा
बा. केतु	प. शनि	नै. राहु

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है ।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है ।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है ।

चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है ।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है ।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है ।

पिता के खतरे का समय जानना—गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है ।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है ।

पाराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्टकाल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करे । पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्धि आवे वह चार गुणी की हुई इष्ट घड़ी के अंक में मिला दें । १५ का भाग देने से जो शेष फल रहे उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घड़ी के नीचे रखना । पश्चात् १२ का भाग देना, शेष राशि अंश बचे उन में स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि में हो तो ज्यों के त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है । प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है । लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं ।

भावी विचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यानपूर्वक देखकर कापी में लिख रखें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्र में वर्षा होवे । अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हो तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले । ऐसे ही पूर्वाषाढ़ा से पुनर्वसु, उत्तराषाढ़ा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा., उ. भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाती और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे ॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचारपूर्वक अपने पास नोट कर लें जिससे वर्षा का अन्दाज ध्यान में रहें ॥

(२) मावशुक्लसप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले, आकाश बादल से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है ।

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है ।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि वहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है । पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास का निर्मल रहना अच्छा है ॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघगर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूरी होती है ।

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्र सम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता । रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटें बिजली या वर्षा हो और मृगशिरा में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली के छींटे न हों, मृगशीर्ष ताता हो तो वर्षा काल में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है ।

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा-बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है अतः कृत्तिका में सूर्य में बूंदा-बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है ॥

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिए, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खेंच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु बादल बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिए, रोहिणी में बूंदा-बांदी होने पर वर्षा की खेंच जरूरी होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का अवसर तो पहिले होता ही है ।

(९) मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर में आती है और कम भी होती है ॥

यात्रा में अशुभ शकुन

गवन समय जो स्वान । फरकराय दे कान ।
एक सूद्र दो बैस असार । तीनि बिप्र औ छत्री चार ।
सनमुख आवैं जो नौ नार । कहै भड्डरी असुभ बिचार ॥
स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर ॥
तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिये ॥
बैस पाँच षट् स्वान, एक बैल षक बकरा जान ॥
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलै मति करौ पयान ।
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर ।
दूरि ते दूरि निकट ते निकट, सबको फल भरपूर ॥

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहाँ कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहाँ वर्षा न होवे । जैसे रोहिणी में सूर्य के प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है । सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ । वायु से राजाओं में विग्रह । थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात् यदि वर्षा अधिक हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है । उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी । अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दशा में वर्षा की कमी । निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

वर्षा ज्ञानसारिणी

दिसम्बर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जुलाई	जू.																	जु.													
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई	जु.																	अ.													
अगस्त	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	—	—	—
अगस्त	अ.																	सि.													
सितम्बर	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितम्बर	सि.																			अ.											
अक्टूबर	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	—
अक्टूबर	अ.																			न.											
नवम्बर	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञानसारिणी से वर्षा जानने की रीति—दिसम्बर, जनवरी, फरवरी व मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन-जिन तारीख में जहाँ वर्षा होती है उसके हिसाब से ही ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चारों मासों में वहाँ वर्षा प्रायः हुआ करती है । प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है । जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षाऋतु में वहाँ २ जुलाई को वर्षा होगी । इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारिणी यह बता देगी कि वर्षाऋतु में वहाँ २९ जुलाई को वर्षा होगी । इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी । इसमें ज्योतिषशास्त्र के विज्ञान का नियम यह भी है कि जिन २ तारीखों में शतभिषा, श्लेषा, मघा, स्वाती, आर्द्रा नक्षत्र पड़ जायें और इन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जो तारीखें सारिणी में आकर पड़ेंगीं उन तारीखों में वर्षा अवश्य होगी और अधिक भी होगी, क्योंकि यह नक्षत्र बहुत जल वाले माने जाते हैं । इसी प्रकार शीतकाल में जिन २ तारीखों में पू. भा. उ. भा. पू. फा. उ. फा. रोहिणी ये पाँच नक्षत्र पड़ जायें और उन तारीखों में वर्षा हो तो आगे वर्षाऋतु में जिन महीनों की जो तारीख सारिणी में पड़ेगी उनमें कई दिनों की वर्षा की झड़ी लगेगी । वर्षाज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा को तारीखवार टाइम सहित नोट करके देखने से [illegible]

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़कर अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब, वन वा शिव-मन्दिर में जाकर वहाँ मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यन्त्र बनाकर उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य आदि से पूजा करे । (मेघों के नाम और आवाहन मन्त्र) ॐ ह्रीं मेघदूतायनमः आगच्छ२ स्वाहा॥१॥ ओं ह्रीं मेघदूती कमलोदभवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रींमहानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा॥३॥ ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामश्रृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ२ स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्रीं नन्द-राजाय दक्षिणश्रृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभिमात्र जलमें खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मन्त्र को १००० बार जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मन्त्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे । अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग—"ॐनमो हनवन्तवीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फूट सतखण्ड जावसी" । अति वर्षा के समय इस मन्त्र का ७–७बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूंक मारने से अतिवर्षा करते हुए मेघ भी तत्काल फट जावें । इसी मन्त्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा करदे तो वर्षा बन्द हो जावे । मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध करले ॥

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी मन्त्र—ॐ तत्स-वितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं धियो योनः प्रचोदयात् उर्वा-

उनमें कई दिनों की वर्षा की झड़ी लगेगी । ...

विदृवरण्य त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं धियो योनः प्रचोदयात् उर्वा-

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहिला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे [1]नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथम चरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथम चरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गा	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गो	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	च
चतुर्थ च०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृक[2] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्गे या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाविचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णयः— वैश्यप्रान्त्यंघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वाँ भाग जोड़कर उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक एक चरण मानो । श्रवण का १५वां भाग छोड़ कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो । इस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है । (अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधानकल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नेपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मंगाइये । १।) रु० ।

नक्षत्रविषघटीज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिए । क्योंकि 'नक्षत्रगुणज्ञानचक्र' में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनको स्पष्ट ऐसे करना, यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिनके सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्रके ध्रुवांक को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है । इनको भी स्पष्ट करना जरूरी है । उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देनेसे लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना ।

टिप्पणी—(१) जन्मार्क्षः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः । कर्मसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः । एवं थालारामस्य कुम्भराशिः । (२) यथा-ऋषभ देवः, ऋतकरामः, लृतरामः । (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात् । चूडोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम् । गोदान-मेखलोन्मोकौ विवाहः षोडशी क्रिया ॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघुभ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उसपर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है ।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशि की दशा में छोट भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ प्रतिबन्धक योग न हो तो ।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है ।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ० शे । द×मं.=यो. शे.—यो.=शे.) शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है ।

(३) लग्नेश तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है ।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये ।

माता की मृत्यु का समय जानना— (१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चंन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना ।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इसके साथ वाला ग्रह, सुखस्थ ग्रह, चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह, इनमें जो माता के लिए विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट जानना।

द्वादश राशियों का मासिक फल सं० २०२० वि०

राशि	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	उत्तम लाभ, राजपक्ष शुभ वायु पीड़ा, बन्धु कष्ट, वृथा चिन्ता शुभ में खर्च।	अचानक लाभ, रोगभय, जमीन-मकान की चिन्ता मित्र-मिलाप।	शुभ-कृत्यों में रुचि, सम्पत्ति चिन्ता, घर में अशान्ति कारोबार ठीक।	धार्मिक व मंगल कृत्यों में खर्च, लाभ अच्छा, राज्य में मान, शत्रु-नाश।	कारोबार में सुधार, शत्रु नाश, वायुपीड़ा, जल-भय, किसी मित्र व बन्धु की चिन्ता।	रोग-भय, राज्य पक्ष से विजय, मित्र-बन्धु सुख कारोबार से लाभ, स्त्री से सन्तोष।
वृष	लाभ अच्छा, बन्धु चिन्ता, पुत्रादि द्वारा व्यय, स्त्री से विवाद, राजपक्ष मध्यम।	दुःस्वप्न, वृथा यात्रा, लाभ मध्यम, पशुभय, मित्र से कष्ट।	मकानादि की चिन्ता, राज्य पक्ष से भय, स्वास्थ्य मध्यम पशु-पीड़ा।	घरेलू झंझटों से हैरानी, वायु विकार, लाभ कम, मित्र मिलाप, सिर-पीड़ा।	बन्धुवर्ग में व्यय, सन्तति-चिन्ता, हैरानी, पित्तपीड़ा, मासान्त में लाभ अच्छा।	भाग्य चिन्ता, वस्त्र लाभ चोर, ठग, भय, लाभ कम, शुभ में प्रवृत्ति।
मिथुन	कारोबार में गड़बड़ी, शुभ में व्यय, लेनदेन की चिन्ता, मासान्त में लाभ।	कोष में कमी, पशु पीड़ा उदर विकार, कारोबार की चिन्ता, मान प्राप्ति।	निजी व्यवसाय में उलझन सन्तति सुख, लाभ से खर्च अधिक, गुप्त चिन्ता।	सन्तति चिन्ता, स्वजनों से विरोध, लाभ कम, धर्म में रुचि।	लाभ खर्च समान, स्त्री व बन्धुजनों की चिन्ता, मान-वृद्धि, स्वास्थ्य मध्यम।	वृथा व्यय, हैरानी, मास के मध्य में लाभ अच्छा चित्त उदास, प्रिय व्यक्ति को कष्ट।
कर्क	रक्त विकार व उदर पीड़ा भाग्य वृद्धि, सन्तान की चिन्ता, कारोबार ठीक।	स्वास्थ्य में बिगाड़, स्त्री-पुत्र चिन्ता, अकस्मात् लाभ, शुभ यात्रा मित्र मिलाप।	कारोबार मध्यम, शत्रु-हानि धर्म-कृत्य में रुचि, विवाद भय, सिर-पीड़ा।	मकान व स्त्री की चिन्ता, विवाद में विजय, लाभ में रुकावट, वायु विकार।	स्वास्थ्य ठीक, गृह कलह शत्रु पीड़ा, राजपक्ष शुभ, कारोबार ठीक।	अचानक यात्रा, असफल नये विचार, कारोबार ठीक स्वास्थ्य मध्यम।
सिंह	मस्तक व नेत्र में विकार शत्रुनाश, पुण्य स्थान की यात्रा, व्यय विशेष।	शत्रुओं से सावधान, बन्धुओं से मन खिन्न, लाभ की नई सूझ, कारोबार ठीक।	कारोबार ठीक, शुभ कर्म का विचार, वृथा चिन्ता शत्रुनाश, रुका कार्य सिद्ध।	वायु पीड़ा कारोबार मध्यम, धर्म में रुचि, सन्तति चिन्ता राज पक्ष शुभ।	पुत्रादि द्वारा खर्च, लाभ से खर्च अधिक, शत्रुभय, मित्र से सन्तोष।	कोष में वृद्धि, व्यर्थ खर्च कारोबार ढीला, वायु विकार स्व-जन विरोध।
कन्या	उदर विकार, स्त्री चिन्ता, कारोबार ठीक, कोई रुका हुआ कार्य सिद्ध हो।	मित्रादि से खुशी, किसी उलझन से चिन्ता भी हो, कारोबार ठीक, पशु लाभ।	जल व अग्नि से भय, सन्तति कष्ट, कारोबार ठीक, नये कार्य में रुकावट।	स्त्री पुत्र द्वारा खर्च, कारोबार शिथिल, पशु लाभ सिर-दर्द।	रक्त-पित्त पीड़ा, पुत्रादि से हैरानी, मकान आदि पर खर्च, कारोबार से लाभ।	लाभ में बाधा, गुप्त चिन्ता, शत्रु भय, मित्रों से बिगाड़।
तुला	मानसिक चिन्ता, शत्रु भय, व्यय विशेष, कारोबार में गड़बड़, धर्म में रुचि।	परिश्रम करने पर भी खास लाभ न हो, स्वास्थ्य कमजोर, राज-पक्ष अशुभ।	वृथा क्लेश, लाभ कम इच्छित कार्य में विघ्न, स्वास्थ्य खराब, गुप्त चिन्ता।	यात्रा में कष्ट कारोबार की चिन्ता, बन्धुओं द्वारा खर्च, शत्रु पीड़ा।	बिगड़ा काम सुधरे, बन्धु-वर्ग से मनमुटाव, लाभ मध्यम, स्वास्थ्य खराब।	मकान-जमीन की चिन्ता कारोबार कुछ ठीक, सिर दर्द, राज्य पक्ष से भय।
वृश्चिक	स्वास्थ्य मध्यम, कारोबार ठीक, सन्तति की ओर से खुशी, नित्य नियम में बाधा।	सन्तति कष्ट, स्थान-हानि, कारोबार मध्यम, रोगभय, धर्म में रुचि, शत्रु भय।	वस्त्र लाभ, स्थानान्तर का विचार, लाभ खर्च सम स्त्री पुत्र सुख, पशु लाभ।	उदर व सिर में पीड़ा, लाभ की चिन्ता, सेवक व पड़ोसी की ओर से मन खिन्न	लाभ अच्छा, मानहानि, शत्रु हानि, रोग भय, शुभ कार्य की चिन्ता।	रोग और शत्रु से भय धन की कमी का अनुभव, हैरानी, कारोबार ठीक।
धनु	जमीन व मकान की चिन्ता दुष्ट जीव से भय, कारोबार में गड़बड़ी।	मंगल कार्य की योजना लाभ में विघ्न, जमीन जाय-दाद की चिन्ता, दुष्टभय।	लाभ मध्यम, नये कार्य का विचार, सन्तति चिन्ता अग्नि व जल से भय।	रोगभय, नये काम में हानि, लाभ से खर्च अधिक दुष्ट से झगड़ा।	शुभ योजना, वायु-विकार पशु पीड़ा, जल भय, लाभ कम।	कारोबार मध्यम, चित्त-खिन्न, यात्रा में कष्ट, धर्म-लाभ नये नये विचार।
मकर	बन्धु कष्ट, किसी की सुलह से लाभ, पुत्रादि की चिन्ता, लाभ मध्यम।	लेनदेन की चिन्ता, लाभ का एक मौका मिले, धर्म में रुचि, वृथा विवाद।	व्यर्थ की दौड़ धूप, प्रिय व्यक्ति से कष्ट, यात्रा-सुख लाभ के काम में भी हानि।	धन व मान की चिन्ता उद्योग निष्फल, शत्रु भय।	नई चिन्ता, पुत्र एवं स्त्री द्वारा खर्च, उदर विकार, लाभ मध्यम।	किसी विज्ञ पुरुष के विचार से लाभ, पशु पीड़ा, गत मास की अपेक्षा चिन्ता कम।
कुम्भ	परिवार में अशान्ति, वृथा विवाद, कारोबार में कमजोरी किसी जीव से कष्ट।	हितैषी द्वारा कार्य सिद्धि लाभ कम, खर्च अधिक चिन्ता बढ़े।	नये नये विचार, कारोबार में गड़बड़ी, अपमान भय, लाभ कम, पशु पीड़ा।	वाहन-भय, सन्तान से प्रसन्नता, कारोबार की चिन्ता मित्र वियोग, लाभ मध्यम।	स्त्री सुख, उदर विकार शत्रु भय, किसी के सहयोग से लाभ।	लाभ मध्यम, स्त्री पुत्र द्वारा खर्च, अकारण चिन्ता रोग भय।
मीन	स्वास्थ्य उत्तम, स्वजन चिन्ता, लाभ अच्छा, मान वृद्धि, चित्त [illegible]	लाभ अच्छा, खर्च भी विशेष, व कपड़ादि से [illegible]	चित्त में खुशी, स्वास्थ्य ठीक, [illegible]	उत्साह बढ़े, शुभ में खर्च [illegible]	शत्रु-नाश, सन्तान पक्ष से [illegible]	यात्रा से लाभ, वायु-विकार [illegible]

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०२० वि०

स्वास्थ्य उत्तम, स्वजन चिन्ता, लाभ अच्छा, ... मित्र वियोग, लाभ मध्यम । से लाभ । ... भय ।
मीन लाभ अच्छा, मान वृद्धि, चित्त व ज्वरादि से कष्ट ... सन्तान पक्ष से ... यात्रा से लाभ, वायु-विकार

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश, सं० २०२० वि०

राशि	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	मासान्त में लाभ, शुभ कृत्यों पर अरुचि, कारोबार मध्यम स्त्री तथा राज्य से चिन्ता ।	चोर भय, पराक्रम बढ़े, व्यापार आदि में लाभ, सन्तति सुख, मान प्राप्ति ।	मित्र से बिगाड़, पुत्र व स्त्री द्वारा खर्च विशेष, कारोबार से लाभ ।	मास के पूर्वार्ध में लाभ, उत्तरार्ध में चिन्ता, बन्धु विरोध।	बन्धु-मित्र-वियोग, दुःस्वप्न कारोबार ठीक धर्म में रुचि।	शत्रु वृद्धि, लाभ अच्छा धर्म में अरुचि, वायु पीड़ा।
वृष	अकारण शत्रु वृद्धि, कारोबार कमजोर, राजा से भय, स्वास्थ्य खराब, सफर।	नये काम का विचार, मित्रों से प्रसन्नता, रोगभय, यात्रा चिन्ता, सन्तति सुख।	आशा से कम लाभ, नवीन योजना, वायु पीड़ा, मानसिक कष्ट ।	गत मास से लाभ अच्छा किसी मित्र से बिगाड़, सिर-दर्द ।	निजी व्यवसाय की चिन्ता, घरेलू जीवन में संतोष, नये काम का विचार ।	कोष में कमी, महापुरुष संगति, रोग भय, अचानक लाभ ।
मिथुन	बन्धु से विवाद, लाभ मध्यम खर्च विशेष, शुभ यात्रा गुप्त शत्रु भय ।	सन्तति से खुशी, शुभ समाचार श्रवण, लाभ अच्छा, शत्रु हानि, मान-वृद्धि ।	मस्तक व छाती में पीड़ा शुभ विचार, नई चिन्ता, लाभ मध्यम ।	स्वास्थ्य कमजोर, लाभ कम शुभ में व्यय, वृथा चिन्ता, महापुरुषों के दर्शन ।	चिन्ता कम, खर्च अधिक, यात्रा का विचार, धर्म में रुचि ।	अचानक लाभ, पुत्र स्त्री द्वारा व्यय, कारोबार के सुधार की चिन्ता, वायु पीड़ा।
कर्क	कारोबार मध्यम, वाहन-भय, गृह कलह, प्रिय वियोग, गुप्त चिन्ता ।	वृथा कलंक भय, कोष में कमी, शत्रु हानि, कारोबार मध्यम, स्वास्थ्य अच्छा ।	मस्तक व पैर में कष्ट, वृथा विवाद, लाभ अच्छा, शुभ-यात्रा	धर्म में रुचि, स्त्री चिन्ता, रोग भय, लाभ होते हुए भी परेशानी ।	लाभ से खर्च ज्यादा, शत्रु-चिन्ता, स्त्री-सन्तति सुख।	कारोबार कुछ ठीक, कुटुम्ब वृद्धि, वायु पीड़ा, कुसंगति से हानि, वृथा यात्रा ।
सिंह	लाभ मध्यम, मित्र मिलाप-शत्रु नाश, वृथा खर्च, पराक्रम वृद्धि, शुभ मति ।	प्रिय वस्तु की चिन्ता, लाभ खर्च सम, यात्रा में कष्ट, अभीष्ट कार्य सिद्धि ।	वायु विकार, नया विचार मास के मध्य भाग में लाभ ।	मन अशांत, नई कल्पनाएं, कारोबार मध्यम, पशु पीड़ा।	किसी जीव की चिन्ता, शत्रु पीड़ा, मासान्त में लाभ, दुःस्वप्न ।	वायु विकार, निजी व्यक्ति के कारण व्यय अधिक, अचानक लाभ, शुभ-मति ।
कन्या	विवाद भय, जिम्मेदारी के काम में कष्ट, कोष में कमी, नई योजना की सूझ ।	किसी के सहयोग से मासान्त में लाभ, वायु पीड़ा, मन खिन्न, स्त्री पुरुष से सुख ।	व्यवसाय की चिन्ता, घरेलू झंझटों से हैरानी, शुभ खर्च ।	वायु पीड़ा, गुप्त शत्रु-भय लाभ कम, वृथा खर्च, स्त्री-सुख	सन्तोष, परिस्थिति में सुधार अचानक यात्रा, नये काम का विचार।	व्यवसाय वृद्धि की योजना, रोग-भय, मित्र-मिलाप, दुःस्वप्न, समीप की यात्रा ।
तुला	कारोबार वृद्धि का विचार, रोग भय, चित्त दुःखी, वृथा कलह, शुभ में खर्च ।	स्थानान्तर व कार्यान्तिर का विचार, उत्साह वृद्धि, स्वास्थ्य अच्छा, बन्धु चिन्ता	नए विचार, गुप्त चिन्ता, लाभ से खच अधिक, शत्रुभय।	सन्तति-सुख कारोबार मध्यम घरेलू झंझटों से हैरानी, मित्र बन्धु से कष्ट ।	शत्रु-पीड़ा, मान को खतरा कमरतोड़ खच, मासान्त में लाभ ।	लाभ में विघ्न, सन्तति-चिन्ता शत्रु-भय, बन्धुओं से कुछ संतोष, यात्रा से लाभ।
वृश्चि.	कारोबार में उलझन, कुटुम्ब वृद्धि, मित्रों से खुशी, पशु लाभ, स्वास्थ्य अच्छा ।	शत्रु भय, लाभ में रुकावट सिर व मस्तिष्क में पीड़ा कमरतोड़ खर्च ।	अकारण क्रोध, लाभ होकर भी हाथ न आवे, धर्म लाभ ।	स्थिति पहले जैसी, निजी जनों से वैमनस्य, कफवायु-विकार, मासान्त में लाभ ।	उत्साह बढ़े, चिन्ता में कमी, कारोबार में सुधार, अचानक लाभ ।	कारोबार में वृद्धि, पैर व उदर में रोग-पीड़ा, दुष्ट भय, पशु लाभ ।
धनु	गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, कफ वायु पीड़ा, चिन्ता में वृद्धि, राज्य भय।	नए कार्य का विचार, अचानक लाभ का मौका बने । सर व पैर में पीड़ा ।	चित्त खिन्न, पशु पीड़ा, वस्त्रादि पर व्यय, मास के उत्तरार्ध में लाभ, चोट-भय।	धर्म कृत्य में खर्च, अचानक भय, स्त्री सन्तति चिन्ता, गुप्त शत्रु पीड़ा ।	युक्तियुक्त-खर्च करने पर भी तंगी, गृहकलह, अचानक यात्रा, मित्र से खुशी ।	पुत्रादि से संतोष, कारोबार ठीक, उदर विकार, महापुरुषों के दर्शन ।
मकर	स्वास्थ्य ठीक, बन्धु सुख, धर्म में रुचि, चित्त शान्त, कारोबार कुछ ठीक ।	पुत्र, स्त्री चिन्ता, सुख में कमी, रोग भय, लाभ होकर फिर हानि का भय हो ।	कारोबार की तरक्की में बाधा, कफ वायु पीड़ा, गृह कलह, आत्मीय जनों से कष्ट	किसी के सहयोग से लाभ झगड़े से धन हानि, रोगभय, कारोबार की चिन्ता ।	गत मास की अपेक्षा कारोबार ठीक, शुभ में व्यय, दुःस्वप्न, स्वास्थ्य मध्यम।	स्थानान्तर व कार्यान्तिर का विचार, वायु विकार, लाभ मध्यम, वृथा-विवाद ।
कुम्भ	लाभ कम, चिन्ता उत्पन्न होकर दूर हो । घरेलू जीवन संतोषजनक, शुभ मति ।	शुभ कृत्य का विचार, लाभ अच्छा, कफ वायु विकार, कारोबार ठीक, मान-वृद्धि ।	कारोबार मध्यम, पुत्र गृहादि की चिन्ता, ठग-चोर-भय, मासान्त में लाभ अच्छा	स्वास्थ्य ठीक, चित्त खुशी, कारोबार में तरक्की, मासान्त में चिन्ता, बन्धुओं के कारण खर्च	कारोबार ठीक, कोष वृद्धि अचानक चिन्ता, दुष्टभय, कफ वायु पीड़ा, दुःस्वप्न ।	वृथा खर्च, गत मास की अपेक्षा लाभ कम, चिन्ता बनी रहे, मित्र व पुत्र से कष्ट
मीन	महापुरुषों के दर्शन, किसी के द्वारा लाभ, मित्र-मिलाप घरेलू परिस्थिति-सुधार ।	शत्रु भय लाभ अच्छा, नये कार्य का विचार, कुटुम्ब में वृद्धि, अग्नि व चोट से [illegible]।	कारोबार में कमी, स्वास्थ्य ठीक, बन्धुजनों से सन्तोष, मासान्त में अकस्मात् [illegible]।	शुभ कृत्य में खर्च, हिम्मत बढ़े, राज पक्ष से विजय लाभ उत्तम, बन्धु सुख।	अचानक अच्छा लाभ, बड़ों से मान, चिन्तित कार्यसिद्धि, मासान्त में धन हानि ।	अचानक यात्रा, लाभ से खर्च विशेष, कारोबार में कुछ गड़बड़, धर्म लाभ ।

चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यग् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम्। मुकुन्दवल्लभेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना। तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्यवयाच्यते ॥४॥
तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारंभ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मंगलस्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पुजा कर, स्त्रियाँ शिशु आदि वस्त्र-आभूषण परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषी जो का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर फल श्रवण करें। प्रातःकाल कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिला कर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शांति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बिमारी नहीं होती)।

पञ्चांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्ठान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य

ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्र्यरुगादिवर्जिता नन्दति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याद्भुतं राज्ञां राजकुले जयो विजयते मन्त्रीफलं बुद्धिदम्। धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इतिसंवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रमवर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा को आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिन की १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौर मान से वर्ष संख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है। ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुदसंख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष ये छः मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८ वां कलियुग है।

अथ युगकाल व्यवस्था—सतयुग—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्रीनारायण के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार हुये श्रीमत्स्यजी ने वेदों के चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी के रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारणकर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये। श्री वराह जी ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतार ने हिरण्यकश्यपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेदों के जानकार तथा सत्यभाषी पर-द्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वरदान प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पवित्र और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चंद्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्री वामन, श्री परशुराम और श्री रामचंद्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी कर्तव्यविमुख एवं अन्यायी विलासिता प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने महाभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएँ त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पवित्रिणी पतिव्रता होती थी। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रिय का राज्य था। विचित्र विमान द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला पर तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था। **द्वापर**—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा-नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापर युग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण, श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौएँ दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र, पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप-यज्ञ-देव-पूजनादि करने वाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां क्षत्रिणी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चंद्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने-अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कृष्णक्षेत्र प्रधान था। **कलियुग**—भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी

आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान के [illegible]

श्रीनारायण के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह, ... वर्ष की थी, इसमें ... से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कृष्णक्षेत्र प्रधान था। कलियुग–भाद्रपद कृष्ण

आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) हैं। जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष रहेंगे तब संभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायेगा। गौएँ दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कागज मुद्रा प्रायः चलेंगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेद ज्ञान से शून्य तथा स्नान संध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे। शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या विक्रय करेगा। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ सकारण प्रेम रहेगा। राज व्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं प्रोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामे करे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ **अथ कलिमाहात्म्यम्**—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्यार्जितम्। राजानोऽर्थपरा अरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः, साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथिवी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी परस्ता पुत्राः पितुर्द्वेषिणः हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसक्ता नीचानां अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति ॥ **कलौ गंगायाः स्थितिः**—पञ्चशते गंगया होता भविष्यत्यन्तिमे कलौ। तदैव विष्णुरन्यत्र मेदनीं परागवः ॥ **भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च**—यावद्धरण्यां तुलसी प्ररूढ्यते गुरुभिश्च दिवि कल्पपादपः। यावत्पदं बड़वानलस्य वसामि तावत्तव चक्रवाते ॥ इति ॥ कलौ दशसहस्राणि ... प्रेष्य, मान्येतु कलिष्विति ॥

वर्ष राजादि फल विचार सं० २०२०

श्री विक्रम सं० २०२०, शक संवत् १८८५, श्री कृष्ण-जन्म सं० ५१९९, श्री महावीर जैन निर्माण सं० २४८९–९०, ईस्वी सन् १९६३–६४, हिजरी सन् १३८२;८३, फसली सन् १३७०–७१ वर्षादि में गुरुमान से प्रभव आदि साठ संवत्सरों में से "रुद्र-विंशति" का नल नामक संवत्सर है। "नलाब्दे मध्य सस्यार्घं वृष्टिभिः प्रचरा धरा। नृप संक्षोभ-संजाता भूरि तस्कर-भीतयः ॥" अर्थात् अन्न की उपज मध्यम हो। राजाओं में क्षोभ रहे। चोरों से जनता त्रस्त रहे। "नल संवत्सरे शनि स्वामी अल्पमेघः परं समर्घता, चैत्रे रोग पीड़ा, वर्दिलं बहुलं, वायुः प्रबलः, वैशाखेऽरिष्टम्, अन्न संग्रहः कार्यः। ज्येष्ठे राज्ञां परस्परं विग्रहः, लोकः सुखी, मार्गं वैषम्यं, क्वचिदाषाढ़ श्रावण चाल्पमेघः, धान्ये त्रिगुणश्चतुर्गुणो लाभः, भाद्रपदे खण्डवृष्टि दुर्भिक्षं धान्य-संग्रहः आषाढ़े कार्यः, आश्विने विनयः, मार्गशीर्षादि-मासत्रयेऽन्नसमता, फाल्गुने रोग तस्कर भयं उत्तरदेशे दुष्कालः, पूर्वस्यां सुभिक्षम् ॥

इस वर्ष का राजा मंगल, मंत्री शनि, सस्येश मंगल, धान्येश रवि, मेघेश शनि, रसेश गुरु, नीरसेश मंगल, फलेश शुक्र, धनेश चन्द्र और दुर्गेश शुक्र हैं। इनका फल इस प्रकार है:—

राजा मंगल का फल :—"भौमे नृपे वन्हिभयं जनक्षयः, चौराकुलं पार्थिव विग्रहश्च। दुःखं प्रजा-व्याधि-वियोग-पीड़ा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः ॥"—अग्नि का भय रहे। जनक्षय चोर एवं युद्धादि से अशान्ति रहे। जनता में रोग पीड़ा रहे तथा वर्षा कम हो।

मंत्री शनि का फल :—"रवि सुते सति मन्त्रिणि पार्थिवा विनय संरहिताः बहु दुःखदा। न जलदा जलदा जनताऽगदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित् ॥"—राजाओं में नम्रता न रहने से अशान्ति रहे। वर्षा कम हो। जनता भी सुखी एवं समृद्ध न हो।

सस्येश मंगल का फल :—"प्रथमधान्यपतौ धरणी-सुते गज-तुरङ्ग-खरोष्ट्र गवा मपि। प्रभवदो बहुरोगं घनो जलं व समसौख्य करं तुष-धान्य हृत् ॥"—पशुओं में रोग वृद्धि हो वर्षा में कमी रहे। तुष-धान्य (जौ, गेहूँ, चावल आदि) की खेती को हानि पहुँचे।

धान्येश रवि का फल :—"पश्चाद्धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद्धान्यं तदानहि। विग्रही भू-भृतां धान्यं महर्घं ज्वर पीड़नम् ॥"—पीछे वाले धान्य को हानि पहुँचने से इसमें महर्घता आए। राजाओं में संघर्ष एवं जनता रोग ग्रस्त हो।

मेघेश शनि का फल :—"रवि सुते जलदस्य पतौ भवेद्विरल-वृष्टिवती धरा तदा। मनसि ताप करो नृपतिः सदा विविध-रोग युता जनता भता ॥"—वर्षा कम हो। राजा लोग दुःखी रहें एवं जनता में रोग-वृद्धि हो।

रसेश-गुरु का फल :—"यदि गुरु रसपो जन-सौख्यदः कमलवान्ति सरांसि तृणानि च। जनपदा द्विज-पूजन-तत्परा। गज-तुवाजि-रथोष्ट्रा-युता नृपाः ॥"—जनता सुखी रहे। फल-फूलों की उपज अच्छी हो। द्विज सम्मानित हों। राजाओं में ऐश्वर्य-वृद्धि हो।

नीरसेश मंगल का फल :—"नीरसेशो यदा भौमः प्रवाल रक्त वाससाम्। रक्त-चन्दन ताम्राणां मर्घवृद्धि दिने दिने ॥"—मूँगा, चन्दन ताम्बा एवं लाल वस्तुएं महंगी हों।

फलेश शुक्र का फल :—"सति फलस्य पतौ भृगुजे धरा मृदुकुमार महीरुहराशयः। बहुफला नर-नाथ सुभोगदा द्विजवराःश्रुति-पाठ-परायणाः ॥"—फल-फूल अच्छे हों। राजा समृद्ध हों। पण्डित लोग कर्तव्य परायण रहें।

धनेश चन्द्र का फल :—"धनपति मृग लाञ्छनको यदा, रसचय-क्रय विक्रय तो धनम्। वसन-शालि-सुगन्ध रसं बहु द्रविण तैल युतं नृप-सौख्यदम् ॥—सुगन्धित वस्तुएं तेल, घी एवं चावलों में लाभ रहे।

दुर्गेश शुक्र का फल :—"नगर देश विशेष पतिर्यदा भृगु सुतो बहु सौख्य करो मतः । विनय वाणिज-गह समः सुखो नग वने निकटेऽपिच दूरतः ॥" देशाधिप सुखी रहे। व्यापारियों को वाणिज्य में लाभ रहे।

नव मेघों में कीलक मेघका फल :—वर्षा कम हो। रोग बढ़े।

द्वादश नागों में से कर्कोटक नाग का फल :—वर्षा कम हो।

रोहिणीवास :—इस वर्ष रोहिणी का वास समुद्र में है अतः वर्षा अच्छी हो । समय का वास माली के घर है तथा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मंगलवार होने से समय का वाहन वृषभ है। शनि की दृष्टि उत्तर में है। अतः उत्तरीय प्रदेशों में रोगभय, दुर्भिक्ष एवं अशांति रहे। इस वर्ष दो सोमवती अमावस हैं भाद्रपद एवं पौष में।

वर्षा आदि के विश्वामान वर्षा विस्वा १७, धान्य १७, तृण १७; शीत ५, तेज ५, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ५, तृषा ९, निद्रा ९, आलस्य ११, उद्यम ७, शान्ति ५, क्रोध ५, दम्भ ५, पाखण्ड ३, लोभ १५, मैथुन ९, रस १३, फल ११, उत्साह ३, उग्रत्व ११, पाप १७, पुण्य १३, व्याधि ३, व्याधिनाश ९, आचार १, अनाचार १७, मृत्यु ९, जन्म १३, देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य १७, चोर ३, चौरनाश ९, अग्नि ३, अग्नि-शान्ति ३, उद्भिज्ज ९, जरायुज ३, अण्डज ११, स्वेदज ५, टिड्डी ५, तोता ७, मूषक १५, सोना ५, तांबा १९, स्वचक्र ५, परचक्र १३, वृष्टि ७, वृष्टि नाश ७, संवत् विस्वा ८।

वर्षस्तम्भ चतुष्टय विचार :—जल स्तम्भ रुपए में ९ आने है अतः वर्षा मध्यम हो। तृण स्तम्भ ११ आने हैं अतः तृणोत्पत्ति अच्छी हो। वायु एवं अन्न के स्तम्भ का अभाव है

आर्षमान (वर्ष रक्षा के लिए चार दुर्ग) :— पहला आर्ष गत वर्ष की पौष ३० को मूल नक्षत्र १६ विस्वा, द्वितीय आर्ष अक्षय तृतीया को रोहिणी १३ विस्वा, तीसरा आर्ष श्रावण शुक्ल १५ को श्रवण १४ विस्वा एवं चौथा आर्ष-कार्तिक शु. १५ को कृत्तिका नक्षत्र १३ विस्वा है। अतः आर्षमान के अनुसार यह वर्ष अच्छा रहेगा।

"अखै तीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारों, कातिक पुण्यों कृत्तिका टारौं ॥"
म हो माह खलबली प्रकाशै कहै भड्डली साख विनाशै ॥"

क्षयमासफल :—"क्षयमासो भवेद्यस्मिंस्तस्मिन् वर्षेऽतिविग्रहम् । दुर्भिक्षं वाऽथवा पीडां छत्र भंगं करोति वा ॥ इस वर्ष में क्षय मास है अतः उपर्युक्त प्रमाण के अनुसार कहीं युद्ध, दुर्भिक्ष एवं छत्रभंग की आशंका है।

नव-वर्ष प्रवेश :—गत संवत् २०१९ चैत्र कृ ३० चन्द्रवार को इष्ट २८।८ पर सिंह लग्न के २९ अंश पर नव-वर्ष प्रारम्भ होगा। फल-दक्षिण में बाढ़भय, धान्य में महंगाई आवे। पश्चिम में धातु की चीजें महंगी हों । उत्तर में अधिक वृष्टि हो।

वर्षेशलग्न:—सं० २०२० में वैशाख कृष्ण चतुर्थी शनिवार को इष्ट ५७।५२ पर, (मीन लग्न के १२ अंश पर) सूर्य भगवान् मेष राशि में प्रविष्ट होंगे। फल :—वर्ष में सुभिक्ष रहे।

आर्द्रा-प्रवेश—संवत २०२० में आषाढ शुक्ल प्रतिपदा शनिवार को इष्ट ७।५० पर कर्क लग्न १७ अंश पर सूर्य आर्द्रा में प्रविष्ट होगा। फल जनता में रौद्रकार्य मारकाट एवं ठगी आदि अधिक हों।

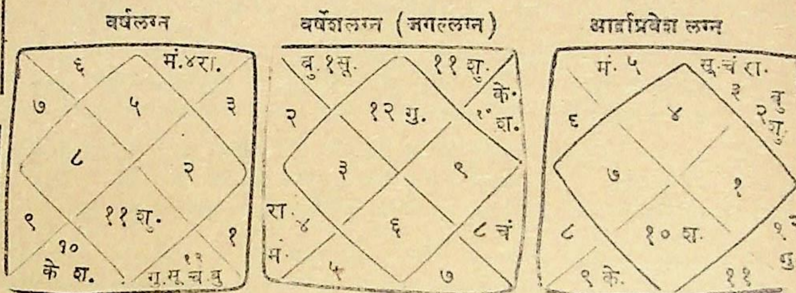
सूचना—राजा का फल काश्मीर व अफगानिस्तान में, मंत्री का वाल्हीक और मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र विदर्भ, में धान्येश का नर्मदा के तटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध में, रसेश का कोंकण व मगध में, नीरसेश का मालवा देश में एवं फलेश, धनेश तथा दुर्गेश का फल सब जगह विशेष होता है।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादितिथौ शुभम् । यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत ॥"

—लाभ व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म	कुं.	मी.
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	१४	५	५	१४	११	५	५	१४	२	५	५	२

लाभ व्यय देखने की रीति :—अपनी राशि के लाभ व्यय के अंकों को जोड़ कर एक घटा और शेष को ८ से भाग देने पर १।२।६।७ बचे तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३।४।५।० बचे तो लाभ बहुत कम हो और चिन्ता भी रहे।



वर्षलग्न — वर्षेशलग्न (जगल्लग्न) — आर्द्राप्रवेश लग्न

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—अपने जन्मलग्न से जगल्लग्न जिस स्थान में आवे वह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो और बलवान् हो तब वर्ष में उस भाव की वृद्धि यदि पापी ग्रह की दृष्टि अथवा योग होवे तो उस भाव की हानि होगी और जन्मलग्न, जन्म-राशि और वर्षलग्न से यदि वर्षेश (जगल्लग्न) ८वें, १२ वें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता।

जन्मलग्न से जगल्लग्न का फल—१. देहसुख, २. धनलाभ, ३. कुटुम्बवृद्धि, ४. मित्रसौख्य, ५. पुत्रसौख्य, ६. शत्रुजय, ७. स्त्रीसुख, ८. रोगभय, ९. धर्मलाभ, १०. धनलाभ, ११. लाभसुख, १२. व्ययदुःख।

१०. धनलाभ, ११. लाभसुख, १२. व्ययदुःख ।

श्री वि० सवत् २०२० शाके १८८५ चैत्र शुक्लपक्ष १ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | २६ मार्च से ९ अप्रैल तक, सन् १९६३ ई०

दि.मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
० ४३	१	मं.	१८ ५५	रे	४४ २	ब्र.	११ ५०	ब.	१८ ५५	१३	२६	५	२१	मे ४४।२	६	१९	६	[illegible]
० ४७	२	बु.	९ ३३	अ.	३६ ४७	ऐं.	५० ५०	कौ.	९ ३३	१४	२७	६	जि	मेष	६	१८	६	३७
० ५२	३	गु	० ३७	भ.	३० १७	वि.	४१ १२	ग.	० ३७	१५	२८	७	२	वृ. ४३।१६	६	१७	६	[illegible]
क्षय	४	[illegible]	१२ ३८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
० ५७	५	शु.	५५ ५५	कृ.	२४ १५	प्री.	३२ ३५	ब.	१३ १६	१६	२९	८	३	वृष	६	१६	६	[illegible]
१ १	६	श.	४७ ४२	रो.	२१ ०	आ.	२५ १२	ता.	१३ १४	१७	३०	९	४	मि. ४९।१२	६	१५	६	३९
१ ५	७	र.	३७ २०	मृ.	१८ ४५	सौ	११ १०	ग.	९ १	१८	३१	१०	५	मिथुन	६	१४	६	४०
१ १०	८	चं.	३१ ४५	आ.	१८ २०	शो.	१४ ३७	वि.	६ ३२	१९	अ१	११	६	मिथुन	६	१३	६	[illegible]
१ १५	९	मं.	३५ १२	पुन.	१९ ३७	अ.	११ ३०	बा.	५ ४८	२०	२	१२	७	क ४।१८	६	१२	६	४[illegible]
१ २०	१०	बु.	३७ ३७	पु.	२२ २०	सु.	९ ४०	तै.	६ ४४	२१	३	१३	८	कर्क	६	१०	६	४[illegible]
१ २५	११	गु.	४० ४०	आश्ले.	२६ ४५	धृ.	८ ५५	व.	९ ९	२२	४	१४	९	सिं २३।४५	६	९	६	४३
१ २९	१२	शु.	४४ ४९	म.	३२ ३	शू.	९ ५	ब.	१२ ४२	२३	५	१५	१०	सिंह	६	८	६	४४
१ ३३	१३	श.	४९ ३७	पू.फा.	३८ ७	ग.	१० ०	कौ.	१७ ११	२४	६	१६	११	क. १४।४७	६	७	६	४४
१ ३८	१४	र.	५५ ५	उ.फा.	४४ ४७	वृ.	११ २५	ग.	२२ २१	२५	७	१७	१२	कन्या	६	६	६	४५
१ ४२	१५	च	६० ०	ह.	५१ २२	ध्रु.	१३ १२	वि.	२८ १	२६	८	१८	१३	कन्या	६	५	६	४६
१ ४७	१५	चं.	० ५७	चि.	५९ १२	व्या.	१५ १७	ब.	० ५७	२७	९	१९	१४	त २५।३२	६	४	६	४७

ग्रह दर्शन :—बुध अस्त है। गुरु ७ अप्रैल को उदित होगा। प्रातः शनि एवं शुक्र पूर्व में दिखाई देंगे। सायंकाल मंगल खमध्य से पूर्व की ओर लम्बित दीखेगा। (उत्तरायण, वसन्त ऋतु)

चन्द्र दर्शन, पञ्चक स., ४४।२ चान्द्र संवत्सर एवं नवरात्र-प्रारम्भ, वर्षफल*
जिलकाद मु. ११ प्रा., *श्रवण,
भ. २६।३७ उ. ५२।३८, या., गण गौरी पूजा,

> वर्षारम्भ में बार्हस्पत्य मान से 'नल' नामक संवत्सर है, अतः वर्षान्त तक इसी नाम को संकल्प में प्रयुक्त करना चाहिए।

शत. में शुक्र ५९।३२.
मेला माई सरखाना.
भ. ३७।२० उ. रेवती में सूर्य २३।५५, रेवती में बुध ९।३८,
भ. ६।३२ या., धनि. २ में शनि ३८।१०, अप्रैल प्रा., श्रीदुर्गाष्टमी, मेला श्री मनसा देवी
श्री रामनवमी (पुनर्वसु-मुक्त), नवरात्र-समाप्त,

भ. ९।१९ उ. ४०।४० या., उ. भा. २ में गुरु २।१८ कामदा ११ व्र. स.

अश्विनी मेष में बुध ३४।५० जैन महावीर जयन्ती, शनि प्रदोष व्र.
भ. ५५।५ उ. गुरु उदित २४।३६,
भ. २८।१ या. सत्य व्र. [गु. उ.]
वैशाख स्नान प्रा., मेला माणकपुर शरीफ प्रा.,

चैत्र शुक्ल ८ चन्द्र इष्ट ४४।२८,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	११	११	१०	९	३	९
१७	१४	१९	६	९	२६	[illegible]	[illegible]
५९	१२	५४	७	५५	४०	३१	३१
२९	७	४०	०	४७	३४	५४	८
५९	९	१२८	१४	७१	५	३	३
१२	३६	३७	९३	९१	२०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(कुण्डली: १ | ११ शु. श. | २ | सू. १२ बु. गु. | १० के. | ३ चं. | ९ | ४ मं. रा. | ८ | ५ | ७)

२६ मार्च से सोना, चाँदी में घटाबढ़ी चल कर बाद में तेजी आवे। २९ मार्च से कपास, गुड़, खांड, घी, सरसों, अलसी, लाख, जौ एवं गेहूं में तेजी आवे। ६ अप्रैल के बाद गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, रुई एवं कपास में मन्दी का रुख बने। मूँगा एवं जवाहरात के भाव तेज हों। पशुओं में रोग वृद्धि हो। ३१ मार्च से ११ दिन के बीच केसर, मजीठ, कुसुम्भ, गेरू, लाल चन्दन, लाल मिर्च, एवं अन्य लाल चीजों में तेजी आवे। ७ अप्रैल से चांदी एवं धान्य तेज हों। सोने में कुछ मन्दी का वातावरण बने।

चैत्र शुक्ल १५ मंगल इष्ट ४४।५०

(कुण्डली: १ बु. | ११ शु. के. | २ | सू. १२ गु. | १० श | ३ | ९ | मं. ४ रा. | ६ चं. | ८ | ५ | ७)

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	०	११	१०	९	३	९
२५	१५	६	८	११	२७	२	२
११	४५	२७	१	२७	२१	६	६
१८	०	१	१०	३९	२२	३१	३१
५८	१४	१२०	१४	७१	४	३	३
१७	१३	३१	४	३७	४४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण:—

७ अप्रैल के बाद पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल एवं हिमाचल प्रदेश में बूँदाबांदी के योग बनते हैं।

शकुन विचार :—

चैत्र सुदी जो पञ्चमी दक्षिण पूर्व वाय।
वर्षा भी होवे कुछ भादों तेज बिकाय॥

वि. सं २०२० शाक १८८५ वैशाख कृष्ण पक्ष २ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम | (१० से २३ अप्रैल तक सन् १९६३ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
३१	११	१	बु.	७	५	स्वा.	६०	०	ह	१७	३२	कौ.	७	५	२८	१०	२०	१५	तुला	६	३	६	४७
३१	५६	२	गु.	१३	१	स्वा.	६	४०	व.	१९	५०	ग.	१३	१२	२९	११	२१	१६	वृ.५७।१०	६	१	६	४८
३२	०	३	शु.	१३	१२	वि.	१४	०	सि.	२२	०	वि.	१९	१२	३०	१२	२२	१७	वृश्चिक	६	०	६	४८
३२	४	४	श.	२४	५०	अनु.	२१	०	व्य.	२३	१०	बा.	२४	५०	१	१३	२३	१८	वृश्चिक	५	५९	६	४९
३२	९	५	र.	२९	४	ज्ये.	२७	१३	व.	२५	१२	तै.	२९	४२	२	१४	२४	१९	ध.२७।१७	५	५८	६	४९
३२	१४	६	चं.	३३	२७	मू.	३२	३०	प.	२५	४०	ग.	१	३४	३	१५	२५	२०	धनु	५	५६	६	५०
३२	१८	७	मं.	३५	४२	पू. षा.	३६	१५	शि.	२५	०	वि.	४	३५	४	१६	२६	२१	म.५१।४५	५	५५	६	५०
३२	२२	८	बु.	३६	७	उ. षा.	३८	१५	सि.	२३	०	बा.	५	५४	५	१७	२७	२२	मकर	५	५४	६	५१
३२	२६	९	गु.	३४	३३	श्र.	३८	१८	सा.	१९	२५	तै.	५	२०	६	१८	२८	२३	मकर	५	५३	६	५१
३२	३१	१०	शु.	३०	५५	ध.	३६	२०	शुभ	१४	१२	व.	२	४७	७	१९	२९	२४	कुं. ७।१९	५	५१	६	५२
३२	३५	११	श.	२५	१७	श.	३२	३०	शुक्ल	७ ५६	२४ १०	बा.	२५	१७	८	२०	३०	२५	कुम्भ	५	५०	६	५२
३२	४०	१२	र.	१८	१३	पू. भा.	२७	३	ऐं.	४९	४७	तै.	१८	१३	९	२१	१	२६	मी.१३।२५	५	४९	६	५३
३२	४५	१३	चं.	९	४२	उ. भा.	२०	२०	वै.	३३	३२	व.	९	४२	१०	२२	२	२७	मीन	५	४८	६	५४
३२	४९	१४	मं.	०	२७	रे.	१२	५०	वि.	२८	४५	श.	०	२०	११	२३	३	२८	मे.१२।५०	५	४७	६	५४
अव	म	३०	मं.	१०	२७	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०		०	०

ग्रह दर्शन :—बुध १२ अप्रैल को पश्चिम में उदित होगा। प्रातःकाल शनि समध्य से पूर्व की ओर लम्बित एवं उससे कुछ अन्तर पर पूर्व क्षितिज की ओर शुक्र तथा गुरु दीखेंगे। सांयकाल मंगल खमध्य समान होगा। ∠

पू. भा. में शुक्र १२।८, गुरु-बाल्य समाप्त, ∠ (उत्तर अयन वसन्त प्रारम्भ ऋतु)
भ. ४६।१२ उ., मेला साणकपुर शरीफ समाप्त,
भ. १९।१२ या, बुध पश्चिम में उदित ८।५५, श्री गणेश ४ व्र., गुड फ्राइडे,
सं. अश्वि. मेष में सूर्य ५७।५२, मु. १५ पुण्य आगामी दिन, आश्ले. में मंगल*
ईस्टर सण्डे,
भ. ३३।२७ उ.
भ. ४।३५। या. *२८।२२, भरिणी में बुध. १५।१०. मेला [illegible]
(वि. मु. श्रव.)
उ. भा. ३ में गुरु १४।२५ मीन में शुक्र ३४।२५, (वि. मु. श्रव.)
भ. २।४४ उ., ३०।५५ या., पञ्चक प्रा. ७।१९
सा. वृष में पूर्य ४.७।३८, श्रोण्पर्तु प्रा., अगस्त्य अस्त, वरुथिनी ११ व्र. स.,
कृतिका में बुध २१।५, उ. भा. में शुक्र २१।३०, रा. वैशा. प्रा. प्रदोष व्र.,
भ. ९।४२ उ., ३५।०१ या.,
पञ्चक स. १२।५०, मेला पञ्जौर.

वैशाख कृष्ण ८ बुध इष्ट ४५।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	११	१०	९	३	९
३	१७	२१	९	२२	२७	१	१
४२	५०	१६	१३	१	५७	४१	४१
२०	१४	[illegible]	१६	१२	११	५	५
५८	१७	[illegible]	१३	३१	४	३	३
३९	३४	१४	५२	४९	१९	११	११
	मा.	मा.	मा.	म.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

२ | गु. १२ | ३ | बु. १सू. | शु. ११ | मं. ४रा. | १० श. के. च. | ५ | ७ | ९ | ६ | ८

इस पक्ष में टिड्डी आदि का प्रकोप रहे। १५ दिन के भीतर रुई में मन्दी का वातावरण बने एवं कपास तथा धान्य के भाव सम रहें। १३ अप्रैल से चना आदि अन्न में पहले मन्दी आकर बाद में फिर तेजी आवे। केसर, मजीठ सिन्दूर, लाख, एवं किरयाने की चीजें तेज हों। १८ अप्रैल से तिलहन, तेल, सरसों, गुड़ और खाण्ड में मन्दी रहे। चांदी में कुछ तेजी आवे। उड़द, मूंग, चावल, नमक एवं लहसुन दो मास के भीतर तेज हों। जनता में ज्वर आदि का प्रकोप हो। वैशाख कृष्ण एकादशी के दिन यदि आकाश बादलों से ढका रहे तो धान्य को बेचना लाभप्रद रहे।

आकाश लक्षण :—१० अप्रैल से १४ अप्रैल तक भूटान, सिक्किम एवं आसाम में बादल चाल के योग बनते हैं।

शकुन विचार :—

वैशाख वदी आठ दिनां बिजली गर्जन होय।

वैशाख कृष्ण १४ मंगल इष्ट ४५।३२

२ | गु. शु. चं. १२ | ३ | बु. १ सू. | ११ | ४ मं. रा. | १० के. श. | ५ | ७ | ९ | ६ | ८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	११	११	९	३	९
९	१९	२९	११	६	२८	१	१
३३	४१	४१	१५	१२	२१	२२	२२
३८	३६	४६	४८	३६	३९	०	०
५८	२०	६७	१३	७२	३	३	३
२७	०	११	३८	२	४७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ वैशाख शुक्लपक्ष ३ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम | (२४ अप्रैल से ८ मई तक सन् १९६३ ई.)

वैशाख वदी आठ दिना बिजली गर्जन होय।

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ वैशाख शुक्लपक्ष ३ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टाईम | (२४ अप्रैल से ८ मई तक सन् १९६३ ई.)

वि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. वैशा.	अं. अप्रै.	रा. वैशा.	मु. जिल्हिज्ज	सञ्चार	सू. उ. चण्डीगढ़ घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
३२	५२	१	बु.	४०	४२	अश्वि.	५७	२५	प्री.	१७	१०	कि	१५	३४	१२	२४	४	२३	मेष	५	४६	६	५५
३२	५७	२	गु.	३१	३०	कृ.	५१	३०	आ.	५७	१०	बा.	६	६	१३	२५	५	३०	वृ. १०।४१	५	४५	६	५६
३३	१	३	शु.	२३	२०	रो.	४४	४७	शा.	४८	१२	ग.	२३	२०	१४	२६	६	जि.	वृष	५	४४	६	५७
३३	५	४	श.	१६	३२	मृ.	४०	३८	अ.	४०	३	वि.	१६	३२	१५	२७	७	२	मि. १२।४२	५	४३	६	५७
३३	१०	५	र.	११	२७	आ.	३८	१५	सु.	३४	२०	बा.	११	२७	१६	२८	८	३	मिथुन	५	४२	६	५८
३३	१५	६	चं.	८	२०	पुन.	३७	५५	धृ.	२९	४७	तै.	८	२०	१७	२९	९	४	क. २३।०	५	४१	६	५९
३३	१९	७	मं.	७	१२	पुष्य	३९	३०	शू.	२६	५०	व.	७	१२	१८	३०	१०	५	कर्क	५	४०	७	०
३३	२३	८	बु.	८	५	आश्ले.	४२	१५	गं.	२५	२०	व.	८	५	१९	१म	११	६	सिं. ४२।१५	५	३९	७	०
३३	२८	९	गु.	१०	४०	म.	४७	५०	वृ.	२५	७	कौ.	१०	४०	२०	२	१२	७	सिंह	[illegible]	३८	७	१
३३	३२	१०	शु.	१४	३७	पू. फा	५३	५२	ध्रु.	२६	०	ग.	१४	३७	२१	३	१३	८	सिंह	५	३७	७	२
३३	३६	११	श.	१९	२७	उ. फा.	६०	०	व्या	२७	३५	वि.	१९	२	२२	४	१४	९	क. १०।३५	५	[illegible]	७	२
३३	३९	१२	र.	२५	१७	उ. फा.	०	४५	ह.	२९	४०	बा.	२५	१७	२३	५	११	१०	कन्या	[illegible]	३६	७	३
३३	४२	१३	चं.	३१	२०	ह.	८	२	व.	३१	१७	तै.	३१	२०	२४	६	१६	११	तु. ४१।४६	५	३५	७	४
३३	४६	१४	मं.	३७	२८	चि.	१५	३	सि.	३४	२०	ग.	४	२४	२५	७	१७	१२	तुला	५	३४	७	४
३३	५०	१५	बु.	४३	२०	स्वा.	२२	५३	व्य.	३६	३५	वि.	१०	२४	२६	८	१८	१३	तुला	५	३३	७	५

ग्रह-दर्शन :—सूर्योदय से पूर्व शनि खमध्य से पूर्व की ओर नत, एवं गुरु शुक्र पूर्व क्षितिज से ऊपर दीखेंगे। सूर्यास्त बाद मंगल खमध्यासन्न दीखेगा। बुध ८ मई को पश्चिम में अस्त होगा। (उत्तर अयन ग्रीष्म ऋतु)।

वृष में बुध १।५०,

चन्द्र दर्शन, श्री परशुराम जयन्ती, [वि. मु. रो.]

भ. ४९।५६ उ., जिल्हिज्ज मु. १२ प्रा., अक्षय ३, [वि. मु. रो.]

भ. १६।३२ या., भरणी में सूर्य ३८।७, श्री सूर जयन्ती;

श्री गंगा जन्म ७,

भ. ७।१२ उ., ३७।३८ या.,

मई प्रा., बुधाष्टमी, श्री जानकी-जयन्ती [वि.मु. मघा]

रेव. में शुक्र २८।१५, श्री १००८ आनन्दमयी मातृ-जन्म दिनोत्सव-प्रा. <

भ. ४७।२ उ., उ. भा. ४ में गुरु ३।३०, > [वि. मु. मघा]

भ. १९।२७ या., मोहिनी ११. व्र. सं., (वि.मु.उ.फा.)

प्रदोष व्र., इदुज्जुहा, (वि. मु. हस्त)

बुध वक्री २९।२, (वि.मु. हस्त-चित्रा)

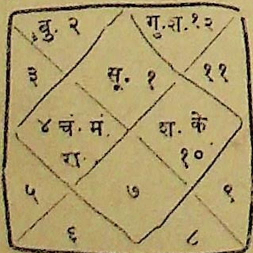
भ. ३७।२८ उ., श्री नृसिंह-जयन्ती जन्म दिन—श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, ×

भ. १०।२४ या., बुध पश्चिम में अस्त ४८।२, श्री बुद्ध जयन्ती, वैशाख,*

× [वि. मु. चि.] *स्नान स., सत्य व्र.,

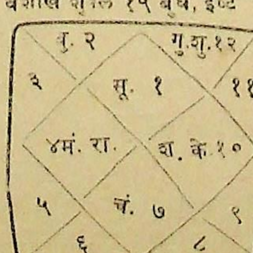
वैशाख शुक्ल ८ बुध, इष्ट ४२।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	१	११	११	९	३	९
१७	२२	६	१३	१५	२८	०	०
२०	३१	१५	३	४९	४७	५६	५६
२२	२०	४०	१	८	१८	३४	३४
५८	२२	२४	१३	७२	२	३	३
१३	३३	२८	९	८	५०	११	११
	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ. २	आश्ले. ३	कृ. ३	उ.भा.३	उ.भा.४	ध. २	पुन. ४	उ.षा.२
चण्ड	अमृत	चण्ड	सौम्य	सौम्य	अमृत	नीर	नीर



इस पक्ष में मादक द्रव्यों में महगाई रहे। रुई में मन्दी आकर तेजी आवे। २४ अप्रैल से तिल, तेल, गेहूं, सूत, जौ, मूंग, मोठ एवं उड़द में तेजी आवे। २७ अप्रैल से लोहा, ताम्बा, अलसी, पीतल, राई, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं घी में तेजी आवे। चांदी में घटाबढ़ी चल कर अन्त में तेजी रहे। पक्षान्त में पशुओं के भाव बढ़ें। जनता में हैजे का प्रकोप हो। यदि वैशाख शुक्ल पञ्चमी को सारा दिन पूर्व की वायु चले तो अन्न संग्रह से काफी लाभ होगा।

वैशाख शुक्ल १५ बुध, इष्ट ४६।१४



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	१	११	११	९	३	९
२४	२५	७	१४	२४	२९	०	०
७	१४	९	३३	१४	६	३४	३४
१६	२९	२९	४४	३६	४९	१९	१९
५८	२४	१२	१२	७२	[illegible]	३	३
१	३६	१६	४३	१८	४२	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ.
भ. ४	आश्ले.३	कृ. ४	उ.भा.४	रे. ३	ध. २	पुन. ४	उ.षा.२
चण्ड	अमृत	चण्ड	सौम्य	अग्नि	अमृत	नीर	नीर

आकाश लक्षण:—३ मई से ८ मई तक बर्मा, मैसूर, बिहार, ईडीसा एवं मद्रास में वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार :—

शुक्ल पक्ष वैशाख की तिथि दशमी दिन देख।
बादल हो पावन बिसे, जल नहीं पड़े विशेष॥

इ. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. वैशा.	अं. मई	रा. वैशा.	मु. ज़िल्हिज	सञ्चार	चडीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
३३	५४	१	गु.	४८	५७	वि.	२९	५८	व.	३८	३५	बा.	१६	८	२७	९	१९	१४	वृ.१३।१२	५	३२	७	६
३३	५८	२	शु.	५४	५	अनु.	३६	४०	प.	४०	१७	तै.	२१	३१	२८	१०	२०	१५	वृश्चिक	५	३१	७	७
३४	२	३	श.	५८	३३	ज्ये.	४२	४७	शि.	४१	३०	व.	२६	१९	२९	११	२१	१६	ध.४२।४७	५	३०	७	७
३४	५	४	र.	६०	०	मू.	४८	८	सि.	४२	८	ब.	३०	२१	३०	१२	२२	१७	धनु	५	३०	७	८
३४	८	४	चं.	२	१०	पू. षा.	५२	२०	सा.	४१	५२	बा.	२	१०	३१	१३	२३	१८	धनु.	५	२९	७	८
३४	११	५	मं.	४	३५	उ. षा.	५५	१७	शु.	४०	३७	तै.	४	३५	ज्ये.१	१४	२४	१९	म.८।४	५	२९	७	९
३४	१४	६	बु.	५	३७	श्र.	५६	४२	शु.	३८	१२	व.	५	३७	२	१५	२५	२०	मकर	५	२८	७	१०
३४	१७	७	गु.	५	२	ध.	५६	२५	ब्र.	३४	२२	ब.	५	२	३	१६	२६	२१	कुं.२६।३४	५	२८	७	१०
३४	२०	८	शु.	२	४५	श.	५४	२७	ऐं.	२९	१५	कौ.	२	४५	४	१७	२७	२२	कुम्भ	५	२७	७	११
अव	म	९	शु.	५८	४०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
३४	२३	१०	श.	५३	०	पू. भा.	५०	५०	वै.	२२	४०	व.	२५	५०	५	१८	२८	२३	मी.३६।४४	५	२६	७	१२
३४	२६	११	र.	४२	५२	उ. भा.	४५	४२	वि.	१४	५०	ब.	१९	२६	६	१९	२९	२४	मीन	५	२६	७	१२
३४	२९	१२	च.	३७	४०	रे.	३९	३३	प्री.	५६ ५	५५ १०	कौ.	११	४६	७	२०	३०	२५	मे.३९।३३	५	२५	७	१३
३४	३२	१३	मं.	२८	४०	अ	३२	३५	सौ.	४५	५७	ग.	३	१०	८	२१	३१	२६	मेष	५	२५	७	१४
३४	३५	१४	बु.	१९	२५	भ.	२५	२२	शो.	३५	३५	श.	१९	२५	९	२२	ज्ये.१	२७	वृ.३८।३६	५	२४	७	१४
३४	३८	३०	गु.	१०	१८	कृ.	१८	१८	अति	२५	२५	ना.	१०	१८	१०	२३	२	२८	वृष	५	२४	७	१५

ग्रह-दर्शन :—बुध अस्त है। प्रातः शनि खमध्यासन्न, एवं गुरु शुक्र पूर्व क्षितिज में ऊपर नीचे दीखेंगे। सूर्यास्त बाद मंगल खमध्यासन्न दीखेगा।
(उत्तर अयन, ग्रीष्म ऋतु)

वरुण मार्गी ४६।१०.

भ. २६।१९ उ., ५८।३३ या; कृत्तिका में सूर्य २४।२०,
श्रीगणेश ४ व्र., श्री १००८ आनन्दमयी-मातृ-जन्म दिन (प्रधानोत्सव),‡
अश्वि. मेष में शुक्र ३२।४५, ‡ एवं उत्सव विसर्जन,
सं. वृष मे सूर्य ५१।३२, मु. ४५, पुण्य आगामी दिन,
भ. ५।३७ उ., ३५।१९ या.
पञ्चक प्रा. २६।३४;

§ अपरा ११ व्र., स्मा. वै., [वि.मु.उ.भा.रे.]
भ. २५।५० उ., ५३।० या; रेवती १ में गुरु ५८।१२; [वि.मु.उ.भा.]
मघा सिंह में मंगल ४९।०, पुन. ३ मिथुन में राहु, उ. षा. १ धनु में केतु ३३।५०,§
पञ्चक स., ३९।३३, अपरा ११ व्र. नि. [वि. मु. रे.]
भ. २८।४० उ., ५४।२ या; सा. मिथुन में सूर्य ४७।१, भौम प्रदोष व्र.,
रा. ज्येष्ठ-प्रा.,
भावुका ३०, वट सावित्री व्र.,

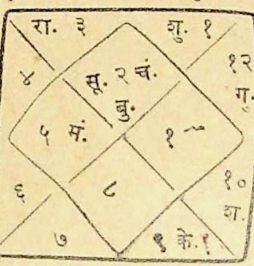
ज्येष्ठ कृष्ण ८ शुक्र इष्ट ४६।२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	१	११	०	९	३	९
२	२९	३	१६	५	२९	०	०
४८	५	१८	२५	५	२६	५	५
२७	१८	१४	३६	५०	४९	४२	४२
५७	२६	३३	१२	७२	१	३	३
४७	४१	१९	३	२४	३५	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस पक्ष में अनाज का भाव गिरे। ११ मई से अलसी, जौ, चना, सरसों, मूंग एवं मोठ में तेजी का वातावरण बने। १३ मई से गुड़, शक्कर, एवं बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे। सोना एवं चांदी में अच्छी तेजी आवे। किरयाने की वस्तुएं तेज हों। १९ मई से घी के भाव में पहिले तेजी आकर बाद में मन्दी आवे। सण, लाल मिर्च, लाल वस्त्र, एवं लोहा तेज हों।

ज्येष्ठ कृष्ण ३० गुरु इष्ट ४६।३०



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	११	०	९	२	८
८	१	०	१७	१२	२९	२९	२९
३४	४८	८	३६	२०	३४	४६	४६
५०	१७	२	३८	२८	४८	३७	३७
५७	२७	२३	११	७२	९	३	३
३८	५०	१३	३४	२८	०	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :—१२ मई से उत्तरी भारत, पञ्जाब, एवं राजस्थान में गर्मी का प्रकोप हो। १७ एवं १८ मई को लंका के पिछली छोर भूटान एवं सिक्किम में बादल चाल रहे।

शकुन विचार :—ज्येष्ठ अमावस दिवस वा रजनी बादल होय।
चौमासा सूखा रहे भारी गड़बड़ होय॥

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ ज्ये. शुक्लपक्ष ५ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टं. टाईम | (२४ मई से ७ जून तक सन् १९६३ ई०)

मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
४१	१	गु.	१	४०	रो.	११	५२	सु.	१५		व.	१	४०	११	२४	३	२९	मि ३९।११	५	२३	७	१५
म	२	गु.	१४०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
४४	३	श	४७	४५	मृ.	६	३०	धृ.	५७	३७	.	२०	५२	१२	२५	४	मु १	मिथुन	५	२३	७	१६
४६	४	र.	४३	१३	आ.	२	३७	गं.	५३	४०	व.	१५	२९	१३	२६	५	२	क. ४६।३	५	२३	७	१७
४८	५	चं.	४०	३२	पुन:	०	३२	वृ.	४९	१२	ब.	११	२२	१४	२७	६	३	कर्क	५	२२	७	१७
५०	६	मं.	४०	०	पुष्य	०	२२	ध्रु.	४६	२२	कौ.	१०	१६	१५	२८	७	४	कर्क	५	२२	७	१८
५३	७	बु.	४१	१७	आश्ले	२	१०	व्या	४५	५	ग.	१०	३८	१६	२९	८	५	सि. २।१०	५	२२	७	१९
५५	८	गु.	४४	२२	म.	५	४७	ह.	४५	१०	वि.	१२	४९	१७	३०	९	६	सिंह	५	२१	७	१९
५३	९	शु.	४८	५२	पू.फा.	११	५	व.	४६	१७	बा.	१६	२७	१८	३१	१०	७	क. २७।४१	५	२१	७	२०
०	१०	श.	५४	१८	उ.फा.	१७	२८	सि.	४८	१०	तै.	२१	३५	१९	जू१	११	८	कन्या	५	२०	७	२०
२	११	र.	[illegible]	०	ह.	२४	३५	व्य.	५०	२७	व.	२७	१४	२०	२	१२	९	तु. ५८।१९	५	२०	७	२१
३	१२	चं.		१०	चि.	३२	३	व.	५२	५३	वि.	०	१०	२१	३	१३	१०	तुला	५	२०	७	२१
५	१३	मं.	६	१५	स्वा.	३९	२२	प.	५५	७	बा.	६	१५	२२	४	१४	११	तुला	५	२०	७	२२
७	१३	बु.	११	५७	वि.	४६	२०	शि.	५७	०	तै.	११	५७	२३	५	१५	१२	वृ. २९।३५	५	१९	७	२३
९	१४	गु.	१७	१२	अनु.	५२	४०	सि.	५८	२५	व.	१७	१२	२४	६	१६	१३	वृश्चिक	५	१९	७	२३
१०	१५	शु.	२१	४५	ज्ये.	५८	१८	सा.	५९	१२	ब.	२१	४५	२५	७	१७	१४	ध. ५१।४८	५	१९	७	२३

ग्रह-दर्शन :—बुध २७ मई को पूर्व में उदित होगा । सूर्योदय से पूर्व शनि खमध्यासन्न, एवं शुक्र गुरु पूर्व की ओर नत होंगे । सूर्यास्त बाद मंगल खमध्यासन्न होगा । (उत्तर अयन., ग्रीष्म ऋतु)

चन्द्र दर्शन, व. बुध मेष में ७।१५, भर. में शुक्र ३५।४७,

रोहिणी में सूर्य १५।१२, मुहर्रम मु. १ हिजरी सन् १३८३ प्रा., श्री प्रताप‡

भ. १५।२९ उ., ४३।१३ या; बलिदान दिवस गुरु श्री अर्जुनदेव जी,

बुध पूर्व में उदित २२।५५ ‡जयन्ती, रम्भा व्र.,

भ. ४१।१७ उ., [वि. मु. मघा]

भ. १२।४९ या.,

बुध मार्गी २५।४२, [वि. मु. उ. फा.]

जून प्रा०, श्री गंगा दशहरा [वि. मु. हस्त]

भ. २७।१४ उ. , *[वि.मु.स्वा.]

भ. ०।१० या., शनि वक्री, ६।४०, मुहर्रम (ताजिया), निर्जला, ११ व्र.स.,☨

कृत्ति. में शुक्र ३६।४५, भौम प्रदोष व्र., ☨मेला मणिकर्ण.*

रेव २ में गुरु ५०।१५, (वि. मु. अनु.)

भ. १७।१२ उ. ४९।२८ या., वृष में बुध ३९।३०, सत्य व्र.,

वृष में शुक्र २१।५०

ज्येष्ठ शुक्ल ८ गुरु इष्ट ४६।३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	११	०	९	२	८
५	५	२८	१८	२०	२९	२९	२९
७	३	३०	५५	४८	३९	२४	२४
६	१३	१२	४४	२४	४४	२१	२१
७	२९	१	१०	५२	०	३	३
२	९	३६	५२	४२	१७	११	११
	मा.	व.	म.	मा.	[illegible]	व.	व.
	उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

३रा.
१बु शु.
२सू.
गु. १२
४
५चं.मं.
११
श. १०
६
८
७
९के.

३ जून के बाद पश्चिमी दक्षिणी प्रान्तों में जल से क्षति एवं पूर्वीय प्रान्तों में भूकम्प की घटनाएं अधिक होंगी। ऊनी कपड़े, मोठ, चना, उड़द, अनाज, सरसों एवं तिल में घटावढ़ी के बाद तेजी आवे। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, मूंगा, जवाहरात में अच्छी तेजी आवे। यदि ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी के दिन दक्षिण पवन चले तथा आकाश बादलों से ढका रहे और फिर यदि मेघ गर्जन हो जाए तो अनाजों का संग्रह करना चाहिए। आश्विन में लाभ रहेगा। ज्येष्ठ शु० सप्तमी को यदि मेघ गर्जन हो, आकाश मेघाच्छन्न रहे एवं दक्षिण पवन चले तो तिल संग्रह करें। कार्तिक में लाभ होगा।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ शुक्र इष्ट ४६।४२;

रा.३
१शु
४
सू.
गु. १२
५मं.
११
६
चं.८
१०श.
७
९के.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	११	१	९	२	८
२२	९	०	२०	०	२९	२८	२८
५७	५	३४	१९	३०	३९	५८	५८
३७	१५	५१	४४	१५	२१	५५	५५
५७	३०	३५	१०	७२	०	३	३
२३	३१	५३	०	४९	२९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ रो.	३ मृ.	४ कृ.	४ [illegible]	४ कृ.	४ [illegible]	३ पुन.	१ उषा.
वायु०	अग्नि०	[illegible]	अग्नि०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :—२ से ४ जून तक—भूटान शिलांग एवं सिक्किम में साधारण वर्षा हो। उत्तरी भारत, पूर्वी पंजाब पूर्वी पाकिस्तान, उत्तरी राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में गर्मी तथा वायु का जोर रहेगा।

वि. सवत् २०२० शाक १८८५ ज्येष्ठ कृष्णपक्ष ४ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टें. टाईम | ९ से २३ मई तक सन् १९६३ ई.

वि. मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. वैशा.	अं. मई	रा. ज्येष्ठ	मु. जिल्हिज	सञ्चार	चडीगढ़ सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.
३३ ५४	१ गु.	४८ ५७	वि.	२९ ५८	व.	३८ ३५	बा.	१६ ८	२७	९	१९	१४	वृ.१३।१२	५ ३२	७ ६
३३ ५८	२ शु.	५४ ५	अनु.	३६ ४०	प.	४० १७	तै.	२१ ३१	२८	१०	२०	१५	वृश्चिक	५ ३१	७ ७
३४ २	३ श.	५८ ३३	ज्ये.	४२ ४७	शि.	४१ ३०	व.	२६ १९	२९	११	२१	१६	ध.४२।४७	५ ३०	७ ७
३४ ५	४ र.	६० ०	मू.	४८ ८	सि.	४२ ८	ब.	३० २१	३०	१२	२२	१७	धनु	५ ३०	७ ८
३४ ८	४ चं.	२ १०	पू. षा.	५२ २०	सा	४१ ५२	बा.	२ १०	३१	१३	२३	१८	धनु.	५ २९	७ ८
३४ ११	५ मं.	४ ३५	उ.षा.	५५ १७	शु.	४० ३७	तै.	४ ३५	ज्ये १	१४	२४	१९	म.८।४	५ २९	७ ९
३४ १४	६ बु.	५ ३७	श्र.	५६ ४२	शु	३८ १२	व.	५ ३७	२	१५	२५	२०	मकर	५ २८	७ १०
३४ १७	७ गु.	५ २	ध.	५६ २५	ब्र.	३४ २२	ब.	५ २	३	१६	२६	२१	कुं.२६।३४	५ २८	७ १०
३४ २०	८ शु.	२ ४५	श.	५४ २७	ऐं.	२९ १५	कौ.	२ ४५	४	१७	२७	२२	कुम्भ	५ २७	७ ११
अव म	९ शु.	५८ ४०	०	०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०
३४ २३	१० श.	५३ ०	पू.भा.	५० ५०	वै.	२२ ४०	व.	२५ ५०	५	१८	२८	२३	मी.३६।४४	५ २६	७ १२
३४ २६	११ र.	४५ ५२	उ.भा.	४५ ४२	वि.	१४ ५०	ब.	१९ २६	६	१९	२९	२४	मीन	५ २६	७ १२
३४ २९	१२ च.	३७ ४०	रे.	३९ ३३	प्री.	५/५६ ५५/१०	कौ.	११ ४६	७	२०	३०	२५	मे.३९।३३	५ २५	७ १३
३४ ३२	१३ मं.	२८ ४०	अ	३२ ३५	सौ.	४५ ५७	ग.	३ १०	८	२१	३१	२६	मेष	५ २५	७ १४
३४ ३५	१४ बु.	१९ २५	भ.	२५ २२	शो.	३५ ३५	श.	१९ २५	९	२२	ज्ये १	२७	वृ.३८।३६	५ २४	७ १४
३४ ३८	३० गु.	१० १८	कृ.	१८ १८	अति	२५ २५	ना.	१० १८	१०	२३	२	२८	वृष	५ २४	७ १५

ग्रह-दर्शन :—बुध अस्त है। प्रातः शनि खमध्यासन्न, एवं गुरु शुक्र पूर्व क्षितिज में ऊपर नीचे दीखेंगे। सूर्यास्त बाद मंगल खमध्यासन्न दीखेगा। (उत्तर अयन, ग्रीष्म ऋतु)

वरुण मार्गी ४६।१०.

भ. २६।१९ उ., ५८।३३ या; कृत्तिका में सूर्य २४।२०,

श्रीगणेश ४ व्र., श्री १००८ आनन्दमयी-मातृ-जन्म दिन (प्रधानोत्सव),‡

अश्वि. मेष में शुक्र ३२।४५, ‡ एवं उत्सव विसर्जन,

सं. वृष मे सूर्य ५१।३२, मु. ४५, पुण्य आगामी दिन,

भ. ५।३७ उ., ३५।१९ या.

पञ्चक प्रा. २६।३४;

§ अपरा ११ व्र., स्मा. वै., [वि.मु.उ.भा.रे.]

भ. २५।५० उ., ५३।० या; रेवती १ में गुरु ५८।१२; [वि.मु.उ.भा.]

मघा सिंह में मंगल ४९।०, पुन. ३ मिथुन में राहु, उ. षा. १ धनु में केतु ३३।५०,§

पञ्चक स., ३९।३३, अपरा ११ व्र. नि. [वि. मु. रे.]

भ. २८।४० उ., ५४।२ या; सा. मिथुन में सूर्य ४७।१, भौम प्रदोष व्र.,

रा. ज्येष्ठ-प्रा.,

भावुका ३०, वट सावित्री व्र.,

ज्येष्ठ कृष्ण ८ शुक्र इष्ट ४६।२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	१	११	०	९	३	९
२	२९	३	१६	५	२९	०	०
४८	५	१८	२५	५	२६	५	५
२७	१८	१४	३६	५०	४९	४७	४२
५७	२६	३३	१२	७२	१	३	३
४७	४१	१९	३	२४	३५	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ. २	आर्द्रा ४	म. २	पू.भा. ४	आर्द्रा ३	श. २	पुन. ४	उ.षा. २
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

३ | १ गु. | मं. ४ | बु. २ सू | गु. १२ | रा. | ५ | ११ चं. | ६ | ८ | श १० | ७ | ९

इस पक्ष में अनाज का भाव गिरे। ११ मई से अलसी, जौ, चना, सरसों, मूंग एवं मोठ में तेजी का वातावरण बने। १३ मई से गुड़, शक्कर, एवं बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे। सोना एवं चांदी में अच्छी तेजी आवे। किरयाने की वस्तुएं तेज हों। १९ मई से घी के भाव में पहिले तेजी आकर बाद में मन्दी आवे। सण, लाल मिर्च, लाल वस्त्र, एवं लोहा तेज हों।

ज्येष्ठ कृष्ण ३० गुरु इष्ट ४६।३०

रा. ३ | शु. १ | १२ | ४ | सू. २ चं. | बु. | गु. | ५ मं. | १ | १० | श. | ६ | ८ | ७ | ९ के.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	११	०	९	२	८
८	१	०	१७	१२	२९	२९	२९
३४	४८	८	३६	२०	३४	४६	४६
५०	१७	२	३८	२८	४८	३७	३७
५७	२७	२३	११	७२	९	३	३
३८	५०	१३	३४	२८	०	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ. ४	म. २	कृ. [illegible]	रे. ४	आर्द्रा ४	ध. २	पुन. ३	उ.फा. २
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :—१२ मई से उत्तरी भारत, पञ्जाब, एवं राजस्थान में गर्मी का प्रकोप हो। १७ एवं १८ मई को लंका के पिछली छोर भूटान एवं सिक्किम में बादल चाल रहे।

शकुन विचार :—ज्येष्ठ अमावस दिवस वा रजनी बादल होय। चौमासा सूखा रहे भारी गड़बड़ होय॥

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ ज्ये. शुक्ल पक्ष ५ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टें. टाईम | (२४ मई से ७ जून तक सन् १९६३ ई.)

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ ज्ये. शुक्लपक्ष ५ | तारीखें | चन्द्र | भा.स्टे. टाईम | (२४ मई से ७ जून तक सन् १९६३ ई०)

मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
४१	१	गु.	१	४०	रो.	११	५२	सु.	१५		व.	१	४०	११	२४	३	२९	मि ३९।११	५	२३	७	१५
म	२	शु.	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
४४	३	श.	६७	४५	मृ.	६	३०	धृ.	५७	३७	'	२०	५२	१२	२५	४	मु १	मिथुन	५	२३	७	१६
४६	४	र.	६३	१३	आ.	२	३७	गं.	५३	४०	व.	१५	२९	१३	२६	५	२	क. ४६।३	५	२३	७	१७
४८	५	चं.	६०	३२	पुन:	०	३२	वृ.	४९	१२	ब.	११	२२	१४	२७	६	३	कर्क	५	२२	७	१७
५०	६	मं.	६०		पुष्य	०	२२	ध्रु.	४६	२२	कौ.	१०	१६	१५	२८	७	४	कर्क	५	२२	७	१८
५३	७	बु.	६१	१७	आश्ले	२	१०	व्या	४५	५	ग.	१०	३८	१६	२९	८	५	सि. २।१०	५	२२	७	१९
५५	८	गु.	६४	२२	म.	५	४७	ह.	४५	१०	वि.	१२	४९	१७	३०	९	६	सिंह	५	२१	७	१९
५७	९	शु	४८	५२	पू.फा.	११	५	व.	४६	१७	बा.	१६	३७	१८	३१	१०	७	क. २७।४१	५	२१	७	२०
०	१०	श.	५४	१८	उ.फा.	१७	२८	सि.	४८	१०	तै.	२१	३५	१९	जू १	११	८	कन्या	५	२०	७	२०
२	११	र.	६०	०	ह.	२४	३५	व्य.	५०	२७	व.	२७	१४	२०	२	१२	९	तु. ५८।१९	५	२०	७	२१
३	१२	चं		१०	चि.	३२	३	व.	५२	५३	वि.	०	१०	२१	३	१३	१०	तुला	५	२०	७	२१
५	१३	मं	६	१५	स्वा.	३९	२२	प.	५५	७	बा.	६	१५	२२	४	१४	११	तुला	५	२०	७	२२
७	१३	बु.	११	५७	वि.	४६	२०	शि.	५७	०	तै.	११	५७	२३	५	१५	१२	वृ. २१।३५	५	१९	७	२२
९	१४	गु	१७	१२	अनु.	५२	४०	सि.	५८	२५	व.	१७	१२	२४	६	१६	१३	वृश्चिक	५	१९	७	२३
१०	१५	शु	२१	४५	ज्ये.	५८	१८	सा.	५९	१२	ब.	२१	४५	२५	७	१७	१४	ध. ५१।४८	५	१९	७	२३

ग्रह-दर्शन :—बुध २७ मई को पूर्व में उदित होगा । सूर्योदय से पूर्व शनि खमध्यासन्न, एवं शुक्र गुरु पूर्व की ओर नत होंगे। सूर्यास्त बाद मंगल खमध्यासन्न होगा ।

(उत्तर अयन., ग्रीष्म ऋतु)

चन्द्र दर्शन, व. बुध मेष में ७।१५, भर. में शुक्र ३५।४७,

रोहिणी में सूर्य १५।१२, मुहर्रम मु. १ हिजरी सन् १३८३ प्रा., श्री प्रताप‡

भ. १५।२९ उ., ४३।१३ या; **बलिदान दिवस गरु श्री अर्जुनदेव जी,**

बुध पूर्व में उदित २२।५५ ‡जयन्ती, रम्भा व्र.,

भ. ४१।१७ उ., [वि. मु. मघा]

भ. १२।४९ या.,

बुध मार्गी २५।४२, [वि. मु. उ. फा.]

जून प्रा०, **श्री गंगा दशहरा** [वि. मु. हस्त]

भ. २७।१४ उ. , *[वि.मु.स्वा.]

भ. ०।१० या., **शनि वक्री,** ६।४०, **मुहर्रम,** (ताजिया), **निर्जला,** ११ व्र.स.,ᚋ

कृत्ति. में शुक्र ३६।४५, भौम प्रदोष व्र., ᚋ**मेला मणिकर्ण.***

रेव २ में गुरू ५०।१५ (वि. मु. अनु.)

भ. १७।१२ उ. ४९।२८ या., वृष में बुध ३९।३०, सत्य व्र.,

वृष में शुक्र २१।५०

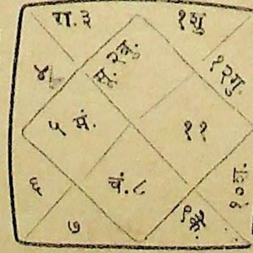
ज्येष्ठ शुक्ल ८ गुरु इष्ट ४६।३८

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	११	०	९	२	८
५	५	२८	१८	२०	२९	२९	२९
७	७	३०	५५	४८	३९	२४	२४
६	१३	१२	४४	२६	४४	२१	२१
७	२९	१	१०	७२	०	३	३
२	९	३६	५२	४२	१७	११	११
	मा.	व.	म.	मा.	[illegible]	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



३ जून के बाद पश्चिमी दक्षिणी प्रान्तों में जल से क्षति एवं पूर्वीय प्रान्तों में भूकम्प की घटनाएं अधिक होंगी। ऊनी कपड़े, मोठ, चना, उड़द, अनाज, सरसों एवं तिल में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, मूंगा, जवाहरात में अच्छी तेजी आवे। यदि ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी के दिन दक्षिण पवन चले तथा आकाश बादलों से ढका रहे और फिर यदि मेघ गर्जन हो जाए तो अनाजों का संग्रह करना चाहिए। आश्विन में लाभ रहेगा। ज्येष्ठ शु० सप्तमी को यदि मेघ गर्जन हो, आकाश मेघाच्छन्न रहे एवं दक्षिण पवन चले तो तिल संग्रह करें। कार्तिक में लाभ होगा।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ शुक्र इष्ट ४६।४२,



सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	११	१	९	२	८
२२	९	०	२०	०	२९	२८	२८
५७	५	३४	१९	३०	३९	५८	५८
३७	१५	५१	४४	१५	२२	५५	५५
५७	३०	३५	१०	७२	०	३	३
२३	३१	५३	०	४९	२०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :—२ से ४ जून तक—भूटान शिलांग एवं सिक्किम में साधारण वर्षा हो। उत्तरी भारत, पूर्वी पंजाब पूर्वी पाकिस्तान, उत्तरी राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में गर्मी तथा वायु का जोर रहेगा।

मा.	प.	ति	वा.	घ.	प.	न	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	चन्द्र सञ्चार	चण्डोग्र सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घ.	मि.
३५	१२	१	श.	२५	२५	मू.	६०		शु	५९	२०	कौ.	२०	२५	२	८	१८	१५	धन	५	१९	७	२४
३५	१३	२	र	२८	३	मू.		०	शु.	५	३७	ग.	[illegible]	३	२७	९	१९	१६	धनु	५	१९	७	४
३५	[illegible]	३	च	२९	५०	पू.षा.	६	४५	ब्र.	५७	८	वि.	२९	१०	२८	१०	०	१७	म -।६	५	१९	७	२४
३५	१५	४	मं.	३०	५	उ.षा.	५	३०	ऐ.	५४		ब.	०		२९	११	२१	१८	मक.	५	१९		२५
३५	१६	५	बु.	२९	४७	श्रव.	११	२	वै.	५१	१७	कौ.	०	६	३	१	२२	१९	कुं ४१।११	५	१९	७	२५
३५	१८	६	गु	२७	५१	ध.	११	२०	वि.	४६	५२	व.		५५	३	१३	२३	२०	कुम्भ	५	१८	७	५
३५	२०	७	शु.	२८	४७	श.	१०		प्री.	४१	२	ब.	२४	४७	३२	१४	२४	२१	मी५३।३	५	१८	७	६
३५	२१	८	श.	२०	०	पू.भा	८	१	आ.	३४	५८	कौ.	२०	२०	[illegible]	१५	२५	२२	मीन	५	१८	७	२६
३५	२२	९	र.	१४	४	उ.भा.	४	५७	सौ.	२७	३२	ग.	१४	४२	२	१६	२६	२३	मीन	५	१	७	२७
३५	२	१०	चं.	८	८	रे.	५०	२०	शो.	१९	०	वि.	८	८	३	१७	२७	२४	मे.० २.	५	१८	७	२७
३५	[illegible]	११	मं.	०	४२	भ.	४६		अ.	१०	३	बा.	०	४	४	१८	२८	२५	मेष	५	१८	७	
अव	म	१२	मं.	५२	५३	०			०	०	०	०	०	०	०	०	०		० ०	०			०
३५	२४	१३	बु.	४४	२०	कृ.	४३	२०	सु.	५२	२२	ग.	१८	५२	५	१९	२९	२६	वृ. २।५०	५	१८	७	७
३५	२४	१४	गु.	३७	५	रो.	३७	३५	धृ.	४३	८	वि.	१०	५	६	२०	३०	२७	वृष.	५	१९	७	[illegible]
३५	२४	३०	शु.	२९	२	मृ.	३२	२५	गं.	३४	४०	च.	३	२८	७	२१	३१	२८	मि. ५।०	५	१९	७	८

ग्रह-दर्शन :—सूर्योदय से पूर्व शनि खमध्य पश्चिम क्षितिज की ओर नत एवं बुध-शुक्र पूर्व क्षितिज में होंगे। गुरु इसी समय बुध-शुक्र से ऊपर होगा। सूर्यास्त बाद मंगल खमध्यासन्न होगा। (उत्तर अयन, ग्रीष्म ऋतु)।

मृग. में सूर्य १०।८

भ.५८।५८ उ.,

भ. २९।५० या., श्री गणेश ४ व्र.,

पञ्चक प्रा. ४१।११,

भ. २७।५५ उ. ५६।२१ या., ✝रोहि. में शुक्र ३५।५०

सं. मिथुन में सूर्य ८।४७ मु. ४५, पुण्य २४।४७ या., पू. फा. में मंगल ५७।५३✝

भ. ४१।२५ उ.,

भ. ८।८ या. पञ्चक स. ०।२० व. इन्द्र स्वाती ४ में १२।२०,

रोहिणी में बुध ५।८, योगिनी ११ व्र. स. (अस्पृहा, महापुण्यदा),

भ. ४४।५२ उ., प्रदोष. व्र.,

भ. १०।५८ या.,

आषाढ़ कृ. ८ शनिवार, इष्ट ४६।४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	१	११	१	९	२	८
०	१३	७	२१	१०	२९	२८	२८
३६	१४	१८	३६	१३	३३	३३	३३
१५	६	०	५८	२१	१	२९	०९
५७	३१	६७	७	७३	१	३	३
१८	४७	३८	१०	१	१४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

३ रा, १, ४, सू. २ बु. शु., गु. १२ चं., ५ मं., ११, ६, ८, १० श., ७, ९ के

८ जून से सोना, चांदी धान, रुई, रेशम, सूत, सण, कपूर, कस्तूरी, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा एवं अलसी तेज हों। १५ जून के बाद नारियल, दाख, सुपारी, सोना, सण, चांदी में मन्दी का रुख बने। १८ जून से सूत, कपास, तिल, तेल, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मन्दी आवे। १५ जून से २० दिन के भीतर सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड एवं नमक में तेजी आवे। यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को मेघगर्जन हो, तथा बिजली चमके तो अन्न तेज रहे। इस पक्ष में राजनीतिज्ञों में पारस्परिक मनमुटाव होने से अशांति रहे।

आषाढ़ कृ. ३० शुक्र, इष्ट ४६।४४,

४, बु. शु. चं. २, ५ मं., रा. ३ सू., १, ६, १२ गु., ७, ९ के., ११, ८, १० श.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	१	११	१	९	२	८
६	१६	१४	२२	१७	२९	२८	२८
११	२६	५७	२९	३१	२४	१४	१४
१०	३५	५३	५३	२८	८	२४	२८
५७	३२	८८	८	७३	१	३	३
१६	२८	२०	१८	२	५३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	पू.फा.	रो.	[illegible]	रो.	ध.	पुन.	उ.षा.

आकाश लक्षण :—आसाम, बंगाल, हैदराबाद, काठमाण्डू, दार्जिलिङ्ग, हिमाचल प्रदेश में साधारण वर्षा हो। उत्तरी भारत, पंजाब, एवं राजस्थान में गर्मी का प्रकोप रहे।

वि.संवत् २०२० शाक १८८५ आषाढ़ शुक्लपक्ष ७ | तारीख | ... मा. टाइम ...

प्र. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	चन्द्र सञ्चार	चण्डोग्र सू. उ. सू. अ.

... को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः शनि पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर, गु. खमध्यासन्न एवं शुक्र पूर्व में दृष्टिगोचर होगा। सूर्यास्त

मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जून	रा. आषा.	मु.	चन्द्र सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
२४	१	श.	२३	३०	आ	२८	१२	वृ.	२७	०	ब.	२३	३५	८	२२	१	२९	मिथुन	५	१९	७	२८
२३	२	र.	१८	३५	पुन.	२५	२०	ध्रु.	२०	२२	कौ.	१८	३५	९	२३	२	स१	क. ११।३	५	१९	७	२८
२२	३	चं.	१५	०	पु.	२४	०	या	१५	२	ग.	१५	७	१०	२४	३	२	कर्क	५	१९	७	२८
२१	४	म.	१३	२५	आश्ले	२४	२५	ह.	११	७	वि.	१३	२५	११	२५	४	३	सिं२४।२५	५	२०	७	२८
२०	५	बु.	१३	३५	म.	२६	४०	व.	८	४२	बा.	१३	३५	१२	२६	५	४	सिंह	५	२०	७	२८
२०	६	गु.	१५	३३	पू. फा.	३०	४०	सि.	७	४०	तै.	१५	३३	१३	२७	६	५	कं. ४७।	५	२०	७	२८
२०	७	शु.	१९	८	उ. फा.	३६	७	व्य.	७	५५	व.	१९	८	१४	२८	७	६	कन्या	५	२०	७	२८
१९	८	श.	२३	५५	ह.	४०	४२	व.	९	१२	व.	२३	५५	१५	२९	८	७	कन्या	५	२१	७	२९
१८	९	र.	२९	३	चि.	४९	५५	प.	११	१०	कौ	२९	३०	१६	३०	९	८	तु.१६।१८	५	२१	७	२९
१[illegible]	१०	चं.	३५	२३	स्वा.	५७	१	शि.	१३	२७	तै.	२	१६	१७	जु१	१०	९	तुला	५	२२	७	२९
१६	११	मं.	४१	५	वि.	६०	०	सि.	१५	४५	व.	८	१४	१८	२	११	१०	वृ.४७।२०	५	२२	७	२९
१५	१२	बु.	४६	८	वि.	४	१०	सा.	१७	३७	ब.	१३	३६	१९	३	१२	११	वृश्चिक	५	२३	७	२९
१४	१३	गु.	५०	१५	अनु.	१०	२५	शु.	१८	५५	कौ.	१८	१२	२०	४	१३	१२	वृश्चिक	५	२३	७	२९
१३	१४	शु.	५३	१२	ज्ये.	१५	४०	शु.	१९	२३	ग	२१	४४	२१	५	१४	१३	ध.१५।४०	५	२४	७	२९
१२	१५	श.	५५	०	मू.	१९	५०	ब्र.	१९	०	वि.	२४	६	२२	६	१५	१४	धनु	५	२४	७	२९

ग्रह दर्शन :—बुध २ जुलाई को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः शनि पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर, गु खमध्यासन्न, एवं शुक्र पूर्व में, दृष्टिगोचर होगा। सूर्यास्त बाद मंगल पश्चिम में दीखेगा। (दक्षिणायन, वर्षा ऋतु)।

चन्द्र दर्शन, आर्द्रा में सूर्य ७।५०, सा. कर्क में सूर्य ८।२, दक्षिण-अयन, वर्षा
सफर मु. २ प्रा., जगदीश-रथोत्सव, *ऋतु प्रा., रा आषा. प्रा.,
भ. ४४।१६ उ.,
भ. १३।२५ या.,
मृग में शुक्र ३२।४७,
मृग में बुध ३।२५,
भ. १९।८ उ., ५१।३१ या., रेवती ३ में गुरु ६।१५, [वि. मु.ह.]
[वि.मु. चित्रा]
मिथुन में बुध ४४।५२, (वि. मु. चि. स्वा.)
जुलाई प्रा., [वि. मु. स्वा.]
भ. ८।१४ उ., ४१।५ या., बुध पूर्व में अस्त ४०।८, मिथुन में शुक्र ०।४५.×
हरिवासर., [वि. मु. अनु.]
आर्द्रा में बुध ९।२, प्रदोष व्र.,
भ. ५३।१२ उ., ×चातुर्मास्य-व्रत नियम प्रा., देवशयनी ११ व्र.स.,
भ. २४।६ या., पुन. में सूर्य ६।३२, गुरु-व्यास-पूजा, वायु-परीक्षा, सत्य व्र. ✱
✱चन्द्रग्रहण,

आषाढ़ शुक्ल ८ शनि इष्ट ४६।३८,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	१	११	१	९	२	८
१३	२०	२८	२३	२७	२९	२७	२७
१७	४९	९	३२	१६	७	४८	४८
४१	४४	४	२०	१९	१९	५३	५३
१७	३३	१[illegible]		७३	२	३	३
१२	२८	३५	१	१०	३	११	११
	मा.	मा.	म.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	[illegible]	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.षा. १
[illegible]	जल	अग्नि	अग्नि	अग्नि	अमृत	नीर	नीर

४   २ गु.शु.
५ मं.   सू ३ रा.   १
६ चं.   १२ गु
७   ९ के.   ११
८   १० श.

इस पक्ष के आरम्भ में रुई, सूत, कपास, अलसी, गुड़, खाण्ड, खल, चावल धान, गेहूं, जौं चना, कपूर में तेजी का रुख रहे। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी का वातावरण बने। तिल, उड़द, एवं मोठ में मन्दी आवे। सरसों में घटाबढ़ी चले :। पक्षान्त में माजू, केसर, मजीठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थ एवं हरड़—सुपारी, में तेजी का रुख हो। बिनौला एवं घी में ६ जुलाई से तेजी आवे। यदि आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी को पश्चिम का पवन चले, वर्षा हो, इन्द्र-धनुष दीखे तो अन्न संग्रह से कार्तिक में बेचने से लाभ मिले।

आकाश लक्षण :-

२३-२४-२५ जून को वायु बहुत चले। २ से ५ जुलाई तक हिमाचल प्रदेश, शिलांग, गोआ, सूरत एवं हैदराबाद में वर्षा के योग बनते हैं।

आषाढ़ शुक्ल १५ शनि इष्ट ४६।३०

४   २
५ मं.   सू. शु. ३ बु. रा.   १
६   १२ गु.
७   के. ९ चं.   ११
८   १० श.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	११	२	९	२	८
२०	२४	१२	२४	५	२८	२७	२७
३८	४६	२	१९	४८	४८	२६	२६
३	७	२	३६	५९	२३	४२	४२
५७	३४	१२६	६	७३	३	३	३
१०	१०	०	५	२१	१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. १	पू.फा. ४	आर्द्रा २	रे. ३	मृग. ४	ध. २	पुन. ३	उ.षा. १
नीर	जल	सौम्य	अग्नि	अग्नि	अमृत	नीर	नीर

वि. संवत् २०२० शाक १८८५ श्रावण कृष्णपक्ष | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम ७ जुलाई से २० जुलाई तक सन् १९६३ ई,

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जुला.	रा. आषा.	मु. सफ.	चन्द्र सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
३५	११	१	[illegible]	५५	३३	पू. षा.	२०	४७	ऐ.	१७	३५	बा.	२५	१८	२३	७	१६	१५	म. ३८।१४	५	२५	७	२९
३५	९	२	चं.	५५	०	उ. षा	२४	३५	वै.	१५	१५	तै.	२५	१८	२४	८	१७	१६	मकर	५	२५	७	२९
३५	६	३	मं.	५३	२२	श्रव	२५	१५	वि.	१२	०	व.	२४	११	२५	९	१८	१७	कुं. ५५।३	५	२६	७	२८
३५	४	४	बु.	५०	४२	ध.	२४	५२	प्री.	७	५[illegible]	ब.	२२	२	२६	१०	१९	१८	कुम्भ	५	२७	७	२८
३५	२	५	गु.	४७	५	शत.	२३	३५	आ.	५७	२५	कौ.	१८	५३	२७	११	२०	१९	कुम्भ	५	२७	७	२८
३५	०	६	शु.	४२	४२	पू. भा.	२१	२७	शो.	५१	१०	ग.	१४	५४	२८	१२	२१	२०	मी ६।५९	५	२८	७	२८
३४	५८	७	श.	३६	४२	उ.भा.	१८	३५	अ.	४४	२५	वि.	१०	१२	२९	१३	२२	२१	मीन	५	२८	७	२८
३४	५६	८	र.	३[illegible]	३	रे.	१५	१०	सु.	३७	१०	बा.	४	५२	३०	१४	२३	२२	मे. १५।१०	५	२९	७	२७
३४	५४	९	चं.	२[illegible]	०	अ.	११	१५	धृ.	२९	३६	ग.	२६	०	३१	१५	२४	२३	मेष	५	२९	७	२७
३४	५२	१०	मं.	[illegible]	४[illegible]	भ.	६	५५	शू.	२१	५०	वि.	१९	४२	श्रा	१६	२५	२४	वृ. २०।५०	५	३०	७	२७
३४	५०	११	बु.	१३	२२	कृ.	[illegible]	[illegible]	गं.	१४	०	बा.	१३	२२	२	१७	२६	२५	वृष	५	३०	७	२६
३४	४७	१२	गु.	७	५	मृ.	५४	२०	वृ.	[illegible]	[illegible]	तै.	७	५	३	१८	२७	२६	मि २६।२०	५	३१	७	२६
३४	४५	१३	शु.	१	१७	आ.	५१	[illegible]	व्या	५२	०	व.	१	१७	४	१९	२८	२७	मिथुन	५	३१	७	२५
अवम		१४	शु.	५६	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
३४	४२	३०	श.	५१	४२	पुन.	४८	३[illegible]	ह.	४५	४८	च.	२३	५२	५	२०	२९	२८	क. ३४।१०	५	३२	७	२५

ग्रह-दर्शन :—बुध अस्त है। प्रातःकाल शनि पश्चिम में, गुरु खमध्यासन्न एवं शुक्र पूर्व क्षितिज से ऊपर दीखेगा। सूर्यास्तानन्तर मंगल पश्चिम क्षितिज से ऊपर होगा। (दक्षिण अयन, वर्षाऋतु)

आर्द्रा में शुक्र २८।१०,

भ. २४।११ उ., ५३।२२ या., पञ्चक प्रा. ५५।३,

उ. फा. में मंगल ५।४२, पुन. में बुध ३०।१५, श्री गणेश ४ व.

भ. ४२।४२ उ., चेल्हम, [वि. मु. उ. भा.]

भ. १०।१२ या., [वि. मु. उ. भा.]

पञ्चक स. १५।१०, [वि. मु. अश्वि.]

भ. ५२।५१उ., कन्या में [illegible]ल ५।१२, कर्क में बुध ५।१५,

भ. १९।४२ या., सं. कर्क में सूर्य ३४।४५, मु. ३० पुण्य ५।४५ उ., पुष्य में बुध ३८।०,

कामिका ११ व्र. स., [वि. मु. रो.]

पुन. में शुक्र २१।१२, प्रदोष व्र.,

भ. १।१७ उ., २८।३९ या.,

पुष्य में सूर्य ५।१५, शनैश्चरी ३०, हरियाली ३०,

श्राव. कृ. ८ रवि इष्ट ४६।१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	११	२	९	२	८
२८	२९	२९	२५	१५	२८	२७	२७
१५	२२	१८	३	३६	२२	१	१
३३	१३	१२	३२	२०	७	१६	१६
५७	३४	१११	४	७३	३	३	३
१४	५८	१३	४५	३[illegible]	३५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन.	उ. फा	पुन.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पुन.	उ.षा.

४ | २ | बु | ५ मं. | रा. ३ शु. | १ | सू. | ६ | चं. १२गु | ७ | ९ के. | ११ | ८ | १० श

इस पक्ष के आरम्भ में चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, बिनौला, एरन्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, ज्वार, मोठ एवं बाजरा में तेज़ी आवे। १५ जुलाई से चन्दन, पाट, बारदाना हैशिअन एवं लाल मिर्च में तेज़ी आवे। इन दिनों, सुपारी, हरड़, नारियल, माजू, केसर मजीठ, नील, सोंठ एवं गुग्गुल में भी तेज़ी बनी रहे। मूंगफली एवं सोना में तेज़ी आवे, किन्तु तेज़ी अस्थिर रहे। रुई एवं चांदी के भावों में घटाबढ़ी रहे। यदि श्रावण कृष्ण पञ्चमी के दिन आकाश में बादल हों, परन्तु वर्षा न हो, तो हर प्रकार के अनाज में तेज़ी आवे।

श्राव. कृ. ३० शनि इष्ट ४६।१०,

५ | रा. शु. चं. ३ | ६ मं. | सू. ४बु. | २ | ७ | १ | ८ | १० श | गु. १२ | ९ के. | ११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	३	११	२	९	२	८
३	२	११	२५	२२	२७	२६	२६
५९	५३	५१	२९	५७	५९	४२	४२
४	२४	०	२३	५६	५३	११	११
५७	३५	११९	३	७३	३	३	३
१७	३२	४०	४०	४०	५३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण :—१०-११-१२ जुलाई को विन्ध्यप्रदेश, पञ्जाब, बंगाल, आसाम, भूटान, गोआ, लंका, मैसूर एवं पश्चिमी तट पर प्रबल वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०२० शाक १८८५ श्रावण शुक्लपक्ष ९ | तारीख | चन्द्र

ग्रह-दर्शन :—२५ जुलाई को बुध पश्चिम में उदित होगा। प्रातः शनि पश्चिम क्षितिज की ओर जाता, गुरु खमध्यासन्न, एवं शुक्र पूर्व क्षितिज में दीखेगा। सूर्यास्त बाद मंगल पश्चिम की ओर नत होगा। (दक्षिण अयन वर्षा ऋतु)

ग्रह-दर्शन :—२५ जुलाई को बुध पश्चिम में उदित होगा। प्रातः [illegible] क्षितिज की ओर जाती, गुरु वमध्यासन्न, एवं शुक्र पूर्व क्षितिज में दीखेगा। सूर्यास्त बाद मंगल पश्चिम की ओर नत होगा। (दक्षिण अयन वर्षा ऋतु)

दि. मा. घ.	प.	ति. वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	श्राव.	जुला.	आषा.	[illegible]	सञ्चार	सू. अ. घं.	मि.	सू. उ. घं.	मि.	
३४	४०	१ र.	४८	३	पुष्य	४७	१०	व.	४०	३०	किं	२०	६	६	२१	३०	२९	कर्क	५	३२	७	२४	पुन. २ में राहु, पू. पा. ४ में केतु २७।२०, नक्त व्र. प्रा.,
३४	३७	२ चं.	४८	४०	आश्ले	४७	१०	सि.	३६	१८	बा.	१७	३५	७	२२	३१	३०	सि ४७।१०	५	३३	७	२४	चन्द्र दर्शन, †प्रा., रा. श्राव. : प्रा., सन्धारा ३. [वि. मु. मघा]
३४	३४	३ मं.	४६	१७	म.	४८	३७	व्य	३३	१८	तै.	१६	२८	८	२३	श्रा१	र१	सिंह	५	३४	७	२३	सा. सिंह में सूर्य ३४।४०, आश्ले. में बुध १२।२२, रबि-अल-अव्वल मु. ३†
३४	३१	४ बु.	४७	३५	पू. फा	११	४०	व.	३१	३०	व.	१६	५६	९	२४	२	२	सिंह	५	३४	७	२३	भ. १६।५६ उ., ४७।३५ या., म. ४ में वरुण ३०।२२,
३४	२८	५ गु.	५०	२७	उ. फा.	५६	१५	प.	३१	०	ब.	१९	१	१०	२५	३	३	क. ७।४९	५	३५	७	२२	बुध पश्चिम में उदित ५९।४०, इन्द्रमार्गी २६।२, श्री नाग ५, [वि.मु.उ.फा.]
३४	२६	६ श.	५४	४२	ह.	६०	०	शि.	३१	३०	कौ.	२२	३४	११	२६	४	४	कन्या	५	३५	७	२२	कर्क में शुक्र २९।४०, (वि.मु. हस्त)
३४	२३	७ श.	५९	५२	ह.	२	१०	सि.	३३	८	ग.	२७	१७	१२	२७	५	५	तु. ३५।३१	५	३६	७	२[illegible]	भ. ५९।४२ उ., श्री तुलसी जयन्ती,
३४	२०	८ र.	६०	०	चि.	८	५	सा	३०	१२	वि.	३२	४६	१३	२८	६	६	तुला	५	३७	७	२१	भ. ३२।४६ या., श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी–चिन्त पूरनी,
३४	१७	८ चं.	५	४०	स्वा.	१६	१०	शु.	३७	३२	ब.	५	४०	१४	२९	७	७	तुला	५	३७	७	२०	पुष्य में शुक्र १२।१२,
३४	१४	९ मं.	११	२८	वि.	२३	२२	शु.	३९	३५	कौ	११	२८	१५	३०	८	८	वृ. ६।३४	५	३८	७	१९	मघासिंह में बुध २६।०, [वि. मु. अनु.]
३४	१०	१० बु.	१६	४५	अनु.	२९	५०	ब्र.	४१	८	ग.	१६	४५	१६	३१	९	९	वृश्चिक	५	३९	७	१९	भ. ४८।५१ उ.,
३४	७	११ गु.	२०	५८	ज्ये.	३०	२५	ऐं	४१	४०	वि	२०	५८	१७	अ१	१०	१०	ध. ३५।२५	५	३९	७	१८	भ. २०।५८ या., हस्त में मंगल ३५।२५, अगस्त, प्रा., जन्दिन श्री लोकमान्य* *तिलक, पवित्रा ११ व्र. स.,
३४	४	१२ शु.	२३	५०	मू.	३९	३५	वै.	४१	१२	बा	२३	५०	१८	२	११	११	धनु.	५	४०	७	१८	प्रदोष व्र.
३४	१	१३ श.	२५	१२	पू. षा.	४२	१	वि	३९	२७	तै.	२५	१२	१९	३	१२	१२	म. ५७।२८	५	४१	७	१७	आश्ले. में सूर्य २।१० शुक्र वार्धक्य प्रा., ईद मिलाद,
३३	५७	१४ र.	२५	०	उ. षा.	४३	१८	प्री	३६	३	व.	२५	०	२०	४	१३	१३	मकर	५	४१	७	१६	भ. २५।० उ., ५४।१० या., सत्य व्र.
३३	५३	१५ चं.	२३	२	श्र.	४२	५७	आ	३२	२२	ब.	२३	२	२१	५	१४	१४	मकर	५	४२	७	१५	रक्षाबन्धन, ऋषि तर्पण, मेला अमरनाथ (काश्मीर),

श्रावण शुक्ल ८ चन्द्र, इष्ट ४५।५८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	३	११	३	९	[illegible]	८
२	८	२८	२५	४	२७	२६	२
३४	१६	४९	५५	१	२३	१३	१३
४९	४६	५४	४०	३१	०	३४	३४
५७	३६	४७	१	७३	४	३	३
२०	२५	०४	५९	४९	२०	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

५ | ३ रा. | ६ मं | सू. ४ शु बु | २ | ७ चं. | १ | ८ | १० ग. | १२ गु. | ९ के. | ११

ईशान कोण के देशों में राजनैतिक उपद्रवों से अशांति रहे। सुपारी नारियल, सोंठ, गुग्गुल एवं बाजरा में तेजी का रुख बना रहे। २२ जुलाई के बाद गुड़ एवं खाण्ड का भाव सम रहे। परन्तु १ अगस्त के बाद इन चीजों में कुछ तेजी आवे। रुई एवं चांदी में मन्दी आकर तेजी आवे। ३ अगस्त के बाद, बिनौला, गेहूं, चावल, घी, तेल, सरसों, तिल, चना एवं उड़द के भावों में वृद्धि हो। २९ जुलाई के बाद लाख, पारा, चमड़ा, शिंगरफ, हींग एवं सण में मन्दी आवे।

यदि श्रावण शुक्ल पञ्चमी से दो दिन तक लगातार वर्षा हो एवं दक्षिण-पश्चिमी पवन चले तो अनाज तेज हो।

आकाश लक्षण :—२१–२२ जुलाई को शिलांग, पश्चिमी तट, आसाम, बंगाल, काठमांडू एवं विन्ध्यप्रदेश में वर्षा के योग बनते हैं।

श्रावण शुक्ल १५ चन्द्र इष्ट ४५।१५,

बु. ५ | ३ रा. | मं. ६ | ४ गु. ल. | २ | ७ | १ | ८ | श. १० चं | १२ गु. | ९ के. | ११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	४	११	३	९	२	८
१२	१२	१०	२६	१२	२६	२५	२५
१६	३३	३२	५	३८	५२	५१	५१
४३	२७	२५	२६	४९	४६	१९	१९
५७	३७	९३	०	७३	४	३	३
२८	०	४७	३८	५७	२५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि. संवत् २०२० शाक १८८५ भाद्रपद कृष्ण पक्ष १० | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टें. टाईम | (६ से १९ अगस्त तक, सन् १९६३ ई.)

दि. मा. घ.	प.	ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. अं. सौर.	अंग.	रा. मु. सौर.	च.	संचार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
३३	५०	१	मं.	२०	१५	ध.	४१	२७	सौ.	२७	१५	कौ.	२०	१५	२२	६	१५	१५	कु१२।१२	५	४२	७	१४
३३	४६	२	बु.	१६	१०	श.	३	५१	शो	२१	१२	ग.	१६	१०	२३	७	१६	१६	कुंभ	५	४३	७	१३
३३	४३	३	गु.	११	१५	पू.भा	३५	४	अ	१४	३०	वि.	११	१५	२४	८	१७	१७	मी२१।२९	५	४३	७	१२
३३	४०	४	शु.	५	४	उ.भा.	३१	५५	सु.	७ ५२	२५ ५८	बा.	५	४५	२५	९	१८	१८	मीन	५	४४	७	१२
अवम		५	शु.	५९	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
३३	३६	६	श.	५३	५८	रे.	२७	५८	शू	५२	३२	ग.	२६	५६	२६	१०	१९	१९	मे २७।५८	५	४५	७	११
३३	३१	७	र.	४८	८	अ	२४	०	गं.	४५	२	वि.	२१	३	२७	११	२०	२०	मेष	५	४६	७	१०
३३	२७	८	चं.	४२	२५	भ	२०	१०	वृ	३७	४१	बा	१५	१६	२८	१२	२१	२१	वृ.३४।१८	५	४६	७	९
३३	२३	९	मं.	३७	५	कृ.	१६	४०	ध्रु.	३०	४२	तै.	९	४५	२९	१३	२२	२२	वृष	५	४७	७	८
३३	१९	१०	बु.	३२	१२	रो.	१३	३५	व्या.	२४	५	व.	४	३८	३०	१४	२३	२३	मि४२।१६	५	४७	७	७
३३	१५	११	गु.	२७	५५	मृ	१०	५७	ह.	१७	४७	ब.	०	४	३१	१५	२४	२४	मिथुन	५	४८	७	६
३३	१०	१२	शु.	२४	१०	आ.	८	५८	व.	१२	५	तै.	२४	१०	३२	१६	२५	२५	क.५२।५७	५	४८	७	४
३३	[illegible]	१३	श.	२१	१३	पुन.	७	३७	सि.	६	५	व.	२१	१३	भा १	१७	२६	२६	कर्क	५	४९	७	३
३३	२	१४	र.	१९	७	पुष्य	७	१	व्य.	५८	३० ४८	श	१९	७	२	१८	२७	२७	कर्क	५	४९	७	२
३२	५८	३०	चं.	१८	५	आश्ले.	७	४२	प	५६	०	ना.	१८	५	३	१९	२८	२८	सिंह७।४२	५	५०	७	१

ग्रहदर्शन :—शुक्र ६ अगस्त को पूर्व में अस्त होगा। प्रातःकाल गुरु खमध्य सत्र होगा। शनि रात्रि भर दीखेगा। सूर्यास्त बाद बुध पश्चिम में दीखेगा एवं इससे ऊपर मंगल होगा। (दक्षिण अयन, वर्षा ऋतु)

शु.अ.

पञ्चक प्रा. १२।१२, शुक्र पूर्व में अस्त ३९।३६

भ. ४३।४२ उ., पू. फा. में बुध ३३।५०,

भ. ११।१५ या., व. शनि. धनि. १ में ३८।४५, श्री गणेश ४ व्र.,

गुरु वक्री ७।२८, आश्लेषा में शुक्र १।२०,

भ. ५३।५८ उ., पञ्चक स. २७।५८, चन्द्र ६,

भ. २१।३ या.,

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्र.,

गुगा ९,

भ. ४।३८ उ., ३२।१२ या.,

भ. ४।३८ उ., ३२।१२ या.,

भारत स्वातन्त्र्य दिवस, जयहिन्द सं. १७ प्रा., अजा ११ व्र. स.,

सं. मघा सिंह में दृश्य सूर्य ५६।५, मु. ४५, पुण्य आगामी दिन, प्रदोष व्र.,

भ. २१।१३ उ., ५०।१० या., उ. फा. में बुध ९।५२, सौरमत में सं. सिंहार्क २५।१०

कन्या में बुध ५८।३५, मघासिंह में शुक्र ४९।१७, कुशोत्पाटिनी ३०, सोमवती ३०

भाद्रपद कृ. ८ चन्द्र इष्ट ४५ ३५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	४	११	३	९	२	८
२५	१६	२०	२६	२१	२६	२५	२५
५९	५४	५४	५	१६	२१	९	२
२२	१९	४३	४४	४०	२८	४	४
५७	३७	८१	०	७४	४	३	३
३५	३८	३५	४३	१	३४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

५ बु
३ रा.
मं. ६
सू. ४ च.
७
९ शु.
८
१० श
१२ गु
९ के
११

७ अगस्त के बाद राजनैतिक अशांति से जनता में क्षोभ रहे। ७ अगस्त से १६ अगस्त तक गुड़ एवं खाण्ड में मन्दी रहे। धान, तिलहन, तेल, सरसों, एरण्डी, चना एवं मोठ में मन्दी का रुख रहे। १६ अगस्त से सोना, चांदी व शेयरों में तेजी का रुख बने। तांबा, मजीठ, लाल मिर्च, लाल चन्दन, महंगे हों। कपास एवं रुई में अच्छी तेजी आने से व्यापारी लोगों को लाभ हो। सुपारी-नारियल-दाख में १९ अगस्त से तेजी का वातावरण बने।

भाद्रपद कृ. ३० चन्द इष्ट ४५।२५,

६ मं.
४ चं. शु.
सू. ५ बु.
३ रा
७
८
२
९ के
११
१
१० श.
गु. १२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	११	३	९	२	८
२	२१	२९	२५	२३	२५	२५	२५
४२	२०	४५	५६	५५	४९	६	६
५७	१९	१५	५१	१३	४१	४८	४८
५७	३८	६७	२	७४	४	३	३
४७	२७	२	०	१२	२२	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

यदि भाद्रपद कृष्ण पक्ष द्वितीय को चन्द्रमा सारी रात बादलों से ढका रहे तो आगे वर्षा अच्छी हो, जिससे अन्न मन्दी आवे।

आकाश लक्षण :—इस पक्ष में मैसूर, दक्षिणी मद्रास, लंका, पश्चिमी राजस्थान, हैदराबाद, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में अच्छी वर्षा हो।

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टें. टाईम | (२० अगस्त से ३ सितम्बर तक, सन् १९६३ ई.)

ग्रहदर्शन :—शुक्र अस्त है। शनि सारी रात दीखेगा। मंगल बुध सायंकाल … प्रातःकाल पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर होगा।

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ भाद्रपद शुक्लपक्ष ११

दि.मा. घ.	प	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.
३२	५४	१	म	१८	२१	म.	९	२२	जि	५४	१०	ब.	१८	१५	४	२०	२९	२९	सिंह	५	५०	७	०
३२	५०	२	बु.	१९	३	पू.फा	१२	२२	सि	५३	२२	कौ.	१९	३३	५	२१	३०	२१	क.२८।१४	५	५१	६	५९
३२	४६	३	गु.	२२	२०	उ.फा.	१६	२२	सा	५३	३२	ग.	२१	२०	६	२२	३१	२	कन्या	५	५२	६	५८
३२	४२	४	शु.	२६	२०	ह.	२१	४५	शु.	५४	४२	वि.	२६	२०	७	२३	भ १	३	तु.५४।५८	५	५२	६	५७
३२	३७	५	श	३१	२०	चि.	२८	१२	शु.	५६	३०	बा.	३१	२०	८	२४	२	४	तुला	५	५३	६	५६
३२	३३	६	र.	३७	१०	स्वा.	३५	२२	ब्र.	५८	४८	कौ.	४	१५	९	२५	३	५	तुला	५	५४	६	५५
३२	२९	७	चं.	४३	१०	वि.	४२	४८	ऐं.	६०	०	ग.	१०	१३	१०	२६	४	६	वृ.२५।५६	५	५४	६	५४
३२	२४	८	मं.	४८	०	अनु.	४९	४८	वै.	१	८	व.	१६	८	११	२७	५	७	वृश्चिक	५	५५	६	५३
३२	१९	९	बु.	५३	०	ज्ये.	५६	१२	वै.	३	८	बा.	२१	२५	१२	२८	६	८	ध.[illegible]	५	५६	६	५१
३२	१५	१०	गु.	५७	०	मू.	६०	०	वि.	४	४८	तै.	२	३५	१३	२९	७	९	धनु	५	५६	६	५०
३२	१०	११	शु.	५९	३	मू.	३	७	प्री.	४	२०	व.	२८	१२	१४	३०	८	१०	धनु	५	५७	६	४९
३२	६	१२	श	५८	०	पू.षा.	४	३०	आ	३	२	व.	२८	५६	१५	३१	९	११	म.१९।३९	५	५८	६	४८
३२	२	१३	र.	५६	४५	उ.षा	५	३५	सौ.	[illegible]	[illegible]	कौ	२७	४७	१६	सि.१	१०	१२	मकर	५	५८	६	४७
३१	५८	१४	चं.	५	५	श्रव	५	५	धृति	५०	१०	ग.	२४	५	१७	२	११	१३	कुं.३३।५९	५	५९	६	४६
३१	५४	१५	मं	४७	४०	ध.	[illegible]	[illegible]	सु.	५३	१८	वि.	१०	१८	१८	३	१२	१४	कुम्भ	५	५९	६	४५

... शनि सारी रात दीखेगा। मंगल बुध सायंकाल पश्चिम में होंगे। गुरु प्रातःकाल पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर होगा।

(दक्षिण अयन, वर्षा-शरद् ऋतु)

चन्द्र दर्शन, नक्त व्रत स.,

रवि उस्तानी मु. ४ प्रा., मेला बाबा गुसांई आणां, कुराली,

भ. ५४।२० उ., चित्रा में मंगल, ५१।५२, हरि तालिका व्र.,

भ. २६।२० या., सा. कन्या में सूर्य ५१।२२, शरद् ऋतु प्रा., रा. भाद्र.प्रा., +

ऋषि ५, +(कलंक ४ (चन्द्र दर्शन निषिद्ध)

सूर्य षष्ठी व्र.

भ. ४३।१७ उ.,

भ. १६।८ या.,

श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदायोत्सव), ※पद्मा ११ व्र. स्मा.

भ. २८।१२ उ., ५९।३ या., पू. फा. में सूर्य ४५।३०, पू.फा. में शुक्र ३५।७, ※

हस्त में बुध ३०।५, वामन १२, पद्मा ११ व्र. वै. नि.,

विशाखा १ में इन्द्र २९।३८, सितम्बर, प्रा., प्रदोष व्र.,

भ. ५२।५७ उ., पञ्चक प्रा. ३३।५९, तुला में मंगल १०।२७, अनन्त, १४, ※

भ. २०।१८ या., सत्य व्र., ※मेला छपार,

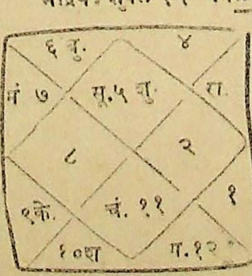
भाद्रपद [illegible] ८ मंगल, इष्ट ४५।१३,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	५	११	४	९	२	८
१०	२६	७	२५	९	२५	२४	२४
२५	२९	३१	३५	४९	१५	४१	४१
४	[illegible]	१७	३	१७	१	२१	२१
५७	३४	४४	३	७४	४	३	३
५	४०	३७	३२	२१	१३	११	११
						व.	व.
						अ.	अ.

मं ६ बु.
४
रा. ३
७
शु. ५ सू.
८ चं.
२
९ के.
११
१
१० श.
गु. १२

इस पक्ष में हैजे का प्रकोप बढ़े। २१ अगस्त से ताम्बा, पीतल तेज हों। सोने में २२ अगस्त के बाद अच्छी तेजी आवे चांदी, रुई, गुड़, खाण्ड, तेल, सरसों, ज्वार, घी, ऊनी वस्त्रों एवं चना में तेजी का रुख रहे। गेहूं एवं जौ में २० से ३० अगस्त तक तेजी, तत्पश्चात् मन्दी का रुख रहे। २० अगस्त से चार दिन के भीतर चांदी में २-३ तथा रुई में ८-१० की मन्दी हो। ३१ अगस्त से रुई में १२ दिन के भीतर तेजी आवे। २ सितम्बर से, मूंगफली, जूट, पाट, सण, बारदाना, में साधारण तेजी रहे।

भाद्रपद शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ४५।२,



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	५	११	४	९	२	८
१७	१	११	२५	१८	२४	२४	२४
११	१	२५	६	३०	४६	१९	१९
३	३४	४५	२९	३	१०	६	६
१८	३९	१५	४	७४	३	३	[illegible]
९	१	८	५४	७३	५६	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	[illegible]	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

आकाश लक्षण :—२९ अगस्त के बाद पंजाब, उड़ीसा विन्ध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में वर्षा अच्छी हो।

वि. संवत् २०२० शाक १८८५ भाद्रपद कृष्ण पक्ष १० | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टाईम | (६ से १९ अगस्त तक, सन् १९६३ ई.)

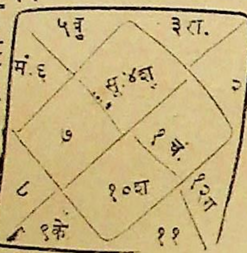
दि.मा घ.	प.	ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. क्रा.	अं. ला.	रा. क्रा.	मु. ला.	चन्द्र संचार	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	ग्रहदर्शन
३३	५०	१	मं.	२०	१५	ध.	४१	२७	सौ.	२७	१५	कौ.	२०	१५	२२	६	१५	१५	कु१२।१२	५	४२	७	१४	पञ्चक प्रा. १२।१२, शुक्र पूर्व में अस्त ३९।३६
३३	४६	२	बु.	१६	१०	श.	३	५१	शो	२१	१२	ग.	१६	१०	२३	७	१६	१६	कुंभ	५	४३	७	१३	भ. ४३।४२ उ., पू. फा. में बुध ३३।५०,
३३	४३	३	गु.	११	१५	पू.भा	३५	४०	अ	१४	३०	वि.	११	१५	२४	८	१७	१[illegible]	मी२१।२९	५	४३	७	१२	भ. ११।१५ या., व. शनि. धनि. १ में ३८।४५, श्री गणेश ४ व्र.,
३३	४०	४	शु.	५	४	उ.भा	३१	५५	सु.	६ ४६	२५ ५८	बा.	५	४५	२५	९	१८	१[illegible]	मीन	५	४४	७	१२	गुरु वक्री ७।२८, आश्लेषा में शुक्र १।२०,
अवम		५	शु.	१९	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	
३३	३६	६	श.	५३	५८	रे.	२७	५८	शू.	५२	३२	ग.	२६	५६	२६	१०	१९	१९	मे.२७।५८	५	४५	७	११	भ. ५३।५८ उ., पञ्चक स. २७।५८, चन्द्र ६,
३३	३१	७	र.	४८	८	अ	२४	०	गं.	४५	२	वि.	२१	३	२७	११	२०	२०	मेष	५	४६	७	१०	भ. २१।३ या.,
३३	२७	८	चं.	४२	२५	भ.	२०	१०	वृ.	३७	४५	बा	१५	१६	२८	१२	२१	२१	वृ.३४।१८	५	४६	७	९	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्र.,
३३	२३	९	मं.	३७	५	कृ.	१६	४०	ध्रु.	३०	४२	तै.	९	४५	२९	१३	२२	२२	वृष	५	४७	७	८	गुग्गा ९,
३३	१९	१०	बु.	३२	१२	रो.	१३	३५	व्या.	२४	५	व.	४	३८	३०	१४	२३	२३	मि४२।१६	५	४७	७	७	भ. ४।३८ उ., ३२।१२ या.,
३३	१५	११	गु.	२७	५५	मृ.	१०	५७	ह.	१७	४०	ब.	०	४	३१	१५	२४	२४	मिथुन	५	४८	७	६	भ. ४।३८ उ., ३२।१२ या.,
३३	१०	१२	शु.	२४	१०	आ.	८	५८	व.	१२	५	तै.	२४	१०	३२	१६	२१	२५	क.५२।५७	५	४८	७	४	भारत स्वातन्त्र्य दिवस, जयहिन्द सं. १७ प्रा., अजा ११ व्र. स.,
३३	[illegible]	१३	श.	२१	१३	पुन.	७	३७	सि.	६	५[illegible]	व.	२१	१३	भा?	१७	२६	२६	कर्क	५	४९	७	३	सं मघा सिंह में दृश्य सूर्य ५६।५, मु. ४५, पुण्य आगामी दिन, प्रदोष व्र.,
३३	२	१४	र.	१९	७	पुष्य	७	१[illegible]	व्य.	५८	३० ४८	श	१९	७	२	१८	२७	२७	कर्क	५	४९	७	२	भ. २१।१३ उ., ५०।१० या., उ. फा. में बुध ९।५२, सौरमत में सं. सिंहार्क २५।१०
३२	५८	३०	चं.	१८	५	आश्ले.	७	४२	प	५६	०	ना.	१८	५	३	१९	२८	२८	सिंह७।४२	५	५०	७	१	कन्या में बुध ५८।३५, मघासिंह में शुक्र ४९।१७, कुशोत्पाटिनी ३०, सोमवती ३०

ग्रहदर्शन :—शुक्र ६ अगस्त को पूर्व में अस्त होगा। प्रातःकाल गुरु खमध्य सन्न होगा। शनि रात्रि भर दीखेगा। सूर्यास्त बाद बुध पश्चिम में दीखेगा एवं इससे ऊपर मंगल होगा। (दक्षिण अयन, वर्षा ऋतु)

शु.अ.

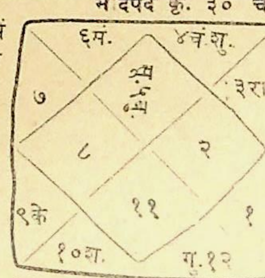
भाद्रपद कृ. ८ चन्द्र इष्ट ४५ ३५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	४	११	३	९	२	८
२५	१६	२०	२६	२१	२६	२५	२५
५९	५४	५४	५	१६	२१	[illegible]	२[illegible]
२२	१९	४३	४४	४०	२८	४	४
५७	३७	८१	०	७४	४	३	३
३५	३८	३५	४३	१	३४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.



७ अगस्त के बाद राजनैतिक अशांति से जनता में क्षोभ रहे। ७ अगस्त से १६ अगस्त तक गुड़ एवं खाण्ड में मन्दी रहे। धान, तिलहन, तेल, सरसों, एरण्डी, चना एवं मोठ में मन्दी का रुख रहे। १६ अगस्त से सोना, चांदी व शेयरों में तेजी का रुख बने। तांबा, मजीठ, लाल मिर्च, लाल चन्दन, महंगे हों। कपास एवं रुई में अच्छी तेजी आने से व्यापारी लोगों को लाभ हो। सुपारी-नारियल-दाख में १९ अगस्त से तेजी का वातावरण बने।

भाद्रपद कृ. ३० चन्द इष्ट ४५।२५,



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	११	३	९	२	८
२	२१	२९	२५	२३	२५	२५	२५
४२	२०	४५	५६	५५	४९	६	६
५७	१९	१५	५१	१३	४१	४८	४८
५७	३८	६७	२	७४	४	३	३
४७	२७	२	०	१२	२२	११	११
	मा.	गा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

यदि भाद्रपद कृष्ण पक्ष द्वितीया को चन्द्रमा सारी रात बादलों से ढका रहे तो आगे वर्षा अच्छी हो, जिससे अन्न मन्दी आवे।

आकाश लक्षण :—इस पक्ष में मैसूर, दक्षिणी मद्रास, लंका, पश्चिमी राजस्थान, हैदराबाद, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में अच्छी वर्षा हो।

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टाईम | (२० अगस्त से ३ सितम्बर तक, सन् १९६३ ई.)

... है। शनि सारी रात दीखेगा। मंगल बुध सायंकाल

विं० सम्वत् २०२० शाक १८८५ भाद्रपद शुक्ल पक्ष, ग्रहचार, वृत्त एवं त्योहार (२० अगस्त से ३ सितम्बर तक, सन् १९६३ ई.)

दि.मा. घ.	प	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. भाद्र.	अं. अग.	रा. श्र.	मु. स.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
३२	५४	१	मं	१८	२१	म.	९	२२	शि.	५४	१०	व.	१८	१५	४	२	२९	२९	सिंह	५	५०	७	०
३२	५०	२	बु.	१[illegible]	३[illegible]	पू.फा	१२	२२	सि	५३	२२	कौ.	१९	३७	५	२१	३०	२१	क २८।१४	५	५१	६	५९
३२	४६	३	गु.	२२	२०	उ.फा.	१६	२२	सा	५३	३२	ग.	२[illegible]	२०	६	२२	३१	२	कन्या	५	५२	६	५८
३२	४२	४	शु.	२६	२०	ह.	२१	४५	शु.	५४	४२	वि.	२६	२०	७	२३	भ	३	तु.५४।५८	५	५२	६	५७
३२	३७	५	श	३१	२०	चि.	[illegible]८	१२	शु.	५६	३[illegible]	बा.	३१	२०	८	२४	२	४	तुला	५	५३	६	५६
३२	३३	६	र.	३[illegible]	१०	स्वा.	३[illegible]	२२	ब्र.	५८	४८	क.	४	१५	९	२५	३	५	तुला	५	५४	६	५५
३२	२९	७	चं.	४३	१[illegible]	वि.	४२	४८	ऐं.	६०	०	ग.	१०	१३	१०	२६	४	६	वृ.२५।५६	५	५४	६	५४
३२	२४	८	मं.	४[illegible]	०	अनु.	४[illegible]	[illegible]८	ऐं.	१	८	व.	१६	८	११	२७	५	७	वृश्चिक	५	५[illegible]	६	५३
३२	१९	९	बु.	५३	[illegible]	ज्ये.	६	१२	वै.	३	८	बा.	२१	२[illegible]	१२	२८	६	८	ध.[illegible]६।१	५	५६	६	५१
३२	१[illegible]	१०	गु.	[illegible]७	[illegible]०	मू.	६०	०	वि.	४	१८	तै	२	३७	१३	२९	७	९	धनु	५	५६	६	५०
३२	१०	११	शु.	५९	३	मू.	[illegible]	७	प्री.	४	२०	व.	२८	१२	१४	३०	८	१०	धनु	५	५७	६	४९
३२	६	१२	श.	५८	०	पू.षा.	४	२०	आ	३	२	व.	२८	५६	१५	३१	९	११	म.१९।३९	५	५८	६	४८
३२	२	१३	र.	५६	४५	उ.षा	५	३५	सौ.	५०	५२	कौ	२७	४७	१६	१	१०	१२	मकर	५	५८	६	४७
३१	५८	१४	चं.	५	५	श्रव	५	५	अति	५०	१०	ग.	२४	५[illegible]	१७	२	११	३	कुं.२३।५९	५	५९	६	४६
३१	५४	१५	मं	४७	३०	ध.	५९	२०	सु.	५३	१८	वि.	[illegible]०	१८	१८	३	१२	१४	कुम्भ	५	५९	६	४५

ग्रह दर्शन :—शुक्र अस्त है। शनि सारी रात दीखेगा। मंगल बुध सायंकाल पश्चिम में होंगे। गुरु प्रातःकाल पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर होगा।

(दक्षिण अयन, वर्षा-शरद् ऋतु)

चन्द्र दर्शन, नक्त व्रत स.,

रवि उस्सानी मु. ४ प्रा., मेला बाबा गुसांई आणां, कुराली,

भ. ५४।२० उ., चित्रा में मंगल, ५१।५२, हरि तालिका व्र.,

भ. २६।२० या., सा. कन्या में सूर्य ५१।२२, शरद् ऋतु प्रा., रा. भाद्र.प्रा., +

ऋषि ५, +(कलंक ४ (चन्द्र दर्शन निषिद्ध)

सूर्य षष्ठी व्र.

भ. ४३।१७ उ.,

भ. १६।८ या.,

श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदायोत्सव), ※पद्मा ११ व्र. स्मा.

भ. २८।१२ उ., ५९।३ या., पू. फा. में सूर्य ४५।३०, पू.फा. में शुक्र ३५।७,※

हस्त में बुध ३०।५, वामन १२, पद्मा ११ व्र. वै. नि.,

विशाखा १ में इन्द्र २९।३८, सितम्बर, प्रा., प्रदोष व्र.,

भ. ५२।५७ उ., पञ्चक प्रा. २३।५९, तुला में मंगल १०।२७, अनन्त, १४,※

भ. २०।१८ या., सत्य व्र., ※मेला छपार,

भाद्रपद शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ४५।१३,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	५	११	४	९	२	८
१०	२६	७	२५	९	२५	२४	२४
२५	२०	३१	३५	४९	१५	४१	४१
४	[illegible]	१३	३	१७	१	२१	२१
५७	३[illegible]	[illegible]४	३	७४	४	३	३
५	[illegible]०	३७	३२	२१	१३	११	११
	मा	मा.	व.	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ	अ.	उ.	अ.	अ.
अमृता	[illegible]	मा	[illegible]	अमृता	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मं ६ बु. | ४ | रा. | ७ | शु. ५ सू. | ३ | ८ चं. | २ | ९ के. | ११ | १ | १० श. | गु. १२

इस पक्ष में हैजे का प्रकोप बढ़ें। २१ अगस्त से ताम्बा, पीतल तेज हों। सोने में २२ अगस्त के बाद अच्छी तेजी आवे चांदी, रुई, गुड़, खाण्ड, तेल, सरसों, ज्वार, घी, ऊनी वस्त्रों एवं चना में तेजी का रुख रहे। गेहूं एवं जौ में २० से ३० अगस्त तक तेजी, तत्पश्चात् मन्दी का रुख रहे। २० अगस्त से चार दिन के भीतर चांदी में २—३ तथा रुई में ८—१० की मन्दी हो। ३१ अगस्त से रुई में १२ दिन के भीतर तेजी आवे। २ सितम्बर से, मूंगफली, जूट, पाट, सण, बारदाना, में साधारण तेजी रहे।

आकाश लक्षण :—२१ अगस्त के बाद पंजाब, उड़ीसा विन्ध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में वर्षा अच्छी हो।

भाद्रपद शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ४५।२,

६ बु. | ४ | मं ७ | गु.५ शु. | रा. | ८ | २ | ९ के. | चं. ११ | १ | १० श | ग.१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	५	११	४	९	२	८
१७	१	११	२५	१८	२४	२४	२४
११	[illegible]	२५	६	३०	४६	१९	१९
३	३४	४५	२१	३	१०	६	६
१८	३९	१५	४	७४	३	३	[illegible]
९	१	८	५४	७७	५६	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	तारीख				चन्द्र सञ्चार	सू. उ. घ.	मि	सू. अ. घ.	मि
३१	५०	१	बु	४१	२२	पू.भा	५४	४५	धृ.	३५	२५	बा.	१४	३१	१९	४	१३	१५	मी ६०।५४	६	०	६	४४
३१	४५	२	गु	३४	१५	उ.भा.	६९	२०	शू.	२७	०	तै.	७	४८	२०	५	१४	१६	मीन	६	०	६	४२
३१	४०	३	शु	२६	५२	रे.	४४	[illegible]	गं.	८	१०	व.	०	३२	२१	६	१५	१७	मे. ४४।२	६	१	६	४१
३१	३६	४	श.	१२	२७	अ.	२८	४०	वृ.	९	२२	बा	११	२७	२२	७	१६	१८	मेष.	६	२	६	४०
३१	३१	५	र.	१२	२५	भ.	३३	४८	ध्रु.	[illegible]	३८	तै.	१२	२५	२३	८	१७	१९	वृ. ४७।४५	६	२	६	३९
३१	२६	६	चं.	५	५५	कृ.	२९	३८	ह.	४५	५	व	५	५५	२४	९	१८	२०	वृ.	६	३	६	३७
३१	२१	७	सं.	०	२०	रो.	६	१	व.	३८	२०	ब.	०	२०	२५	१०	१९	२१	मि. ५५।८	६	४	६	३६
अव	म	८	मं.	५५	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
३१	१६	९	बु.	५२	०	मृ.	२३	५८	सि.	३२	२	तै.	२३	५०	२६	११	२०	२२	मिथुन	६	४	६	३५
३१	१२	१०	गु	४९	२०	आ	२२	३७	व्य.	२७	१२	व.	२०	४०	२७	१२	२१	२३	मिथुन	६	५	६	३४
३१	८	११	शु	७	३७	पुन	२२	१५	व.	२२	५०	ब	१८	२८	२८	१३	२२	२४	क. ७।२१	६	५	६	३२
३१	४	१२	श	६	५७	पुष्य.	२२	५२	प	१९	१८	कौ.	१७	१७	२९	१४	२३	२	कर्क	६	६	६	३१
३१	०	१३	र.	४७	१०	आश्ले	२४	२५	शि.	६	२५	ग.	१७	४	३०	१५	२४	२६	सि. २४।२५	६	६	६	३०
३०	५५	१४	चं	४८	२२	म.	६	५२	सि	१४	२२	वि	१७	४६	३१	१६	२५	२७	सिंह	६	७	६	२९
३०	५०	३०	मं	५०	३५	पू. फा	३०	१७	सा	१३	०	च	१२	२८	अ.१	१७	२६	२८	क. ४६।२३	६	७	६	२७

ग्रह दर्शन :—बुध १३ सितम्बर को पश्चिम में अस्त होगा। शुक्र अस्त है। गुरु प्रातःकाल पश्चिम की ओर नत होगा। मंगल सूर्यास्तानन्तर पश्चिम में, एवं शनि पूर्व में काफी ऊपर होगा। (दक्षिण अयन, शरद्-ऋतु)

अगस्त्य उदित, पितृ पक्ष (महालय) प्रा

भ ०।३३ उ, २६।५२ या, श्रीगणेश ४ व्र, पञ्चक स ४४।२,
बुध वक्री ६।१५,

भ. ५।५५ उ, ३३।७ या,
उ. फा. में शुक्र १९।३२,
☽५७।२०

सौभाग्यवती श्राद्ध, ×इंदिरा ११ व्र. स्मा. वै.,
भ. २०।४० उ, ४९।२० या., स्वाती में मंगल १८।३५, व. बुध उ. फा. में ☽
उ.फा. में सूर्य ३०।५, बुध पश्चिम में अस्त २९।२२, कन्या में शुक्र ०।३५, ×
इन्दिरा ११ व्र. नि., †शस्त्र विषआदि से मरे हुओं का श्राद्ध,
भ. ४७।१० उ. प्रदोष व्र., जन्म दिन-धर्ममार्तण्ड श्री १०५ बघाट नरेश,
भ. १७।४६ या., सं. कन्या में दृश्य सूर्य ५५।३५, मु. ३०, पुण्य आगामी दिन,†
पू. फा. १ में वरुण २८।२०, सौरमत में सं. कन्यार्क २५।३०, अज्ञात मृत्यु*
*तिथि वालों एवं समस्त पितरों का श्राद्ध,

आश्विन कृष्ण ७ मंगल इष्ट ४४.५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	५	११	४	९	२	८
२३	५	११	२४	२७	२४	२३	२३
५९	३७	९	२९	११	१९	५६	५६
२१	३६	३३	१७	१२	१३	५१	५१
५८	३९	२८	५	७४	३	३	३
१८	४८	०	५३	२३	३२	११	११
	मा.	न.	न.	मा.	न.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

बु. ६ | ४ | सू. ५ शु. | रा ३ | ७ मं | ८ | चं. २ | ९ के. | ११ | १ | १० श. | गु. १२

इस पक्ष में रुई में पहिले ७ सितम्बर से तेजी आकर बाद में मन्दी आवे। सोना चांदी में घटाबढ़ी चल कर १३ सितम्बर के बाद मन्दी कुछ तेजी आवे। १३ सितम्बर से अनाज, चावल, गुड़, खाण्ड, तिल, सुपारी, नारियल एवं लोहे में भी तेजी रहे। १६ सितम्बर से गेहूं, जौ, चना, लकड़ी, जूट, सण, ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंगफली, उड़द, अलसी एवं मजीठ में तेजी आवे। तांबे का भाव भी भी तेज हो। चावल में घटाबढ़ी चल कर बाद में तेजी आवे। चांदी व शेयरों में मन्दी रहे। पक्षान्त में जीरा, धनिया एवं सरसों में तेजी का वातावरण बने।

आश्विन कृष्ण ३० मंगल इष्ट ४४।४२

मं. ७ | ५च. | ४ | ८ | बु.शु.६ सू. | ९ के. | ३ रा. | श. १० | गु. १२ | २ | ११ | १

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	११	५	९	२	८
०	१०	५	२३	६	२३	२३	२३
४७	१८	५०	४५	५२	५६	३४	३४
१३	४	१०	५	५६	१७	३६	३६
५८	४०	७१	६	७४	३	३	३
३१	३०	५	५६	३७	६	११	११
	मा.	न.	न.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :—१६ एवं १७ सितम्बर को मैसूर, लंका, मध्यप्रदेश, बंगाल, हैदराबाद एवं भूटान में साधारण बादल चाल रहे।

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ आश्विन शुक्लपक्ष १३ | तारीख | चन्द्र | भा.स्टं. टाइम | (१८ सितम्बर से ३ अक्तूबर तक सन् १९६३ ई.)

... २० सितम्बर को पूर्व में उदित होगा। शुक्र अस्त है।
गुरु सूर्यास्त के बाद उदित होकर सारी रात दीखेगा, सूर्यास्त के बाद मंगल

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ आश्विन शुक्लपक्ष | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम (१८ सितम्बर से ३ अक्तूबर तक सन् १९६३ ई.)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	
३०	४५	१	बु.	५३	५०	उ.फा.	३४	४७	शु.	१२	२८	कि.	२२	१२	२	१८	२७	२९	कन्या	६	८	६	६	मातामह श्राद्ध, नवरात्र प्रा., घटस्थापन,
३०	४०	२	गु.	१८	५	ह.	४०	५	शु.	१२	४०	बा.	२५	५७	३	१९	२८	३०	कन्या	६	८	६	४	चन्द्र दर्शन,
३०	३५	३	शु.	६०	०	चि.	४६	२२	ब्र.	१३	४२	तै.	३०	३८	४	२०	२९	ज१	तु.१३।१४	६	९	६	२३	जमद-अल-अव्वल मु. ५ प्रा.
३०	३०	३	श.	३	१२	स्वा.	५३	२०	ऐ.	१५	२२	ग.	३	१२	५	२१	३०	२	तुला	६	९	६	२१	भ. ३६।११ उ., व. गुरु, रेव. २ में १८।८, हस्त में शुक्र ३।५,
३०	२५	४	र.	९	१०	वि.	६	०	वै.	१७	३५	वि	९	१०	६	२२	३१	३	वृ.४४।१९	६	१०	६	२०	भ. ९।१० या., पुन. १ में राहु, पू. षा. ३ में केतु २०।५,
३०	२०	५	चं.	१५	३५	वि.	१	२	वि.	२०	२	बा.	१५	३५	७	२३	अ१	४	वृश्चिक	६	१०	६	१८	सा. तुला में सूर्य ४४।३७, व. बुधसिंह में ३०।४२, रा. आश्वि. प्रा.,
३०	१६	६	मं.	२१	१०	अनु.	८	४२	प्री.	२२	२८	तै.	२१	१०	८	२४	२	५	वृश्चिक	६	११	६	१७	
३०	११	७	बु.	२७	२८	ज्ये.	१५	४८	आ.	२४	२०	व	२७	२८	९	२५	३	६	ध.१५।१४	६	११	६	१६	भ. २७।२८ उ., ५९।४० या., सरस्वत्यावाहन,
३०	६	८	गु.	३१	५५	मू.	२१	५०	सौ.	२५	२२	ब.	३१	[illegible]	१०	२६	४	७	धनु	६	१२	६	१४	दुर्गाष्टमी, मेला ज्वालामुखी व तारादेवी, सरस्वती पूजन,
३०	२	९	शु.	३४	४०	पू.षा.	२६	२०	शो.	३५	५	बा.	३	१६	११	२७	५	८	म.४१।५७	६	१	६	१३	हस्त में सूर्य ८।२०, बुध पूर्व में उदित ४७।५२, सरस्वती बलिदान,
२९	५८	१०	श.	३५	२०	उ.षा.	२८	५०	अ.	२२	१५	तै.	५	०	१२	२८	६	९	मकर	६	१३	६	१२	बुध मार्गी ५७।० विजयादशमी दशहरा, सरस्वती विसर्जन,
२९	५३	११	र.	३२	५२	श्र.	२९	१५	सु.	१९	४२	व.	४	३६	१३	२९	७	१०	कुं.५८।२८	६	१४	६	११	भ ४।३६ उ, ३३।५२ या., पञ्चक प्रा. ५८।२८, पापाङ्कुशा ११ व्र. स.,
२९	४९	१२	चं.	३०	२०	ध.	२७	४०	धृ.	१६	२२	ब.	[illegible]	६	१४	३०	८	११	कुम्भ	६	१४	६	१०	सोम प्रदोष व्र., ×शरत्पूर्णिमा, कोजागर व्र., सत्य व्र.,
२९	४४	१३	मं.	२४	४८	शत	२४	८	शू.	[illegible]	[illegible]	तै.	२४	५८	१५	अ१	९	१२	कुम्भ	६	१५	६	८	विशाखा में मंगल ५७।४८, चित्रा में शुक्र ४५।३२, अक्तूबर. १० प्रा.
२९	३९	१४	बु.	१८	०	पू.भा.	१९	८	वृ.	५०	३	व.	१८	०	१६	२	१०	१३	मी ५।२३	६	१६	६	७	भ. १८।१० उ., ४३।५९ या., व. शनि श्रव. ४ में १२-४५, श्रीमान्धि-जयन्ती×
२९	३५	१५	गु.	९	२८	उ.भा.	१२	५८	ध्रु.	४०	३८	ब.	९	२८	१७	३	११	१४	मीन	६	१६	६	६	श्री वाल्मीकि-जयन्ती, कार्ति. स्ना. प्रा.,

ग्रह-दशा :—बुध २७ सितम्बर को पूर्व में उदित होगा। शुक्र अस्त है। गुरु सूर्यास्त के बाद उदित होकर सारी रात दीखेगा सूर्यास्त के बाद मंगल पश्चिम में एवं शनि पूर्व क्षितिज से ऊपर होगा। (दक्षिण अयन शरद ऋतु)

आश्वि. शुक्ल ८ गुरु, इष्ट ४४।३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	४	११	५	९	२	८
९	१६	२८	२२	१७	२३	२३	२३
३६	२४	०	३९	४	३१	५	५
३४	५६	८	५१	५८	३८	५९	५९
५८	४१	२०	७	७४	२	३	३
५७	६	[illegible]	[illegible]	४२	८	११	११
	मा.	।	व	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में १९ सितम्बर से रुई में अच्छी तेजी आवे। अन्न के संग्रह से लाभ रहे। २१ सितम्बर से गुड़, खाण्ड में घटावढ़ी चले: सोने में साधारण तेजी आवे। २३ सितम्बर के बाद चांदी में कुछ तेजी आवे। २७ सितम्बर से गेहूं, जौ, चना, सूत, जूट, हल्दी, हींग, एवं धनिया में तेजी आवे पाट एवं शेयरों में पहिले मन्दी एवं बाद में तेजी आवे। १ अक्तूबर से २४ दिन में रुई कपास एवं गेहूं में तेजी आवे, तथा १२ दिन तक सोना चांदी के भाव सम रहें। २८ सितम्बर से मूंगफली एरण्ड कपूर चन्दन एवं अगर आदि गन्धित वस्तुओं में तेजी आवे। २ अक्तूबर से पशुओं के भाव तेज हों। धान का भाव सम रहे।

आकाश लक्षण :—इस पक्ष में मद्रास, विन्ध्य प्रदेश, मध्य भारत, उड़ीसा एवं उत्तर पूर्वी लंका में साधारण वर्षा के योग हैं।

आश्वि. शुक्ल १५ गुरु, इष्ट ४४।२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	४	११	५	९	२	८
१६	२१	२८	२१	२५	२३	२२	२२
९	१३	५१	४५	४७	१७	४३	४३
११	३	१४	०	५६	१०	४३	४३
५९	४१	४९	८	७४	१	३	३
३	३३	१२	१०	४५	४४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व
	उ.	उ.	उ.	[illegible]	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ प्रथम कार्तिक कृष्णपक्ष १४ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टाईम | (४ से १७ अक्तूबर तक सन् १९६३ ई.)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
२	३१	१	शु	१	१२	रे.	५६	१०	व्य	३०	२५	का	१	१२	१८	४	१	१५	मेष ६।७	६	१७	६	५
अ	न	२	शु.	५	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	२७	३	श.	४२	३७	भ.	५	३०	हृ.	२०	१८	व.	१७	५७	१९	५	१३	१६	मेष	६	१७	६	४
२९	२२	४	र.	३१	३०	कृ.	४६	३५	ब.	१०	३०	व.	९	२४	२०	६	१४	१७	वृ. ६।१	६	१८	६	३
२९	१७	५	चं.	२८	२०	रो.	४१	३८	सि.	१/५३	२२/१५	कौ.	१५	५६	२१	७	१५	१८	वृष	६	१९	६	२
२	१	६	मं.	२२	३५	मृ.	३८	२	व.	४६	१०	ब.	२२	३५	२२	८	१६	१९	मि ९।५०	६	१९	६	०
२९	८	७	बु.	१८	१०	आ.	३५	५०	र.	४०	१७	ब.	१८	१०	२३	९	१७	२०	मिथुन	६	२०	५	५९
२९	४	८	गु.	१५	१७	पुन.	३५	१०	शि.	२५	३२	कौ	१५	१७	२४	१०	१८	२१	क. २०।२०	६	२१	५	५८
२९	०	९	शु.	१३	५०	पुष्य	३५	५५	सि.	३२	५	ग.	१३	५०	२५	११	१९	२२	कर्क	६	२१	५	५७
२८	५५	१०	श.	१३	४	आश्ले.	३७	५५	सा.	२९	३०	वि.	१३	४८	२६	१२	२०	२३	सि ३७।५५	६	२२	५	५५
२८	५०	११	र.	१५	०	म.	४१	२	शु.	२७	५	बा.	१५	०	२७	१३	२१	२४	सिंह	६	२३	५	५४
२८	४५	१२	चं.	१७	१२	पू. फा.	४५	१०	शु.	२७	७	तै	१७	१२	२८	१४	२२	२५	सिंह	६	२४	५	५३
२८	४०	१३	मं.	२०	३०	उ. फा.	५०	१०	ब्र.	२७	२	व.	२०	३०	२९	१५	२३	२६	क. ११।५	६	२४	५	५२
२८	३	१४	बु.	२४	३५	ह.	५६	०	ऐं.	२७	४०	श.	२४	३५	३०	१६	२४	२७	कन्या	६	२५	५	५१
२८	३	३०	गु.	२८	२८	चि.	६०	०	वै.	२८	४	ना.	२९	२८	१	१७	२५	२८	तु. २९।१	६	२६	५	५०

ग्रहदर्शन :—शुक्र १६ अक्तूबर को पश्चिम में उदित होगा। सूर्योदय से पहिले बुध पूर्व में एवं गुरु पश्चिम में दीखेगा। सूर्यास्त बाद मंगल पश्चिम की ओर जाता दृष्टिगोचर होगा। इसी समय शनि खमध्य की ओर आता होगा।*

पञ्चक स. ६।७, *(दक्षिण अयन, शरद् ऋतु)

भ. १७।५७ उ., ४३।३७ या., कन्या में बुध ५।४२,

करक चतुर्थी (करवा चौथ) व्र., श्री गणेश ४ व्र.,

तुला में शुक्र ६।२५,

भ. २२।३५ उ., ५०।२२ या.,

अहोई ८,

चित्रा में सूर्य ४०।२२,

भ. ४३।४९ उ.,

भ. १३।४८ या., हस्त में बुध ५७।८, स्वाती में शुक्र २७।५,

रमा ११ व्र. स.

सोम प्रदोष व्र., धन १३, यम को दीप दान,

भ. २०।३० उ., ५२।३२ या., नरक १४, श्री हनुमज्जयन्ती, | बु.उ. |

वृश्चिक में मंगल १६।३७ व. गुरु रेव. १ में ५०।४८, शुक्र पश्चिम में

स. तुला में सूर्य २४।५, मु. ३०, पुष्य ८।५ उ., बुध पूर्व में अस्त ३।०,

उदित २६।२४ श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली,

प्रथम कार्ति. कृ. ८ शु., इ.ट ४०।८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	११	६	९	२	८
१३	२६	६	२०	४	२३	२२	२२
२३	५	३०	४८	३१	६	२१	२१
४२	५०	१४	०४	३६	५९	२८	२८
५९	४२	९३	७	७४	१	३	३
२०	६	२४	५	५०	६	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
चि. ४	चि.	उ.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु. ७ न | ५ | ८ | सू. ६ बु. | ४ | ९ के. | च. ३ रा. | १० | श | १२ गु. | २ | ११ | १

इस पक्ष में जनता राजनैतिक उपद्रवों से अशांत रहे। ५ अक्तूबर से सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, हल्दी, गेहूं, जौ चना में तेजी आवे। रुई का भाव पूर्ववत् रहे। १० अक्तूबर से अरहर लाख, चमड़ा, केसर, एवं कपूर में तेजी आवे। १७ अक्तूबर से किरयाने की चीजों में तेजी का रुख बने। इस पक्ष में तुला संक्रान्ति अमावस्या को है अतः यदि इस दिन आकाश मेघाच्छन्न रहे अथवा वर्षा हो तो उड़द, मूंग, मक्का, ज्वार, बाजरा, मोठ, कस्तूरी, केसर, हल्दी आदि का संग्रह करने से छठे मास में लाभ हो। इस दिन से मजीठ, श्रीफल, सुपारी एवं तांबा में तेजी आवे।

आकाश लक्षण :—४, ५, ६, ९, १० एवं ११ अक्तूबर को भूटान, सिक्किम एवं शिलांग में स[illegible] के योग बनते हैं।

प्रथम कार्ति. कृ. ३० गुरु, इ.ट ४३।५५

७ शु | सू. | ५ | ८ | ६ बु. | ४ | मं. | च. | ९ के. | ३ रा. | १० | श. | १२ गु. | २ | ११ | १

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	५	११	६	९	[illegible]	८
०	१	१७	१९	१३	२३	२१	२१
१९	१	४७	५३	१५	१	५९	५९
४१	५२	४०	४	२४	३५	१३	१३
५९	४२	०५	७	७४	०	३	३
३४	३५	८	४८	५०	२०	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि. सं. २०२० शाक १८८५ प्रथम (*संसर्प) कार्तिक शुक्ल पक्ष १५ । तारीखें । चन्द्र । भा. स्टै. टाइम (१८ अक्तूबर से १ नवम्बर तक, सन् १९६२ ई.)

द. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अ.	रा.	मु.	सञ्चार	चंडीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
२८	२६	१	शु.	३५	२	चि.	२	२५	वि	३०	२७	कि.	२	१२	२	१८	२६	२१	तुला	६	२७	५	४९
२८	२२	२	श.	४१	१	स्वा.	१	३०	प्री	३२	३२	बा.	८	०६	३	१९	२७	३०	तुला	६	२७	५	४८
२८	१८	३	र.	४७	४०	वि.	१७	३	आ	३५	०	तै.	१४	२५	४	२०	२८	ज१	वृ. ०।१०	६	२८	५	४७
२८	१४	४	चं.	५४	१२	अनु.	२४	५०	सौ.	३७	२८	व.	२०	५६	५	२१	२९	२	वृश्चिक	६	२८	५	४६
२८	१०	५	मं.	६०	०	ज्ये.	३२	२२	शो.	३९	४२	ब.	२७	१७	६	२	३०	३	ध. ३२।२२	६	२९	५	४५
२८	५	५	बु.	०	२२	मू.	३९	१७	अ.	४१	२५	वा.	०	२२	७	२३	क१	४	धनु	६	३०	५	४४
२८	०	६	गु.	५	३५	पू. षा.	४५	२	सु.	४२	१५	तै.	१	३१	८	२४	२	५	धनु	६	३०	५	४२
२७	५५	७	शु.	९	३०	उ. षा.	४९	१२	धृ	४१	४२	व	९	३०	९	२५	३	६	म. २१४	६	३१	५	४१
२७	५०	८	श.	११	३२	श्र.	५१	२५	शू.	३९	४२	व	११	३२	१०	२६	४	७	मकर	६	३२	५	४०
२७	४६	९	र.	११	२५	ध.	५१	२५	गं.	३६	०	कौ.	११	२५	११	२७	५	८	कु. २१।२५	६	३३	५	३९
२७	४२	१०	चं.	९	५	श.	४९	२०	वृ.	३०	३०	ग.	९	५	१२	२८	६	९	कुम्भ	६	३३	५	३८
२७	३८	११	मं.	४	४०	पू. भा	४५	१७	ध्रु.	२२	२२	वि.	४	४०	१३	२९	७	१०	मी ३१।१८	६	३४	५	३७
अव	म	१२	न.	५८	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
२७	३४	१३	बु.	५०	३२	उ. भा.	३९	३८	व्या	१४	५०	का.	२४	२७	१४	३०	८	११	मीन	६	३५	५	३६
२७	३०	१४	गु.	४१	३५	रेव.	३२	४७	ह.	५४	४०	श.	१६	४	१५	३१	९	१२	मे ३२।४७	६	३६	५	३६
२७	२६	१५	शु	३२	०	अ	२५	१२	सि	४३	४२	वि.	६	४८	१६	न१	१०	१३	मेष	६	३६	५	३६

ग्रह-दर्शन :—बुध अस्त है। सूर्यास्त के बाद गुरु पूर्व में, शनि, खमध्यासन्न एवं शुक्र मंगल पश्चिम में नीचे ऊपर दीखेंगे।

(दक्षिण अयन, शरद्-हेमन्त ऋतु)।

अन्नकूट गोवर्द्धन पूजा,

चन्द्र-दर्शन, शुक्र बाल्य समाप्त, यम २, भाई दूज,

अनु. में मंगल ५८।२, चित्रा में बुध ५७।५५, जमद-उस्सानी मु, द प्रा.,

भ. २०।५६ उ., ५४।१२ या., शनि मार्गी ३७।१०,

विशा, में शुक्र ८।१२, रा. कांति प्रा.,

स्वाती में सूर्य ६।१५, सा. वृश्चिक में सूर्य ६।२, हेमन्त ऋतु प्रा., तुला में*

भ. ९।३० उ., ४०।३१ या., गोपाष्टमी, *बुध ५२।२८,

+स; भीष्म पञ्चक प्रां., तुलसी विवाह,

पञ्चक प्रा. २१।२५, कूष्माण्ड ९,

भ. ३६।५२ उ., स्वाती में बुध . ४९।४५,

भ. ४।४० या., प्रबोधिनी ११ व्र. स. (अस्पृहा), चातुर्मासिय-व्रत-नियमादि+

§रामतीर्थ व कपाल मोचन, श्री गुरु नानक जयन्ती, सत्य व्र.⌣

प्रदोष व्र., ⌣भीष्म पञ्चक स.,

भ. ४१।३५ उ., पञ्चक स., ३२।४७, वृश्चिक में शुक्र ९।०, वैकुण्ठ १४,

भ. ६।४८ या., नवम्बर ११ प्रा., कार्ति. स्नान स., मेला पुष्कर (अजमेर)§

प्रथम कार्तिक श ८ शनि. इ ४०।४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	६	११	६	९	२	८
९	७	३	१८	२४	२३	२१	२१
१७	२७	८	४६	२८	२	३०	३०
३	३२	४५	२८	५३	१३	३५	३५
५९	४३	[illegible]	६	७४	०	३	३
५२	९	[illegible]	५१	५१	३६	११	११
	मा.	म.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

८म. | ६ | ९के | सू.७शु बु | ५ | १०श.चं | ४ | ११ | १ | ३रा | गु १२ | २

१९ अक्तूबर से चावल, चना, उड़द, सरसों, तिल, सोना एवं चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे। लाल रंग की वस्तुएं तेज हों। २४ अक्तूबर से गुड़ खाण्ड में तेजी आवे बिनौला एवं मूंगफली में मन्दी आवे। ३१ अक्तूबर से गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, ज्वार एवं बाजरे में मन्दी आवे। अलसी में २४ अक्तूबर से ३१ अक्तूबर तक कुछ मन्दी आवे उसके बाद तेजी हो। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को यदि सूर्य पर परिवेश दिखाई दे तो तिल तेल तेज हों—संग्रह से निश्चित लाभ रहे।

प्रथम कार्तिक शुक्ल १५ गुरु इष्ट ४३।३०

शु मं ८ | ६ | के ९ | सू.७बु. | ५ | १०श | ४ | ११ | १चं. | ३रा | गु.१२ | २

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
६	७	६	११	७	९	२	८
१५	११	१३	१८	१	२३	२१	२१
१६	४७	१२	७	५७	७	११	११
४७	१३	३०	१७	५२	३४	३१	३१
६०	४३	९८	६	७४	१	३	३
४	२९	३७	२०	५०	१६	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—२४, २५, २६, अक्तूबर को उत्तर पूर्वी लंका, बम्बई एवं हैदराबाद में बादल चाल रहे।

*नोट—क्षय मास से पूर्ववर्ती अधिक मास को संसर्प कहा जाता है। धर्म शास्त्रकारों मासिक पर्वोत्सवादि के लिए "संसर्प" को शुद्ध माना है। इसलिए कार्तिक शुक्ल के सभी पर्वोत्सव इसी पक्ष में लगाए गए हैं। (विशेष स्पष्टीकरण के लिए क्षयमास विषयक लेख देखें)।

वि. सं २०२० शाक १८८५ द्वितीय (*संसर्प) कार्तिक कृष्णपक्ष १६ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | (२ से १६ नवम्बर तक, सन् १९६३ ई.)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. नवं.	रा. कार्ति.	सु. फ्रं.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	
२७	२२	१	श.	२२	१७	भ.	१७	२२	व्य.	३२	४५	कौ.	२२	१३	१७	२	११	१४	वृ ३० २७	६	३७	५	३४	अनु. में शुक्र ४९।१५,
२७	१८	२	र.	१२	५५	कृ	९	५२	ब.	२२	८	ग.	१२	५५	१८	३	१२	१५	वृष	६	३८	५	३२	भ. ३८।३५ उ.,
२७	१४	३	च.	४	१५	रो.	१७	३२	प	१२	१२	वि.	४	१५	१९	४	१३	१६	मि ३०।१९	६	३९	५	३३	भ. ४।१५ या., श्रीगणेश ४ व्र.,
अ	न	४	चं.	५६	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५	०	
२७	१०	५	मं.	५०	४८	आ.	५३	२२	शि	५३	३०	कौ.	२२	४७	२०	५	१४	१७	मिथुन	६	४०	५	३२	विशाखा में बुध ५२।५८,
२७	५	६	बु.	४२	२०	पुन.	५०	५५	सा.	४२	१८	ग.	१८	३९	२१	६	१५	१८	क. ३६।३२	६	४१	५	३१	भ. ४६।३० उ., विशाखा में सूर्य २५।५७,
२७	०	७	गु	४२	२	पु	५०	११	शुभ	४४	२५	व.	१५	१६	२२	७	१६	१९	कर्क	६	४२	५	३०	भ. १५।१६ या.,
२६	५६	८	शु.	४३	२५	आश्ले.	५१	२२	शु.	४१	०	बा	१३	४४	२३	८	१७	२०	सिं ११।२२	६	४३	५	३०	ज्येष्ठा में मंगल २५।२, श्री महाकाल भैरव ८,
२६	५३	९	श.	४४	३०	म	५४	१०	ब्र.	३८	५५	तै.	१३	५७	२४	९	१८	२१	सिंह	६	४३	५	२९	धनि १ में शनि ५१।३२,
२६	४९	१०	र.	४७	७	पू. फा	५८	२०	ऐं.	३०	०	व.	१५	४	२५	१०	१९	२२	सिंह	६	४४	५	२८	भ. १५।४८ उ. ४७।७ या.,
२६	४५	११	चं.	५१	०	उ. फा.	६०	०	वै.	३८	२	ब.	१९	४	२६	११	२०	२३	कं. १४।३९	६	४५	५	२७	उत्पन्ना ११ व्र. स्मा. वै.,
२६	४२	१२	मं.	५५	४७	उ. फा	३	३७	वि	३८	५०	कौ.	२२	२४	२७	१२	२१	२४	कन्या	६	४६	५	२७	वृश्चिक में बुध ६।३५, उत्पन्ना ११ व्र., नि., मल्ल १३,
२६	३९	१३	बु.	६०	०	ह.	९	५०	प्री.	४०	१५	ग.	२[illegible]	३३	२८	१३	२२	२५	तु. ४३।१५	६	४७	५	२६	ज्येष्ठा में शुक्र ३०।२२, प्रदोष व्र.,
२६	३६	१३	गु.	१	२०	चि.	१६	४०	आ	४२	३	व.	१	२०	२९	१४	२३	२६	तुला	६	४७	५	२६	भ. १।२० उ., ३४।२२ या., अनु. में बुध १२।५५, जन्म दिन श्री जवाहरलाल*
२६	३३	१४	शु.	७	२५	स्वा.	२३	५७	सौ	४४	१२	श.	७	२५	३०	१५	२४	२७	तुला	६	४८	५	२५	मेला पुरमण्डल, *नेहरू, (बाल दिवस).
२६	३०	३०	श	१३	४८	वि.	३१	३०	शो.	४६	२७	ना.	१३	४८	१	१६	२५	२८	वृ. १४।३७	६	४९	५	२५	सं. वृश्चिक में सूर्य २२।२२, मु. ४५, पुण्य ६।२२ उ., शनैश्चरी ३०;

दृश्यदर्शन :—बुध अस्त है । सूर्यास्त बाद शुक्र-मंगल पश्चिम में परस्पर समीपस्थ, गुरु पूर्व में एवं शनि खमध्यासन्न होगा ।
(दक्षिण अयन, हेमन्त ऋतु) ।

द्वि. कार्तिक कृ. ८ शुक्र, इष्ट ४३।१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	६	११	[illegible]	९	२	८
२२	१६	२४	१७	१[illegible]	[illegible]३	२०	२०
१७	५३	३५	२६	४१	१७	४९	४९
४८	२०	२	१३	४४	५६	१५	१५
६०	४४	९६	५	७४	१	३	३
१७	०	१४	९	४९	४८	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु ८म. | ६ | ९ के | शु ७बु. | ५ | १० श. | चं. ४ | ११ | १ | ३गु. | रा. १२ | ७

इस पक्ष में पूर्वी एवं दक्षिणी प्रदेशों में उपद्रव हों । ५ नवम्बर से रुई में काफी मन्दी आवे । ९ नवम्बर से गुड़ खाण्ड में मन्दी, गेहूं, ज्वार एवं, बजरा में तेजी आवे । १६ नवम्बर से गेहूं, जौ, चना, लौंग, इलायची, सोंठ जायफल, जीरा, धनिया, सोना एवं चांदी में मन्दी आवे एवं रुई, लोहा, ताम्बा, जस्ता, पीतल तेज हों । तिल, तेल सरसों अलसी के भाव सम रहें ।

द्वि. कार्तिक कृ. ३० शनि, इष्ट ४२।२८,

म. शु बु ८ | ६ | के ९ | सू. ७ चं | ५ | १० श. | ४ | ११ | १ | ३रा. | ग १२ | २

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	११	७	९	२	८
०	२२	७	१६	२०	२३	२०	२०
२[illegible]	४६	१५	५०	४०	३५	२३	२३
४६	५३	४७	[illegible]४	१३	३५	४९	४९
६०	४[illegible]	९३	३	७४	२	३	३
२९	२६	४०	४८	४७	३८	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :—२ से ४ नवम्बर तक उत्तर पूर्वी लंका एवं मद्रास के दक्षिण पूर्वी प्रदेशों में बादल चाल रहे एवं कहीं-कहीं बूंदा-बांदी भी हो ।

*नोट:—क्योंकि "संसर्प" मास धार्मिक मासिक '(पर्वोत्सवादि) कृत्यों के लिए शुद्ध माना गया है और कृष्णा [illegible] पद्धति के अनुसार यह पक्ष मार्गशीर्ष कृष्ण है, अतः—मार्गशीर्ष कृष्ण के सभी पर्वोत्सव इसी पक्ष में दिए गए (विशेष विवरण के लिए [illegible] मास विवयक लेख देखें) ।

वि.सं. २०२० शाक १८८५ मार्गशीर्ष (*अहःपति) शुक्लपक्ष १७ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टाइम | (१७ से ३० नवम्बर तक, सन् १९६३ ई.)

[illegible] २८ नवं. को पश्चिम में उदित होगा । सूर्यास्त के बाद शु. मं. [illegible] से पश्चिम की ओर नत एवं

(विशेष विवरण के लिए क्षय मास विवरक लेख देखें) ... सन् १९६३ ई.)

वि.सं. २०२० शाक १८८५ मार्गशीर्ष (*अहंहति) शुक्लपक्ष

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. नवं.	रा. कार्ति.	मु. क्रं.	सञ्चार	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.
२६	२६	१	र.	२०	१८	अनु.	३९	८	अ.	४६	४५	ब.	२०	१८	२	१७	२६	२९	वृश्चिक	६	५०	५	२४
२६	२३	२	चं.	२६	४२	ज्ये.	४६	३२	सु.	५०	५०	कौ.	२६	४२	३	१८	२७	र.१	व.४६।३२	६	५१	५	२४
२६	१९	३	मं.	३	४७	मू.	१३	३२	धृ.	५१	३	ग.	३२	४७	४	१९	२८	२	धनु	६	५२	५	२३
२६	१६	४	बु.	३८	१०	पू.षा.	१३	४५	शू.	५३	४८	व.	५	१८	५	२०	१	३	धा	६	५२	५	३
२६	१४	५	गु.	४२	२८	उ.षा.	६०	०	गं.	२६	५	ब.	१०	१९	६	२१	३०	४	म.१६।२	६	५३	५	२३
२६	१२	६	शु.	४५	१७	उ.षा.	४	१९	वृ.	५३	१५	कौ.	१३	५२	७	२२	म.१	५	मकर	६	५४	५	३
२६	९	७	श.	४६	२७	श्र.	८	२७	ध्रु.	५१	२	ग.	१५	५२	८	२३	२	६	कु.३३।२४	६	५५	५	२२
२६	६	८	र.	४५	३५	ध.	१०	२०	व्या.	४७	२०	वि.	१६	१	९	२४	३	७	कुम्भ	६	५६	५	२२
२६	३	९	चं.	४२	४७	श.	१०	१९	ह.	४२	२	बा.	१४	११	१०	२५	४	८	मी.१३।४२	६	५७	५	२१
२६	०	१०	मं.	३८	५	पू.भा.	८	१२	व.	३५	१५	तै.	१०	२६	११	२६	५	९	मीन	६	५८	५	२१
२५	५७	११	बु.	३१	३८	उ.भा.	५	३२	सि.	२७	०	व.	४	५	१२	२७	६	१०	मे.१९।२	६	५९	५	२१
२५	५५	१२	गु.	२३	४५	अ.	५२	२८	व्य.	१९	४२	ब.	२३	४५	१३	२८	७	११	मेष	६	५९	५	२१
२५	५३	१३	शु.	१४	५५	भ.	४५	५	[illegible]	[illegible]	३०	तै.	१४	५५	१४	२९	८	१२	वृ.१८।११	७	०	५	२१
२५	५०	१४	श.	५	२७	कृ.	३७	८	शि.	४५	५०	व.	५	२७	१५	३०	९	१३	वृष	७	१	५	२१
अवम		१५	र.	५५	५७	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

हर्षल:—वृ. २८ नवं. को पश्चिम में उदित होगा। सूर्यास्त के बाद शु. मं. पश्चिम में परस्पर समीपस्थ, शनि खमध्य से पश्चिम की ओर नत एवं गु. पूर्व में होगा। (दक्षिण अयन, हेमन्त ऋतु),

चन्द्रदर्शन, निर्वाण दिवस श्री ला. लाजपतराय,

रजब मु. ७ प्रा.,

अनु. में सूर्य ४०।३७, व. गुरु उ. भा. ४ में ३५।२७,

भ. ५।२८ उ. ३८।१० या.,

नाग ५, बलिदान दिवस श्री गुरु तेग बहादुर,

सा. धनु में सूर्य ५८।१५, ज्येष्ठा में बुध ४९।५, रा. मार्ग, प्रा., चम्पा ६,

भ. ४६।२७ उ., पञ्चक प्रा. ३९।२४,

भ. १६।१ या., मूल धनु में शुक्र ११।४७, आर्द्रा ४ में राहु, पू.षा. २ में केतु ११।५५

मूल धनु में मंगल २३।३८, ११ व्र. स.

भ. ४।५२ उ. ३१।३८ या., पञ्चक स. ५९।२, श्री गीता जयन्ती, मोक्षदा

बुध पश्चिम में सदित ४।३९, प्रदोष व्र.,

भ. ५।२७ उ. ३०।४२ या., पिशाच मोचन श्राद्ध, श्रीदत्त जयन्ती सत्यव्र.,

मार्ग शुक्ल ८ रवि, इष्ट ४०।४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	११	८	९		८
८	२८	१	१६	०	२३	१९	१९
२५	४४	३४	२५	३	५९	५८	५८
२३	९	१	५२	०९	३४	२२	२
६०	४४	९०		७४	३	३	३
४	५६	३४	१	४२	२६	११	११
	मा.	मा	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	२	४	२	२	३	३
अनु.	ज्ये.	ज्ये.	उ.भा.	मू.	उ.षा.	आर्द्रा	पू.षा.
वणिक	वायु	वायु	सौम्य	अग्नि	अमृत	सौम्य	सौम्य

९ के. ७
म. शु. ८ बु. सू.
१ श
११ च ५
१२ रा. २ ४
गु. १ ३ रा.

इस पक्ष के आरम्भ में जावफल, जीरा, धनिया, लौंग इलायची में मन्दा एवं लोहा, तांबा, जस्त, पीतल में तेजी आए। १९ नवम्बर से सोना एवं रुई में तेजी का रुख बने। चावल में पहिले दो-तीन दिन मन्दी रहे, बाद में तेजी आए। चांदी में मन्दी आए। २४ नवम्बर से कपास, गेहूं, जौ, चना में तेजी आए। २६ नवम्बर से शण, बिनौला, धान्य एवं पशुओं के भाव तेज हों।

म. ९ शु. के. ७
१० श बु. ८ सू. ६
११ ५
गु. १२ २ चं. ४
१ ३ रा.

मार्ग शुक्ल १४ शनि, इष्ट ४२।२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	११	८	९	२	८
१४	३	२८	१६	८	२४	१९	१९
९	१४	४२	१६	६	२१	३९	३९
५१	४३	४४	२७	५३	२०	१८	१८
६०	४५	८९	०	७४	३	३	३
४९	१६	६७	५	४२	५८	११	११
	मा.	मा.	व	मा.	मा.	व.	व
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
४	३	४	४	३	२	४	३
अनु.	मू.	ज्ये.	उ.भा.	मू.	उ.षा.	आर्द्रा	पू.षा.
वणिक	अग्नि	वायु	सौम्य	अग्नि	अमृत	सौम्य	सौम्य

आकाश लक्षण :—इस पक्ष में मद्रास, मैसूर एवं पूर्वी पाकिस्तान के तटवर्ती प्रदेशों में बादल छाए रहें। उत्तर पूर्वी लंका एवं मद्रास के दक्षिण पूर्वी भाग में अपेक्षा-कृत कुछ अधिक वर्षा हो।

*नोट :—दो संक्रान्ति वाले शुक्लादि चान्द्रमास को "अहंहति" कहा जाता है। विशेष विवरण के लिए क्षयमास सम्बन्धी लेख, जो कि "आकाशी कौंसिल" के पहिले दिया गया, पढ़ें।

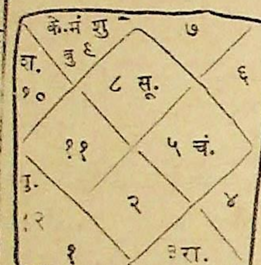
वि. संवत् २०२० शाक १८८५ पौष (*अहंस्पति) कृष्णपक्ष १८ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | (१ से १६ दिसम्बर तक, सन् १९६३ ई.)

ग्रह दर्शन :—मं. ७ दिसम्बर को अस्त होगा । सायंकाल में बु. श. परस्पर समीपस्थ, शनि याम्योत्तर वृत से पश्चिम की ओर काफी झुका हुआ एवं गुरु पूर्व क्षितिज से काफी ऊपर दीखेगा । (दक्षिण अयन, हेमन्त ऋतु)

दि मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	रा. ताल.	मु. रज्ज.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	
२५	४५	१	र.	४६	४२	रो.	२९	५८	ति.	३५	५	बा.	२१	१९	१६	१	१०	१४	मि५६।३०	७	१	५	२१	मूल धनु में बुध ३४।२, दिसम्बर प्रा.,
२५	४३	२	चं.	३८	१५	मृ.	२३	२	पा.	२४	५२	तै.	१२	२८	१७	२	११	१५	मिथुन	७	२	५	२१	ज्येष्ठा में सूर्य ५०।४५,
२५	४४	३	मं.	३०	५८	आ.	१७	१२	शु.	१५	३२	व.	४	३६	१८	३	१२	१६	क.५८।५२	७	३	५	२१	भ. ४।३६ उ. ३०।५८ या., श्रीगणेश ४ व्र.,
२५	४२	४	बु.	२५	१०	पुन.	१२	४५	शु.	७	२२	बा.	२५	१०	१९	४	१३	१७	कर्क	७	४	५	२१	पू. षा. में शुक्र ५३।५३,
२५	४०	५	गु.	२१	१०	पु.	१०	५	ब्र.	५५	३३	तै.	२१	१०	२०	५	१४	१८	कर्क	७	५	५	२१	गुरु मार्गी ३२।१८,
२५	३८	६	शु.	१९	७	आश्ले.	९	१७	वै.	५१	४०	व.	१९	७	२१	६	१५	१९	सि.९।१७	७	६	५	२१	भ. १९।७ उ. ४९।७ या.,
२५	३६	७	श.	१९	७	म.	१०	२७	वि.	४९	३०	ब.	१९	७	२२	७	१६	२०	सिंह	७	६	५	२१	मङ्गल अस्त २८।१७,
२५	३४	८	र.	२१	५	पू. फा.	१३	३०	प्री.	४८	४२	कौ.	२१	५	२३	८	१७	२१	क.२९।४०	७	७	५	२१	
२५	३२	९	चं.	२४	४०	उ. फा.	१८	१२	आ.	४९	८	ग.	२४	४०	२४	९	१८	२२	कन्या	७	८	५	२१	भ. ५७।७ उ., बार्हस्पत्यमान से 'पिङ्गल' नामक संवत्सर प्रा.,
२५	३०	१०	मं.	२९	३५	ह.	२४	१०	सौ	५०	२२	वि.	२९	३५	२५	१०	१९	२३	तु.५७।३८	७	८	५	२१	भ. २९।३५ या., पू. षा. में बुध ४५।१५,
२५	२८	११	बु.	३५	३०	चि.	३१	५	शो.	५२	१२	ब.	२	३२	२६	११	२०	२४	तुला	७	९	५	२१	विशा. २ में इन्द्र ५३।२२, सफला ११ व्र. स.,
२५	२	१२	गु.	४१	५५	स्वा.	३८	३२	अ.	५४	२५	कौ.	८	४२	२७	१२	२१	२५	तुला	७	१०	५	२२	
२५	२६	१३	शु.	४८	३०	वि.	४६	१०	सु.	५६	४२	ग.	१५	१२	२८	१३	२२	२६	वृ.२९।१६	७	११	५	२२	भ. ४८।३० उ., पू. षा. में मंगल ५९।२५, प्रदोष व्र.,
२५	२५	१४	श.	५४	५५	अनु.	५३	४०	धृ.	५८	५०	वि.	२१	४२	२९	१४	२३	२७	वृश्चिक	७	११	५	२२	भ. २१।४२ या., *उ.षा. में शुक्र ३६।५०,
२५	२४	३०	र.	६०	०	ज्ये.	६०	०	शू.	६०	०	च.	२७	५६	३०	१५	२४	२८	वृश्चिक	७	१२	५	२२	सं. मूल-धनु में दृश्य सूर्य ५७।४७, मु. १५, पुण्य आगामी दिन,*
२५	२३	३०	चं.	०	५८	ज्ये.	०	४७	शू.	०	३८	ना.	०	५८	१	१६	२५	२९	ध.०।४७	७	१३	५	२२	वरुण वक्री ५।५८, सोमवती ३०, सौरमत में सं. धनु में अर्क १२।२०,

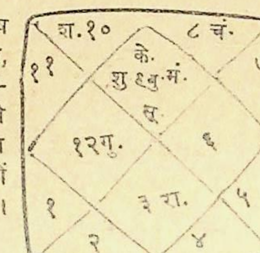
पौष कृ. ८ रविवार, इष्ट ४२।१२.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	८	११	८	९	२	८
२२	९	१०	१६	१८	२४	१९	१९
३६	१८	२८	१५	४	५५	१३	१३
२६	४	३४	१९	१९	८	५२	५२
६०	४५	८४	०	७४	४	३	३
५८	४०	१७	५१	३७	३४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस पक्ष में जनता में शासक-वर्ग की ओर से असंतोष बढ़े । २ दिसम्बर से गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, पारा, हींग, एरण्ड एवं गुग्गुल में तेजी आवे । ३ दिसम्बर से मूंग-मोठ में मन्दी आवे तथा १० दिसम्बर से सोना एवं चांदी में भी मन्दी का रुख रहे । १५ दिसम्बर से ज्वार, बाजरा एवं मक्की में काफी तेजी आवे । मूंगफली अलसी सरसों में भी तेजी आवे । गुड़ शक्कर एवं खाण्ड के भाव सम रहें । रुई, कपास, सूत, तिल, तेल में तेजी आवे ।

पौष कृ. ३० चन्द्रवार, इष्ट ४१।५८



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	११	८	९	२	८
०	१५	२०	१६	२८	२५	१८	१८
४४	२४	५६	२७	०	३३	४८	४८
५५	३४	४५	३५	५३	४७	२७	२७
६१	४६	६७	२	७४	५	३	३
५	३	४०	२१	२४	९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लक्षण—इस पक्ष में लंका के उत्तर पूर्वी भाग एवं पश्चिमी पाकिस्तान के उत्तर पूर्वी भाग में अच्छी वर्षा हो । मैसूर एवं पूर्वी पाकिस्तान के तटवर्ती प्रदेशों में बादल चाल रहे ।

*नोट :—दो संक्रान्ति वाले शुक्लादि चान्द्रमास को 'अहंस्पति' कहा जाता है । विशेष विवरण के लिए ग्रंथ भाग सम्बन्धी लेख देखें ।

वि० संवत् २०२०. शाक १८८५ पौष शुक्लपक्ष १३ | तारीख | चन्द्र | भा.स्टै टाइम | (१७ से ३० दिसम्बर तक सन् १९६३ ई.)

। सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज से ऊपर क्रमशः

(१०१ ... दिसम्बर ... जन १९६३ ई.)

वि० संवत् २०२० शाक १८८५ पौष शुक्लपक्ष

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. पौष	अं. दिस.	रा. माग.	मु.	सञ्चार	सू. उ घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
२५	२२	१	मं.	६	२५	मू.	७	२०	गं.	२	०	ब.	६	२५	२	१७	२६	३०	धनु	७	१४	५	२३
२५	२१	२	बु.	११	५	पू. षा.	१३	७	वृ.	२	४७	कौ.	११	५	३	१८	२७	शा[1]	म. २३।२१	७	१४	५	२३
२५	२०	३	गु.	१४	४५	उ. षा.	१८	२	ध्रु.	२	५५	ग.	१४	४५	४	१९	२८	२	मकर	७	१५	५	२३
२५	२०	४	शु.	१७	२०	श्र.	२१	४७	व्या.	२	१०	वि.	१७	२०	५	२०	२९	३	कुं. ५।३४	७	१५	५	२४
२५	२०	५	श.	१८	३५	ध.	२४	२०	ह.	५७	३५	वा.	१८	३५	६	२१	३०	४	कुम्भ	७	१६	५	२४
२५	२०	६	र.	१८	२५	श.	२५	३०	सि.	५३	५०	तै.	१८	२५	७	२२	पौ[1]	५	कुम्भ	७	१६	५	२५
२५	२१	७	चं.	१६	४५	पू. भा.	२५	७	व्य.	४८	४०	व.	१६	४५	८	२३	२	६	मी. १०।१३	७	१७	५	२५
२५	२२	८	मं.	१३	३०	उ. भा.	२३	२०	व.	४२	२२	ब.	१३	३०	९	२४	३	७	मीन	७	१७	५	२६
२५	२३	९	बु.	८	५२	रे.	२०	५	प.	३४	१८	कौ.	८	५२	१०	२५	४	८	मे. २०।१५	७	१८	५	२७
२५	२४	१०	गु.	२	५०	अ.	११	३५	शि.	२६	३५	ग.	२	५०	११	२६	५	९	मेष	७	१८	५	२७
अव	म	११	गु.	५५	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
२५	२५	१२	शु.	४७	५५	भ.	१०	५	सि.	१७	२२	ब.	२१	५१	१२	२७	६	१०	वृ. २३।३१	७	१८	५	२८
२५	२६	१३	श.	३९	३७	कृ.	५७	५०	सा.	५७	४५	कौ.	१३	४६	१३	२८	७	११	वृष	७	१९	५	२९
२५	२७	१४	र.	३१	१३	मृ.	५०	४७	शु.	४७	५०	ग.	५	२५	१४	२९	८	१२	मि. २४।२	७	१९	५	३०
२५	२८	१५	चं.	२३	५	आ.	४४	४५	ब्र.	३८	१२	ब.	२३	५	१५	३०	९	१३	मिथुन	७	१९	५	३०

ग्रहदर्शन—मं. अस्त है। सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज से ऊपर क्रमशः बु.शु.श., एवं गुरु खमध्यासन्न दीखेंगे। बु. २९ दिसं को पश्चिम में अस्त होगा। (दक्षिण-उत्तर अयन, हेमन्त-शिशिर-ऋतु)

चन्द्र दर्शन

मकर में शुक्र १७।५८, शाबान मु. ८ प्रा.

भ. ४६।२ उ.

भ. १७।२० या., पञ्चक प्रा. ५।३४,

रेव. १ में गुरु ११।३२,

सा. मकर में सूर्य ३०।८, शिशिर-ऋतु उत्तरायण प्रा., रा. पौष प्रा.

भ. १६।४५ उ, ४५।७ या, पञ्चक स. १०।१३, उ.षा.में बुध २१।३०, अभि. + + में शुक्र ४०।२५, जन्म दिन, जन्म दिन श्री गुरुगोविन्द सिंह जी,

बुध वक्री ४८।३५, पञ्चक स. २०।५, क्रिसमस डे

भ. २१।१८ उ. ५५।४७ या., श्रव. में शुक्र २२।२, जोड़ मेला प्रा;

शुक्र अभि. से निवृत्त ५।८, पुत्रदा ११ व्र. स., मेला बाबा हरबल्लभ*

व. बुध पू. षा. में ३०।३२, धनि. २ में शनि ४०।३०, शनि प्रदोष व्र.,卐

भ. ३१।३३ उ. ५७।१९ या., पू.षा. में सूर्य २।५०, बुध पश्चिम में अस्त ४।३३

चूड़ामणिचन्द्र ग्रहण (खग्रास), माघ स्नान प्रा., सत्य व्र. 卐जोड़ मेला स.,

*(जालंधर) प्रा.,

पौष शुक्ल ८ मंगल, इष्ट ४१।४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	११	९	९	२	८
८	२१	२७	१६	७	२६	१८	१८
५३	३३	८	५७	२५	१	२३	२३
५२	५७	१२	२७	५५	१	०	०
६१	४६	९	४	७४	५	३	३
९	१७	४१	६	१५	४३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१०श.शु. ८ ७ ११ ९ मं.बु.सू.के. १२गु.चं. ६ ५ १ ३रा. २ ४

इस पक्ष में १८ दिसम्बर से गुड़, खांड, घी, एवं अनाज में तेजी आए। रुई एवं चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आए। २५ दिसम्बर से फल एवं मेवा तेज हों। २६ दिसम्बर से सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, उड़द, मूंग, मोठ में मंदी तथा कपास, तिल, तेल सरसों में तेजी आए। १५ दिसम्बर से १४ दिन के बीच बिनौला हल्दी, गुग्गल, चमड़ा तथा शण में तेजी आए, अन्न संग्रह से लाभ हो। चन्द्रग्रहण से पहिले रुई का स्टाक करने से २ मास में एक खण्डी पर २५--३० रुपए की तेजी से लाभ रहे।

पौष शुक्ल १५ चन्द्र, इष्ट ४१।४२

१०श. ८ ११ सू.के.९मं. ७ १२गु. ६ ५ १ चं.३रा. २ ४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	११	९	९	२	८
१५	२६	२५	१७	१५	२६	१८	१८
०	१२	१५	१९	२१	५१	३	३
४३	१८	५८	३०	४	५८	५५	५५
६१	४६	५२	५	७४	६	३	३
९	३३	४७	७	४	०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—पश्चिमी पाकिस्तान के उत्तरी भाग एवं मद्रास के समुद्र तटवर्ती भागों में साधारण वृष्टि हो। पंजाब, उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान में बादल चाल रहें।

शकुन विचार—पौष सुदी तेरस दिना भौ न शुक्र शनिवार। इस दिन वर्षा होय तो जान लेव नर नार॥
गेहूं का संचय करो होगा लाभ विशेष। लाल वस्तु से लाभ हो इसमें मीन न मेष॥

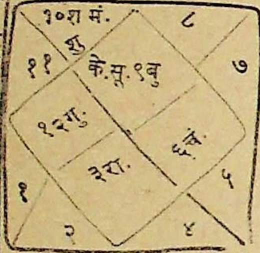
ध्यान रहे इस पौष सुदी १३ को शनिवार है।

ग्रहदर्शन :—मं. अस्त है। बुध १० जन. को पूर्व में उदित होगा। सूर्यास्त बाद शुक्र-शनि पश्चिम क्षितिज से ऊपर समीप-समीप होंगे एवं गुरु ख—मध्यासन्न होगा। (उत्तर अयन, शिशिर ऋतु)

दि. मा.	घ. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. पौष	अं. जन.	रा. पौष	मु. शाबा.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	
२५	२९	१	मं.	१५	४०	पुन.	३९	३०	ऐं.	२९	१८	कौ.	१५	४०	१६	३१	१०	१४	क.२५।२९	७	२०	५	३१	उ. षा. में मंगल १७।२२, सन् १९६३ ई. समाप्त
२५	३१	२	बु.	९	२०	पु.	३५	३०	वै.	२१	१८	ग.	९	२०	१७	ज१	११	१५	कर्क	७	२०	५	३२	भ. ३६।५१ उ., जनवरी, सन् १९६४ प्रा., शब-ए-बरात
२५	३२	३	गु.	४	२२	आश्ले.	३३	२	वि.	१४	३०	वि.	४	२२	१८	२	१२	१६	सिं.३३।२	७	२०	५	३३	भ. ४।२२ या, श्रीगणेश ४ व्र., संकष्ट हारिणी,
२५	३३	४	शु.	१	१०	म.	३२	२२	प्री.	९	५	बा.	१	१०	१९	३	१३	१७	सिंह	७	२०	५	३३	
अत्र	म	५	शु.	५९	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	
२५	३४	६	श.	६०	०	पू. फा.	३३	३५	आ.	५	१२	ग.	३०	१४	२०	४	१४	१८	क.४९।२४	७	२१	५	३४	मकर में मंगल ३४।३५,
२५	३५	६	र.	०	३७	उ. फा.	३६	५०	सौ.	२	५२	व.	०	३७	२१	५	१५	१९	कन्या	७	२१	५	३५	भ. ०।३७ उ., ३१।५७ या,
२५	३६	७	चं.	३	१८	ह.	४१	४७	शो.	२	२	ब.	३	१८	२२	६	१६	२०	कन्या	७	२१	५	३६	धनि. में शुक्र ९।५७, जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती,
२५	३७	८	मं.	७	४०	चि.	४८	७	अ.	२	३०	कौ.	७	४०	२३	७	१७	२१	तु.१४।५७	७	२१	५	३७	
२५	३९	९	बु.	१३	२०	स्वा.	५५	२३	सु.	३	५५	ग.	१३	२०	२४	८	१८	२२	तुला	७	२१	५	३७	भ. ४६।३३ उ.,
२५	४१	१०	गु.	१९	४७	वि.	६०	०	धृ	६	०	वि.	१९	४७	२५	९	१९	२३	वृ. ४६।१०	७	२१	५	३८	भ. १९।४७ या.,
२५	४४	११	शु.	२६	२७	वि.	३	४	शू.	८	२०	बा.	२६	२७	२६	१०	२०	२४	वृश्चिक	७	२१	५	३९	व. बुध मूल में १२।५५, बुध पुर्व में उदित ३१।४७, षट्तिला ११ व्र. स.
२५	४६	१२	श.	३२	५५	अनु.	१०	४०	गं.	१०	३२	तै.	३२	५५	२७	११	२१	२५	वृश्चिक	७	२१	५	४०	उ. षा में सूर्य ७।३७, कुम्भ में शुक्र ३५।३०,
२५	४८	१३	र.	३८	४३	ज्ये.	१७	४७	वृ.	१२	२२	ग.	५	४९	२८	१२	२२	२६	ध. १७।४७	७	२१	५	४०	भ. ३८।४३ उ, प्रदोष व्र.
२५	५०	१४	चं.	४३	३०	मू.	२४	२	ध्रु.	१३	३५	वि.	११	६	२९	१३	२३	२७	धनु	७	२१	५	४१	भ. ११।६ या., अभिजित् में मंगल ६।५५, लोहड़ी (पञ्जाब)
२५	५३	३०	म.	४७	१०	पू.षा.	२९	१५	व्या	१४	०	च.	१५	२०	मा१	१४	२४	२८	म ४५।१७	७	२१	५	४२	सं. मकर में सूर्य २३।५७, मु. ३० पुण्य ७।५७ उ. मौनी ३०,

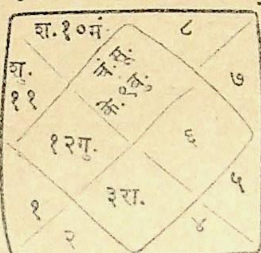
माघ कृष्ण ८ मंगलवार, इष्ट ४१।३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	९	८	११	९	९	२	८
२३	२	१५	१८	२५	२७	१७	१७
१०	२५	४८	५	१२	४१	३८	३८
१	५१	४	३१	५२	१७	२९	२९
६१	४६	६२	६	७३	६	३	३
९	४९	५८	३८	४६	२४	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ३	उ.षा. २	पू.षा. २	[illegible] २	ध. २	ध. २	आर्द्रा ४	पू.षा. २
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



३१ दिसम्बर को उड़द धान, सरसों एवं रुई में तेजी आए। ४ जनवरी से गुड़, खाण्ड, तांबा में तेजी का रुख बने। ६ जनवरी से चावल, मूँग मोठ, ज्वार एवं बाजरा में तेजी तथा गेहूं में मन्दी आए। ६ जनवरी से १० जनवरी तक सोना-चांदी में तेजी रहे और बाद में मन्दी आए। १० जनवरी से २५ दिन के भीतर रुई में तेजी हो। ११ जनवरी से जौ, चना, उड़द, मूँग, ज्वार, बाजरे का रुख मन्दी की ओर हो। १४ जनवरी से गुड़ खाण्ड, शक्कर एवं बारदाना में मन्दी का रुख बने। यदि माघ कृष्ण पंचमी को आकाश मेघाच्छन्न रहे परन्तु वृष्टि न हो तो भाद्रपद मास में अच्छी वृष्टि होती है।

माघ कृष्ण ३० मंगलवार, इष्ट ४१।३८



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	११	१०	९	२	८
०	७	११	१८	३	२८	१७	१७
१८	५४	५	५५	४८	२६	१६	१६
०	१२	३५	७	६	४४	१३	१३
६१	४७	२	७	७३	६	३	३
८	१	५७	४२	२८	४६	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा ४	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण:—२ से ७ जनवरी तक पूर्वी पंजाब, शिलांग, लंका, हिमाचल एवं उत्तर प्रदेश में अच्छी वर्षा हो। राजस्थान एवं मध्य प्रदेश में साधारण बूंदाबांदी हो।

वि. संवत् २०२०, शाक १८८५ माघ शुक्ल पक्ष २१ ... (१५ से २८ जन. तक, सन् १९६४)
ग्रहदर्शन—मं. अस्त है। सूर्योदय से पहिले बुध पूर्व में दृष्टिगोचर होगा,

वि. संवत् २०२०, शाक १८८५ माघ शुक्ल पक्ष २१ | तारीख | चन्द्र | ... सन् १९६४)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. माघ	अं. जन.	रा. पौष	मु. शाबा	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
२५	५६	१	बु	४९	४०	उ. षा	३३	२५	हृ.	१३	३२	कि.	१८	२५	२	१५	२५	२९	मकर	७	२१	५	४३
२५	५९	२	गु.	५०	५७	श्रव	३६	१७	व.	१२	७	बा.	२०	१८	३	१६	२६	३०	मकर	७	२१	५	४४
२६	२	३	शु.	५१	५	ध.	३८	७	सि.	९	५०	तै.	२१	१	४	१७	२७	र१	कु. ७।१२	७	२०	५	४५
२६	४	४	श.	५०	७	श.	३८	५२	व्य.	६	४०	व.	२०	३६	५	१८	२८	२	कुम्भ	७	२०	५	४६
२६	६	५	र.	४८	१०	पू. भा	३८	३७	व.	२ / ५७	४० / ५५	ब.	१९	८	६	१९	२९	३	मी.२३।४१	७	२०	५	४६
२६	८	६	चं.	४५	१२	उ.भा.	३७	२५	शि.	५२	२२	कौ.	१६	४१	७	२०	३०	४	मीन.	७	२०	५	४७
२६	११	७	मं.	४१	२०	रे.	३५	२०	सि.	४६	१०	ग.	१३	१६	८	२१	म१	५	मे. ३५।२०	७	२०	५	४८
२६	१४	८	बु.	३६	४२	अ.	३२	२५	सा.	३९	१८	वि	९	१	९	२२	२	६	मेष	७	१९	५	४९
२६	१८	९	गु.	३१	२०	भ.	२८	५०	शु.	३१	५२	बा.	४	१	१०	२३	३	७	वृ.४२।४७	७	१९	५	५०
२६	२१	१०	शु.	२५	२२	कृ.	२४	३७	शु.	२३	५८	ग.	२५	२२	११	२४	४	८	वृष	७	१९	५	५१
२६	२४	११	श.	१८	५७	रो.	२०	०	ब्र.	१५	४२	वि.	१८	५७	१२	२५	५	९	मि.४७।३६	७	१९	५	५२
२६	२७	१२	र.	१२	२५	मृ.	१५	१२	ऐ.	७ / ५८	५० / ५२	बा.	१२	२५	१३	२६	६	१०	मिथुन	७	१८	५	५३
२६	२९	१३	चं.	५	५२	आ.	१०	२५	वि.	५०	४२	तै.	५	५२	१४	२७	७	११	क. ५२। ६	७	१८	५	५३
अ	त म	१४	चं.	५९	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०
२६	३२	१५	मं.	५४	०	पुन.	६	०	प्री.	४२	५८	वि.	२६	४८	१५	२८	८	१२	कर्क	७	१७	५	५४

ग्रहदर्शन—मं. अस्त है। सूर्योदय से पहिले बुध पूर्व में दृष्टिगोचर होगा, श. गु. एवं. शु. पश्चिम को ओर जाते दीखेंगे।

(उत्तर अयन, शिशिर ऋतु)

बुध मार्गी २३।१२,
चन्द्रदर्शन, (वि. मु. श्रव.) *७ (वि. मु. रे.)
पञ्चक प्रा. ७।१२, श्रव. में मङ्गल २२।१०, शत. में शुक्र २।८, रमजान मु. ९प्रा.,
भ. २०।३६ उ. ५०।७ या., मङ्गल अभिजित् से निवृत्त ३०।१२, तिल ४.
वसन्त (श्री) ५, (वि.मु.उ.भा.)
अभिजित् में सूर्य ५६।४८, सा. कुम्भ में सूर्य ५६।२८, (वि.मु.उ.भा., रे.)
भ. ४१।२० उ., पञ्चक स. ३५।२०, पू.षा. में बुध २६।५५, रा. माघ प्रा., रथ*
भ. ९।१ या., रेव. २ में गुरु ३७।०, भीष्म ८, बुधाष्टमी, (वि. मु. अश्वि.)
जन्म दिन नेताजी श्री सुभाष, * [वि. मु. रे.]
भ. ५२।९ उ., श्रव. में सूर्य १३।२२,
भ. १८।५७ या., सूर्य अभिजित् से निवृत्त ५।५२, जया ११ व्र. स., (वि.मु.मृ.)
आर्द्रा ३ में राहु, पू.षा.१ में केतु ५।१५, भारतीय गणतंत्र दिवस, प्रदोष व्र. +
भ. ५९।३७ उ., पू. भा. में शुक्र ५८।२८, मेला श्री जयन्ती देवी,
+भीष्म १२ (वि. मु. मृ.)
भ. २६।४८ या., धनि. ३ कुम्भ में शनि १५।४७, माघ स्ना. स., सत्य व्र.,

माघ शुक्ल ८ बुध, इष्ट ४१।४२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	११	१०	९	२	८
८	१४	१४	२०	१३	२९	१६	१६
२६	१०	१२	०	३४	२१	५०	५०
४४	५९	५२	४१	५२	५	४७	४७
६१	४७	४५	८	७३	६	३	३
३	१३	५८	५१	१२	५६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	पू.षा. २	रेव. २	पू.भा. १	श्र. ३	आर्द्रा ३	पू.षा. १
[illegible]	अमृत	सौम्य	अग्नि	नीर	अमृत	सौम्य	सौम्य

गु ११ | ९ के. बु | ८ | १२ चं. | १० सू. म. श | ९ रा. | ७ | २ | ४ | ६ | ३ श | ५

इस पक्ष के आरम्भ में खाण्ड, चावल, धान्य में
तेजी तथा सरसों, तिल, तेल, घी में मन्दी आए। चांदी
साधारण तेजी रहे, रूई में घटावढ़ी चले। गेहूं, जौ, चना
तेज हों। २१ जनवरी से धान्य, सोना, चांदी में मन्दी आए।
२४ जनवरी से सूत, शण, जूट में तेजी हो। २७ जनवरी से
रूई में तेजी का रुख बने। माघ शुक्ल १५ को यदि बादल-
चाल हो तो अन्न संग्रह से सातवें मास में लाभ हो। यदि
आकाश निर्मल रहे तो आगामी आषाढ़ में हर प्रकार
का अन्न सस्ता रहे। यदि माघ शुक्ल पंचमी को वर्षा युक्त उत्तर की पवन चले तो भाद्रपद में अनावृष्टि
के कारण अनाज महंगा हो—"माघस्य शुक्ल पंचम्यां वृष्टि युक्तोत्तरानिलः। अनावृष्टि भाद्र पदे कुर्याद्धान्य महर्घताम्॥"

माघ शुक्ल १५ मंगल, इष्ट ४१।४८

११ शु. के | सू. | ९ बु. के | १२ गु. | १० मं. | ८ | १ | ७ | ४ चं. | २ | ६ | ३ श. | ५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
९	९	८	११	१०	१०	२	८
१४	१८	१९	२०	२०	०	१६	१६
३२	५४	५३	५५	५२	३	३१	३१
४५	१४	२१	३८	३२	३	४३	४३
६०	४७	६६	९	७२	७	३	३
५६	१६	२०	३९	४३	६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. २	श्रव. ३	पू.षा. २	रेव. २	पू.भा. १	श्र. ३	आर्द्रा ३	पू.षा. १
अमृत	अमृत	सौम्य	अग्नि	नीर	अमृत	सौम्य	सौम्य

आकाश लक्षण :—२०, २१ एवं २२ जनवरी को पूर्वी पंजाब एवं उत्तर प्रदेश में वर्षा के योग बनते हैं। २७–२८ जनवरी को इन प्रदेशों में अन्य प्रदेशों की अपेक्षा अच्छी वृष्टि हो।

वि. संवत् २०२०, शाक १८८५ फाल्गुन कृष्णपक्ष २२ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | (२९ जन. से १३ फर. तक, सन् १९६४ ई.)

दि मा घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	ग्रहदर्शन :—मं. श. अस्त हैं। सूर्योदय से पहिले बु. पूर्व में दीखेगा। सूर्यास्त बाद गु. शु. पश्चिम की ओर जाते दीखेंगे। (उत्तर अयन, शिशिर ऋतु),
२६	३५	१	बु.	४	१७	पुष्य	५६	२५	आ.	३५	५८	बा.	२१	३	१६	२९	९	१३	सिं५९।२५	७	१७	५	५५	शनि अस्त १५।३५,
२६	३८	२	गु.	४५	५२	श.	५७	५७	सौ	२९	१२	तै.	१७	३४	१[illegible]	३०	१०	१[illegible]	सिंह	७	१६	५	५६	निर्वाण दिवस श्री म. गान्धी,
२६	४	३	शु.	४४	५	पू.फ.	५८	०	शो.	२[illegible]	०	ब.	१४	५८	१८	३१	११	१५	सिंह	७	१६	५	५७	भ. १४।५८ उ. ४४।५ या.,
२६	४५	४	श.	४[illegible]	०	उ.फ.	५१	५१	अ.	२१	२	ब.	१४	२	१९	फ१	१२	१६	क.१३।२८	७	१५	५	५७	फरवरी प्रा., श्रीगणेश ४ व्र., [वि. मु. उ. फा.]
२६	४८	५	र.	४५	४८	ह.	६०	०	सु.	१९	२०	कौ.	१४	५४	२०	२	१३	१७	कन्या	७	१५	५	५८	[वि.मु. हस्त]
२६	५	६	चं.	४९	२२	ह	३	२७	धृ.	१८	३७	ग.	१७	३५	२१	३	१४	१८	तु. ३६।१९	७	१४	५	५९	भ. ४९।२२ उ., धनि. में मङ्गल १९।१२, उ.षा. में बुध २६।४५, [वि.मु.चि.]
२६	५५	७	मं.	५४	२७	चि.	८	५०	शू.	१९	१०	वि.	२१	५४	२२	४	१५	१९	तुला	७	१४	६	०	भ. २१।५४ या.,
२६	५९	८	बु.	६०	०	स्वा.	१५	२५	ग.	१०	४२	बा	२७	३४	२३	५	१६	२०	तुला	७	१३	६	१	मीन में शुक्र १६।८,
२७	३	८	गु.	०	४०	वि.	२२	५३	वृ.	२२	५५	कौ.	०	४०	२४	६	१७	२१	वृ. ६।१	७	१[illegible]	६	२	धनि. में सूर्य २१।३५, मकर में बुध १।५०,
२७	७	९	शु.	७	२०	अनु	३०	३७	ध्रु.	२५	१७	ग.	७	२०	[illegible]	७	१८	२२	वृश्चिक	७	११	६	३	भ. ४०।३५ उ., [वि.मु. अनु.]
२७	१२	१०	श.	१३	५०	ज्ये.	३८	०	व्या.	२७		वि.	१३	५	२६	८	१९	२३	ध. ३८।१०	७	१०	६	३	भ. १३।५० या., उ. भा. में शुक्र १।४५, [वि. मु. मू.]
२७	१६	११	र.	१९	३५	मू.	४४	३०	ह.	२८	७	बा.	१९	३५	२७	९	२०	२४	धनु	७	९	६	४	विजया ११ व्र. स., (वि. मु मू.) +श्री महाशिवरात्रि व्र.,
२७	२०	१२	चं.	२४	८	पू.षा.	४९	४२	व.	२३	३०	तै.	२४	८	२८	१०	२१	२५	धनु	७	९	६	५	अभिजित् में बुध ५१।५५, सोम प्रदोष व्र.,
२७	२५	१३	मं.	२७	८	उ.षा.	५३	२७	सि.	२८	५८	व	२७	८	२९	११	२२	२६	म. ५१।३८	७	८	६	६	भ. २७।८ उ. ५७।५४ या., कुम्भ में मंगल ४५।५५, रेव. ३ में गुरु ३५।२० +
२७	२९	१४	बु.	२८	४०	श्र.	५५	४०	व्य.	२७	१२	श	२८	४०	[illegible]	१२	२३	२७	मकर	७	७	६	७	सं. कुम्भ में सूर्य ५६।५५ मु. ३०, पुण्य आगामी दिन,
२७	३३	३०	गु.	२८	३२	ध.	५६	२७	व.	२४	१५	ना.	२८	३२		१३	[illegible]४	२८	कुं. २६।४	७	६	६	७	पञ्चक प्रा. २६।४, श्रव. में बुध ११।५५, बुध अभिजित् से निवृत्त ४७।५८;

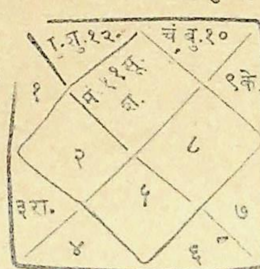
फाल्गु. कृ. ८ गुरु, इष्ट ४-१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	११	११	१०		८
२३	२	०	२	१	१	१६	१६
४०	०	५३	६	४४	७	३	३
४१	०	३६	३८	१८	२१	५	५
६०	४७	८२	१०	७	७	३	३
४८	३	२२	४	५	१५	११	११
	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस पक्ष के आरम्भ में हिमपात एवं ओलों से कृषि को हानि पहुंचे । २९ जन. से ११ फरवरी तक रुई, पाट, बारदाना, तिलहन, तेल में अच्छी तेजी आए, सोना-चांदी में घटाबढ़ी चले । ५ फरवरी से एरण्डी, अलसी एवं सरसों में मन्दी आए । १२ फरवरी से रुई पाट, बारदाना एवं शक्कर में कुछ मन्दी तथा अलसी, राई, मूंगफली, नमक में में तेजी आए । १३ फरवरी से चावल, चना आदि अनाजों में तेजी आए। पक्षान्त में अलसी में तेजी का रुख बने। इस पक्ष में षष्ठी के साथ चित्रा नक्षत्र का योग होने से अग्रिम तीन मासों में अनाजों में मन्दी का प्रभाव रहे।

यदि फाल्गुन कृष्ण तृतीया को आकाश मेघावृत हो साथ ही वायु चले तो आगामी आश्विन शुक्ल पक्ष में पर्याप्त वृष्टि हो ।



फाल्गु. कृ. ३० गुरुवार, इष्ट ४२।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	१०	९	११	११	१०	२	८
०	१	१०	२३	१०	१	१५	१५
४५	३१	४४	४३	६	५८	४०	४०
५०	४३	५२	४५	५४	७	४९	४९
६०	४७	८९	११	७१	७	३	३
३८	१८	४४	२४	२१	१६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible] ३	[illegible] ३	श्रव. १	रेव. ३	उ.भा. ३	[illegible] ३	आर्द्रा ३	पू.फा. १
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :—२९-३० जन. एवं १२-१३ फरवरी को आसाम, उ. प्र. एवं पूर्वी पंजाब में अच्छी वर्षा हो।

वि० सं० २०२०, शाक १८८५ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३ ... ग्रह दर्शन :—शु. मं. अस्त हैं। बु. २६ फर. को पूर्व में अस्त होगा। सूर्यास्त

वि० सं० २०२०, शाक १८८५ फाल्गुन शुक्ल प[illegible]

वि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अं. फर.	रा. माघ	मु.	सञ्चार	चण्डीढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.
२७	३८	१	शु.	२७	५	शत	५६	०	प	२०	१५	ब.	२७	५	३	१४	२५	२९	कुम्भ	७	५	६	८
२७	४२	२	श.	२४	३०	पू.भा.	५४	३५	शि	१५	१७	कौ.	२४	३०	४	१५	२६	श१	मी ३९।५६	७	४	६	९
२७	४७	३	र.	२१	०	उ.भा.	५२	२२	सि	९	३	ग.	२१	१०	५	१६	२७	२	मीन	७	३	६	१०
२७	५१	४	चं.	१६	५०	रे.	४९	३७	सा	३ / ५८	३३ / ४०	वि.	१६	५०	६	१७	२८	३	मे. ४१ ३७	७	२	६	११
२७	५५	५	मं.	१२	७	अ.	४६	३५	श.	४१	४८	बा.	१२	७	७	१८	२९	४	मेष	७	२	६	१
२८	०	६	बु.	७	२०	भ.	४३	२०	ब्र	४२	४२	तै.	७	२०	८	१९	३०	५	वृ ५७।३०	७	१	६	१३
२८	५	७	गु.	२	१७	कृ	४०	०	ऐं	३५	३८	व.	२	१७	९	२०	फ'	६	वृष	७	०	६	१४
अव	म	८	गु.	२७	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	१०	९	शु.	५२	१०	रो	३६	४०	वै	२८	३२	बा.	२४	४१	१०	२१	२	७	वृष	६	५९	६	१५
२८	१४	१०	श.	४७	१५	मृ	३३	२७	वि	२१	३२	तै.	१९	४२	११	२२	३	८	मि ५।४	६	५८	६	१६
२८	१९	११	र.	४२	२७	आ	३०	२३	प्री.	१४	३८	ब.	१४	५१	१२	२३	४	९	मिथुन	६	५७	६	१७
२८	२३	१२	चं.	३८	०	पुन	२७	३५	आ	७	५५	ब.	१०	१३	१३	२४	५	१०	क. १३।१७	६	५६	६	१७
२८	२७	१३	मं.	३४	०	पु.	२५	१२	सौ.	१ / ५४	३० / १८	कौ	६	०	१४	२५	६	११	कर्क	६	५५	६	१८
२८	३१	१४	बु.	३०	३७	आश्ले.	२३	२५	अ	४१	५८	ग.	२	१८	१५	२६	७	१२	सि २३।२५	६	५४	६	१८
२८	३५	१५	गु.	२८	१०	म.	२२	३०	सु	४५	२०	ब.	२८	१०	१६	२७	८	१३	सिंह	६	५३	६	१९

ग्रह दर्शन :—श. म. अस्त है। बु. २६ फर. को पूर्व में अस्त होगा। सूर्यास्त बाद गु. शु. पश्चिम में दीखेंगे।

(उत्तर अयन, शिशिर—वसन्त ऋतु)

चन्द्र दर्शन, जमत-उल-विदा,
शवाल मु. १० प्रा., इदुलफित्र,
भ. ४८।५५ उ.,
भ. १६।५० या., पञ्चक स. ४१।३७, इन्द्र वक्री ४२।२५, [वि.मु.रे., अश्वि.]
[वि. मु. अश्वि.]
शत. में सूर्य ३३।२०, सा. मीन में सूर्य ३२।५२, वसन्त ऋतु प्रा. +
भ. २।१७ उ. २९।४४ या., शत. में मंगल १३।३५, रा. फाल्गुन प्रा., ⌒
+ रेव. में शुक्र १४।१५,
⌒ होलाष्टक प्रा.,

धनि. में बुध ५३।४०,

भ. १४।५१ उ. ४२।२७ या., आमलकी ११ व्र. स्मा. वै.,
आमलकी ११ व्र. नि.,
कुम्भ में बुध ५८।३५, धनि. ४ में शनि २।२०, भौम प्रदोष व्र.,
भ. ३०।३७ उ. ५९।२३ या., बुध पूर्व में अस्त १०।२०,
होलिका दहन, सत्य व्र.,

फाल्गुन शुक्ल ७ गुरु इष्ट ४२।३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	९	११	११	१०	२	८
७	७	२१	२५	१८	२	१५	१५
४९	२	२६	५	२३	४८	१८	१८
४३	५०	४९	३३	५७	४५	३५	३५
६०	४७	९५	१२	७०	७	३	३
२७	१८	२५	५	३२	१२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
१	१	४	३	१	३	३	१
ला.	ला.	छ.	[illegible]	[illegible]	छ.	आर्द्रा	चं.पा.
जल	जल	अमृत	अग्नि	अग्नि	अमृत	सौम्य	सौम्य

गु १२
शु
सू.
१० श.
के.
१
११ श.
९
मं.
२ चं.
८
३ रा.
५
७
४
६

इस पक्ष के पहिले ९ दिनों तक अलसी, गुड़, खाण्ड, चना, चावल में तेजी हो। १९ फरवरी से सोना, सूत, कपास, जायफल हल्दी, एवं दाख में तेजी आवे। रुई में घटाबढ़ी चले। चांदी में एक दो टका की मन्दी हो। १४ दिन के भीतर, सण, तिल, तेल, एरन्ड, हींग, छुहारा, हल्दी एवं सोंठ में तेजी आवे। २६ फरवरी से ३३ दिन में धान्य एवं घी में मन्दी आए। यदि फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी को वर्षा हो एवं बिजली चमके तो वैशाख में अन्न मन्दे रहें तथा यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को वर्षा हो या बादल गरजें तो अन्न संग्रह से सातवें महीने में लाभ हो।

आकाश लक्षण :—१८, १५ एवं २० फरवरी को लंका के पूर्वी छोर, शिलाङ्ग, एवं हिमाचल प्रदेश में बादल चाल रहे।

फाल्गुन शुक्ल १५ गुरु इष्ट ४२।४७

शु १२
गु.
१०
श.
१
मं. ११ बु
सू.
९ के.
२
८
३ रा.
५ चं.
७
४
६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	११	११	१०	२	८
१४	१२	२	२६	२६	३	१४	१४
५२	३३	५४	३१	३५	३९	५६	५६
२४	४५	४८	४४	४०	१५	१९	१९
६०	४७	[illegible]	१२	६९	७	३	३
१७	१५	"	३५	४७	१०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
३	२	३	३	३	४	३	१
ला.	ला.	छ.	[illegible]	[illegible]	छ.	आर्द्रा	चं.पा.
जल	जल	अमृत	अग्नि	अग्नि	अमृत	सौम्य	सौम्य

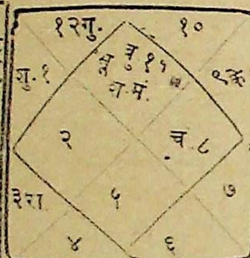
वि. सं. २०२०, शा १८८५ प्रथम चैत्र कृष्णपक्ष २४ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं टाईम | (२८ फरवरी से १४ मार्च तक सन् १९६४ ई.)

ग्रहदर्शन :—बुध एवं मंगल अस्त हैं। शनि २ मार्च को उदित होगा। सूर्यास्त बाद गुरु, शुक्र पश्चिम में दीखेंगे। (उत्तर अयन, वसन्त ऋतु),

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अं. फर.	रा. फाल्गु.	मु. शाबा.	सञ्चार	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	
२८	३९	१	शु.	२६	५०	पू. फा.	२२	४०	वृ.	४१	४२	कौ.	२६	५०	१७	२८	९	१४	कं.३८।२	६	५२	६	१९	रेव. ४ में गुरु २२।१५, होला, मेला श्री आनन्दपुर साहिब, धूलेंडी, [वि.मु.उ.फा.]
२८	४३	२	श.	२६	५२	उ. फा.	२४	८	शू.	३९	८	ग.	२६	५२	१८	२९	१०	१५	कन्या	६	५१	६	२०	भ. ५७।३८ उ., शत. में बुध ५४।२७, [वि.मु.उ.फा.]
२८	४७	३	र.	२८	२५	ह.	२७	५	गं.	३७	४२	वि.	२८	२५	१९	मा १	११	१६	तु ५९।१८	६	५०	६	२०	भ. २८।२५ या., अश्वि मेष में शुक्र ३९।२, मार्च प्रा., श्रीगणेश ४ व्र., [वि.मु.चि]
२८	५१	४	चं.	३१	३२	चि.	३१	३२	वृ.	३७	३२	बा.	३१	३२	२०	२	१२	१७	तुला	६	४९	६	२१	शनि उदित ५९।२५, [वि.मु.चि.]
२८	५५	५	मं.	३६	१३	स्वा.	३७	२८	ध्रु	३८	३०	कौ.	३	५२	२१	३	१३	१८	तुला	६	४८	६	२२	पू. भा. में सूर्य ४९।४०,
२८	५९	६	बु.	४२	०	वि.	४४	२७	व्या	४०	२०	ग.	९	६	२२	४	१४	१९	वृ.२७।४२	६	४७	६	२२	भ. ४२।० उ.
२९	३	७	गु.	४८	३०	अनु.	५२	७	हृ.	४२	४०	वि.	१५	१५	२३	५	१५	२०	वृश्चिक	६	४६	६	२३	भ. १५।१५ या., मेला श्री शीतला माता कुराली, [वि.मु. अनु.]
२९	८	८	शु.	५५	५	ज्ये.	५९	५०	व.	४५	८	बा	२१	४८	२४	६	१६	२१	ध.५९।५०	६	४५	६	२४	
२९	१२	९	श.	६०	०	मू.	६०	०	सि.	४७	१२	तै.	२८	५	२५	७	१७	२२	धनु	६	४४	६	२५	[वि. मु. मू.]
२९	१७	९	र.	१	५	मू.	६	५५	व्य	४८	२५	ग.	१	५	२६	८	१८	२३	धनु	६	[illegible]	६	२५	भ. ३३।२६ उ., पू. भा. में मंगल १०।३७, पू.भा में बुध २०।२८
२९	२२	१०	चं.	५	[illegible]	पू.षा.	१२	४७	व.	४८	३०	वि.	५	४७	२७	९	१९	२४	म २८।५१	६	४१	६	२६	भ. ५।४७ या.,
२९	२६	११	मं.	[illegible]	५५	उ.षा.	१७	[illegible]	प.	४७	१२	बा.	८	५५	२८	१०	२०	२५	मकर	६	४०	६	२६	पापमोचिनी ११ व्र. स.
२९	३०	१२	बु.	१०	५	श्र.	१९	२५	शि.	४४	२२	तै.	१०	५	२९	११	२१	२६	कुं.४९।४१	६	३९	६	२७	पञ्चक प्रा. ४९।४१, प्रदोष व्र.
२९	३५	१३	गु.	९	२०	ध.	१९	५८	सि.	४०	५	व.	९	२०	३०	१२	२२	२७	कुम्भ	६	३८	६	२८	भ. ९।२० उ., ३८।५ या., मेला पिहोवा, †में शुक्र २०।४५;
२९	४०	१४	शु.	६	५०	शत.	१८	५०	सा.	३४	३५	श	६	५०	चं १	१३	२३	२८	कुम्भ	६	३७	६	२८	सं. मीन में सूर्य ५०।२२, मु. ३०, पुण्य आगामी दिन, मीन में बुध ३५।१८, भर.†
२९	४५	३०	श.	२	५३	पू भा.	१६	२०	शु.	२७	५८	ना.	२	५३	२	१४	२४	२९	मी.१।५८	६	३५	६	२९	अश्वि. मेष में गुरु ४०।३०, शनैश्चरी ३० चान्द्रसंवत्सर समाप्त,

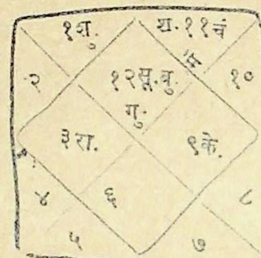
प्र. चैत्र कृष्ण ८ शुक्रवार, इष्ट ४३।८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	११	०	१०	२	८
२२	१८	१७	२८	५	४	१४	१४
५३	५१	०	१४	४९	३५	३०	३०
४०	२१	२३	११	३४	५२	५३	५३
६०	४७	[illegible]	१३	६८	६	३	३
२	१०	[illegible]	७	२६	५९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस पक्ष में वर्षा अच्छी होने पर भी खेती को कीड़ा एवं टिड्डी से हानि हो। १ मार्च से गेहूं, जौ, चना, एवं घी में तेजी हो। गुड़, शक्कर, पाट, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी आवे। सोना एवं चांदी में इस पक्ष के आरम्भ से अन्त तक कई उतार चढ़ाव आएंगे। तीन मार्च से रुई, ज्वार, बाजरा, एवं गुग्गल में तेजी आवे। ८ मार्च से मूंगफली, नारियल, सुपारी एवं तिल में महंगाई आए। १३ मार्च से मिर्च, लौंग, इलायची, ताम्बा, जस्त एवं रांग में तेजी आवे। यदि चैत्र में मूल से भरणी तक वर्षा हो तो श्रावण में अनावृष्टि होने से अनाज तेज रहता है।

प्र. चैत्र कृष्ण ३० शनिवार इष्ट ४३।३२ के. अहर्गण ३६३१, चक्र ४



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	११	०	०	१०	२	८
०	२५	२	०	१४	५	१४	१४
५२	८	१३	०	५२	३०	५	५
५८	२३	४६	४१	४९	३४	२६	२६
५९	४७	[illegible]	१३	६६	६	३	३
४६	६	[illegible]	३२	३८	३०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	पू.भा. [illegible]	पू.भा. ४	अश्वि. [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :—१, २, १३ एवं १४ मार्च को लंका के पश्चिमी छोर, भूटान, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश एवं पूर्वी पाकिस्तान में अच्छी वर्षा हो। पूर्वी पंजाब एवं उत्तर-प्रदेश में वायु का प्रकोप बढ़े।

बिना गुणा भाग के इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करने की सरल विधि :—

इस पञ्चाङ्ग में दिए गए "लघु रिक्थ कोष्ठक" की सहायता से सभी ग्रह दैनिक स्पष्ट ग्रहों से इष्टकालिक बनाए जा सकते हैं। इस कोष्ठक द्वारा ग्रह स्पष्ट करने की विधि जानने से पूर्व इष्ट घण्टा मिनट एवं अंश-कला-विकलाओं का लघुरिक्थ प्राप्त करने की विधि समझनी आवश्यक है। अभीष्ट घण्टा मिनटों का लघुरिक्थ अभीष्ट घण्टे के नीचे एवं अभीष्ट मिनट के आगे देखें। उदाहरण रूप में—यदि ६ घंटा ४० मिनट का लघुरिक्थ प्राप्त करना है—तो "लघुरिक्थ कोष्ठक" में ६ घंटे के नीचे एवं ४० मिनट के आगे ५५६३ है, यही ६ घण्टा ४० मिनट का लघुरिक्थ हुआ। इसी प्रकार कोष्ठक में दिए गए घण्टों को कला एवं मिनटों को विकला मान कर ग्रह गति का लघुरिक्थ प्राप्त किया जा सकता है। २४ कला या इससे अधिक ग्रहगति का लघुरिक्थ कोष्ठक में दिए गए घण्टों को अंश एवं मिनटों को कला मान कर प्राप्त किया जा सकता है।

ग्रह स्पष्ट करने की विधि :—इष्टकालिक इं. स्टै. टा. एवं पञ्चाङ्ग में दिए गए स्पष्ट ग्रहों के इं. स्टै. टा. के घण्टा मिनटात्मक अन्तर का लघुरिक्थ लेकर उसमें ग्रह की दैनिक गति का लघुरिक्थ जोड़ें। योगफल को लघुरिक्थ कोष्ठक में ही ढूंढ़ें। यदि वह संख्या कोष्ठक में न मिले तो उसके आसन्न संख्या ढूंढ़ें। योगफल जिसका लघुरिक्थ हो उसे कलादि या अंशादि फल (यदि कलादि ग्रहगति का लघुरिक्थ जोड़ा गया हो तो यह फल कलादि होगा। यदि अंशादि ग्रह गति का लघुरिक्थ जोड़ा हो तो फल अंशादि होगा) जानें। इस फल को अभीष्ट तारीख के स्पष्ट ग्रह में मार्गी होने पर जोड़ देने से एवं वक्री होने पर घटा देने से इष्टकालिक स्पष्ट ग्रह होगा। ध्यान रहे अभीष्ट तारीख एवं आगामी तारीख के ग्रह का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है।

इष्टकालिक चन्द्र साधन की विधि :—इस पंचाङ्ग में चन्द्रमा ६-६ घंटे के अन्तर पर दिया गया है। चन्द्रमा को इष्ट कालिक बनाने के लिए चन्द्रमा की ६ घंटे की गति का लघुरिक्थ लेकर उसमें इष्ट. घं. मि. का (चन्द्रमा जितने घं. मि. आगे करना है उसे इष्ट घं. मि. समझें) लघुरिक्थ लेकर जोड़े उस अंतर फल में से ६०२१ घटा शेष संख्या से लघुरिक्त कोष्ठक से अंशकला जानकर इष्ट काल के आसन्न चन्द्रमा में कर जोड़ने से इष्ट कालिक चन्द्र होगा। (उदाहरण दैनिक स्पष्ट ग्रहों के अन्त में देखें)।

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं.मि. ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(२६ मार्च को अयनांश २३°।१९'।४१")

तारीख मार्च सन् १९६३	साम्पातिककाल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घं मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
२६	१२।१०। ३	११।११।४।२२	३।१३।२१। २	११। ५।५०।३६	११। ४।२५।५७	१०। १।३७।३२	९।२६। १।३३	३। २।५४।१३	४। ८।२८।५०	६।२२। २।१०
२७	१२।१४। ०	११।१२।३।४५	३।१३।२७। ७	११। ७।४८।१०	११। ४।४०।२५	१०। २।४८।३५	९।२६। ७।१७	३। २।५१। २	४। ८।२६।४५	६।२२। ०।५६
२८	१२।१७।५६	११।१३।३। ६	३।१३।३३।२५	११। ९।४६।४४	११। ४।५४।५२	१०। ३।५९।४०	९।२६।१३। ०	३। २।४७।५१	४। ८।२४।४०	६।२१।५९।४३
२९	१२।२१।५३	११।१४।२।२६	३।१३।३९।५९	११।११।४६।१८	११। ५। ९।१९	१०। ५।१०।४८	९।२६।१८।३८	३। २।४४।४१	४। ८।२२।३५	६।२१।५८।३१
३०	१२।२५।५०	११।१५।१।४४	३।१३।४६।५६	११।१३।४६।५२	११। ५।२३।४५	१०। ६।२१।५९	९।२६।२४।१३	३। २।४१।३०	४। ८।२०।३०	६।२१।५७।१९
३१	१२।२९।४६	११।१६।१। ०	३।१३।५४।३९	११।१५।४८।२८	११। ५।३८।११	१०। ७।३३।१२	९।२६।२९।४३	३। २।३८।१९	४। ८।१८।२८	६।२१।५६। ३

तारीख अप्रैल सन् १९६३	साम्पातिककाल स्थानीय समय घं० मि० ०।०	दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम) (१ अप्रैल को अयनांश २३°।१९'।४२")								
		सूर्य	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	वरुण (वक्री)	इन्द्र (वक्री)
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	१२।३३।४३	११।१७। ०।१५	३।१४। ३। ६	११।१७।५१। ४	११। ५।५२।३६	१०। ८।४४।२८	९।२६।३५।१०	३। २।३५। ९	४। ८।१६।३२	६।२२।५४।४७
२	१२।३७।४०	११।१७।५९।२९	३।१४।१२। ७	११।१९।५४।४०	११। ६। ७। ०	१०। ९।५५।४७	९।२६।४०।३४	३। २।३१।५८	४। ८।१४।३८	६।२२।५३।३०
३	१२।४१।३६	११।१८।५८।४१	३।१४।२१।४३	११।२१।५९।१७	११। ६।२१।२३	१०।११। ७। ८	९।२६।४५।५४	३। २।२८।४७	४। ८।१२।४७	६।२२।५२।१२
४	१२।४५।३३	११।१९।५७।४९	३।१४।३१।५२	११।२४। ५।३५	११। ६।३५।४६	१०।१२।१८।३१	९।२६।५१। ९	३। २।२५।३६	४। ८।१०।५९	६।२२।५०।५३
५	१२।४९।२९	११।२०।५६।५४	३।१४।४२।३६	११।२६।११। ३	११। ६।५०। ८	१०।१३।२९।५७	९।२६।५६।२०	३। २।२२।२५	४। ८। ९।१४	६।२२।४९।३३
६	१२।५३।२६	११।२१।५५।५८	३।१४।५३।५५	११।२८।१६।१२	११। ७। ४।२६	१०।१४।४१।२६	९।२७। १।२८	३। २।१९।१४	४। ८। ७।३२	६।२२।४८।११
७	१२।५७।२२	११।२२।५५। १	३।१५। ५।४८	०। ०।२०।३१	११। ७।१८।४१	१०।१५।५२।५७	९।२७। ६।३३	३। २।१६। ३	४। ८। ५।५२	६।२२।४६।४९
८	१३। १।१९	११।२३।५४। ०	३।१५।१८।१८	०। २।२३।३०	११।७ ।३२।५४	१०।१७। ४।३०	९।२७।११।३३	३। २।१२।५३	४। ८। ४।१६	६।२२।४५।२५
९	१३। ५।१५	११।२४।५२।५९	३।१५।३१।२१	०। ४।२५।४०	११। ७।४७। ३	१०।१८।१६। ४	९।२७।१६।३०	३। २। ९।४२	४। ८। २।४२	६।२२।४४। १
१०	१३। ९।१२	११।२५।५१।५८	३।१५।४५। ०	०। ६।२७। १	११।८ । १।१०	१०।१९।२७।३९	९।२७।२१।२२	३। २। ६।३१	४। ८। १।११	६।२२।४२।३६
११	१३।१३। ८	११।२६।५०।५५	३।१५।५९।१३	०। ८।२७।३२	११। ८।१५।१४	१०।२०।३९।१६	९।२७।२६। ६	३। २। ३।२०	४। ७।५९।४२	६।२२।४१।१०
१२	१३।१७। ५	११।२७।४९।४८	३।१६।१३।४९	०।१०।२६।५६	११। ८।२९।१८	१०।२१।५०।५४	९।२७।३० ४६	३। २। ०।१०	४। ७।५८।१९	६।२२।३९।४२
१३	१३।२१। २	११।२८।४८।३९	३।१६।२८।५०	०।१२।२३।११	११। ८।४३।२२	१०।२३। २।३४	९।२७।३५।१५	३। १।५६।५९	४। ७।५६।५८	६।२२।३८।१४
१४	१३।२४।५८	११।२९।४७।२६	३।१६।४४।१६	०।१४।१६।१६	११। ८।५७।२५	१०।२४।१४।१५	९।२७।३९।४१	३। १।५३।४८	४। ७।५५।४०	६।२२।३६।४५
१५	१३।२८।५५	०। ०।४६।१२	३।१७। ०। ७	०।१६। ६।११	११। ९।११।२६	१०।२५।२५।५७	९।२७।४४। ५	३। १।५०।३७	४। ७।५४।२५	६।२२।३५।१६
१६	१३।३२।५२	०। १।४४।५६	३।१७।१६।२४	०।१७।५२।५५	११। ९।२५।२६	१०।२६।३७।४०	९।२७।४८।२८	३। १।४७।२६	४। ७।५३।१३	६।२२।३३।४६
१७	१३।३६।४८	०। २।४३।३९	३।१७।३३। ५	०।१९।३६।२९	११। ९।३९।२२	१०।२७।४९।२५	९।२७।५२।५०	३। १।४४।१५	४। ७।५२। ४	६।२२।३२।१५
१८	१३।४०।४५	०। ३।४२।२०	३।१७।५०।१४	०।२१।१६।५३	११। ९।५३।१६	१०।२९। १।१२	९।२७।५७।११	३। १।४१। ५	४। ७।५०।५७	६।२२।३०।४४
१९	१३।४४।४१	०। ४।४०।५९	३।१८। ७।४८	०।२२।५४। ७	११।१०। ७। ८	११। ०।१३। १	९।२८। १।३०	३। १।३७।५४	४। ७।४९।५२	६।२२।२९।१३
२०	१३।४८।३८	०। ५।३९।३४	३।१८।२५।४४	०।२४।२५।१५	११।१०।२०।५६	११। १।२४।५२	९।२८। ५।४६	३। १।३४।४३	४। ७।४८।५१	६।२२।२७।४१
२१	१३।५२।३४	०। ६।३८। ७	३।१८।४४। ४	०।२५।५१।३४	११।१०।३४।४२	११। २।३६।४५	९।२८। ९।५४	३। १।३१।३२	४। ७।४७।५३	६।२२।२६। ८
२२	१३।५६।३१	०। ७।३६।३९	३।१९। २।५०	०।२७।१३। ५	११।१०।४८।२६	११। ३।४८।४०	९।२८।१३।५४	३। १।२८।२१	४। ७।४६।५४	६।२२।२४।३४
२३	१४। ०।२७	०। ८।३५।१०	३।१९।२२। १	०।२८।२९।४६	११।११। २। ९	११। ५। ०।३७	९।२८।१७।४९	३। १।२५।११	४। ७।४५।५८	६।२२।२२।५९
२४	१४। ४।२४	०। ९।३३।३८	३।१९।४१।३६	०।२९।४१।४६	११।११।१५।४८	११। ६।१२।३६	९।२८।२१।३९	३। १।२२। ०	४। ७।४५। ६	६।२२।२१।२३
२५	१४। ८।२१	०।१०।३२। ५	३।२०। १।३६	१। ०।४८।५७	११।११।२९।२६	११। ७।२४।३८	९।२८।२५।२६	३। १।१८।४९	४। ७।४४।१७	६।२२।१९।४७
२६	१४।१२।१७	०।११।३०।३१	३।२०।२२। ०	१। १।५१। ४	११।११।४३। १	११। ८।३६।४१	९।२८।२९। ८	३। १।१५।३८	४। ७।४३।३१	६।२२।१८।११
२७	१४।१६।१३	०।१२।२८।५५	३।२०।४२।५०	१। २।४८।२२	११।११।५६।३१	११। ९।४८।४५	९।२८।३२।४६	३। १।१२।२७	४। ७।४२।५०	६।२२।१६।३४
२८	१४।२०।१०	०।१३।२७।१५	३।२१। ३।५७	१। ३।४१। ९	११।१२। ९।५८	११।११। ०।४८	९।२८।३५।४०	३। १। ९।१७	४। ७।४२।१३	६।२२।१४।५६
२९	१४।२४। ७	०।१४।२५।३४	३।२१।२५।२३	१। ४।२६।१६	११।१२।२३।१९	११।१२।१२।५१	९।२८।३८।३६	३। १। ६। ६	४। ७।४१।४०	६।२२।१३।१८
३०	१४।२८। ३	०।१५।२३।५२	३।२१।४७। ५	१। ५।१०।१४	११।१२।३६।३६	११।१३।२४।५५	९।२८।४१।३३	३। १। २।५५	४। ७।४१। ९	६।२२।११।४०

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं. मि. ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ मई को अयनांश २३°।१९।४६")

तारीख मई सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१४।३२। ०	०।१६।२२। ८	३।२२। ९। ५	१। ५।४५।३२	११।१२।४३।४९	११।१४।३७। १	९।२८।४४।२६	३। ०।५९।४४	४। ७।४०।४०	६।२१।१०। ३
२	१४।३५।५७	०।१७।२०।२२	३।२२।३१।२०	१। ६।१५।४०	११।१३। ३। १	११।१५।४९। ८	९।२८।४७।१८	३। ०।५६।३४	४। ७।४०।१५	६।२१। ८।२४
३	१४।३९।५३	०।१८।१८।३५	३।२२।५३।५३	१। ६।४०। ८	११।१३।१६।१०	११।१७। १।१६	९।२८।५०। ८	३। ०।५३।२३	४। ७।३९।५३	६।२१। ६।४६
४	१४।४३।५०	०।१९।१६।४६	३।२३।१६।४२	१। ६।५८।५८	११।१३।२९।१६	११।१८।१३।२६	९।२८।५३।५८	३। ०।५०।११	४। ७।३९।३३	६।२१। ५। ७
५	१४।४७।४६	०।२०।१४।५६	३।२३।३९।५०	१। ७।१२। ७	११।१३।४२।१८	११।१९।२५।३७	९।२८।५५।४७	३। ०।४७। २	४। ७।३९।१५	६।२१। ३।२९
६	१४।५१।४३	०।२१।१३। ३	३।२४। ३। ६	१। ७।१८।२५	११।१३।५५।१५	११।२०।३७।५०	९।२८।५८।३४	३। ०।४३।५१	४। ७।३९। १	६।२१। १।५०
७	१४।५५।३९	०।२२।११। ९	३।२४।२६।३४	व१। ७।२०। ५	११।१४। ८। ८	११।२१।५०। ३	९।२९। १।२०	३। ०।४०।४०	४। ७।३८।५१	६।२१। ०।११
८	१४।५९।३६	०।२३। ९।१३	३।२४।५०।२४	१। ७।१७। ६	११।१४।२०।५८	११।२३। २।१८	९।२९। ४। ५	३। ०।३७।२९	४। ७।३८।४२	६।२०।५८।३२
९	१५। ३।३२	०।२४। ७।१६	३।२५।१४।३९	१। ७। ९।२९	११।१४।३३।४४	११।२४।१४।२६	९।२९। ६।४९	३। ०।३४।[illegible]	४। ७।३८।३६	६।२०।५६।५४
१०	१५। ७।२९	०।२५। ५।१७	३।२५।३९।१५	१। ६।५७।१३	११।१४।४६।२७	११।२५।२६।५४	९।२९। ९।३१	३। ०।३[illegible]	४। ७।३८।३५	६।२०।५५।१४
११	१५।११।२६	०।२६। ३।१६	३।२६। ४। ९	१। ६।४०।२०	११।१४।५९। ६	११।२६।३९।१४	९।२९।११।१०	३। ०।[illegible]	४। ७।३८।३६	६।२०।५३।३५
१२	१५।१५।२२	०।२७। १।१४	३।२६।२९।२०	१। ६।१८।४७	११।१५।११।४२	११।२७।५१।३५	९।२९।१४।४८	३। ०।२४।४६	४। ७।३८।३८	६।२०। १।५६
१३	१५।१९।१९	०।२७।५९।१०	३।२६।५४।४८	१। ५।५२।३७	११।१५।२४।१४	११।२९। ३।५७	९।२९।१७।१८	३। ०।२[illegible]।३१	४। ७।३८।४३	६।२०।५०।१७
१४	१५।२३।१६	०।२८।५७। ४	३।२७।२०।३१	१। ५।२३।२२	११।१५।३६।३९	०। ०।१६।१९	९।२९।१९।३४	३। ०।१८।२४	४। ७।३८।४९	६।२०।४८।३[illegible]
१५	१५।२७।१२	०।२९।५४।५७	३।२७।४६।२५	१। ४।५२।४७	११।१५।४९। १	०। १।२८।४२	९।२९।२१।३२	३। ०।१५।१४	४। ७।३९। ५	६।२०।४७। ०
१६	१५।३१। ९	१। ०।५२।४८	३।२८।१२।३१	१। ४।२२। ०	११।१६। १।१७	०। २।४१। ४	९।२९।२३।२३	३। ०।१२। ३	४। ७।३९।२५	६।२०।४५।२२
१७	१५।३५। ५	१। १।५०।३८	३।२८।३८।४८	१। ३।५०।२३	११।१६।१३।३०	०। ३।५३।२६	९।२९।२५। ९	३। ०। ८।५२	४। ७।३९।५६	६।२०।४३।४५
१८	१५।३९। २	१। २।४८।२७	३।२९। ५।१८	१। ३।१८।१४	११।१६।२५।३६	०। ५। ५।५०	९।२९।२६।४९	३। ०। ५।४१	४। ७।४०।३१	६।२०।४२। ९
१९	१५।४२।५९	१। ३।४६।१४	३।२९।३१।५९	१। २।४४।५५	११।१६।३७।३९	०। ६।१८।१४	९।२९।२८।२४	३। ०। २।३१	४। ७।४१।१०	६।२०।४०।३४
२०	१५।४६।५५	१। ४।४४। १	३।२९।५८।५२	१। २।११।१५	११।१६।४९।३६	०। ७।३०।३९	९।२९।२९।५३	२।२९।५९।२०	४। ७।४१।५६	६।२०।३८।५९
२१	१५।५०।५२	१। ५।४१।४६	४। ०।२५।५५	१। १।३६।५४	११।१७। १।३०	०। ८।४३। ५	९।२९।३१।१६	२।२९।५६। ९	४। ७।४२।४४	६।२०।३७।२५
२२	१५।५४।४९	१। ६।३९।२९	४। ०।५३।११	१। १। ४। ५	११।१७।१३।१८	०। ९।५५।३२	९।२९।३२।३३	२।२९।५२।५८	४। ७।४३।३१	६।२०।३५।५२
२३	१५।५८।४५	१। ७।३७।१०	४। १।२०।३८	१। ०।३३।४८	११।१७।२५। ०	०।११। ८। ०	९।२९।३३।४३	२।२९।४९।४८	४। ७।४४।२८	६।२०।३४।२०
२४	१६। २।४२	१। ८।३४।५०	४। १।४८।१७	१। ०। ८। २	११।१७।३६।३८	०।१२।२०।२८	९।२९।३४।४८	२।२९।४६।३७	४। ७।४५। ४	६।२०।३२।४८
२५	१६। ६।३८	१। ९।३२।२८	४। २।१६। ७	०।२९।४४।४९	११।१७।४८।१२	०।१३।३२।५६	९।२९।३५।४८	२।२९।४३।२६	४। ७।४६।१३	६।२०।३१।१७
२६	१६।१०।३५	१।१०।३०। ५	४। २।४४।१०	०।२९।२५।३६	११।१७।५९।४०	०।१४।४५।२६	९।२९।३६।४०	२।२९।४०।१५	४। ७।४७।४१	६।२०।२९।४७
२७	१६।१४।३१	१।११।२७।४१	४। ३।१२।२३	०।२९। ९।५५	११।१८।११। ४	०।१५।५७।५६	९।२९।३७।३०	२।२९।३७। ४	४। ७।४९।३९	६।२०।२८।१७
२८	१६।१८।२७	१।१२।२५।१६	४। ३।४०।४८	०।२८।५७।४६	११।१८।२२।२३	०।१७।१०।२७	९।२९।३८।१४	२।२९।३३।५३	४। ७।४८।३५	६।२०।२६।४८
२९	१६।२२।२४	१।१३।२२।४९	४। ४। ९।२५	०।२८।४७। ८	११।१८।३३।३६	०।१८।२३। २	९।२९।३८।४८	२।२९।३०।४३	४। ७।४९।३४	६।२०।२५।१९
३०	१६।२६।२०	१।१४।२०।२३	४। ४।३८।१४	०।२८।३९।१३	११।१८।४४।४५	०।१९।३५।४९	९।२९।३९।१९	२।२९।२७।३२	४। ७।५०।३६	६।२०।२३।५०
३१	१६।३०।१७	१।१५।१७।५६	४। ५। ७।१३	०।२८।३०।१२	११।१८।५५।४४	०।२०।४८।२४	[illegible]	[illegible]	४। [illegible]।४२	६।[illegible]

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैंडर्ड टाईम)

(१ जून को अयनांश २३।१९।५०")

तारीख जून सन १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से	सूर्य रा. अं. क. वि	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि	गुरु रा. अं. क. वि	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि	राहु रा. अं. क. वि	वरुण रा. अं. क. वि	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि
१	१६।३४।१४	११।१६।१५।२८	४। ५।३६।२२	मा०।२८।२८।३६	११।१९। ६।३६	०।२२। १। ६	९।२९।४०। १	२।२९।२१।१०	४। ७।५२।५०	६।२०।२०।५६
२	१६।३८।११	११।१७।१२।५९	४। ६। ५।४२	०।२८।३१।५५	११।१९।१७।२३	०।२३।१३।४९	९।२९।४०।१५	२।२९।१८। ०	४। ७।५४। १	६।२०।१९।३०
३	१६।४२। ७	११।१८।१०।२८	४। ६।३५।१३	०।२८।४०।१८	११।१९।२८। २	०।२४।२६।३२	९।२९।४०।२२	२।२९।१४।४९	४। ७।५५।१६	६।२०।१८। ५
४	१६।४६। ४	११।१९। ७।५५	४। ७। ४।५३	०।२८।५३।४६	११।१९।३८।३६	०।२५।३९।१५	९।२९।४०।२३	२।२९।११।३८	४। ७।५६।३६	६।२०।१६।४१
५	१६।५०। ०	११।२०। ५।२१	४। ७।३४।४४	०।२९।१२।१९	११।१९।४९। २	०।२६।५१।५८	९।२९।४०।१८	२।२९। ८।२७	४। ७।५७।५७	६।२०।१५।१९
६	१६।५३।५७	११।२१। २।४६	४। ८। ४।४४	०।२९।३५।५६	११।१९।५९।२४	०।२८। ४।४२	९।२९।४०। ८	२।२९। ५।१६	४। ७।५९।२०	६।२०।१३।५९
७	१६।५७।५३	११।२२। ०।१२	४। ८।३४।२४	१। ०। ३।२१	११।२०। ९।३६	०।२९।१७।२७	९।२९।३९।५१	२।२९। २। ५	४। ८। ०।४८	६।२०।१२।४०
८	१७। १।५०	११।२२।५७।३७	४। ९। ५।१५	१। ०।३४।५१	११।२०।१९।४४	१। ०।३०।१५	९।२९।३९।२९	२।२८।५८।५५	४। ८। २।१९	६।२०।११।२१
९	१७। ५।४६	११।२३।५५। १	४। ९।३५।४६	१। १।१०।४४	११।२०।२९।४४	१। १।४३। ४	९।२९।३९। ०	२।२८।५५।४४	४। ८। ३।५३	६।२०।१०। ५
१०	१७। ९।४३	११।२४।५२।२३	४।१०। ६।२७	१। १।५०।५४	११।२०।३९।३९	१। २।५५।५२	९।२९।३८।२७	२।२८।५२।३३	४। ८। ५।३०	६।२०। ८।४९
११	१७।१३।३९	११।२५।४९।४३	४।१०।३७।१९	१। २।३५।३९	११।२०।४९।२६	१। ४। ८।४१	९।२९।३७।४६	२।२८।४९।२३	४। ८। ७।११	६।२०। ७।३५
१२	१७।१७।३६	११।२६।४७। २	४।११। ८।२१	१। ३।२३।५३	११।२०।५९। ६	१। ५।२१।३२	९।२९।३७। १	२।२८।४६।१२	४। ८। ८।५५	६।२०। ६।२२
१३	१७।२१।३३	११।२७।४४।२१	४।११।३९।३३	१। ४।१६।४४	११।२१। ८।४२	१। ६।३४।२४	९।२९।३६। ९	२।२८।४३। १	४। ८।१०।४२	६।२०। ५।११
१४	१७।२५।२९	११।२८।४१।३९	४।१२।१०।५५	१। ५।१३।५२	११।२१।१८।१३	१। ७।४७।२२	९।२९।३५।१३	२।२८।३९।५१	४। ८।१२।३१	६।२०। ४। ०
१५	१७।२९।२६	११।२९।३८।५७	४।१२।४२।२६	१। ६।१४। ४	११।२१।२७।३९	१। ९। ०।२१	९।२९।३४।१०	२।२८।३६।४०	४। ८।१४।२१	६।२०। २।४९
१६	१७।३३।२३	२। ०।३६।१५	४।१३।१४। ६	१। ७।१८। ०	११।२१।३६।५८	१।१०।१३।२१	९।२९।३३। १	२।२८।३३।२९	४। ८।१६।१२	६।२०। १।३८
१७	१७।३७।१९	२। १।३३।३३	४।१३।४५।५३	१। ८।२५।३८	११।२१।४६। ८	१।११।२६।२२	९।२९।३१।४७	२।२८।३०।१९	४। ८।१८। ७	६।२०। ०।२९
१८	१७।४१।१६	२। २।३०।४९	४।१४।१७।४८	१। ९।३७। १	११।२१।५५।११	१।१२।३९।२३	९।२९।३०।२८	२।२८।२७। ८	४। ८।२०। ५	६।१९।५९।२१
१९	१७।४५। २	२। ३।२८। ४	४।१४।४९।४९	१।१०।५२। ८	११।२२। ४। ४	१।१३।५२।२३	९।२९।२८।५९	२।२८।२३।५७	४। ८।२२। ६	६।१९।५८।१५
२०	१७।४९। ९	२। ४।२५।१९	४।१५।२२।५८	१।१२।१०।५९	११।२२।१२।४९	१।१५। ५।२४	९।२९।२७।२५	२।२८।२०।४६	४। ८।२४।१०	६।१९।५७।११
२१	१७।५३। ५	२। ५।२२।३४	४।१५।५४।१२	१।१३।३३।३४	११।२२।२१।२५	१।१६।१८।२६	९।२९।२५।४९	२।२९।१७।३५	४। ८।२६।१७	६।१९।५६। ९
२२	१७।५७। १	२। ६।१९।५०	४।१६।२६।३५	१।१४।५९। ३	११।२२।२९।५३	१।१७।३१।२८	९।२९।२४। ८	२।२८।१४।२४	४। ८।२८।२६	६।१९।५५। ८
२३	१८। ०।५८	२। ७।१७। ६	४।१६।५९। ३	१।१६।२८।१३	११।२२।३८।११	१।१८।४४।३०	९।२९।२२।१५	२।२८।११।१३	४। ८।३०।३९	६।१९।५४। ९
२४	१८। ४।५४	२। ८।१४।२२	४।१७।३१।४०	१।१७।५९।३१	११।२२।४६।२१	१।१९।५७।३४	९।२९।२०।२०	२।२८। ८। ३	४। ८।३२।५४	६।१९।५३।११
२५	१८। ८।५१	२। ९।११।३७	४।१८। ४।२२	१।१९।३३।४७	११।२२।५४।२२	१।२१।१०।४०	२।२९।१८।१८	२।२८। ४।५२	४। ८।३५।१२	६।१९।५२।१६
२६	१८।१२।४८	२।१०। ८।५२	४।१८।३७।१३	१।२१।११। २	११।२३। २।१५	१।२२।२३।४७	९।२९।१६।१३	२।२८। १।४१	४। ८।३७।३३	६।१९।५१।२१
२७	१८।१६।४४	२।११। ६। ५	४।१९।१०। ९	१।२२।५१।१४	११।२३। ९।५८	१।२३।३६।५४	९।२९।१४। ४	२।२७।५८।३०	४। ८।३९।५८	६।१९।५०।२९
२८	१८।२०।४१	२।१२। ३।१७	४।१९।४३।१४	१।२४।३४।२५	११।२३।१७।३४	१।२४।५०। २	९।२९।११।५३	२।२७।५५।१९	४। ८।४२।२५	६।१९।४९।३९
२९	१८।२४।३७	२।१३। ०।२९	४।२०।१६।२५	१।२५।२०।३२	११।२३।२५। १	१।२६। ३।१०	९।२९। ९।३८	२।२७।५२। ८	४। ८।४४।५५	६।१९।४८।४९
३०	१८।२८।३४	२।१३।५७।४१	४।२०।४९।४४	१।२८। ९।४०	११।२३।३३।२०	१।२७।१६।१९	९।२९। ७।१९	२।२७।४८।५७	४। ८।४७।२८	६।१९।४८। ०

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम)

(१ जुलाई को अयनांश २३°।१२।१८")

तारीख जुलाई सन् १९६३	साम्पातिक का स्थानीय समय घं. मि. ०।०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	वरुण	इन्द्र (वक्री)
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	१८।३२।३१	२।१४।५४।५३	४।२१।२३।१२	२।०।३।१५	११।२३।३९।३६	१।२८।२३।२९	९।२९।४।४२	२।२७।४५।४६	४।८।५०।१	६।१९।४७।११
२	१८।३६।२८	२।१५।५२।६	४।२१।५६।४६	२।१।५८।३७	११।२३।४६।४१	१।२९।४२।४१	९।२९।२।१४	२।२७।४२।३६	४।८।५२।३४	६।१९।४६।२४
३	१८।४०।२४	२।१६।४९।१८	४।२२।३०।२६	२।३।५५।४१	११।२३।५३।३७	२।०।५५।५५	९।२८।५९।३५	२।२७।३९।२५	४।८।५५।१०	६।१९।४५।४०
४	१८।४४।२१	२।१७।४६।३०	४।२३।४।१३	२।५।५४।४०	११।२४।०।२२	२।२।९।२	९।२८।५६।५२	२।२७।३६।१५	४।८।५७।४२	६।१९।४४।५७
५	१८।४८।१७	२।१८।४३।४२	४।२३।३८।५	२।७।५५।२१	११।२४।६।५६	२।३।२२।२२	९।२८।५४।६	२।२७।३३।४	४।९।०।२९	६।१९।४४।१६
६	१८।५२।१४	२।१९।४०।५३	४।२४।१२।३	२।९।५७।४८	११।२४।१३।२१	२।४।३५।४१	९।२८।५१।१६	२।२७।२९।५३	४।९।३।१२	६।१९।४३।३७
७	१८।५६।१०	२।२०।३८।३	४।२४।४६।७	२।१२।२।२	११।२४।१९।३६	२।५।४८।५९	९।२८।४८।२३	२।२७।२६।४२	४।९।५।५८	६।१९।४३।०
८	१९।०।७	२।२१।३५।१३	४।२५।२०।१७	२।१४।८।२	११।२४।२५।४१	२।७।२।२०	९।२८।४५।२२	२।२७।२३।३१	४।९।८।४६	६।१९।४२।२५
९	१९।४।३	२।२२।३२।२३	४।२५।५४।३१	२।१६।१६।२५	११।२४।३१।३६	२।८।१५।४१	९।२८।४२।१६	२।२७।२०।२१	४।९।११।३७	६।१९।४१।५१
१०	१९।८।०	२।२३।२९।३४	४।२६।२८।५४	२।१८।२५।२०	११।२४।३७।२१	२।९।२९।४	९।२८।३९।७	२।२७।१७।१०	४।९।१४।२९	६।१९।४१।१९
११	१९।११।५६	२।२४।२६।४५	४।२७।३।२२	२।२०।३४।४८	११।२४।४२।५६	२।१०।४२।२८	९।२८।३५।५२	२।२७।१३।५९	४।९।१७।२२	६।१९।४०।५०
१२	१९।१५।५३	२।२५।२३।५५	४।२७।३७।५६	२।२२।४४।४३	११।२४।४८।२०	२।११।५५।५५	९।२८।३२।३४	२।२७।१०।४८	४।९।२०।१७	६।१९।४०।२२
१३	१९।१९।४९	२।२६।२१।७	४।२८।१२।३५	२।२४।५५।२४	११।२४।५३।३४	२।१३।९।२२	९।२८।२९।८	२।२७।७।३७	४।९।२३।१६	६।१९।३९।५६
१४	१९।२३।४६	२।२७।१८।२०	४।२८।४७।२१	२।२७।६।३१	११।२४।५८।३८	२।१४।२२।५०	९।२८।२५।३९	२।२७।४।२७	४।९।२६।१७	६।१९।३९।३१
१५	१९।२७।४२	२।२८।१५।३३	४।२९।२२।१३	२।२९।१८।१२	११।२५।३।३२	२।१५।३६।१०	९।२८।२२।७	२।२७।१।१६	४।९।२९।२०	६।१९।३९।९
१६	१९।३१।३९	२।२९।१२।४७	४।२९।५७।११	३।१।३०।२५	११।२५।८।१७	२।१६।४९।५२	९।२८।१८।३२	२।२६।५८।५	४।९।३२।२४	६।१९।३८।४९
१७	१९।३५।३५	३।०।१०।२	५।०।३२।१४	३।३।३७।२९	११।२५।१२।५२	२।१८।३।२६	९।२८।१४।५४	२।२६।५४।५४	४।९।३५।२९	६।१९।३८।३३
१८	१९।३९।३२	३।१।७।१८	५।१।७।२३	३।५।४३।६	११।२५।१७।१६	२।१९।१७।३	९।२८।११।१३	२।२६।५१।४३	४।९।३८।३५	६।१९।३८।१९
१९	१९।४३।२९	३।२।४।३३	५।१।४२।३७	३।७।४७।१३	११।२५।२१।२९	२।२०।३०।४०	९।२८।७।२९	२।२६।४८।३३	४।९।४१।४२	६।१९।३८।७
२०	१९।४७।२५	३।३।१।४८	५।२।१७।५८	३।९।४८।१२	११।२५।२५।३२	२।२१।४४।१८	९।२८।३।४२	२।२६।४५।२२	४।९।४४।५०	६।१९।३७।५७
२१	१९।५१।२२	३।३।५९।४	५।२।५३।२४	३।११।५१।०	११।२५।२९।२३	२।२२।५७।५६	९।२७।५९।५३	२।२६।४२।११	४।९।४८।०	६।१९।३७।४९
२२	१९।५५।१८	३।४।५६।२१	५।३।२८।५६	३।१३।५०।४०	११।२५।३३।३	२।२४।११।३६	९।२७।५६।०	२।२६।३९।१	४।९।५१।११	६।१९।३७।४२
२३	१९।५९।१५	३।५।५३।३८	५।४।४।३४	३।१५।४८।५०	११।२५।३६।३१	२।२५।२५।१७	९।२७।५२।५	२।२६।३५।५०	४।९।५४।२३	६।१९।३७।३७
२४	२०।३।११	३।६।५०।५६	५।४।४०।१९	३।१७।४५।३२	११।२५।३९।५०	२।२६।३९।०	९।२७।४८।७	२।२६।३२।३९	४।९।५७।३६	६।१९।३७।३४
२५	२०।७।८	३।७।४८।१४	५।५।१६।९	३।१९।३३।४८	११।२५।४२।५६	२।२७।५२।४२	९।२७।४४।५	२।२६।२९।२८	४।१०।०।५१	६।१९।३७।३३
२६	२०।११।४	३।८।४५।३३	५।५।५२।५	३।२१।३३।१९	११।२५।४५।५१	२।२९।६।२६	९।२७।४०।२	२।२६।२६।१६	४।१०।४।८	६।१९।३७।३२
२७	२०।१५।१	३।९।४२।५२	५।६।२८।७	३।२३।२४।३०	११।२५।४८।३४	३।०।२०।१०	९।२७।३५।५४	२।२६।२३।६	४।१०।७।२६	६।१९।३७।३४
२८	२०।१८।५८	३।१०।४०।११	५।७।४।१४	३।२५।१४।५६	११।२५।५१।८	३।१।३३।५६	९।२७।३१।४५	२।२६।१९।५५	४।१०।१०।४४	६।१९।३७।३८
२९	२०।२२।५४	३।११।३७।३०	५।७।४०।२७	३।२७।२।४८	११।२५।५३।२९	३।२।४७।४३	९।२७।२७।३४	२।२६।१६।४४	४।१०।१४।४	६।१९।३७।४३
३०	२०।२६।५१	३।१२।३४।४९	५।८।१६।४६	३।२८।४३।५४	११।२५।५५।४०	३।४।१।३१	९।२७।२३।२०	२।२६।१३।३४	४।१०।१७।२४	६।१९।३७।५०
३१	२०।३०।४७	३।१३।३२।९	५।८।५३।११	४।०।१३।[illegible]	११।२५।[illegible]	३।५।[illegible]	९।२७।१९।[illegible]	२।२६।१०।२३	४।१०।२०।४६	६।१९।३७।५९

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

(१ अगस्त को अयनांश २३°।१९'।५८")

तारीख अगस्त सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	वरुण	इन्द्र
	घं. मि. से.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	२०।३४।४३	३।१४।२९।३१	५। ९।२२।४२	४। २।१८।४	११।२५।५९।२८	३। ६।२९।१०	९।२७।१४।२८	२।२६। ७।१३	४।१०।२४।११	६।१९।३८।१०
२	२०।३८।४०	३।१५।२६।५५	५।१०। ६।२२	४। ४। ०।४५	११।२६। १। ३	३। ७।४३। ४	९।२७।१०।१७	२।२६। ४। २	४।१०।२७।३८	६।१९।३८।२२
३	२०।४२।३६	३।१६।२४।२०	५।१०।४३। ४	४। ५।४१।१०	११।२६। २।२६	३। ८।५७। ०	९।२७। ५।५५	२।२६। ०।५२	४।१०।३१। ५	६।१९।३८।३५
४	२०।४६।३३	३।१७।२१।४७	५।११।१९।४७	४। ७।१९।५४	११।२६। ३।३८	३।१०।१०।५५	९।२७। १।३४	२।२५।५७।४१	४।१०।३४।३३	६।१९।३८।५०
५	२०।५०।२९	३।१८।१९।१५	५।११।५६।३३	४। ८।५७। ०	११।२६। ४।३८	३।११।२४।५२	९।२६।५७।११	२।२५।५४।३०	४।१०।३८। २	६।१९।३९। ६
६	२०। ४।२६	३।१[illegible]। १।४३	५। २।३३।२७	४।१०।३२। २	११।२६। ५।२६	३।१२।३८।४९	९।२६।५२।४६	२।२५।५१।१९	४।१०।४१।३३	६।१९।३९।२५
७	२०।५८।२२	३।२०।१४।११	५।१३।१०।२७	४।१२। ६।१२	११।२६। ६। ४	३।१३।५२।४६	९।२६।४८।२१	२।२५।४८। ९	४।१०।४५। ५	६।१९।३९।४७
८	२१। २।१९	३।२१।११।४१	५।१३।४७।३३	४।१३।३८।१४	११।२६। ६।२९	३।१५। ६।४४	९।२६।४३।५६	२।२५।४४।५८	४।१०।४८।३८	६।१९।४०।११
९	२१। ६।१६	३।२२। ९।११	५।१४।२४।४३	४।१५। ८।४९	११।२६। ६।४३	३।१६।२०।४२	९।२६।३९।२९	२।२५।४१।४७	४।१०।५२।१२	६।१९।४०।३७
१०	२१।१०।१२	३।२३। ६।४२	५।१५। २। ०	४।१६।३८। ६	११।२६। ६।४५	३।१७।३४।४१	९।२६।३४।५८	२।२५।३८।३७	४।१०।५५।४९	६।१९।४१। ५
११	२१।१४। ९	३।२४। ४।१३	५।१५।३९।२१	४।१८। ५।३०	११।२६। ६।३६	३।१८।४८।४०	९।२६।३०।२८	२।२५।३५।२६	४।१०।५९।२८	६।१९।४१।३५
१२	२१।१८। ५	३।२५। १।४७	५।१६।१६।४८	४।१९।३१। २	११।२६। ६।१६	३।२०। २।४०	९।२६।२५।५८	२।२५।३२।१५	४।११। ३। ७	६।१९।४२। ८
१३	२१।२२। २	३।२५।५९।२२	५।१६।५४।१९	४।२०।५४।४३	११।२६। ५।४४	३।२१।१६।४०	९।२६।२१।२८	२।२५।२९। ४	४।११। ६।४७	६।१९।४२।४
१४	२१।२५।५८	३।२६। ६।५७	५।१७।३१।५७	४।२२।१६।१८	११।२६। ५। १	३।२२।३०।४१	९।२६।१६।५४	२।२५।२५।५३	४।११।१०।२९	६।१९।४३।१९
१५	२१।२९।५५	३।२७।५४।३२	५।१८। ९।३९	४।२३।३६। ०	११।२६। ४। ६	३।२३।४४।४२	९।२६।१२।२०	२।२५।२२।४२	४।११।१४।१२	६।१९।४३।५८
१६	२१।३३।५२	३।२८।५२। ९	५।१८।४७।२७	४।२४।५३।४४	११।२६। २।५९	३।२४।५८।४४	९।२६। ७।४६	२।२५।१९।३१	४।११।१७।५६	७।१९।४४।३९
१७	२१।३७।४८	३।२९।४९।४८	५।१९।२५।२१	४।२६। ९।४७	११।२६। १।४१	३।२६।१२।४७	९।२६। ३।११	२।२५।१६।२०	४।११।२१।४१	६।१९।४५। २
१८	२१।४१।४५	४। ०।४७।२९	५।२०। ३।३४	४।२७।२३।५९	११।२६। ०।१६	३।२७।२६।५४	९।२५।५८।४१	२।२५।१३।१०	४।११।२५।२५	६।१९।४६। ५
१९	२१।४५।४२	४। १।४५।१२	५।२०।४१।५६	४।२८।३५।५०	११।२५।५८।३९	३।२८।४१। ३	९।२५।५४।११	२।२५। ९।५९	४।११।२९। ६	६।१९।४६।४
२०	२१।४९।३८	४। २।४२।५७	५।२१।२०।१६	४।२९।४५।१५	११।२५।५६।५१	३।२९।५५।१३	९।२५।४९।४१	२।२५। ६।४८	४।११।३२।४६	६।१९।४७।३४
२१	२१।५३।३५	४। ३।४०।४४	५।२१।५८।४६	५। ०।५२।१७	११।२५।५४।५१	४। १। ९।२५	९।२५।४५।११	२।२५। ३।३७	४।११।३६।२८	६।१९।४[illegible]
२२	२१।५७।३२	४। ४।३८।३२	५।२२।३७।१९	५। १।५६।५४	११।२५।५२।३८	४। २।२३।३७	९।२५।४०।५५	२।२५। ०।२६	४।११।४०।१०	६।१९।४९।१०
२३	२२। १।२८	४। ५।३६।१९	५।२३।१५।४९	५। २।५९। ६	११।२५।५०।१३	४। ३।३७।५१	९।२५।३६।३१	२।२४।५७।१६	४।११।४३।५४	६।१९।५०। १
२४	२२। ५।२५	४। ६।३४। ८	५।२३।५४।२१	५। ३।५८।५५	११।२५।४७।३७	४। ४।५२। ५	९।२५।३२। ९	२।२४।५४। ५	४।११।४७।३७	६।१९।५०।५५
२५	२२। ९।२१	४। ७।३१।५९	५।२४।३३।५६	५। ४।५६।२०	११।२५।४४।४९	४। ६। ६।२२	९।२५।२७।५०	२।२४।५०।५४	४।११।५१।२२	६।१९।५१।५०
२६	२२।१३।१७	४। ८।२९।५२	५।२५।११।३४	५। ५।५१।५१	११।२५।४१।५२	४। ७।२०।३९	९।२५।२३।३२	२।२४।४७।४३	४।११।५५। ७	६।१९।५२।४७
२७	२२।१७।१४	४। ९।२७।४६	५।२५।५०।१७	५। ६।४३।१०	११।२५।३८।४३	४। ८।३४।५८	९।२५।१९।१६	२।२४।४४।३२	४।११।५८।५२	६।१९।५३।४६
२८	२२।२१।१०	४।१०।२५।४१	५।२६।२९। २	५। ७।३३।१७	११।२५।३५।२३	४। ९।४९।१७	९।२५।१५। १	२।२४।४१।२१	४।१२। २।३८	६।१९।५४।४७
२९	२२।२५। ७	४।११।२३।३८	५।२७। ७।५१	५। ८।१९।५४	११।२५।३१।५१	४।११। ३।३८	९।२५।१०।४८	२।२४।३८।११	४।१२। ६।२४	६।१९।५५।४९
३०	२२।२९। ३	४।१२।२१।३६	५।२७।४६।४१	५। ८।५६।५८	११।२५।२८। ९	४।१२।१८। ०	९।२५। ६।३६	२।२४।३५। ०	४।१२।१०।१[illegible]	[illegible]

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय ५० मि० भारतीय स्टण्डर्ड टाइम)

० । ०

(१ सितम्बर को अयनांश २३°।२०'।१३")

तारीख सितम्बर सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	वरुण	इन्द्र
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क. वि.	रा. अं.
१	२२।३६।५७	४।१४।१७।३७	५।२३। ६।३०	५।१०। ८।३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	२२।४०।५४	४।१५।१५।४०	५।२९।४३।२७	५।१०।३९। ४	११।२५।१५।५०	४।१६। १।१०	९।२४।५४।११	२।२४।२५।२८	४।१२।२१।३६	६।[illegible]।२८
३	२२।४४।५०	४।१६।१३।४६	६। ०।२२।२९	५।११। ५।१०	११।२५।११।१३	४।१७।१५।३६	९।२४।५०। ९	२।२४।२२।१७	४।१२।२५।२२	६।२०।[illegible]।२९
४	२२।४८।४७	४।१७।११।५३	६। १। १।३४	५।११।२५।४५	११।२५। ६।२९	४।१८।३०। ३	९।२४।४६।१०	२।२४।१९। ६	४।१२।२९। ८	६।२०। २।४२
५	२२।५२।४३	४।१८।१०। २	६। १।४०।४४	५।११।४०।५३	११।२५। १।३५	४।१९।४४।३०	९।२४।४२।१४	२।२४।१५।५५	४।१२।३२।५४	६।२०। ३।५८
६	२२।५६।४०	४।१९। ८।१३	६। २।२०। ०	५।११।५०।२०	११।२४।५६।३४	४।२०।५८।५८	९।२४।३८।२२	२।२४।१२।४४	४।१२।३६।४०	६।२०। ५।१५
७	२३। ०।३६	४।२०। ६।२४	६। २।५९।२०	५।११।५४। ५	११।२४।५१।२३	४।२२।१३।२६	९।२४।३४।३४	२।२४। ९।३३	४।१२।४०।२५	६।२०। ६।३४
८	२३। ४।३३	४।२१। ४।३६	६। ३।३८।४६	५।११।५२।१८	११।२४।४६। ४	४।२३।२७।५५	९।२४।३०।५०	२।२४। ६।२३	४।१२।४४। ९	६।२०। ७।५५
९	२३। ८।३०	४।२२। २।५०	६। ४।१८।१७	५।११।४४। ०	११।२४।४०।३७	४।२४।४२।२४	९।२४।२७। ७	२।२४। ३।१३	४।१२।४७।५३	६।२०। ९।१७
१०	२३।१२।२६	४।२३। १। ५	६। ४।५७।५४	५।११।३०।१०	११।२४।३५।[illegible]	४।२५।५६।५३	९।२४।२३।२८	२।२४। ०। २	४।१२।५१।३६	६।२०।१०।४१
११	२३।१६।२३	४।२३।५९।२१	६। ५।३७।३६	५।११। ९।३३	११।२४।२९।१७	४।२७।११।२२	९।२४।१९।५३	२।२३।५६।५१	४।१२।५५।१८	६।२०।१२। ७
१२	२३।२०।१९	४।२४।५७।३९	६। ६।१७।२४	५।१०।४१।३३	११।२४।२३।२४	४।२८।२५।५१	९।२४।१६।२१	२।२३।५३।४१	४।१२।५८।५९	६।२०।१३।३४
१३	२३।२४।१६	४।२५।५५।५८	६। ६।५७।१७	५।१०। ८। ८	११।२४।१७।२४	४।२९।४०।१९	९।२४।१२।११	२।२३।५०।३०	४।१३। २।४१	६।२०।१५। ३
१४	२३।२८।१२	४।२६।५४।१८	६। ७।३७।१६	५। ९।२२।१०	११।२४।११।१३	५। ०।[illegible]	९।२४। ९।२५	२।२३।४७।१९	४।१३। ६।२२	६।२०।१६।३४
१५	२३।३२। ९	४।२७।५२।३९	६। ८।१७।१९	५। ८।४२।३८	११।२४। ४।१३	५। २। ९।[illegible]	९।२४। ६। ३	२।२३।४४। ८	४।१३।१०। २	६।२०।१८। ७
१६	२३।३६। ६	४।२८।५१। २	६। ८।५७।२९	५। ७।५०।३३	११।२३।५८।२६	५। ३।२३।५२	९।२४। [illegible]।४५	२।२३।४०।५७	४।१३।१३।४१	६।२०।१९।४१
१७	२३।४०। २	४।२९।४९।२६	६। ९।३७।४४	५। ६।५३।५८	११।२३।५१।५०	५। ४।३८।१३	९।२३।५९।२९	२।२३।३७।४६	४।१३।१७।२०	६।२०।२१।१७
१८	२३।४३।५९	५। ०।४७।५३	६।१०।१८। ४	५। ५।५०।१०	११।२३।४५। ५	५। ५।५१।५६	९।२३।५६।१७	२।२३।३४।३६	४।१३।२१। ०	६।२०।२२।५५
१९	२३।४७।५६	५। १।४६।२४	६।१०।५८।३४	५। ४।३९। ५	११।२३।३८। ९	५। ७। ७।३३	९।२३।५३।११	२।२३।३१।२५	४।१३।२४।३६	६।२०।२४।३३
२०	२३।५१।५२	५। २।४४।५९	६।११।३३।१५	५। ३।२९।१२	११।२३।३१। ७	५। ८।२१।१४	९।२३।५०।११	२।२३।२८।१४	४।१३।२८।१०	६।२०।२६।११
२१	२३।५५।४९	५। ३।४३।३६	६।१२।१३।५८	५। २।२६।२९	११।२३।२४। ०	५। ९।३५।१४	९।२३।४७।१५	२।२३।२५। ३	४।१३।३१।४५	६।२०।२७।५१
२२	२३।५९।४५	५। ४।४२।१८	६।१३। ०।४०	५। १।२८।५९	११।२३।१६।५०	५।१०।[illegible]।३४	९।२३।४४।२८	२।२३।२१।५३	४।१३।३५।१२	६।२०।२९।३१
२३	०। ३।४२	५। ५।४१। २	६।१३।४२।२४	५। ०।३६।३७	११।२३। ९।३५	५।१२।[illegible]	९।२३।४२।४१	२।२३।१८।४२	४।१३।३८।४२	६।२०।३१।१३
२४	०। ७।३८	५। ६।३९।४९	६।१४।२२।१२	४।२९।४२। ०	११।२३। २।१६	५।१३।२०।११	९।२३।३९। ३	२।२३।१५।३१	४।१३।४२।२३	६।२०।३२।५७
२५	०।११।३५	५। ७।३८।४१	६।१५। ३। १	४।२९। ७। १	११।२२।५४।[illegible]	५।१४।[illegible]।३३	९।२३।३६।३०	२।२३।१२।२१	४।१३।४५।५३	६।२०।३४।४१
२६	०।१५।३१	५। ८।३७।३७	६।१५।४३।५५	४।२८।२९।४६	११।२२।४७। ८	[illegible]।१७	९।२३।३४। १	२।२३। ९।१०	४।१३।४९।२३	६।२०।३६।२६
२७	०।१९।२८	५। ९।३६।३४	६।१६।२४।५६	४।२८। ०। ८	११।२२।३९।४१	५।१७।[illegible]।४८	९।२३।३२।३८	२।२३। ५।५९	४।१३।५२।५०	६।२०।३८।१२
२८	०।२३।२४	५।१०।३५।३३	६।१७। ६। २	४।२७।३९।४४	११।२२।३२।१४	५।१८।[illegible]।४०	९।२३।२९।१६	२।२३। २।४८	४।१३।५६।१४	६।२०।४०। ०
२९	०।२७।२१	५।११।३४।२८	६।१७।४७। ९	४।२६।२८।३४	११।२२।२४।३३	५।१९।३४।२१	९।२३।२७। ३	२।२२।५९।३७	४।१३।५९।३८	६।२०।४१।४९
३०	०।३१।१७	५।१२।३३।२६	६।१८।२८।१९	४।२७।२६।३८	११।२२।१६।४७	५।२०।४[illegible]। ३	९।२३।२४।५४	२।२२।५६।२७	४।१४। ३। ३	६।२०।४३।३९

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैंडर्ड टाइम)

(१ अक्तूबर को अयनांश २३°।२०'।१७")

तारीख अक्तूबर सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घ० मि० ०।०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	वरुण	इन्द्र
	घं० मि० से०	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि
१	०।३५।१४	५।१३।३२।२४	६।१९। ९।३०	४।२७।३३।५६	११।२२। ८।५७	५।२२। ३।४६	९।२३।२२।१३	२।२२।५३।१६	४।१४। ६।२५	६।२०।४५।३१
२	०।३९।११	५।१४।३१।२२	६।१९।५०।४४	४।२७।५०।२८	११।२२। १। ३	५।२३।१८।२८	९।२३।२०।५४	२।२२।५०। ५	४।१४। ९।४७	६।२०।४७।२३
३	०।४३। ७	५।१५।३०।२१	६।२०।३२। २	४।२८।१६।१४	११।२१।५३। ४	५।२४।३३।११	९।२३।१९। ०	२।२२।४६।५४	४।१४।१३। ९	६।२०।४९।१७
४	०।४७। ४	५।१६।२९।२१	६।२१।१३।२३	४।२८।५१।१४	११।२१।४५। ०	५।२५।४७।५६	९।२३।१७।१०	२।२२।४३।४३	४।१४।१६।३०	६।२०।५१।११
५	०।५१। ०	५।१७।२८।२४	६।२१।५४।५६	४।२९।४०।२६	११।२१।३६।५०	५।२७। २।४१	९।२३।१५।२६	२।२२।४०।३२	४।१४।१९।४८	६।२०।५३। ९
६	०।५४।५७	५।१८।२७।३१	६।२२।३६।३४	५। ०।३५।२२	११।२१।२८।४२	५।२८।१७।३०	९।२३।१३।४२	२।२२।३७।२२	४।१४।२३। ५	६।२०।५५। ७
७	०।५८।५३	५।१९।२६।४२	६।२३।१८।१६	५। १।३५।५८	११।२१।२०।३५	५।२९।३२।१९	९।२३।१२।१९	२।२२।३४।११	४।१४।२६।२०	६।२०।५७। ६
८	१। २।४९	५।२०।२५।५५	६।२४। ०। ३	५। २।४२।२९	११।२१।१२।३१	६। ०।४७। ८	९।२३।१०।५४	२।२२।३१। ०	४।१४।२९।३४	६।२०।५९। ५
९	१। ६।४६	५।२१।२५। ९	६।२४।४१।५४	५। ३।५२।४०	११।२१। ४।२७	६। २। १।५७	९।२३। ९।२९	२।२२।२७।४९	४।१४।३२।४५	६।२१। १। ६
१०	१।१०।४३	५।२२।२४।२४	६।२५।२३।५०	५। ५। ७।३४	११।२०।५६।२५	६। ३।१६।४६	९।२३। ८।१२	२।२२।२४।३९	४।१४।३५।५५	६।२१। ३। ८
११	१।१४।३९	५।२३।२३।४२	६।२६। ५।५०	५। ६।३०।१४	११।२०।४८।२४	६। ४।३१।३६	९।२३। ६।१९	२।२२।२१।२८	४।१४।३९। ४	६।२१। ५।१०
१२	१।१८।३६	५।२४।२३। २	६।२६।४७।५६	५। ८। ३।३८	११।२०।४०।२६	६। ५।४६।२६	९।२३। ५।१३	२।२२।१८।१७	४।१४।४२।११	६।२१। ७।१३
१३	१।२२।३३	५।२५।२२।२५	६।२७।३०। ४	५। ९।३९। ४	११।२०।३२।२८	६। ७। १।२५	९।२३। ४।१५	२।२२।१५। ६	४।१४।४५।१५	६।२१। ९।१७
१४	१।२६।२९	५।२६।२१।४९	६।२८।१२।१६	५।११।१४।५७	११।२०।२४।३३	६। ८।१६। ५	९।२३। ४। ३	२।२२।११।५५	४।१४।४८।१७	६।२१।११।२१
१५	१।३०।२६	५।२७।२१।१५	६।२८।५४।३४	५।१२।५०।१४	११।२०।१६।३९	६। ९।३०।२४	९।२३। ३।१८	२।२२। ८।४४	४।१४।५१।१८	६।२१।१३।२६
१६	१।३४।२३	५।२८।२०।४२	६।२९।३६।५४	५।१४।२७।५८	११।२०। ८।४६	६।१०।४५।४४	९।२३। २।३७	२।२२। ५।३४	४।१४।५४।१७	६।२१।१५।३३
१७	१।३८।१९	५।२९।२०।१०	७। ०।१९।२१	५।१६। ७। ६	११।२०। ०।५४	६।१२। ०।३४	९।२३। २। ४	२।२२। २।२३	४।१४।५७।१२	६।२१।१७।४०
१८	१।४२।१६	६। ०।१९।४१	७। १। १।५२	५।१७।४७।४०	११।१९।५३। ४	६।१३।१५।२४	९।२३। १।३५	२।२१।५९।१३	४।१५। ०। ६	६।२१।१९।४८
१९	१।४६।१२	६। १।१९।१५	७। १।४४।२७	५।१९।२९।३३	११।१९।४५।१६	६।१४।३०।१४	९।२३। १।१५	२।२१।५६। २	४।१५। ३। १	६।२१।२१।५६
२०	१।५०। ९	६। २।१८।५०	७। २।२७। ७	५।२१।१३। ५	११।१९।३७।३०	६।१५।४५। ४	९। ३। ०।५८	२।२१।५२।५१	४।१५। ५।५६	६।२१।२४। ४
२१	१।५४। ६	६। ३।१८।२९	७। ३। ९।५२	५।२२।५६। २	११।१९।२९।४३	६।१६।५९।५३	९।२३। ०।५०	२।२१।४९।४०	४।१५। ८।४६	६।२१।२६।१३
२२	१।५८। २	६। ४।१८।१०	७। ३।५२।४०	५।२४।३८।२१	११।१९।२२।२२	६।१८।१४।४२	९।२३। ०।४६	२।२१।४६।३०	४।१५।११।३५	६।२१।२८।२२
२३	२। १।५९	६। ५।१७।५३	७। ४।३५।३१	५।२६।२०।५९	११।१९।१४।५९	६।१९।२९।३२	९।२३। ०।५१	२।२१।४३।१९	४।१५।१४।२०	६।२१।३०।३२
२४	२। ५।५५	६। ६।१७।३८	७। ५।१८।२७	५।२८। ३। ०	११।१९। ७।४१	६।२०।४४।२३	९।२३। १। ०	२।२१।४०। ८	४।१५।१७। ४	६।२१।३२।४२
२५	२। ९।५२	६। ७।१७।२४	७। ६। १।२५	५।२९।४५। ४	११।१९। ०।३०	६।२१।५९।१३	९।२३। १।१७	२।२१।३६।५७	४।१५।१९।४५	६।२१।३४।५३
२६	२।१३।४८	६। ८।१७।१३	७। ६।४४।२७	६। १।२६।५९	११।१८।५३।२५	६।२३।१४। ३	९।२३। १।४१	२।२१।३३।४६	४।१५।२२।२३	६।२१।३७। ४
२७	२।१७।४५	६। ९।१७। ३	७। ७।२७।३२	६। ३। ८।४५	११।१८।४६।२८	६।२४।२८।५३	९।२३। २।१३	२।२१।३०।३५	४।१५।२४।५८	६।२१।३९।१६
२८	२।२१।४१	६।१०।१६।५५	७। ८।१०।४१	६। ४।५०।२०	११।१८।३९।३७	६।२५।४३।४४	९।२३। २।४९	२।२१।२७।२५	४।१५।२७।३२	६।२१।४१।२८
२९	२।२५।३७	६।११।१६।४९	७। ८।५३।५२	६। ६।२९।४०	११।१८।३३। ०	६।२६।५८।३४	९।२३। ३।३४	२।२१।२४।१४	४।१५।३०। २	६।२१।४३।४१
३०	२।२९।३४	६।१२।१६।४५	७। ९।३७। ७	६। ८। ९।४६	११।१८।२६।३०	६।२८।१३।२४	९।२३। ४।२३	२।२१।२१। ३	४।१५।३२।३१	६।२१।४५।५५

दैनिक दृग्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय ... भारतीय स्टैंडर्ड टाइम)
०।०

(१ नवम्बर को अयनांश २३°।२०'।११")

तारीख नवम्बर सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गु रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	२।३७।२७	६।१४।१६।४४	७।११। ३।४८	६।११।३२।१७	११।१८।१३।४४	७। ०।४३। ३	९।२३। ६।२४	२।२१।१४।४२	४।१५।३७।२१	६।२१।५०।२४
२	२।४१।२४	६।१५।१६।४७	७।११।४७।१३	६।१३।१२।३०	११।१८। ७।१७	७। १।५७।५२	९।२३। ७।३४	२।२१।११।३१	४।१५।३९।४१	६।२१।५२।३९
३	२।४५।२१	६।१६।१६।५१	७।१२।३०।४२	६।१४।५१। ७	११।१८। ०।५७	७। ३।१२।४२	९।२३। ८।५०	२।२१। ८।२०	४।१५।४१।५९	६।२१।५४।५५
४	२।४९।१७	६।१७।१६।५६	७।१३।१४।१४	६।१६।२९।२५	११।१७।५४।४३	७। ४।२७।३३	९।२३।१०।१३	२।२१। ५।१०	४।१५।४४।१५	६।२१।५७।११
५	२।५३।१४	६।१८।१७। ३	७।१३।५७।५०	६।१८। ६।३२	११।१७।४८।३६	७। ५।४२।२४	९।२३।११।३९	२।२१। १।५९	५।१५।४६।२९	६।२१।५९।२८
६	२।५७।१०	६।१९।१७।१२	७।१४।४१।३८	६।१९।४४।१६	११।१७।४२।४४	७। ६।५७।१४	९।२३।१३। ७	२।२०।५८।४८	४।१५।४८।३८	६।२२। १।४१
७	३। १। ७	६।२०।१७।२२	७।१५।२५।२९	६।२१।२१।४१	११।१७।३७। २	७। ८।१२। ४	९।२३।१४।३८	२।२०।५५।३७	४।१५।५०।४२	६।२२। ३।५५
८	३। ५। ४	६।२१।१७।३४	७।१६। ९।२२	६।२२।५८।३२	११।१७।३१।३२	७। ९।२६।५४	९।२३।१६।१५	२।२०।५२।२६	४।१५।५२।४२	६।२२। ६। ९
९	३। ९। ०	६।२२।१७।४८	७।१६।५३।२०	६।२४।३५। २	११।१७।२६।१३	७।१०।४१।४४	९।२३।१७।५६	२।२०।४९।१५	४।१५।५४।४३	६।२२। ८।२३
१०	३।१२।५७	६।२३।१८। ५	७।१७।३७।२०	६।२६।११।१६	११।१७।२१। ४	७।११।५६।३३	९।२३।१९।४४	२।२०।४६। ४	४।१५।५६।३९	६।२२।१०।३७
११	३।१६।५३	६।२४।१८।२३	७।१८।२१।२४	६।२७।४७।१०	११।१७।१६। ६	७।१३।११।२२	९।२३।२१।३९	२।२०।४२।५४	४।१५।५८।३२	६।२२।१२।५१
१२	३।२०।४९	६।२५।१८।४३	७।१९। ५।३१	६।२९।२२।४१	११।१७।११।१३	७।१४।२६।११	९।२३।२३।४०	२।२०।३९।४३	४।१६। ०।२२	६।२२।१५। ५
१३	३।२४।४६	६।२६।१९। ५	७।१९।४९।४१	७। ०।५७।५४	११।१७। ६।४३	७।१५।४१। ०	९।२३।२५।४८	२।२०।३६।३२	४।१६। २।१०	६।२२।१७।२०
१४	३।२८।४२	६।२७।१९।२८	७।२०।३३।५४	७। २।३२।५१	११।१७। २।२२	७।१६।५५।४८	९।२३।२८। ६	२।२०।३३।२१	४।१६। ३।५४	६।२२।१९।३४
१५	३।३२।३८	६।२८।१९।५२	७।२१।१८।११	७। ४। ७।२९	११।१६।५८।११	७।१८।१०।३६	९।२३।३०।३०	२।२०।३०।११	४।१६। ५।३७	६।२२।२१।४९
१६	३।३६।३५	६।२९।२०।१८	७।२२। २।३०	७। ५।४१।४८	११।१६।५४।१४	७।१९।२५।२५	९।२३।३३। १	२।२०।२७। ०	४।१६। ७।१६	६।२२।२४। ४
१७	३।४०।३१	७। ०।२०।४६	७।२२।४६।५३	७। ७।१५।४७	११।१६।५०।२४	७।२०।४०।१३	०।२३।३५।३५	२।२०।२३।४९	४।१६। ८।५२	६।२२।२६।१९
१८	३।४४।२८	७। १।२१।१५	७।२३।३१।१९	७। ८।४९।२७	११।१६।४६।३६	७।२१।५५। ०	९।२३।३८।१३	२।२०।२०।३८	४।१६।१०।२३	६।२२।२८।३४
१९	३।४८।२४	७। २।२१।४६	७।२४।१५।४८	७।१०।२२।४७	११।१६।४३।१३	७।२३। ९।४७	९।२३।४०।५४	२।२०।१७।२७	४।१६।११।५२	६।२२।३०।४९
२०	३।५२।२१	७। ३।२२।१८	७।२५। ०।२०	७।११।५५।४८	११।१६।३९।३१	७।२४।२४।३४	९।२३।४३।४३	२।२०।१४।१६	४।१६।१३।२१	६।२२।३३। ४
२१	३।५६।१७	७। ४।२२।५२	७।२५।४४।५३	७।१३।२८।३०	११।१६।३६।१७	७।२५।३९।२२	९।२३।४६।३७	२।२०।११। ६	४।१६।१४।१८	६।२२।३५।२०
२२	४। ०।१४	७। ५।२३।२७	७।२६।२९।४४	७।१४।५९।४७	११।१६।३३।१६	७।२६।५४। ९	९।२३।४९।३६	२।२०। ७।५५	४।१६।१६।१०	६।२२।३७।३२
२३	४। ४।१०	७। ६।२४। ४	७।२७।१४।३१	७।१६।३०।११	११।१६।३०।३३	७।२८। ८।५६	९।२३।५२।३८	२।२०। ४।४४	४।१६।१७।२६	६।२२।३९।४३
२४	४। ८। ७	७। ७।२४।४३	७।२७।५९।२२	७।१८। २।४२	११।१६।२८। ४	७।२९।२३।४२	९।२३।५५।४४	२।२०। १।३३	४।१६।१८।३८	६।२२।४१।५२
२५	४।१२। ३	७। ८।२५।२३	७।२८।४४।१९	७।१९।३४। १	११।१६।२५।५२	८। ०।३८।२९	९।२३।५९।३४	२।१९।५८।२२	४।१६।१९।४९	६।२२।४४। १
२६	४।१६। ०	७। ९।२६। ४	७।२९।२९।१५	७।२१। ७।३५	११।१६।२३।५२	८। १।५३।१५	९।२४। ३। ०	२।१९।५५।११	४।१६।२०।५६	६।२२।४६।१२
२७	४।१९।५७	७।१०।२६।४८	८। ०।१४।१४	७।२२।३९।५८	११।१६।२१।५८	८। ३। ७।५९	९।२४। ६।२७	२।१९।५२। ०	४।१६।२२। १	६।२२।४८।२३
२८	४।२३।५४	७।११।२७।३३	८। ०।५९।१४	७।२४।११। ७	११।१६।२०।१५	८। ४।२२।४४	९।२४।१०। १	२।१९।४८।४९	४।१६।२३। ३	६।२२।५०।३२
२९	४।२७।५०	७।१२।२८।१९	८। १।४४।१७	७।२५।४२। ४	११।१६।१८।४७	८। ५।३७।२८	९।२४।१३।३७	२।१९।४५।३९	४।१६।२४। ४	६।२२।५२।४१
३०	४।३१।४७	७।१३।२९। ५	८। २।२९।२१	७।२७।१२।३५	११।१६।१७।३२	८। ६।५२।११	९।२४।१७।२४	२।१९।४२।२८	४।१६।२४।५९	६।२२।५४।४९

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम)
० । ०

(१ दिसम्बर को अयनांश २३°।२०'।१५")

तारीख दिसम्बर सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घ मि ० । ०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	वरुण	इन्द्र
	घं मि. से.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि	रा. अं. क वि.	रा. अं क वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि
१	४।३५।४३	७।१४।२९।५१	८। ३।१४।४३	७।२८।४२।४४	११।१६।१३।२७	८। ८। ६।५३	९।२४।२१।२०	२।१९।३९।१८	४।१६।२५।५१	६।२२।५६।५७
२	४।३९।४०	७।१५।३०।४०	८। ३।५९।५९	८। ०।१२।३१	११।१६।१५।३५	८। ९।२१।३५	९।२४।२५।१८	२।१९।३६। ७	४।१६।२६।४१	६।२२।५९। ४
३	४।४३।३६	७।१६।३१।३०	८। ४।४५।१७	८। १।४१।५६	११।१६।१४।५३	८।१०।३६।१८	९।२४।२९।२१	२।१९।३२।५६	४।१६।२७।३०	६।२३। १।११
४	४।४७।३३	७।१७।३२।२२	८। ५।३०।३७	८। ३।१०।५८	११।१६।१४।२८	८।११।५०।५९	९।२४।३३।२९	२।१९।२९।४५	४।१६।२८।१६	६।२३। ३।१८
५	४।५१।२९	७।१८।३३।१५	८। ६।१६। ०	८। ४।३९।३८	११।१६।१४।११	८।१३। ५।३९	९।२४।३७।४०	२।१९।२६।३४	४।१६।२८।५९	६।२३। ५।२४
६	४।५५।२६	७।१९।३४।१०	८। ७। १।२४	८। ६। ७।५६	११।१६।१४। ६	८।१४।२०।१९	९।२४।४१।५४	२।१९।२३।२३	४।१६।२९।३९	६।२३। ७।३०
७	४।५९।२३	७।२०।३५। ५	८। ७।४६।५२	८। ७।३५।५३ म	११।१६।१४।१३	८।१५।३५। ०	९।२४।४६।१२	२।१९।२०।१३	४।१६।३०।१७	६।२३। ९।३५
८	५। ३।१९	७।२१।३६। ०	८। ८।३२।२६	८। ९। २।५४	११।१६।१४।४१	८।१६।४९।४०	९।२४।५०।३७	२।१९।१७। २	४।१६।३०।४९	६।२३।११।३८
९	५। ७।१६	७।२२।३६।५६	८। ९।१८। ४	८।१०।२८।३४	११।१६।१५।१९	८।१८। ४।१९	९।२४।५५। ८	२।१९।१३।५२	४।१६।३१।१५	६।२३।१३।३९
१०	५।११।१२	७।२३।३७।५४	८।१०। ३।४४	८।११।५२।५१	११।१६।१६।१०	८।१९।१८।५६	९।२४।५९।४२	२।१९।१०।४१	४।१६।३१।३८	६।२३।१५।४०
११	५।१५। ९	७।२४।३८।५३	८।१०।४९।२५	८।१३।१५।४३	११।१६।१७।१२	८।२०।३३।३३	९।२५। ४।२३	२।१९। ७।३१	४।१६।३१।५८	६।२३।१७।४०
१२	५।१९। ५	७।२५।३९।५२	८।११।३५। ७	८।१४।३७।१४	११।१६।१८।२८	८।२१।४८।१०	९।२५। ९। ६	२।१९। ४।२०	४।१६।३२।१५	६।२३।१९।३८
१३	५।२३। २	७।२६।४०।५०	८।१२।२०।५४	८।१५।५७।२०	११।१६।१९।५३	८।२३। २।४८	९।२५।१३।५४	२।१९। १। ९	४।१६।३२।२९	६।२३।२१।३५
१४	५।२६।५८	७।२७।४१।५१	८।१३। ६।४४	८।१७।१६। ५	११।१६।२१।३२	८।२४।१७।२४	०।२५।१८।४६	२।१८।५७।५८	४।१६।३२।३९	६।२३।२३।३१
१५	५।३०।५५	७।२८।४२।५१	८।१३।५२।३७	८।१८।३३।२५	११।१६।२३।२०	८।२५।३१।१६	९।२५।२३।४२	२।१८।५४।४८	४।१६।३२।४६	६।२३।२५।२५
१६	५।३४।५२	७।२९।४३।५३	८।१४।३८।३४	८।१९।४६। ५	११।१६।२५। २	८।२६।४६।२७	९।२५।२८।४२	२।१८।५१।३७	४।१६।३२।५०	६।२३।२७।१७
१७	५।३८।४८	८। ०।४४।५५	८।१५।२४।३४	८।२०।५६।४५	११।१६।२७।३१	८।२८। ०।५३	९।२५।३३।४७	२।१८।४८।२७	४।१६।३२।५१	६।२३।२९। ९
१८	५।४२।४५	८। १।४६। ०	८।१६।१०।३७	८।२२। ४।२५	११।१६।२९।२६	८।२९।१५।१७	९।२५।३८।५६	२।१८।४५।१६	४।१६।३२।४७	६।२३।३०।५९
१९	५।४६।४१	८। २।४७। ६	८।१६।५६।४२	८।२३। ८। ६	११।१६।३२।३६	९। ०।२९।४२	९।२५।४४।१०	२।१८।४२। ५	४।१६।३२।४०	६।२३।३२।५१
२०	५।५०।३८	८। ३।४८।१३	८।१७।४२।५१	८।२४। ४।१२	११।१६।३५।२६	९। १।४४। ८	९।२५।४९।२८	२।१८।३८।५४	४।१६।३२।३०	६।२३।३४।४०
२१	५।५४।३४	८। ४।४९।२०	८।१८।२९। १	८।२४।५५।१७	११।१६।३८।२५	९। २।५८।३४	९।२५।५४।४९	२।१८।३५।४३	४।१६।३२।१७	६।२३।३६।२८
२२	५।५८।३१	८। ५।५०।२८	८।१९।१५।१४	८।२५।४१।३२	११।१६।४१।३७	९। ४।१३।५९	९।२६। ०।१६	२।१८।३२।३२	४।१६।३२। १	६।२३।३८।१४
२३	६। २।२७	८। ६।५१।३६	८।२०। १।२८	८।२६।२०।४८	११।१६।४५। ०	९। ५।२७।२२	९।२६। ५।४६	२।१८।२९।२१	४।१६।३१।४१	६।२३।४०। ०
२४	६। ६।२४	८। ७।५२।४४	८।२०।४७।४२	८।२६।४९।५०	११।१६।४८।३८	९। ६।४१।३९	९।२६।११।२२	२।१८।२६।१०	४।१६।३१।१४	६।२३।४१।४५
२५	६।१०।२०	८। ८।५३।५२	८।२१।३३।५७	८।२७। ८।१२	११।१६।५२।२७	९। ७।५५।५५	९।२६।१७। १	२।१८।२३। ०	४।१६।३०।४३	६।२३।४३।२८
२६	६।१४।१७	८। ९।५५। १	८।२२।२०।१४	८।२७।१७।५५	११।१६।५६।३३	९। ९।१०।१०	९।२६।२२।४४	२।१८।१९।४९	४।१६।३०। ९	६।२३।४५।१०
२७	६।१८।१४	८।१०।५६। ९	८।२३। ६।३३	व८।२७।१८।५८	११।१७। ०।४३	९।१०।२४।२४	९।२६।२८।२९	२।१८।१६।३८	४।१६।२९।३२	६।२३।४६।५१
२८	६।२२।१०	८।११।५७।१८	८।२३।५२।५५	८।२७। १।२५	११।१७। ५।१३	९।११।३८।३७	९।२६।३४।१७	२।१८।१३।२७	४।१६।२८।५२	६।२३।४८।३१
२९	६।२६। ७	८।१२।५८।२७	८।२४।३९।२०	८।२६।३५। ५	११।१७। ९।४७	९।१२।५२।४६	९।२६।४०। ७	२।१८।१०।१६	४।१६।२८। ८	६।२३।५०। ९
३०	६।३०। ३	८।१३।५९।३५	८।२५।२५।४८	८।२५।५५।५५	११।१७।१४।३३	९।१४। ६।५६	९।२६।४६। २	२।१८। ७। ५	४।१६।२७।२१	६।२३।५१।४७
३१	६।३४। ०	८।१५। ०।४३	८।२६।१२।१८	८।२५।१५।५८	११।१७।१९।३०	९।१५।२१। ४	९।२६।५१।५८	२।१८। ३।५५	४।१६।२६।३१	६।२३।५३।२४

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मिं० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)
० । ०

(१ जनवरी को अयनांश २३°।२०'।१९")

तारीख जनवरी सन् १९६४	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	६।३७।५६	८।१६। १।५२	८।२६।५८।५१	८।२४।२३।११	११।१७।२४।३७	९।१६।३५। ८	९।२६।५७।५८	२।१८। ०।४४	४।१६।२५।३८	६।२३।५४।१७
२	६।४१।५३	८।१७। ३। २	८।२७।४५।२६	८।२३।२१।३६	११।१७।२९।५५	९।१७।४९।११	९।२७। ४। ०	२।१७।५७।३३	४।१६।२४।४१	६।२३।५६।३०
३	६।४५।५०	८।१८। ४।११	८।२८।३२। ४	८।२२।११।१४	११।१७।३५।२४	९।१९। ३।१३	९।२७।१०। ६	२।१७।५४।२२	४।१६।२३।४२	६।२३।५८। ०
४	६।४९।४६	८।१९। ५।२१	८।२९।१८।४४	८।२०।५२। ५	११।१७।४१। ४	९।२०।१७।१३	९।२७।१६।१४	२।१७।५१।११	४।१६।२२।३९	६।२३।५९।३०
५	६।५३।४३	८।२०। ६।३१	९। ०। ५।२८	८।१९।२८।१६	११।१७।४६।५५	९।२१।३१।१०	९।२७।२२।२६	२।१७।४८। १	४।१६।२१।३३	६।२४। ०।५७
६	६।५७।३९	८।२१। ७।४१	९। ०।५२।१४	८।१८। ९।४०	११।१७।५२।५६	९।२२।४५। ६	९।२७।२८।४०	२।१७।४४।५१	४।१६।२०।२३	६।२४। २।२४
७	७। १।३६	८।२२। ८।५१	९। १।३९। २	८।१६।५६।१६	११।१७।५९। ८	९।२३।५९। ०	९।२७।३४।५६	२।१७।४१।४०	४।१६।१९।१२	६।२४। ३।४९
८	७। ५।३२	८।२३।१०। १	९। २।२५।५१	८।१५।४८। ४	११।१८। ५।३१	९।२५।१२।५२	९।२७।४१।१७	२।१७।३८।२९	४।१६।१७।५९	६।२४। ५।१३
९	७। ९।२९	८।२४।११।१०	९। ३।१२।४०	८।१४।४५। ६	११।१८।१२। ९	९।२६।२६।३८	९।२७।४७।४१	२।१७।३५।१८	४।१६।१६।४३	६।२४। ६।३३
१०	७।१३।२६	८।२५।१२।२०	९। ३।५९।३१	८।१३।४७।२१	११।१८।१८।५७	९।२७।४०।१८	९।२७।५४। ८	२।१७।३२। ८	४।१६।१५।२६	६।२४। ७।५३
११	७।१७।२२	८।२६।१३।२९	९। ४।४६।२३	८।१२।५४।४९	११।१८।२५।५२	९।२८।५३।५६	९।२८। ०।३५	२।१७।२८।५७	४।१६।१४। ८	६।२४। ९। ९
१२	७।२१।१९	८।२७।१४।३८	९। ५।३३।१६	८।१२। ९।३०	११।१८।३२।५९	१०। ०। ७।३०	९।२८। ७। ४	२।१७।२५।४६	४।१६।१२।४६	६।२४।१०।२५
१३	७।२५।१५	८।२८।१५।४५	९। ६।२०।१२	८।११।३८। १	११।१८।४०।१३	१०। १।२१। ४	९।२८।१३।३३	२।१७।२२।३५	४।१६।११।२१	६।२४।११।३७
१४	७।२९।१२	८।२९।१६।५२	९। ७। ७।१२	८।११।१८। ३	११।१८।४७।३६	१०। २।३४।३६	९।२८।२०। ५	२।१७।१९।२४	४।१६। ९।५२	६।२४।१२।५०
१५	७।३३। ८	९। ०।१८। ०	९। ७।५४।१२	८।११। ५।३५	११।१८।५५। ७	१०। ३।४८। ६	९।२८।२६।४४	२।१७।१६।१३	४।१६। ८।२१	६।२४।१३।५९
१६	७।३७। ५	९। १।१९। ८	९। ८।४१।१३	८।११। २।३८	११।१९। २।४९	१०। ५। १।३४	९।२८।३३।३०	२।१७।१३। २	४।१६। ६।४७	६।२४।१५। ७
१७	७।४१। १	९। २।२०।१४	९। ९।२८।१५	८।११। ८।१२	११।१९।१०।३६	१०। ६।१४।५९	९।२८।४०।१६	२।१७। ९।५१	४।१६। ५। ९	६।२४।१६।१२
१८	७।४४।५८	९। ३।२१।२०	९।१०।१५।१७	८।११।२२।१७	११।१९।१८।३१	१०। ७।२८।२३	९।२८।४६।५९	२।१७। ६।४१	४।१६। ३।२९	६।२४।१७।१६
१९	७।४८।५४	९। ४।२२।२५	९।११। २।२०	८।११।४२।५७	११।१९।२६।४१	१०। ८।४१।४५	९।२८।५३।४३	२।१७। ३।३०	४।१६। १।४५	६।२४।१८।१७
२०	७।५२।५१	९। ५।२३।३१	९।११।४९।२६	८।१२।१३।५९	११।१९।३५। ०	१०। ९।५५। ५	९।२९। ०।२९	२।१७। ०।२०	४।१५।५९।५८	६।२४।१९।१८
२१	७।५६।४७	९। ६।२४।३६	९।१२।३६।३५	८।१२।५०। ०	११।१९।४३।२५	१०।११। ८।२२	९।२९। ७।१९	२।१६।५७। ९	४।१५।५८। ८	६।२४।२०।१५
२२	८। ०।४४	९। ७।२५।४०	९।१३।२३।४६	८।१३।२९।४५	११।१९।५१।५८	१०।१२।२१।३८	९।२९।१४।११	२।१६।५३।५८	४।१५।५६।१४	६।२४।२१।११
२३	८। ४।४०	९। ८।२६।४४	९।१४।१०।५९	८।१४।१२।५२	११।२०। ०।४१	१०।१३।३४।३२	९।२९।२१। ५	२।१६।५०।४७	४।१५।५४।१८	२।२४।२२। ५
२४	८। ८।३७	९। ९।२७।४७	९।१४।५८।१२	८।१५। ०।५०	११।२०। ९।३२	१०।१४।४८। ४	९।२९।२८। १	२।१६।४७।३७	४।१५।५२।२१	६।२४।२२।५९
२५	८।१२।३३	९।१०।२८।४९	९।१५।४५।२३	८।१५।५२। ६	११।२०।१८।३०	१०।१६। १। ६	९।२९।३४।५९	२।१६।४४।२६	४।१५।५०।२३	६।२४।२३।४९
२६	८।१६।३०	९।११।२९।४९	९।१६।३२।३४	८।१६।४७।११	११।२०।२७।३७	१०।१७।१४। ३	९।२९।४१।५८	२।१६।४१।१५	४।१५।४८।२३	६।२४।२४।३७
२७	८।२०।२६	९।१२।३०।४९	९।१७।१९।४७	८।१७।४६। ६	११।२०।३६।४९	१०।१८।२६।५५	९।२९।४८।५८	२।१६।३८। ४	४।१५।४६।२२	६।२४।२५।२३
२८	८।२४।२३	९।१३।३१।४८	९।१८। ७। ०	८।१८।४८।५०	११।२०।४६।१०	१०।१९।३९।४५	९।२९।५६। ०	२।१६।३४।५३	५।१५।४४।२०	६।२४।२६। ८
२९	८।२८।१९	९।१४।३२।४५	९।१८।५४।१४	८।१९।५३।२१	११।२०।५५।३८	१०।२०।५२।३२	१०। ०। ३। ३	२।१६।३१।४३	४।१५।४२।१५	६।२४।२६।५१
३०	८।३२।१६	९।१५।३३।४१	९।१९।४१।३०	८।२१।५९।४१	११।२१। ५।१७	१०।२२। ५।५१	१०। ०।१०। ९	२।१६।२८।३२	४।१५।४०। ८	६।२४।२७।३२
३१	८।३६।१३	९।१६।३४।३८	९।२०।२८।४५	८।२२। ७।५३	११।२१।१५। ०	१०।२३।१७।५२	१०। ०।१७।१६	२।१६।२५।२१	४।१५।३७।५९	६।२४।२८।११

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ दिसम्बर को अयनांश २३°।२०'।१५")

तारीख दिसम्बर सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घ मि ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि	मंगल रा. अं. क. वि	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि
१	४।३५।४३	७।१४।२९।५१	८। ३।१४।४३	७।२८।४२।४४	११।१६।१६।२७	८। ८। ६।५३	९।२४।२१।२०	२।१९।३९।१८	४।१६।२५।५१	६।२२।५६।५७
२	४।३९।४०	७।१५।३०।४०	८। ३।५३।५९	८। ०।१२।३१	११।१६।१५।३५	८। ९।२२।३५	९।२४।२५।१८	२।१९।३६। ७	४।१६।२६।४१	६।२२।५९। ४
३	४।४३।३६	७।१६।३१।३०	८। ४।४२।१७	८। १।४१।५६	११।१६।१४।५३	८।१०।३६।१८	९।२४।२९।२१	२।१९।३२।५६	४।१६।२७।३०	६।२३। १।११
४	४।४७।३३	७।१७।३२।२२	८। ५।३०।३७	८। ३।१०।५८	११।१६।१४।२८	८।११।२०।५९	९।२४।३३।२९	२।१९।२९।४५	४।१६।२८।१६	६।२३। ३।१८
५	४।५१।२९	७।१८।३३।१५	८। ६।१६। ०	८। ४।३९।३८	११।१६।१४।११	८।१३। ५।३९	९।२४।३७।४०	२।१९।२६।३४	४।१६।२८।५९	६।२३। ५।२४
६	४।५५।२६	७।१९।३४।१०	८। ७। १।२४	८। ६। ७।५६	११।१६।१४। ६	८।१४।२०।१९	९।२४।४१।५४	२।१९।२३।२३	४।१६।२९।३९	६।२३। ७।३०
७	४।५९।२३	७।२०।३५। ५	८। ७।४६।५२	८। ७।३५।५३म	११।१६।१४।१३	८।१५।३५। ०	९।२४।४६।१२	२।१९।२०।१३	४।१६।३०।१७	६।२३। ९।३५
८	५। ३।१९	७।२१।३६। ०	८। ८।३२।२६	८। ९। २।५४	११।१६।१४।४१	८।१६।४९।४०	९।२४।५०।३७	२।१९।१७। २	४।१६।३०।४९	६।२३।११।३८
९	५। ७।१६	७।२२।३६।५६	८। ९।१८। ४	८।१०।२८।३४	११।१६।१५।१९	८ १८। ४।१९	९ २४ ५५ ८	२ १९।१३।५२	४ १६ ३१ १५	६।२३ १३ ३९
१०	५।११।१२	७।२३।३७।५४	८।१०। ३।४४	८।११।५२।५१	११।१६।१६।१०	८।१९।१८।५६	९।२४।५९।४२	२।१९।१०।४१	४।१६।३१।३८	६।२३।१५।४०
११	५।१५। ९	७।२४।३८।५३	८।१०।४३।२५	८।१३।१५।४३	११।१६।१७।१२	८।२०।३३।३३	९।२५। ४।२३	२।१९। ७।३१	४।१६।३१।५८	६।२३।१७।४०
१२	५।१९। ५	७।२५।३९।५२	८।११।३५। ७	८।१४।३७।१४	११।१६।१८।२८	८।२१।४८।१०	९।२५। ९। ६	२।१९। ४।२०	४।१६।३२।१५	६।२३।१९।३८
१३	५।२३। २	७।२६।४०।५०	८।१२।२०।५४	८।१५।५७।२०	११।१६।१९।५३	८।२३। २।४८	९।२५।१३।५४	२।१९। १। ९	४।१६।३२।२९	६।२३।२१।३५
१४	५।२६।५८	७।२७।४१।५१	८।१३। ६।४४	८।१७।१६। ५	११।१६।२१।३२	८।२४।१७।२४	०।२५।१८।४६	२।१८।५७।५८	४।१६।३२।३९	६।२३।२३।३१
१५	५।३०।५५	७।२८।४२।५१	८।१३।५२।३७	८।१८।३३।२५	११।१६।२३।२०	८।२५।३१।२६	९।२५।२३।४२	२।१८।५४।४८	४।१६।३२।४६	६।२३।२५।२५
१६	५।३४।५२	७।२९।४३।५३	८।१४।३८।३४	८।१९।४६। ५	११।१६।२५। २	८।२६।४६।२७	९।२५।२८।४२	२।१८।५१।३७	४।१६।३२।५०	६।२३।२७।१७
१७	५।३८।४८	८। ०।४४।५५	८।१५।२४।३४	८।२०।५६।४५	११।१६।२७।३१	८।२८। ०।५३	९।२५।३३।४७	२।१८।४८।२७	४।१६।३२।५१	६।२३।२९। ९
१८	५।४२।४५	८। १।४६। ०	८।१६।१०।३७	८।२२। ४।२५	११।१६।२९।२६	८।२९।१५।१७	९।२५।३८।५६	२।१८।४५।१६	४।१६।३२।४७	६।२३।३०।५९
१९	५।४६।४१	८। २।४७। ६	८।१६।५६।४२	८।२३। ८। ६	११।१६।३२।३६	९। ०।२९।४२	९।२५।४४।१०	२।१८।४२। ५	४।१६।३२।४०	६।२३।३२।५१
२०	५।५०।३८	८। ३।४८।१३	८।१७।४२।५१	८।२४। ४।१२	११।१६।३५।२६	९। १।४४। ८	९।२५।४९।२८	२।१८।३८।५४	४।१६।३२।३०	६।२३।३४।४०
२१	५।५४।३४	८। ४।४९।२०	८।१८।२९। १	८।२४।५५।१७	११।१६।३८।२५	९। २।५८।३४	९।२५।५४।४३	२।१८।३५।४३	४।१६।३२।१७	६।२३।३६।२८
२२	५।५८।३१	८। ५।५०।२८	८।१९।१५।१४	८।२५।४१।३२	११।१६।४१।३७	९। ४।१२।५९	९।२६। ०।१६	२।१८।३२।३२	४।१६।३२। १	६।२३।३८।१४
२३	६। २।२७	८। ६।५१।३६	८।२०। १।२८	८।२६।२०।४८	११।१६।४५। ०	९। ५।२७।२२	९।२६। ५।४६	२।१८।२९।२१	४।१६।३१।४१	६।२३।४०। ०
२४	६। ६।२४	८। ७।५२।४४	८।२०।४७।४२	८।२६।४९।५०	११।१६।४८।३८	९। ६।४१।३९	९।२६।११।२२	२।१८।२६।१०	४।१६।३१।१४	६।२३।४१।४५
२५	६।१०।२०	८। ८।५३।५२	८।२१।३३।५७	८।२७। ८।१२	११।१६।५२।२७	९। ७।५५।५५	९।२६।१७। १	२।१८।२३। ०	४।१६।३०।४३	६।२३।४३।२८
२६	६।१४।१७	८। ९।५५। १	८।२२।२०।१४	८।२७।१७।५५	११।१६।५६।३३	९। ९।१०।१०	९।२६।२२।४४	२।१८।१९।४९	४।१६।३०। ९	६।२३।४५।१०
२७	६।१८।१४	८।१०।५६। ९	८।२३। ६।३३	व८।२७।१८।५८	११।१७। ०।४३	९।१०।२४।२४	९।२६।२८।२९	२।१८।१६।३८	४।१६।२९।३२	६।२३।४६।५१
२८	६।२२।१०	८।११।५७।१८	८।२३।५२।५५	८।२७। १।२५	११।१७। ५।१३	९।११।३८।३७	९।२६।३४।१७	२।१८।१३।२७	४।१६।२८।५२	६।२३।४८।३१
२९	६।२६। ७	८।१२।५८।२७	८।२४।३९।२०	८।२६।३५। ५	११।१७। ९।४७	९।१२।५२।४६	९।२६।४०। ७	२।१८।१०।१६	४।१६।२८। ८	६।२३।५०। ९
३०	६।३०। ३	८।१३।५९।३५	८।२५।२५।४८	८।२५।५९।५५	११।१७।१४।३३	९।१४। ६।५६	९।२६।४६। २	२।१८। ७। ५	४।१६।२७।२१	६।२३।५१।४७
३१	६।३४। ०	८।१५। ०।४३	८।२६।१२।१८	८।२५।१५।५८	११।१७।१९।३०	९।१५।२१। ४	९।२६।५१।५८	२।१८। ३।५५	४।१६।२६।३१	६।२३।५३।२४

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ जनवरी को अयनांश २३°।२०'।१९")

तारीख जनवरी सन् १९६४	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।०	सूर्य	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	वरुण (वक्री)	इन्द्र
	घं मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	६।३७।५६	८।१६। १।५२	८।२६।५८।५१	८।२४।२३।११	११।१७।२४।३७	९।१६।३५। ८	९।२६।५७।५८	२।१८। ०।४४	४।१६।२५।३८	६।२३।५४।१७
२	६।४१।५३	८।१७। ३। २	८।२७।४५।२६	८।२३।२१।३६	११।१७।२९।५५	९।१७।४९।११	९।२७। ४। ०	२।१७।५७।३३	४।१६।२४।४१	६।२३।५६।३०
३	६।४५।५०	८।१८। ४।११	८।२८।३२। ४	८।२२।११।१४	११।१७।३५।२४	९।१९। ३।१३	९।२७।१०। ६	२।१७।५४।२२	४।१६।२३।४२	६।२३।५८। ०
४	६।४९।४६	८।१९। ५।२१	८।२९।१८।४४	८।२०।५२। ५	११।१७।४१। ४	९।२०।१७।१३	९।२७।१६।१४	२।१७।५१।११	४।१६।२२।३९	६।२३।५९।३०
५	६।५३।४३	८।२०। ६।३१	९। ०। ५।२८	८।१९।२८।१६	११।१७।४६।५५	९।२१।३१।१०	९।२७।२२।२६	२।१७।४८। १	४।१६।२१।३३	६।२४। ०।५७
६	६।५७।३९	८।२१। ७।४१	९। ०।५२।१४	८।१८। ९।४०	११।१७।५२।५६	९।२२।४५। ६	९।२७।२८।४०	२।१७।४४।५१	४।१६।२०।२३	६।२४। २।२४
७	७। १।३६	८।२२। ८।५१	९। १।३९। २	८।१६।५६।१६	११।१७।५९। ८	९।२३।५९। ०	९।२७।३४।५६	२।१७।४१।४०	४।१६।१९।१२	६।२४। ३।४९
८	७। ५।३२	८।२३।१०। १	९। २।२५।५१	८।१५।४८। ४	११।१८। ५।३१	९।२५।१२।५२	९।२७।४१।१७	२।१७।३८।२९	४।१६।१७।५९	६।२४। ५।१३
९	७। ९।२९	८।२४।११।१०	९। ३।१२।४०	८।१४।४५। ६	११।१८।१२। ९	९।२६।२६।३८	९।२७।४७।४१	२।१७।३५।१८	४।१६।१६।४३	६।२४। ६।३३
१०	७।१३।२६	८।२५।१२।२०	९। ३।५९।३१	८।१३।४७।२१	११।१८।१८।५७	९।२७।४०।१८	९।२७।५४। ८	२।१७।३२। ८	४।१६।१५।२६	६।२४। ७।५३
११	७।१७।२२	८।२६।१३।२९	९। ४।४६।२३	८।१२।५४।४९	११।१८।२५।५२	९।२८।५३।५६	९।२८। ०।३५	२।१७।२८।५७	४।१६।१४। ८	६।२४। ९। ९
१२	७।२१।१९	८।२७।१४।३८	९। ५।३३।१६	८।१२। ९।३०	११।१८।३२।५९	१०। ०। ७।३०	९।२८। ७। ४	२।१७।२५।४६	४।१६।१२।४६	६।२४।१०।२५
१३	७।२५।१५	८।२८।१५।४५	९। ६।२०।१२	८।११।३८। १	११।१८।४०।१३	१०। १।२१। ४	९।२८।१३।३३	२।१७।२२।३५	४।१६।११।२१	६।२४।११।३७
१४	७।२९।१२	८।२९।१६।५२	९। ७। ७।१२	८।११।१८। ३	११।१८।४७।३६	१०। २।३४।३६	९।२८।२०। ५	२।१७।१९।२४	४।१६। ९।५२	६।२४।१२।५०
१५	७।३३। ८	९। ०।१८। ०	९। ७।५४।१२	८।११। ५।३५	११।१८।५५। ७	१०। ३।४८। ६	९।२८।२६।४४	२।१७।१६।१३	४।१६। ८।२१	६।२४।१३।५९
१६	७।३७। ५	९। १।१९। ८	९। ८।४१।१३	८।११। २।३८	११।१९। २।४९	१०। ५। १।३४	९।२८।३३।३०	२।१७।१३। २	४।१६। ६।४७	६।२४।१५। ७
१७	७।४१। १	९। २।२०।१४	९। ९।२८।१५	८।११। ८।१२	११।१९।१०।३६	१०। ६।१४।५९	९।२८।४०।१६	२।१७। ९।५१	४।१६। ५। ९	६।२४।१६।१२
१८	७।४४।५८	९। ३।२१।२०	९।१०।१५।१७	८।११।२२।१७	११।१९।१८।३१	१०। ७।२८।२३	९।२८।४६।५९	२।१७। ६।४१	४।१६। ३।२९	६।२४।१७।१६
१९	७।४८।५४	९। ४।२२।२५	९।११। २।२०	८।११।४२।५७	११।१९।२६।४१	१०। ८।४१।४५	९।२८।५३।४३	२।१७। ३।३०	४।१६। १।४५	६।२४।१८।१७
२०	७।५२।५१	९। ५।२३।३१	९।११।४९।२६	८।१२।१३।५९	११।१९।३५। ०	१०। ९।५५। ५	९।२९। ०।२९	२।१७। ०।२०	४।१५।५९।५८	६।२४।१९।१८
२१	७।५६।४७	९। ६।२४।३६	९।१२।३६।३५	८।१२।५०। ०	११।१९।४३।२५	१०।११। ८।२२	९।२९। ७।१९	२।१६।५७। ९	४।१५।५८। ८	६।२४।२०।१९
२२	८। ०।४४	९। ७।२५।४०	९।१३।२३।४६	८।१३।२९।४५	११।१९।५१।५८	१०।१२।२१।३८	९।२९।१४।११	२।१६।५३।५८	४।१५।५६।१४	६।२४।२१।११
२३	८। ४।४०	९। ८।२६।४४	९।१४।१०।५९	८।१४।१२।५२	११।२०। ०।४१	१०।१३।३४।३२	९।२९।२१। ५	२।१६।५०।४७	४।१५।५४।१८	२।२४।२२। ५
२४	८। ८।३७	९। ९।२७।४७	९।१४।५८।१२	८।१५। ०।५०	११।२०। ९।३२	१०।१४।४८। ४	९।२९।२८। १	२।१६।४७।३७	४।१५।५२।२१	६।२४।२३।५९
२५	८।१२।३३	९।१०।२८।४९	९।१५।४५।२३	८।१५।५२। ६	११।२०।१८।३०	१०।१६। १। ६	९।२९।३४।५९	२।१६।४४।२६	४।१५।५०।२३	६।२४।२३।४९
२६	८।१६।३०	९।११।२९।४९	९।१६।३२।३४	८।१६।४७।११	११।२०।२७।३७	१०।१७।१४। ३	९।२९।४१।५८	२।१६।४१।१५	४।१५।४८।२३	६।२४।२४।३७
२७	८।२०।२६	९।१२।३०।४९	९।१७।१९।४७	८।१७।४६। ६	११।२०।३६।४९	१०।१८।२६।५५	९।२९।४८।५८	२।१६।३८। ४	४।१५।४६।२२	६।२४।२५।२३
२८	८।२४।२३	९।१३।३१।४८	९।१८। ७। ०	८।१८।४८।५०	११।२०।४६।१०	१०।१९।३९।४५	९।२९।५६। ०	२।१६।३४।५३	५।१५।४४।२०	६।२४।२६। ८
२९	८।२८।१९	९।१४।३२।४५	९।१८।५४।१४	८।१९।५३।२१	११।२०।५५।३८	१०।२०।५२।३२	१०। ०। ३। ३	२।१६।३१।४३	४।१५।४२।१५	६।२४।२६।५१
३०	८।३२।१६	९।१५।३३।४१	९।१९।४१।३०	८।२०।५९।४१	११।२१। ५।१७	१०।२२। ५।५१	१०। ०।१०। ९	२।१६।२८।३२	४।१५।४०। ८	६।२४।२७।३२
३१	८।३६।१३	९।१६।३४।३८	९।२०।२८।४५	८।२२। ७।५३	११।२१।१५। ०	१०।२३।१७।५२	१०। ०।१७।१६	२।१६।२५।२१	४।१५।३७।५९	६।२४।२८।११

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ फरवरी को अयनांश २३°।२०'।२३")

तारीख फरवरी सन् १९६४	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	८।४०। ९	९।१७।३५।३४	९।२१।१६। १	८।२३।१७।५६	११।२१।२४।५०	१०।२४।३०।२४	१०। ०।२४।२४	२।१६।२२।१०	४।१५।३५।४९	६।२४।२८।४८
२	८।४४। ६	९।१८।३६।२७	९।२२। ३।१८	८।२४।२९।४९	११।२१।३४।४९	१०।२५।४२।५२	१०। ०।३१।३१	२।१६।१८।५९	४।१५।३३।३६	६।२४।२९।२३
३	८।४८। २	९।१९।३७।१९	९।२२।५०।३७	८।२५।४३।३३	११।२१।४४।५६	१०।२६।५५।१६	१०। ०।३८।३८	२।१६।१५।४८	४।१५।३१।२२	६।२४।२९।५६
४	८।५१।५९	९।२०।३८।११	९।२३।३७।५६	८।२६।५९। ८	११।२१।५५। ९	१०।२८। ७।३६	१०। ०।४५।४६	२।१६।१२।३७	४।१५।२९। ५	६।२४।३०।२७
५	८।५५।५५	९।२१।३९। २	९।२४।२५।१७	८।२८।१६।३४	११।२२। ५।३१	१०।२९।१९।५५	१०। ०।५२।५६	२।१६। ९।२६	४।१५।२६।४७	६।२४।३०।५६
६	८।५९।५२	९।२२।३९।५२	९।२५।१२।३८	८।२९।३३।२८	११।२२।१६। ०	११। ०।३२। ८	१०। १। ०। ७	२।१६। ६।१५	४।१५।२४।२६	६।२४।३१।२२
७	९। ३।४८	९।२३।४०।४१	९।२६। ०। ०	९। ०।५३।३६	११।२२।२६।३८	११। १।४४।१८	१०। १। ७।२१	२।१६। ३। ५	४।१५।२२। ४	६।२४।३१।४७
८	९। ७।४५	९।२४।४१।२९	९।२६।४७।२३	९। २।१५।५८	११।२२।३७।२२	११। २।५६।२३	१०। १।१४।३६	२।१५।५९।५४	४।१५।१९।३९	६।२४।३२।१२
९	९।११।४१	९।२५।४२।१६	९।२७।३४।४७	९। ३।३८।३४	११।२२।४८।१४	११। ४। ८।२४	१०। १।२२।५२	२।१५।५६।४४	४।१५।१७।१५	६।२४।३२।३५
१०	९।१५।३८	९।२६।४३। १	९।२८।२२।१२	९। ५। २।५१	११।२२।५९। ८	११। ५।२०।१९	१०। १।२९। ८	२।१५।५३।३३	४।१५।१४।५१	५।२४।३२।५७
११	९।१९।३४	९।२७।४३।४४	९।२९। ९।३७	९। ६।२६।२२	११।२३।१०। ९	११। ६।३२। ९	१०। १।३६।२३	२।१५।५०।२२	४।१५।१२।२७	६।२४।३३।१३
१२	९।२३।३१	९।२८।४४।२७	९।२९।५७। १	९। ७।५०। ७	११।२३।२१।१६	११। ७।४३।५०	१०। १।४३।३७	२।१५।४७।११	४।१५।१०। २	६।२४।३३।२९
१३	९।२७।२८	९।२९।४५।१०	१०। ०।४४।२४	९। ९।१६। ७	११।२३।३२।२८	११। ८।५५।२६	१०। १।५०।५२	२।१५।४४। ०	४।१५। ७।३५	६।२४।३३।४१
१४	९।३१।२४	१०। ०।४५।५०	१०। १।३१।४३	९।१०।४४।५२	११।२३।४३।४५	११।१०। ६।५४	१०। १।५८। ७	२।१५।४०।४९	४।१५। ५। ७	६।२४।३३।५१
१५	९।३५।२१	१०। १।४६।२८	१०। २।१९। १	९।१२।१४।३६	११।२३।५५। ९	११।११।१८।१५	१०। २। ५।२३	२।१५।३७।३९	४।१५। २।३८	६।२४।३३।५९
१६	९।३९।१८	१०। २।४७। ५	१०। ३। ६।१८	९।१३।४४।१५	११।२४। ६।३८	११।१२।२९।२९	१०। २।१२।३९	२।१५।३४।२८	४।१५। ०। ८	६।२४।३४। ६
१७	९।४३।१४	१०। ३।४७।४१	१०। ३।५३।३५	९।१५।१४।५३	११।२४।१८।१४	११।१३।४०।३७	१०। २।१९।५४	२।१५।३१।१८	४।१४।५७।३६	६।२४।३४।१२
१८	९।४७।११	१०। ४।४८।१४	१०। ४।४०।५४	९।१६।४६।२१	११।२४।२९।५४	११।१४।५१।३७	१०। २।२७। ८	२।१५।२८। ७	४।१४।५५। ३	६।२४।३४।१४
१९	९।५१। ८	१०। ५।४८।४४	१०। ५।२८।१३	९।१८।१८।५७	११।२४।४१।४१	११।१६। २।३१	१०। २।३४।२१	२।१५।२४।५७	४।१४।५२।२८	६।२४।३४।१२
२०	९।५५। ४	१०। ६।४९।१३	१०। ६।१५।३१	९।१९।५२।२४	११।२४।५३।३४	११।१७।१३।१७	१०। २।४१।३३	२।१५।२१।४६	४।१४।४९।५२	६।२४।३४। ९
२१	९।५९। १	१०। ७।४९।४३	१०। ७। २।५०	९।२१।२६।४९	११।२५। ५।३३	११।१८।२३।५७	१०। २।४८।४५	२।१५।१८।३५	४।१४।४७।१५	६।२४।३४। ४
२२	१०। २।५८	१०। ८।५०।१०	१०। ७।५०। ८	९।२३। २।१४	११।२५।१७।३८	११।१९।३४।२९	१०। २।५५।५७	२।१५।१५।२४	४।१४।४४।३६	६।२४।३३।५८
२३	१०। ६।५४	१०। ९।५०।३६	१०। ८।३७।२६	९।२४।३८।३८	११।२५।२९।४९	११।२०।४४।५४	१०। ३। ३।१०	२।१५।१२।१३	४।१४।४१।५६	६।२४।३३।४९
२४	१०।१०।५१	१०।१०।५१। ३	१०। ९।२४।४४	९।२६।१५।५७	११।२५।४२। ३	११।२१।५५।१२	१०। ३।१०।२४	२।१५। ९। २	४।१४।३९।१५	६।२४।३३।३८
२५	१०।१४।४७	१०।११।५१।२९	१०।१०।१२। ०	९।२७।५४।१४	११।२५।५४।२३	११।२३। ५।२४	१०। ३।१७।३८	२।१५। ५।५१	४।१४।३६।३३	६।२४।३३।२५
२६	१०।१८।४४	१०।१२।५१।५०	१०।१०।५९।१५	९।२९।३३।२८	११।२६। ६।४७	११।२४।१५।३९	१०। ३।२४।५१	२।१५। २।४१	४।१४।३३।५२	६।२४।३३।११
२७	१०।२२।४०	१०।१३।५२। ६	१०।११।४६।३१	१०। १।१३।४०	११।२६।१९।१४	११।२५।२५।४४	१०। ३।३२। ३	२।१४।५९।३०	४।१४।३१।१३	६।२४।३२।५६
२८	१०।२६।३७	१०।१४।५२।२४	१०।१२।३३।४५	१०। २।५४।४८	११।२६।३१।४४	११।२६।३५।४०	१०। ३।३९।१५	२।१४।५६।१९	४।१४।२८।३१	६।२४।३२।३९
२९	१०।३०।३३	१०।१५।५२।४१	१०।१३।२१।००	१०। ४।३६।५४	११।२६।४४।१९	११।२७।४५।२७	१०। ३।४६।२४	२।१४।५३। ९	४।१४।२५।५२	६।२४।३२।२०

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ मार्च को अयनांश २३°।२०'।२७")

तारीख मार्च सन् १९६४	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१०।३४।२९	१०।१६।५२।५४	१०।१४। ८।१३	१०। ६।२०। ०	११।२६।५६।५७	११।२८।५५। ५	१०। ३।५३।३५	२।१४।४९।५८	४।१४।२३।१३	६।२४।३१।५८
२	१०।३८।२६	१०।१७।५३। ४	१०।१४।५५।२६	१०। ८। ४। ६	११।२७। ९।४०	०। ०। ४।३२	१०। ४। ०।४३	२।१४।४६।४७	४।१४।२०।३४	६।२४।३१।३५
३	१०।४२।२२	१०।१८।५३।१४	१०।१५।४२।३८	१०। ९।४९।१६	११।२७।२२।२६	०। १।१३।४५	१०। ४। ७।४८	२।१४।४३।३६	४।१४।१७।५६	६।२४।३१। ९
४	१०।४६।१९	१०।१९।५३।२४	१०।१६।२९।५०	१०।११।३५।२८	११।२७।३५।१७	०। २।२२।५६	१०। ४।१४।४९	२।१४।४०।२६	४।१४।१५।१८	६।२४।३०।४३
५	१०।५०।१५	१०।२०।५३।३३	१०।१७।१७। १	१०।१३।२२।४४	११।२७।४८।११	०। ३।३२। २	१०। ४।२१।५०	२।१४।३७।१५	४।१४।१२।४०	६।२४।३०।१५
६	१०।५४।१२	१०।२१।५३।३६	१०।१८। ४।१२	१०।१५।११। २	११।२८। १। ९	०। ४।४०।५८	१०। ४।२८।५१	२।१४।३४। ४	४।१४।१०। ४	६।२४।२९।४३
७	१०।५८। ८	१०।२२।५३।४०	१०।१८।५१।२१	१०।१७। ०।२३	११।२८।१४।११	०। ५।४९।३४	१०। ४।३५।५२	२।१४।३०।५३	४।१४। ७।२९	६।२४।२९।१०
८	११। २। ५	१०।२३।५३।४२	०।१९।३८।३१	१०।१८।५०।४६	११।२८।२७।१८	०। ६।५८। ०	१०। ४।४२।५१	२।१४।२७।४२	४।१४। ४।५३	६।२४।२८।३५
९	११। ६। १	१०।२४।५३।४१	१०।२०।२५।३९	१०।२०।४२।११	११।२८।४०।२९	०। ८। ६।२१	१०। ४।४९।४९	२।१४।२४।३१	४।१४। २।१७	६।२४।२७।५८
१०	११। ९।५८	१०।२५।५३।३९	१०।२१।१२।४७	१०।२२।३५। ०	११।२८।५३।४३	०। ९।१४।३३	१०। ४।५६।४५	२।१४।२१।२१	४।१३।५९।४१	६।२४।२७।१९
११	११।१३।५४	१०।२६।५३।३६	१०।२१।५९।५४	१०।२४।२८।४०	११।२९। ७। २	०।१०।२२।३५	१०। ५। ३।४०	२।१४।१८।१९	४।१३।५७। ५	६।२४।२६।३८
१२	११।१७।५१	१०।२७।५३।३१	१०।२२।४७। २	१०।२६।२३।२४	११।२९।२०।२४	०।११।३०।२९	१०। ५।१०।३०	२।१४।१४।५९	४।१३।५४।३२	६।२४।२५।५५
१३	११।२१।४७	१०।२८।५३।२२	१०।२३।३४। ९	१०।२८।१९। ८	११।२९।३३।४७	०।१२।३८। ८	१०। ५।१७।१४	२।१४।११।४८	४।१३।५२। २	६।२४।२५।११
१४	११।२५।४४	१०।२९।५३।१०	१०।२४।२१।१६	११। ०।१५।५७	११।२९।४७।१३	०।१३।४५।३६	१०। ५।२३।५८	२।१४। ८।३७	४।१३।४९।३४	६।२४।२४।२६
१५	११।२९।४१	११। ०।५२।५८	१०।२५। ८।२३	११। २।१३।४६	०। ०। ०।४१	०।१४।५२।४१	१०। ५।३०।३४	२।१४। ५।२६	४।१३।४७। ८	६।२४।२३।४०

लघुरिक्थ से ग्रह स्पष्ट करने की विधि—(पृष्ठ ६३ का शेष) :—

ग्रह स्पष्ट करने की विधि का उदाहरण :—यदि ता० २–१–६४ को १३ घंटा ५ मिनट पर गुरु स्पष्ट करना हो तो घंटा मिनटात्मक इष्ट १३ घं. ५ मि. का लघुरिक्थ, २६३५ सारिणी से उपलब्ध हुआ । इस दिन गुरु की दैनिक गति ५ कला २९ विकला है। इस दैनिक गति का लघुरिक्थ ६४१२ सारिणी से लेकर पूर्व प्राप्त घण्टा-मिनटात्मक इष्ट १३ घं. ५ मि. के लघुरिक्थ २६३५ में जोड़ने पर ९०४७ योगफल हुआ । लघुरिक्थ सारिणी में इसी अंक के आसन्न तम अंक से २ कला ५९ विकला प्राप्त हुए। इसे २ तारीख को ० घं ० मि. पर स्पष्ट गुरु ११।१७।२९।५५ में जोड़ने से ११।१७।३२।५४ इष्ट कालिक स्पष्ट गुरु हुआ ।

चन्द्र स्पष्ट करने की विधि का उदाहरण :—यदि १–५–६३ को १४ घं० २० मि० पर (अर्थात् मध्याह्न के २ घं० २० मिनट पर) चन्द्र स्पष्ट करना हो तो—उस दिन १२ घ. मि. पर चन्द्र स्पष्ट ३।२४।२१ है। शेष काल २ घं० २० मि० का लघुरिक्थ १.०१२२ प्राप्त हुआ। इसी दिन १२ घं. मि. एवं १८ घं० मि० पर स्पष्ट चन्द्र का अन्तर ३ अंश ८ कला है। इसका लघुरिक्थ ८८४२ पूर्व प्राप्त लघुरिक्थ १.०१२२ में जोड़ कर ६०२१, घटाया तो शेष १.२९४३ रहा । इस अंक से लघुरिक्थ सारिणी से १ अंश १३ कला प्राप्त हुआ। इसे १२ घ. ० मिनट पर स्पष्ट चन्द्र ३।२४।२१ में जोड़ने से ३।२५।३४ इष्टकालिक स्पष्ट चन्द्र हुआ ।

मङ्गल आदि ग्रहों की स्पष्ट क्रान्ति एवं शर(भा. स्टें. टा. ० घं. ० मि.)

(सं. २०२०)

सन् १९६३	मङ्गल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		वरुण		इन्द्र	
तारीख	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. अ.	अं. क.
मार्च २४	+२२। ३	+३।१८	−३।३३	−१।५३	−२। ३	−१। ३	−१४।१०	−०।१०	−१५।५२	−०।५२	+११।२९	+०।४८	−१४।४२	+१।४९
२८	२१।४९	३। ९	−०। ९	१।३०	१।४०	१। ४	१२।४८	०।२५	१५।४५	०।५३	११।३२	०।४८	१४।४०	१।४९
अप्रैल १	२१।३१	३। १	+३।३०	०।५९	१।१७	१। ४	११।२१	०।३८	१५।३९	०।५३	११।३५	०।४८	१४।३९	१।४९
५	२१।१२	२।५३	७।१५	−०।२०	०।५५	१। ४	९।४७	०।४९	१५।३३	०।५३	११।३७	०।४८	१४।३७	१।४९
९	२०।५१	२।४५	१०।५८	+०।२२	०।३२	१। ४	८।१०	१। ०	१५।२७	०।५४	११।४०	०।४८	१४।३६	१।४९
१३	२०।२८	२।३७	१४।२५	१। ७	−०। ५	१। ५	६।२८	१।१०	१५।२१	०।५५	११।४२	०।४७	१४।३४	१।५०
१७	२०। २	२।३०	१७।२३	१।४८	+०।१७	१। ५	४।४३	१।१८	१५।१६	०।५५	११।४३	०।४७	१४।३२	१।५०
२१	१९।३५	२।२३	१९।४३	२।२०	०।३३	१। ५	२।५७	१।२६	१५।११	०।५६	११।४५	०।४७	१४।३०	१।५०
२५	१९। ५	२।१६	२१।२२	२।४०	०।५५	१। ६	−१। ७	१।३२	१५। ७	०।५७	११।४६	०।४७	१४।२८	१।५०
२९	१८।३५	२। ९	२२।२०	२।४५	१।१६	१। ६	+०।४२	१।३७	१५। ३	०।५७	११।४७	०।४७	१४।२६	१।५०
मई ३	१८। २	२। ४	२२।३६	२।३२	१।३६	१। ७	२।३३	१।४०	१५। ०	०।५८	११।४७	०।४७	१४।२४	१।५०
७	१७।२७	१।५८	२२।१४	२। ०	१।५६	१। ७	४।२३	१।४२	१४।५७	०।५९	११।४७	०।४६	१४।२२	१।५०
११	१६।५१	१।५३	२१।१८	१।१०	२।१६	१। ८	६।१२	१।४३	१४।५४	०।५९	११।४७	०।४६	१४।२०	१।५०
१५	१६।१३	१।४७	१९।५४	−०। ६	२।३५	१। ८	८। ०	१।४३	१४।५२	१। ०	११।४७	०।४६	१४।१८	१।५०
१९	१५।३३	१।४०	१८।१५	+१। ३	२।५३	१। ९	९।४५	१।४१	१४।५०	१। १	११।४६	०।४६	१४।१७	१।५०
२३	१४।५१	१।३५	१६।४०	२। ८	३।११	१। ९	११।२७	१।३९	१४।४९	१। २	११।४५	०।४६	१४।१५	१।५०
२७	१४। ९	१।३०	१५।२५	३। १	३।२९	१।१०	१३। ५	१।३५	१४।४९	१। २	११।४४	०।४६	१४।१३	१।५०
३१	१३।२४	१।२५	१४।४२	३।३८	३।४५	१।११	१४।३८	१।३०	१४।४९	१। ३	११।४२	०।४५	१४।१२	१।५०
जून ४	१२।३८	१।२०	१४।३४	३।५४	४। १	१।११	१६। ५	१।२४	१४।४९	१। ४	११।४०	०।४५	१४।१०	१।४९
८	११।५०	१।१५	१५। ०	३।५५	४।१७	१।१२	१७।२२	१।१८	१४।५०	१। ४	११।३८	०।४५	१४। ९	१।४
१२	११। १	१।११	१५।५३	३।४१	४।३१	१।१३	१८।४०	१।१०	१४।५२	१। ५	११।३६	०।४५	१४। ७	१।४९
१६	१०।१०	१। ७	१७। ८	३।१५	४।४५	१।१४	१९।४७	१। २	१४।५४	१। ६	११।३३	०।४५	१४। ६	१।४९
२०	९।१९	१। २	१८।३६	२।३९	४।५८	१।१५	२०।४६	०।५३	१४।५६	१। ७	११।३०	०।४५	१४। ५	१।४९
२४	८।२६	०।५८	२०।१२	१।५८	५।१०	१।१६	३१।३५	०।४४	१४।५९	१। ७	११।२७	०।४५	१४। ४	१।४९
२८	७।३२	०।५४	२१।४३	१।११	५।२१	१।१७	२२।२०	०।३५	१५। २	१। ८	११।२३	०।४४	१४। ३	१।४८
जुलाई २	६।३६	०।५०	२२।५८	−०।२३	५।३१	१।१८	२२।५०	०।२५	१५। ६	१। ९	११।१९	०।४४	१४। २	१।४८
६	५।४१	०।४६	२३।४५	+०।२२	५।४०	१।१९	२३।१०	०।१५	१५।१०	१। ९	११।१५	०।४४	१४। १	१।४८
१०	४।४३	०।४२	२३।५४	१। ०	५।४९	१।२०	२३।१९	−०। ५	१५।१५	१।१०	११।११	०।४४	१४। १	१।४८
१४	३।४५	०।३९	२३।२०	१।२८	५।५७	१।२१	२३।१७	+०। ४	१५।२०	१।१०	११। ६	०।४४	१४। १	१।४८
१८	+२।४७	+०।३५	+२२। ४	+१।४४	+६। ३	−१।२२	+२३। ५	+०।१४	−१५।२५	−१।११	+११। २	+०।४४	−१४। ०	+१।४७

मङ्गल आदि ग्रहों की स्पष्ट क्रान्ति एवं शर(भा. स्टें. टा. ० घं. ० मि.)

मङ्गल आदि ग्रहों की स्पष्ट क्रान्ति एवं शर (भा. स्टैं. टा. ० घं. ० मि.)

(सं. २०२०)

सन १९६३ तारीख	मङ्गल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		वरुण		इन्द्र	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई २२	+१।४८	+०।३२	+२०।१४	+१।४८	+६। ८	−१।२३	+२२।४१	+०।२३	−१५।३१	−१।१२	+१०।५८	+०।४४	−१४। ०	+१।४७
२६	+०।४८	०।२९	१८। १	१।४२	६।११	१।२४	२२। ६	०।३३	१५।३६	१।१२	१०।५३	०।४४	१४। १	१।४७
३०	−०।१२	०।२५	१५।३०	१।२७	६।१४	१।२५	२१।२२	०।४१	१५।४२	१।१३	१०।४८	०।४४	१४। १	१।४७
अग. ३	१।१५	०।२२	१२।५०	१। ४	६।१६	१।२६	२०।२७	०।४९	१५।४८	१।१३	१०।४३	०।४४	१४। १	१।४६
७	२।१६	०।१८	१०। ७	०।३६	६।१६	१।२७	१९।२३	०।५७	१५।५४	१।१३	१०।३८	०।४४	१४। २	१।४७
११	३।१८	०।१५	७।२३	+०। २	६।१६	१।२८	१८।१७	१। ३	१६। ०	१।१४	१०।३८	०।४८	१४। ३	१।४६
१५	४।२०	०।१२	४।४३	−०।३२	६।१४	१।२९	१६।४८	१। ९	१६। ६	१।१४	१०।२७	०।४४	१४। ४	१।४६
१९	५।२२	०। ९	+२।१०	१।१२	६।१०	१।३०	१५।२१	१।१४	१६।१२	१।१४	१०।२२	०।४४	१४। ४	१।४६
२३	६।२४	०। ६	−०।११	१।५२	६। ६	१।३१	१३।४७	१।१८	१६।१८	१।१५	१०।१६	०।४३	१४। ६	१।४५
२७	७।२५	+०। ३	२।१७	२।३१	६। ०	१।३२	१२। ४	१।२१	१६।२४	१।१५	१०।११	०।४३	१४। ७	१।४५
३१	८।२६	०। ०	४। ०	३। ९	५।५५	१।३३	१०।१८	१।२३	१६।२९	१।१५	१०। ५	०।४३	१४। ९	१।४५
सितं. ४	९।२७	−०। ३	५।१३	३।४२	५।४७	१।३४	८।२६	१।२५	१६।३४	१।१५	१०। ०	०।४४	१४।११	१।४५
८	१०।२७	०। ६	५।४७	४। ५	५।३८	१।३५	६।३०	१।२५	१६।३९	१।१५	९।५४	०।४४	१४।१२	१।४४
१२	११।२७	०। ८	५।१९	४।१३	५।२९	१।३६	४।३३	१।२४	१६।४३	१।१५	९।४९	०।४४	१४।१४	१।४४
१६	१२।२५	०।११	४। ०	३।५५	५।१९	१।३६	२।३३	१।२२	१६।४७	१।१५	९।४३	०।४४	१४।१६	१।४४
२०	१३।२२	०।१४	−१।४१	३। ९	५। २	१।३७	+०।३२	१।१९	१६।५१	१।१५	९।३८	०।४४	१४।१८	१।४४
२४	१४।१९	०।१६	+०।५८	१।५७	४।५१	१।३७	−१।२९	१।१५	१६।५५	१।१५	९।३३	०।४४	१४।२०	१।४४
२८	१५।१४	०।१९	३। ५	−०।३७	४।४४	१।३८	३।३१	१।१०	१६।५८	१।१५	९।२८	०।४४	१४।२३	१।४४
अक्तूबर २	१६। ७	०।२२	४। २	+०।३२	४।३२	१।३८	५।३३	१। ४	१७। ०	१।१५	९।२२	०।४४	१४।२५	१।४३
६	१६।५९	०।२४	३।४१	१।२२	४।१९	१।३८	७।३२	०।५७	१७। २	१।१५	९।१७	०।४४	१४।२७	१।४३
१०	१७।४८	०।२६	+२।१२	१।४९	४। ७	१।३८	९।२८	०।५०	१७। ४	१।१५	९।१३	०।४४	१४।२९	१।४३
१४	१८।३५	०।२९	−०। ५	१।५८	३।५५	१।३८	११।२१	०।४२	१७। ५	१।१५	९। ८	०।४४	१४।३२	१।४३
१८	१९।२०	०।३१	२।४२	१।५४	३।४३	१।३७	१३।११	०।३३	१७। ५	१।१४	९। ४	०।४४	१४।३५	१।४३
२२	२०। ३	०।३३	५।३१	१।३९	३।३१	१।३७	१४।५४	०।२४	१७। ५	१।१४	९। ०	०।४४	१४।३७	१।४३
२६	२०।४३	०।३६	८।२२	१।१९	३।२१	१।३१	१६।३३	०।१४	१७। ५	१।१४	८।५६	०।५४	१४।४०	१।४३
३०	२१।२०	०।३८	११। ९	०।५५	३।१०	१।३६	१८। ५	+०। ४	१७। ४	१।१४	८।५२	१४।४३	१४।४३	१।४३
नवं० ३	२१।५४	०।४०	१३।४६	०।२९	३। १	१।३५	१९।२८	−०। ५	१७। २	१।१४	८।४९	०।४५	१४।४५	१।४३
७	२२।२६	०।४२	१६।११	+०। २	२।५३	१।३४	२०।४२	०।१५	१७। ०	१।१३	८।४६	०।४५	१४।४८	१।४३
११	२२।५३	०।४४	१८।२४	−०।२४	२।४५	१।३३	२१।४९	०।२६	१६।५८	१।१३	८।४३	०।४५	१४।५०	१।४३
१५	−२३।१७	−०।४६	−२०।२२	−०।५०	+२।४०	−१।३२	−२२।४५	−०।३६	−१६।५५	−१।१३	+८।४०	+०।४५	−१४।५३	+१।४३

मङ्गल आदि ग्रहों की स्पष्ट क्रान्ति एवं शर (भा. स्टैं. टा. ० घं. ० मि.)

(सं. २०२०)

सन् १९६३-६४ तारीख	मङ्गल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		वरुण		इन्द्र	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
नवं० १९	−२३।३८	−०।४७	−२२। ५	−१।१४	+२।२४	−१।३१	−२३।३१	−०।४६	−१६।५२	−१।१३	+८।३८	+०।४५	−१४।५६	+१।४३
२३	२३।५५	०।४९	२३।२९	१।३६	२।३०	१।३०	२४। ५	०।५५	१६।४८	१।१२	८।३६	०।४७	१४।५८	१।४३
२७	२४। ७	०।५१	२४।३४	१।५४	२।२८	१।२९	२४।२७	१। ४	१६।४४	१।१२	८।३४	०।४६	१५। १	१।४३
दिसं. १	२४।१५	०।५२	२५।२०	२।०८	२।२७	१।२८	२४।३९	१।१३	१६।३९	१।१२	८।३३	०।४६	१५। २	१।४३
५	२४।२०	०।५४	२५।४३	२।१८	२।२७	१।२७	२४।३७	१।२०	१६।३४	१।१२	८।३२	०।४६	१५। ५	१।४३
९	२४।२०	०।५५	२५।४४	२।२०	२।२९	१।२५	२४।२४	१।२७	१६।२८	१।१२	८।३१	०।४६	१५। ७	१।४३
१३	२४।१६	०।५६	२५।२१	२।१४	२।३२	१।२४	२३।५९	१।३३	१६।२२	१।१२	८।३१	०।४७	१५। ९	१।४३
१७	२४। ७	०।५८	२४।३७	१।५६	२।३६	१।२३	२३।२३	१।३८	१६।१६	१।१२	८।३१	०।४७	१५।११	१।४३
२१	२३।५४	०।५९	२३।३५	१।२३	२।४२	१।२२	२२।३४	१।४२	१६। ९	१।११	८।३१	०।४७	१५।१३	१।४४
२५	२३।३६	१। ०	२२।२५	−०।३२	२।४९	१।२१	२१।३६	१।४४	१६। २	१।११	८।३२	०।४७	१५।१५	१।४४
२९	२३।१५	१। १	२१।१८	+०।४७	२।५७	१।१९	२०।२८	१।४६	१५।५५	१।११	८।३३	०।४७	१५।१७	१।४४
जन. २	२२।४९	१। २	२०।२९	१।५४	३। ५	१।१८	१९।१०	१।४७	१५।४८	१।११	८।३३	०।४७	१५।१९	१।४४
(१९६४)६	२२।१९	१। ३	२०। १	२।५५	३।१५	१।१७	१७।४३	१।४६	१५।४०	१।११	८।३४	०।४७	१५।२०	१।४५
१०	२१।४०	१। ३	१९।५७	३।१९	३।२६	१।१६	१६। ९	१।४४	१५।३२	१।११	८।३५	०।४८	१५।२१	१।४५
१४	२१। २	१। ४	२०।१३	३। ८	३।३९	१।१५	१४।२८	१।४०	१५।२३	१।११	८।३७	०।४८	१५।२१	१।४५
१८	२०।२५	१। ४	२०।४३	२।३८	३।५२	१।१४	१२।४१	१।३५	१५।१४	१।११	८।३९	०।४८	१५।२२	१।४६
२२	१९।३९	१। ५	२१।१७	२। ०	४। ६	१।१३	१।४९	१।२९	१५। ५	१।११	८।४१	०। ८	१५।२३	१।४६
२६	१८।५०	१। ५	२१।४४	१।१९	४।२०	१।१२	८।५३	१।२१	१४।५६	१।११	८।४४	०।४८	१५।२४	१।४६
३०	१७।५७	१। ५	२२। १	०।३९	४।३६	१।११	६।५२	१।१२	१४।४७	१।१२	८।४८	०।४८	१५।२५	१।४७
फर. ३	१७। ३	१। ५	२२। २	+०। २	४।५२	१।१०	४।५०	१। २	१४।३८	१।१२	८।५२	०।४९	१५।२६	१।४७
७	१६। ४	१। ५	२१।४६	−०।३०	५। ९	१। ९	२।४५	०।५१	१४।२८	१।१२	८।५६	०।४९	१५।२६	१।४७
११	१५। ३	१। ५	२१।१०	०।५९	५।२६	१। ९	−०।४०	०।३८	१४।१४	१।१२	९। ०	०।४९	१५।२७	१।४७
१५	१४। ०	१। ४	२०।१४	१।२४	५।४४	१। ८	+१।२७	०।२५	१४। ९	१।१२	९। ४	०।४९	१५।२७	१।४८
१९	१२।५४	१। ४	१८।५७	१।४४	६। ३	१। ७	३।३२	−०।१०	१४। ०	१।१३	९। ८	०।४९	१५।२७	१।४८
२३	११।४६	१। ३	१७।१९	२। ३	६।२२	१। ६	५।३७	+०। ५	१३।५०	१।१३	९।१२	०।५०	१५।२७	१।४८
२७	१०।३६	१। ३	१५।१९	२। ९	६।४१	१। ६	७।३९	०।२१	१३।४१	१।१३	९।१६	०।५०	१५।२६	१।४९
मार्च २	९।२५	१। २	१२।५९	२। ९	७। १	१। ५	९।४०	०।३८	१३।३१	१।१४	९।१९	०।५०	१५।२५	१।४९
६	८।१३	१। १	१०।१७	२। ४	७।२१	१। ५	११।३६	०।५५	१३।२१	१।१४	९।२३	०।५०	१५।२४	१।४०
१०	७। ०	१। ०	७।१६	१।५१	७।४१	१। ४	१३।२८	१।१३	१३।१२	१।१४	९।२७	०।५०	१५।२३	१।४९
१४	−५।४७	−०।५९	−३।५५	−१।३०	+८। १	−१। ३	+१५।१५	+१।३०	−१३। ३	−१।१५	+९।३१	+०।५०	−१५।२१	+१।५०

सूर्य क्रान्ति (भा. स्टैं. टा. ० घं. ० मि. के लिए)

(सं० २०२०)

तारीख	मार्च १९६३	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्तूबर	नवंबर	दिसंबर	जनवरी १९६४	फरवरी	मार्च
	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.	अ.क.
१	——	+४। ५	+१४।४१	+२१।५३	+२३।११	+१८।२०	+८।४४	−२।४२	−१४। २	−२१।३७	−२३। ६	−१७।३०	−७।४६
२	——	४।२८	१५। ०	२२। २	२३। ७	१८। ५	८।२२	३। ६	१४।२१	२१।४७	२३। २	१७।१३	७।२३
३	——	४।५१	१५।१९	२२। ९	२३। ३	१७।५०	७।५९	३।२९	१४।४०	२१।५६	२२।५६	१६।५६	७। ०
४	——	५।१४	१५।३७	२२।१७	२२।५८	१७।३४	७।३७	३।५२	१४।५९	२२। ५	२२।५१	१६।३९	६।३७
५	——	५।३७	१५।५५	२२।२५	२२।५३	१७।१८	७।१५	४।१५	१५।१८	२२।१२	२२।४५	१६।२१	६।१३
६	——	६। ०	१६।१२	२२।३१	२२।४७	१७। २	६।५३	४।३८	१५।३७	२२।२०	२२।३९	१६। ३	५।५१
७	——	६।२३	१६।२९	२२।३७	२२।४२	१६।४५	६।३१	५। १	१५।५६	२२।२७	२२।३३	१५।४४	५।२७
८	——	६।४६	१६।४६	२२।४३	२२।३६	१६।२९	६। ९	५।२४	१६।१४	२२।३४	२२।२६	१५।२६	५। ४
९	——	७। ८	१७। २	२२।४९	२२।३०	१६।१२	५।४७	५।४७	१६।३१	२२।४१	२२।१८	१५। ८	४।४१
१०	——	७।३०	१७।१८	२२।५४	२२।२३	१५।५४	५।२४	६।१०	१६।४८	२२।४८	२२।१०	१४।४९	४।१७
११	——	७।५३	१७।३४	२२।५९	२२।१६	१५।३७	५। २	६।३३	१७। ६	२२।५३	२२। १	१४।२९	३।५३
१२	——	८।१५	१७।४९	२३। ४	२२। ८	१५।१९	४।३९	६।५५	१७।२२	२२।५८	२१।५१	१४।१०	३।३०
१३	——	८।३८	१८। ४	२३। ८	२२। ०	१५। २	४।१७	७।१८	१७।३९	२३।४	२१।४२	१३।५०	३। ६
१४	——	८।५९	१८।१९	२३।११	२१।५१	१४।४४	३।५४	७।४१	१७।५४	२३।८	२१।३२	१३।३०	२।४३
१५	——	८।२१	१८।३४	२३।१४	२१।४२	१४।२६	३।३०	८। ४	१८।१०	२३।१२	२१।२२	१३।१०	−२।१९
१६	——	९।४२	१८।४८	२३।१७	२१।३३	१४। ८	३। ७	८।२६	१८।२५	२३।१५	२१।१२	१२।४९	——
१७	——	१०। ४	१९। २	२३।२०	२१।२४	१३।४३	२।४४	८।४९	१८।४०	२३।१८	२१। २	१२।२८	——
१८	——	१०।२५	१९।१७	२३।२३	२१।१४	१३।३०	२।२१	९।११	१८।५६	२३।२१	२०।५०	१२। ७	——
१९	——	१०।४६	१९।३१	२३।२५	२१। ४	१३।११	१।५८	९।३३	१९।११	२३।२३	२०।३८	११।४६	——
२०	——	११। ७	१९।४४	२३।२६	२०।५३	१२।५१	१।३५	९।५५	१९।२५	२३।२५	२०।२५	११।२५	——
२१	——	११।२७	१९।५७	२३।२६	२०।४२	१२।३१	१।११	१०।१७	१९।३९	२३।२६	२०।१२	११। ४	——
२२	——	११।४७	२०। ९	२३।२६	२०।३१	१२।११	०।४८	१०।३८	१९।५३	२३।२६	१९।५९	१०।४३	——
२३	——	१२। ८	२०।२१	२३।२६	२०। १	११।५१	०।२५	११। ०	२०। ६	२३।२६	१९।४६	१०।२१	——
२४	——	१२।२७	२०।३२	२३।२५	२०। ७	११।३१	+०। १	११।२१	२०।१८	२३।२६	१९।३२	९।५९	——
२५	+१।२०	१२।४७	२०।४४	२३।२४	१९।५४	११।१०	−०।२२	११।४१	२०।३०	२३।२५	१९।१९	९।३७	——
२६	१।४४	१३। ७	२०।५५	२३।२३	१९।४२	१०।५०	०।४६	१२। २	२०।४२	२३।२४	१९। ४	९।१५	——
२७	२।१०	१३।२६	२१। ६	२३।२१	१९।२९	१०।२९	१। ९	१२।२३	२०।५४	२३।२३	१८।४०	८।५३	——
२८	२।३१	१३।४५	२१।१६	२३।१९	१९।१५	१०। ८	१।३२	१२।४३	२१। ५	२३।२१	१८।३५	८।३०	——
२९	२।५५	१४। ४	२१।२६	२३।१७	१९। २	९।४७	१।५६	१३। ३	२१।१६	२३।१९	१८।१९	८। ८	——
३०	३।१८	+१४।४३	२१।३५	+२३।१४	१८।४८	९।२५	−२।१९	१३।२३	−२१।२७	२३।१५	१८। ३	——	——
३१	+३।४१	——	+२१।४५	——	+१८।३४	+९। ४	——	−१३।४३	——	−२३।११	−१७।४७	——	——

— ग्रह निरयण राशिप्रवेश —
(सं० २०२०)

सूर्य

राशि	तारीख
मेष	१३- -४-६३
वृष	१४- ५-६३
मिथु.	१५- ६-६३
कर्क	१६- ७-६३
सिंह	१६- ८-६३
कन्या	१६- ९-६३
तुला	१७-१०-६३
वृश्चि.	१६-११-६३
धनु	१५-१२-६३
मकर	१४- १-६४
कुम्भ	१२- २-६४
मीन	१३- ३-६४

मंगल

राशि	तारीख
सिंह	१९- ५-६३
कन्या	१५- ७-६३
तुला	२- ९-६३
वृश्चि.	१६-१०-६३
धनु	२६-११-६३
मकर	४- १-६४
कुम्भ	११- २-६४

बुध

राशि	तारीख
मेष	६- ४-६३
वृष	२४- ४-६३
व. मेष	२४- ५-६३
वृष	६- ६-६३
मिथुन	३०- ६-६३
कर्क	१५- ७-६३
सिंह	३०- ७-६३
कन्या	१९- ८-६३
व. सिंह	२३- ९-६३
तुला	२४-१०-६३

बध

राशि	तारीख
वृश्चिक	१२-११-६३
धनु	१-१२-६३
मकर	६- २-६४
कुम्भ	२५- २-६४
मीन	१३- ३-६४

गुरु

राशि	तारीख
मेष	१४- ३-६३

शुक्र

राशि	तारीख
मीन	१८- ४-६३
मेष	१३- ५-६३
वृष	७- ६-६३
मिथुन	२- ७-६३
कर्क	२६- ७-६३
सिंह	१९- ८-६३
कन्या	१३- ९-६३
तुला	७-१०-६३
वृश्चि.	३१-१०-६३
धनु	२४-११-६३
मकर	१८-१२-६३
कुम्भ	११- १-६४
मीन	५- २-६४
मेष	१- ३-६४

शनि

राशि	तारीख
कुंभ	२८- १-६३

राहु

राशि	तारीख
मिथुन	१९- ५-६३

केतु

राशि	तारीख
धनु	१९- ५-६३

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

तारीख मार्च १९६३	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	घं. मि. ६।० बजे	घं. मि. १२।० बजे	घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	शर	चण्डीगढ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क	रा. अ. क.	रा. अं. क.	रा. अ. क	अं. क.	अ. क.	घ. मि.	घ. मि
२६	११।१४।४९	११।१८।३९	११।२२।२८	११।२६।१६	−१। ९	−४।४६	७। ५	१९।३९
२७	०। ०। ५	०। ३।५२	०। ७।४०	०।११।२६	+४।२४	५। ०	७।४६	२०।४९
२८	०।१५।१३	०।१८।५९	०।२२।४३	०।२६।२६	९।४०	४।५६	८।२८	२१।५८
२९	१। ०। ७	१। ३।४८	१। ७।२७	१।११। ५	१४।१६	४।२९	९।१३	२३।५
३०	१।१४।४०	१।१८।१४	१।२१।४७	१।२५।१८	१७।५४	३।४७	१०। १	——
३१	१।२८।४८	२। २।१५	२। ५।४१	२। ९। ५	२०।२०	२।५२	१०।५१	०। ९
अप्रै. १	२।१२।२८	२।१५।४९	२।१९। ९	२।२२।२८	२१।३१	१।४७	११।४५	१। ९
२	२।२५।४५	२।२९। ०	३। २।१४	३। ५।२७	२१।२५	−०।४०	१२।४२	२।५
३	३। ८।४०	३।११।५१	३।१५। ०	३।१८। ८	२०।११	+०।२८	१३।३८	२।५४
४	३।२१।१६	३।२४।२३	३।२७।३०	४। ०।३६	१७।५७	१।३३	१४।३६	३।३७
५	४। ३।४१	४। ६।४५	४। ९।४९	४।१२।५२	१४।५४	२।३३	१५।३२	४।१५
६	४।१५।५५	४।१८।५७	४।२१।५९	४।२५। ०	११।१६	३।२४	१६।२६	४।५१
७	४।२८। १	५। १। १	५। ४। १	५। ७। १	७।१३	४। ६	१७।२०	५।२४
८	५।१०। ०	५।१२।५९	५।१५।५८	५।१८।५८	+२।५४	४।३७	१८।१२	५।५५
९	५।२१।५७	५।२४।५६	५।२७।५४	६। ०।५२	−१।२८	४।५४	१९। ४	६।२५
१०	६। ३।५०	६। ६।४८	६। ९।४६	६।१२।४४	५।४८	४।५८	१९।५८	६।५६
११	६।१५।४२	६।१८।४०	६।२१।३९	६।२४।३७	९।५४	४।५१	२०।५०	७।२८
१२	६।२७।३५	७। ०।३४	७। ३।३३	७। ६।३२	१३।२९	४।२९	२१।४४	८। ३
१३	७। ९।३०	७।१२।३०	७।१५।३०	७।१८।३०	१६।५०	३।५८	२२।३९	८।४०
१४	७।२१।३१	७।२४।३२	७।२७।३४	८। ०।३६	१९।२२	३।१४	२३।३४	९।२०
१५	८। ३।३९	८। ६।४३	८। ९।४७	८।१२।५२	२१। ३	२।२१	——	१०। ६
१६	८।१५।५८	८।१९। ५	८।२२।१४	८।२५।२५	२१।४६	१।२१	०।२६	१०।५७
१७	८।२८।३६	९। १।४९	९। ५। २	९। ८।१८	२१।२४	+०।१५	१।१७	११।५२
१८	९।११।३४	९।१४।५३	९।१८।१३	९।२१।३४	१९।५५	−०।५२	२। ५	१२।५१
१९	९।२४।५७	९।२८।२२	१०। १।४९	१०। ५।१७	१७।१६	२। १	२।५१	१३।५४
२०	१०। ८।४७	१०।१२।२०	१०।१५।५४	१०।१९।३०	१३।३४	३। ३	३।३५	१४।५९
२१	१०।२३। ८	१०।२६।४८	११। ०।२९	११। ४। ३	८।५९	३।५६	४।१६	१६। ६
२२	११। ८। ०	११।११।४३	११।१५।२८	११।१९।१५	−३।४४	४।३६	४।५६	१७।१४
२३	११।२३। ४	११।२६।५३	०। ०।४२	०। ४।३२	+१।५६	४।५७	५।३६	१८।२४
२४	०। ८।२२	०।१२।१२	०।१६। २	०।१९।५१	७।२४	४।५७	६।१७	१९।३४

तारीख अप्रै. १९६३	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	घं. मि. ६।० बजे	घं. मि. १२।० बजे	घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	शर	चण्डीगढ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अ. क.	रा. अं. क	रा. अं. क.	अ. क.	अं. क.	घ. मि	घं. मि.
२६	१। ८।४६	१।१२।२९	१।१६।१२	१।१९।५३	+१६।४३	−३।५६	७।४९	२१।१३
२७	१।२३।३३	१।२७।१०	२। ०।४५	२। ४।१९	१९।४७	३। २	८।४०	२२।१८
२८	२। ७।५१	२।११।२१	२।१४।५०	२।१८।१७	२१।३०	१।५५	९।३५	२३।१६
२९	२।२१।४२	२।२५। ४	२।२८।२६	३। १।४५	२१।५१	−०।४४	१०।३३	——
३०	३। ५। ३	३। ८।२०	३।११।३५	३।१४।४९	२०।५४	+०।२५	११।३१	०।१०
मई १	३।१८। १	३।२१।१२	३।२४।२१	३।२७।२९	१८।५१	१।३२	१२।२९	१।३६
२	४। ०।३७	४। ३।४३	४। ६।४९	४। ९।५४	१५।५७	२।३३	१३।२६	२।१६
३	४।१२।५७	४।१६। ०	४।१९। २	४।२२। ४	१२।२३	३।२५	१४।२१	२।५४
४	४।२५। ६	४।२८। ६	५। १। ६	५। ४। ५	८।२३	४। ८	१५।१५	३।२७
५	५। ७। ४	५।१०। ३	५।१३। २	५।१६। ०	+४। ६	४।३९	१६। ८	३।५८
६	५।१८।५८	५।२१।५६	५।२४।५५	५।२७।५३	−०।१९	४।५६	१८। ०	४।२८
७	६। ०।५१	६। ३।४९	६। ६।४७	६। ९।४५	४।४२	५। १	१७।५३	४।५९
८	६।१२।४३	६।१५।४१	६।१८।४०	६।२१।३८	८।५४	४।५४	१८।४६	५।३१
९	६।२४।३७	६।२७।३६	७। ०।३५	७। ३।३४	१२।४८	४।३३	१९।४१	६। ३
१०	७। ६।३४	७। ९।३४	७।१२।३५	७।१५।३५	१६।१२	४। ०	२०।३६	६।३९
११	७।१८।३६	७।२१।३७	७।२४।३८	७।२७।४०	१८।५६	३।१६	२१।३०	७।२०
१२	८। ०।४३	८। ३।४७	८। ६।५०	८। ९।५४	२०।५५	२।२३	२२।२३	८। ४
१३	८।१२।५८	८।१६। ४	८।१९।१०	८।२२।१७	२१।५४	१।२३	२३।१५	८।५२
१४	८।२५।२५	८।२८।३४	९। १।४३	९। ४।५४	२१।५०	+०।१७	——	९।४६
१५	९। ८। ६	९।११।१९	९।१४।३१	९।१७।४३	२०।३९	−०।४९	०। ४	१०।४३
१६	९।२०।५५	९।२४।१८	९।२७।४१	१०। १। ३	१८।२२	१।५५	०।५०	११।४३
१७	१०। ४।२५	१०। ७।४९	१०।११।१४	१०।१४।४१	१५। ४	२।५८	१।३१	१२।४६
१८	१०।१८। ९	१०।२१।३९	१०।२५।१०	१०।२८।४३	१०।५१	३।५२	२।११	१३। ४
१९	११। २।१७	११। ५।५३	११। ९।३२	११।१३।११	५।५६	४।३४	२।५१	१४।५९
२०	११।१६।५१	११।२०।३३	११।२४।१६	११।२८। ०	−०।३४	४।५८	३।२८	१६। १
२१	०। १।४४	०। ५।३०	०। ९।१७	०।१३। ४	+४।५७	५। ६	४। ७	१७।१०
२२	०।१६।५१	०।२०।३८	०।२४।२६	०।२८।१३	१०।१६	४।४९	४।४९	१८।२०
२३	१। २। १	१। ५।४७	१। ९।३३	१।१३।१८	१४।५८	४।१४	५।३५	१९।२९
२४	१।१७। ३	१।२१।४७	१।२४।२९	१।२८।१०	१४।४०	३।२२	६।२५	२०।३८
२५	२। १।५०	२। ५।२८	२। ९। ५	२।१२।४०	२१। ५	२।१५	७।१९	२१।४३

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण राश्यादि चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा० स्टैं० टा० दिया गया है)

ता. मई १९९३	चन्द्र				घं.मि. ०।० बजे		चण्डीगढ़	
	०घं. ०मि.	६घं ०मि.	१२घं.०मि.	१८घं.०मि.	क्रान्ति	शर	चं.उ.	चं.अ.
२७	३।०।९	३।३।३४	३।६।५७	३।१०।१८	+२१।३५	+०।१२	९।१७	२३।३२
२८	३।१३।३७	३।१६।५९	३।२०।१२	३।२३।२५	१९।५२	१।२३	१०।१७	—
२९	३।२६।३८	३।२९।५१	४।३।३	४।६।१२	१७।९	२।२७	११।१७	०।१५
३०	४।९।२०	४।१२।२८	४।१५।३४	४।१८।३९	१३।४२	३।२४	१२।१४	०।५४
३१	४।२१।४३	४।२४।४७	४।२७।५०	५।०।५१	९।४४	४।९	१३।९	१।२९
जून १	५।३।५०	५।६।४९	५।९।५०	५।१२।४९	५।२७	४।४२	१४।३	२।१
२	५।१५।४९	५।१८।४८	५।२१।४६	५।२४।४४	+१।१	५।१	१४।५५	२।३१
३	५।२७।४२	६।०।४०	६।३।३८	६।६।३६	−३।२५	५।९	१५।४८	३।१
४	६।९।३४	६।१२।३२	६।१५।३०	६।१८।२९	७।४३	५।४	१६।४०	३।३२
५	६।२१।२८	६।२४।२७	६।२७।२६	७।०।२५	११।४५	४।४२	१७।३५	४।४
६	७।३।२५	७।६।२६	७।९।२७	७।१२।२८	१५।२१	४।१२	१८।३०	४।३९
७	७।१५।३०	७।१८।३१	७।२१।३३	७।२४।३६	१८।२०	३।२८	१९।२५	५।१८
८	७।२७।३९	८।०।४३	८।३।४८	८।६।५३	२०।३४	२।३५	२०।२०	६।१
९	८।९।५८	८।१३।५	८।१६।१२	८।१९।१९	२१।५०	१।३३	२१।१२	६।४९
१०	८।२२।२७	८।२५।३६	८।२८।४७	९।१।५८	२२।४	+०।२६	२२।२	७।४१
११	९।५।१०	९।८।२२	९।११।३४	९।१४।४९	२२।१०	−०।४२	२२।४९	८।३७
१२	९।१८।४	९।२१।२०	९।२४।३६	९।२७।५३	१९।९	१।५०	२३।३३	९।३७
१३	१०।१।१२	१०।४।३२	१०।७।५३	१०।११।१५	१६।६	२।५४	—	१०।३८
१४	१०।१४।३८	१०।१८।३	१०।२१।२८	१०।२४।५५	१२।९	३।५०	०।१२	११।४०
१५	१०।२८।२२	११।१।५१	११।५।२१	११।८।५२	७।३०	४।३३	०।५०	१२।४२
१६	११।१२।२४	११।१५।५८	११।१९।३२	११।२३।७	−२।२२	५।२	१।२७	१३।४६
१७	११।२६।४४	०।०।२२	०।३।५९	०।७।३८	+२।५९	५।१३	२।४	१४।५२
१८	०।११।१९	०।१५।०	०।१८।४१	०।२२।२२	८।१७	५।३	२।४३	१६।०
१९	०।२६।३	०।२९।४५	१।३।२७	१।७।८	१२।५८	४।३५	३।२५	१७।८
२०	१।१०।५०	१।१४।३१	१।१८।१३	१।२१।५४	१७।१५	३।४७	४।१२	१८।१६
२१	१।२५।३४	१।२९।१३	२।२।५२	२।६।३०	२०।१४	२।४५	५।३	१९।२२
२२	२।१०।७	२।१३।४२	२।१७।१६	२।२०।४०	२२।५१	१।३२	६।०	२०।२४
२३	२।२४।२२	२।२७।५३	३।१।२१	३।४।४८	२२।१	−०।१५	७।०	२१।१९
२४	३।८।१५	३।११।३९	३।१५।२	३।१८।२४	२०।४८	+१।०	८।१	२२।८
२५	३।२१।४४	३।२५।२	३।२८।१९	४।१।३४	+१८।२५	+२।११	९।२	२२।४९

ता. जून १९९३	चन्द्र				घं.मि. ०।० बजे		चण्डीगढ़	
	०घं. ०मि.	६घं. ०मि.	१२घं. ०मि.	१८घं. ०मि.	क्रान्ति	शर	चं. उ.	चं.अ.
२६	४।४।४८	४।८।२	४।११।१४	४।१४।२४	+१५।१८	+३।१२	१०।१	२३।२७
२७	४।१७।३३	४।२०।४१	४।२३।४७	४।२६।५३	११।१४	४।३	१०।५९	—
२८	४।२९।५८	५।३।२	५।६।५	५।९।७	६।५८	४।४१	११।५४	०।१
२९	५।१२।८	५।१५।९	५।१८।९	५।२१।८	+२।३०	५।५	१२।४८	०।३९
३०	५।२४।७	५।२७।६	६।०।५	६।३।४	−१।५९	५।१५	१३।४०	१।३
जु. १	६।६।२	६।९।०	६।११।५८	६।१४।५७	६।२२	५।१२	१४।३३	१।३६
२	६।१७।५५	६।२०।५३	६।२३।५२	६।२६।५१	१०।३०	४।५५	१५।२७	२।५
३	६।२९।५०	७।२।५१	७।५।५१	७।८।५१	१४।१६	४।२६	१६।२१	२।३९
४	७।११।५२	७।१४।५४	७।१७।५६	७।२०।५९	१७।२८	३।४५	१७।१६	३।१७
५	७।२४।२	७।२७।७	८।०।१२	८।३।१८	१९।५८	२।५३	१८।१२	३।५८
६	८।६।२४	८।९।३१	८।१२।३९	८।१५।४८	२१।३४	१।५२	१९।६	४।४४
७	८।१८।५८	८।२२।९	८।२५।२०	८।२८।३२	२२।७	+०।४५	१९।५९	५।३६
८	९।१।४६	९।५।१	९।८।१६	९।११।३२	२२।३२	−०।२६	२०।४७	६।३१
९	९।१४।४८	९।१८।६	९।२१।२४	९।२४।४४	१९।४७	१।३६	२१।३२	७।३१
१०	९।२८।४	१०।१।२५	१०।४।४६	१०।८।९	१६।५७	२।४२	२२।१४	८।३२
११	१०।११।३३	१०।१४।५७	१०।१८।२२	१०।२१।४८	१३।१०	३।३१	२२।५२	९।३४
१२	१०।२५।१४	१०।२८।४२	११।२।११	११।५।३९	८।३९	४।२९	२३।३२	१०।३६
१३	११।९।८	११।१२।३९	११।१६।१०	११।१९।४१	−३।३८	५।२	—	११।३९
१४	११।२३।१२	११।२६।४४	०।०।१७	०।३।५१	+१।३७	५।१५	०।४	१२।४३
१५	०।७।२६	०।११।०	०।१४।३४	०।१८।८	६।५१	५।११	०।४२	१३।४८
१६	०।२१।४३	०।२५।१९	०।२८।५४	१।२।३०	११।४५	४।४७	१।२२	१४।५४
१७	१।६।६	१।९।४१	१।१३।१७	१।१६।५२	१६।१	४।६	२।४	१६।०
१८	१।२०।२८	१।२४।३	१।२७।३७	२।१।११	१९।१९	३।१०	२।५२	१७।६
१९	२।४।४५	२।८।१७	२।११।५०	२।१५।२२	२१।२५	२।०	३।४५	१८।८
२०	२।१८।५३	२।२२।२३	२।२५।५३	२।२९।२२	२२।७	−०।४५	४।४४	१९।६
२१	३।२।४९	३।६।१५	३।९।४०	३।१३।४	२२।२६	+०।३२	५।४४	१९।५८
२२	३।१६।२६	३।१९।४८	३।२३।९	३।२६।२८	१९।२९	१।४४	६।४६	२०।४३
२३	३।२९।४६	४।३।३	४।६।१९	४।९।३४	१६।३०	२।११	७।४६	२१।२३
२४	४।१२।४८	४।१६।०	४।१९।१२	४।२२।२२	१२।४६	३।४७	८।४५	२१।५९
२५	४।२५।३०	४।२८।३८	५।१।४५	५।४।५०	+८।३३	+४।३०	९।४२	२२।३२

६-६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण राश्यादि चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चंद्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

ता० जुला. १९६३	चन्द्र				घं. मि. ०।० बजे		चण्डीगढ़	
	०घं. ०मि.	६घं. ०मि.	१२घं. ०मि	१८घं. ०मि	क्रान्ति	शर	चं.उ.	चं.अ.
२६	५। ७।५७	५।११। ०	५।१४। ३	५।१७। ५	+४। ४	+४।५८	१०।३७	२३। २
२७	५।२०। ७	५।२३। ८	५।२६। ९	५।२९। ८	−०।२९	५।१३	११।३१	२३।३३
२८	६। २।७	६। ५। ६	६। ८। ५	६।११। ३	४।५७	५।१४	१२।२५	——
२९	६।१४। २	६।१७। ०	६।१९।५८	६।२२।५७	९।१२	५। २	१३।१७	०। ५
३०	६।२५।५५	६।२८।५४	७। १।५३	७। ४।५२	१३। ६	४।३६	१४।१२	०।३७
३१	७। ७।५२	७।१०।५२	७।१३।५३	७।१६।५४	१६।२९	३।५८	१५। ६	१।१३
अग. १	७।१९।५६	७।२२।५८	७।२६। १	७।२९। ५	१९।१३	३।१२	१६। २	१।५२
२	८। २।११	८। ५।१७	८। ८।२४	८।११।३२	२१।०८	२।१४	१६।५६	२।३६
३	८।१४।४१	८।१७।५१	८।२१। ३	८।२४।१६	२२। ४	+१। ८	१७।४९	३।२५
४	८।२७।२९	९। ०।४४	९। ४। ०	९। ७।१७	२२।५२	−०। २	१८।४०	४।२०
५	९।१०।३५	९।१३।५४	९।१७।१४	९।२०।३६	२०।२८	१।१३	१९।२७	५।१९
६	९।२३।५९	९।२७।२४	१०। ०।४९	१०। ४।१५	१७।५४	२।२२	२०। १	६।२०
७	१०। ७।४१	१०।११। ८	१०।१४।३७	१०।१८। ७	१४।१८	३।२३	२०।५१	७।२४
८	१०।२१।३७	१०।२५। ७	१०।२८।३८	११। २।११	९।५९	४।१५	२१।२९	८।२८
९	११। ५।४४	११। ९।१७	११।१२।५०	११।१६।२३	−४।५१	४।५२	२२। ६	९।३२
१०	११।१९।५६	११।२३।३०	११।२७। ५	०। ०।३९	+०।२७	५।११	२२।४३	१०।३५
११	०। ४।१३	०। ७।४७	०।११।२१	०।१४।५४	५।४५	५।१०	२३।२२	११।३९
१२	०।१८।२८	०।२२। २	०।२५।३५	०।२९। ८	१०।४५	४।५०	——	१२।४५
१३	१। २।४१	१। ६।१३	१। ९।४५	१।१३।१७	१५। ८	४।१३	०। ३	१३।५१
१४	१।१६।४८	१।२०।१८	१।२३।४८	१।२७।१८	१८।३८	३।२२	०।५१	१४।५५
१५	२। ०।४७	२। ४।१६	२। ७।४४	२।११।११	२१। १	२।१८	१।३८	१५।५८
१६	२।१४।३८	२।१८। ४	२।२१।३१	२।२४।५६	२२। ६	−१। ५	२।३३	१६।५५
१७	२।२८।२०	३। १।४४	३। ५। ६	३। ८।२८	२२।५०	+०। ८	३।३२	१७।४९
१८	३।११।४८	३।१५।५९	३।१८।२९	३।२१।४८	२०।१७	१।३१	४।३२	१८।३६
१९	३।२५। ७	३।२८।२४	४। १।४१	४। ४।५७	१७।३८	२।२७	५।३३	१९।१८
२०	४। ८।१२	४।११।२६	४।१४।३९	४।१७।५१	१४। ८	३।२६	५।३३	१९।५५
२१	४।२१। १	४।२४।११	४।२७।२१	५। ०।२९	१०। २	४।१२	७।३०	२०।३०
२२	५। ३।३६	५। ६।४२	५। ९।४८	५।१२।५२	५।३५	४।४६	८।२७	२१। १
२३	५।१५।५६	५।१८।५९	५।२२। २	५।२५। ५	+०।५९	५। ४	९।२१	२१।३३
२४	५।२८। ७	६। १। ७	६। ४। ६	६। ७। ५	−३।३४	+५। ९	१०।१४	२२। ३

ता० अग. १९६३	चन्द्र				घं. मि. ०।० बजे		चण्डीगढ़	
	०घं. ०मि	६घं. ०मि.	१२घं. ०मि.	१८घं. ०मि	क्रान्ति	शर	चं. उ.	चं. अ.
२५	६।१०। ५	६। ८। ३	६।१६। १	६।१८।५९	−७।५६	+५। १	११। ८	२२।३५
२६	६।२१।५८	६।२४।५५	६।२७।५३	७। ०।५१	११।५८	४।३८	१२। २	२३।१०
२७	७। ३।४९	७। ६।४७	७। ९।४६	७।१२।४५	१५।३२	४। ५	१२।५६	२३।४७
२८	७।१५।४४	७।१८।४४	७।२१।४५	७।२४।४६	१८।३०	३।२०	१३।५१	——
२९	७।२७।४७	८। ०।५०	८। ३।५३	८। ६।५७	२०।४१	२।२७	१४।४५	०।२९
३०	८।१०। ३	८।१३।१०	८।१६।१८	८।१९।२७	२१।५७	१।२६	१५।३८	१।१५
३१	८।२२।३७	८।२५।४८	८।२९। ०	९। २।१५	२२।१०	+०।२०	१६।३०	२। ६
सितं. १	९। ५।३१	९। ८।४८	९।१२। ७	९।१५।२७	२२।१२	−०।५०	१७।१८	३। ५
२	९।१८।४९	९।२२।१३	९।२५।३८	९।२९। ५	१९। ३	१।५९	१७।५४	४। ४
३	१०। २।३३	१०। ६। ३	१०। ९।३३	१०।१३। ५	१५।४६	३। १	१८।४७	५। ८
४	१०।१६।३७	१०।२०।१२	१०।२३।४७	१०।२७।२४	११।३०	४। २	१९।२६	६।१३
५	११। १। १	११। ४।३८	११। ८।१६	११।११।५५	६।३०	४।३८	२०। ३	७।१८
६	११।१५।३५	११।१९।१४	११।२२।५४	११।२६।३४	−१। ४	४।५९	२०।४२	८।२३
७	०। ०।१४	०। ३।५४	०। ७।३४	०।११।१२	+४।२६	५। ४	२१।२०	९।३०
८	०।१४।५१	०।१८।३०	०।२२। ८	०।२५।४४	९।४१	४।४७	२२। २	१०।३७
९	०।२९।२१	१। २।५५	१। ६।३०	१।१०। ३	१४।२१	४।१३	२२।४६	११।४४
१०	१।१३।३६	१।१७। ४	१।२०।३१	१।२४। ५	१८। ७	३।२४	२३।३५	१२।५०
११	१।२७।३९	२। १। ८	२। ४।३५	२। ८। २	२०।४६	२।२२	——	१३।५३
१२	२।११।२७	२।१४।५३	२।१८।१५	२।२१।३९	२२। ७	१।१३	०।२८	१४।५२
१३	२।२४।५९	२।२८।२०	३। १।४१	३। ५। ०	२२। ९	−०। २	१।२५	१५।४५
१४	३। ८।१९	३।११।३६	३।१४।५४	३।१८।१०	२०।५४	+१।०८	२।२४	१६।३३
१५	३।२१।२७	३।२४।४२	३।२७।५६	४। १। ५	१८।३२	२।१३	३।२४	१७।१६
१६	४। ४।१३	४। ७।३१	४।१०।४६	४।१३।५८	१५।१६	३।१२	४।२३	१७।५४
१७	४।१७। ७	४।२०।१६	४।२३।२६	४।२६।३३	११।२०	३।५९	५।२१	१८।२८
१८	४।२९।४१	५। २।४७	५। ५।५३	५। ८।५८	६।५७	४।३३	६।१८	१९। १
१९	५।१२। ४	५।१५। ८	५।१८।१२	५।२१।१५	+२।२२	४।५३	७।१३	१९।३१
२०	५।२४।१७	५।२७।१८	६। ०।२०	६। ३।२०	−२।१५	५। १	८। ६	२०। ३
२१	६। ६।२०	६। ९।१९	६।१२।१८	६।१५।१६	६।४४	४।५५	९।००	२०।३४
२२	६।१८।१५	६।२१।१३	६।२४।११	६।२७। ८	१०।५६	४।३५	९।५३	२१। ८
२३	७। ०।६	७। ३। ४	७। ६। १	७। ८।५८	१४।४१	+४। ४	१०।४७	२१।४३

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण राश्यादि चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर एवं चन्द्रोदयास्त

तारीख सित. १९६३	चन्द्र				घं. मि. ०।० बजे		चण्डीगढ़	
	०घं. ०मि.	६घं. ०मि.	१२घं.०मि.	१८घं.०मि.	क्रान्ति	शर	चं. उ.	चं.अ.
२४	७।११।५६	७।१४।५३	७।१७।५०	७।२०।४९	−१७।५२	+३।२३	११।४२	२२।२३
२५	७।२३।४८	७।२६।४७	७।२९।४७	८। २।४८	२०।१७	३।३२	१२।३५	२३। ७
२६	८। ५।४८	८। ८।५०	८।११।५२	८।१४।५६	२१।५२	१।३४	१३।२८	२३।५५
२७	८।१८। १	८।२१। ६	८।२४।१३	८।२७।२२	२२।२६	+०।३१	१४।१९	——
२८	९। ०।३१	९। ३।४३	९। ६।५६	९।१०।१०	२२।५५	−०।३५	१५। ८	०।४९
२९	९।१३।२५	९।१६।४३	९।२०। ३	९।२३।२५	२०।१३	१।४१	१५।५४	१।४६
३०	९।२६।५०	१०। ०।१३	१०। ३।३८	१०। ७। ६	१७।४३	२।४४	१६।३८	२।४७
अक्तू. १	१०।१०।३६	१०।१४। ८	१०।१७।४२	१०।२१।४७	१३।२९	३।४२	१७।१७	३।५२
२	१०।२४।५५	१०।२८।३७	११। २।१२	११। ५।५२	८।४२	४।२३	१७।५७	४।५८
३	११। ९।३५	११।१३।१८	११।१७। २	११।२०।४६	−३।१८	४।५२	१८।३६	६। ६
४	११।२४।३१	११।२८।१७	०। २। ४	०। ५।५०	+२।२२	४।५९	१९।१५	७।१३
५	०। ९।३६	०।१३।२२	०।१७। ८	०।२०।५२	७।५८	४।४७	१९।५७	८।२२
६	०।२४।३७	०।२८।२०	१। २। ४	१। ५।४५	१३। ५	४।१५	२०।४२	९।३१
७	१। ९।२७	१।१३। ५	१।१६।४४	१।२०।२०	१७।२०	३।२७	२१।२९	१०।३९
८	१।२३।५७	१।२७।३२	२। १। ५	२। ४।३६	२०।२५	२।२५	२२।२३	११।४५
९	२। ८। ६	२।११।३५	२।१५। ३	२।१८।२९	२२।१०	१।१५	२३।२०	१२।४७
१०	२।२१।५४	२।२५।१६	२।२८।३९	३। १।५९	२२।३०	−०।४	——	१३।४३
११	३। ५।२०	३। ८।३८	३।११।५६	३।१५।१२	२१।३१	+१। ६	०।१९	१४।३३
१२	३।१८।२८	३।२१।४२	३।२४।५६	३।२८। ८	१९।२२	२।११	१।१९	१६।१७
१३	४। १।२०	४। ४।३०	४। ७।४०	४।१०।४९	१६।१६	३। ९	२।१७	१५।५६
१४	४।१३।५९	४।१७। ६	४।२०।१४	४।२३।२०	१२।२८	३।५६	३।१४	१६।३१
१५	४।२६।२७	४।२९।३२	५। २।३७	५। ५।४१	८।११	४।३०	४।१२	१७। ३
१६	५। ८।४५	५।११।५०	५।१४।५३	५।१७।५५	+३।३८	४।५१	५। ६	१७।३४
१७	५।२०।५६	५।२३।५७	५।२६।५९	६। ०। ०	−१। १	४।५९	६। ०	१८। ४
१८	६। ३। ०	६। ५।५९	६। ८।५८	६।११।५७	५।३५	४।५४	६।५३	१८।३५
१९	६।१४।५६	६।१७।५४	६।२०।५२	६।२३।४९	९।५५	४।३४	७।४६	१९। ७
२०	६।२६।४७	६।२९।४५	७। २।४३	७। ५।४०	१३।५१	४। ४	८।४०	१९।४२
२१	७। ८।३७	७।११।३४	७।१४।३१	७।१७।२८	१७।१३	३।२४	९।३४	२०।२०
२२	७।२०।२६	७।२३।२३	७।२६।२०	७।२९।१८	१९।५४	२।३३	१०।२९	२१। १
२३	८। २।१७	८। ५।१५	८। ८।१४	८।११।१४	−२१।४५	+१।३७	११।२१	२१।४७

ता. अक्तू. '६३	चन्द्र				घं. मि. ०।० बजे		चण्डीगढ़	
	०घं.०मि.	६घं.०मि.	१२घं.०मि.	१८घं.०मि.	क्रान्ति	शर	चं. उ.	चं.अ.
२४	८।१४।१६	८।१७।१७	८।२०।१९	८।२३।२२	−२२।३९	+०।३५	१२।१२	२२।३७
२५	८।२६।२५	८।२९।३१	९। २।३७	९। ५।४४	२२।२८	−०।३०	१३। २	२३।३३
२६	९। ८।५२	९।१२। २	९।१५।१४	९।१८।२७	२१।१२	१।३४	१३।४८	——
२७	९।२१।४१	९।२४।५७	९।२८।१५	१०। १।३४	१८।४९	२।३५	१४।३१	०।३२
२८	१०। ४।५६	१०। ८।१९	१०।११।४५	१०।१५।११	१५।२३	३।३१	१५।११	१।३२
२९	१०।१८।४१	१०।२२।१२	१०।२५।४५	१०।२९।२०	११। १	४।१७	१५।४९	२।३६
३०	११। २।५७	११। ६।३६	११।१०।१६	११।१३।५२	५।५४	४।४९	१६।२७	३।४२
३१	११।१७।३९	११।२१।२४	११।२५।१०	११।२८।५७	−०।१७	५। २	१७। ६	४।४९
नवं. १	०। २।४५	०। ६।३३	०।१०।२२	०।१४।११	+५।२८	४।५५	१७।४६	५।५८
२	०।१८। ०	०।२२।५०	०।२५।४०	०।२९।२९	१०।५९	४।२८	१८।३०	७। ८
३	१। ३।१८	१। ७। ६	१।१०।५३	१।१४।३९	१५।४९	३।४१	१९।१८	८।१८
४	१।१८।२५	१।२२।१०	१।२५।५३	१।२९।३४	१९।३४	२।३८	२०।१२	९।२९
५	२। ३।१५	२। ६।५३	२।१०।३०	२।१४। ५	२१।५६	१।२७	२१। ९	१०।३५
६	२।१७।३९	२।२१।१०	२।२४।४०	२।२८। ९	२२।४८	−०।११	२२।१०	११।३६
७	३। १।३६	३। ५। ०	३। ८।२४	३।११।४६	२२।१०	+१। ८	२३।१०	१२।२९
८	३।१५। ७	३।१८।२५	३।२१।४४	३।२५। ०	२०।१६	२।११	——	१३।१६
९	३।२८।१५	४। १।२८	४। ४।४०	४। ७।५१	१७।१९	३।२०	०।१०	१३।५७
१०	४।११। १	४।१४।१०	४।१७।१९	४।२०।२६	१३।३८	३।५९	१। ९	१४।३२
११	४।२३।३३	४।२६।३८	४।२९।४३	५। २।४७	९।२४	४।३४	२। ६	१५। ६
१२	५। ५।५१	५। ८।५४	५।११।५६	५।१४।५८	४।५०	५।५६	३। २	१५।३७
१३	५।१८। ०	५।२१। ०	५।२४। ०	५।२७। ०	+०।१३	५। ५	३।५५	१६। ७
१४	५।२९।५९	६। २।५९	६। ५।५८	६। ८।५६	−४।२४	५। ०	४।४८	१६।३७
१५	६।११।५४	६।१४।५२	६।१७।५०	६।२०।४८	८।५०	४।४१	५।४२	१७। ९
१६	६।२३।४६	६।२६।४३	६।२९।४१	७। २।३८	१२।५५	४।११	६।३५	१७।४२
१७	७। ५।३६	७। ८।३४	७।११।३१	७।१४।२८	१६।३०	३।३१	७।२९	१८।२०
१८	७।१७।२५	७।२०।२३	७।२३।२१	७।२६।१९	१९।२५	२।४०	८।२४	१९। ०
१९	७।२९।१७	८। २।१६	८। ५।१५	८। ८।१४	२१।३२	१।४२	९।१७	१९।४४
२०	८।११।१३	८।१४।१३	८।१७।१४	८।२०।१४	२२।४२	+०।४०	१०।१०	२०।३३
२१	८।२३।१५	८।२६।१७	८।२९।२०	९। २।२४	२२।५०	−०।२५	१०।५९	२१।२५
२२	९। ५।२८	९। ८।३४	९।११।४०	९।१४।४७	−२१।५३	−१।४०	११।४५	२२।२२

–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण राश्यादि चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

नवं. मा० १९६३	चन्द्र				घ. मि.		चण्डीगढ़	
	घं. मि. ०।० बजे	घ. मि. ६।० बजे	घ. मि. १२।० बजे	घ. मि. १८।० बजे	क्रान्ति	शर	चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
२३	९।१७।५५	९।२१। ५	९।२४।१६	९।२७।२९	−१९।५१	−२।३८	१२।२८	२३।२१
२४	१०। ०।४२	१०। ३।५७	१०। ७।१३	१०।१०।३१	१६।४८	३।२८	१३। ७	——
२५	१०।१३।५०	१०।१७।१२	१०।२०।३४	१०।२३।५९	१२।५०	४।१६	१३।४५	०।२१
२६	१०।२७।२६	११। ०।५४	११। ४।२४	११। ७।५६	८। ७	४।५०	१४।२२	१।२३
२७	११।११।२७	११।१५। ३	११।१८।४०	११।२२।१९	−२।४९	५। ७	१४।५९	२।२७
२८	११।२५।५९	११।२९।४०	०। ३।२२	०। ८। ६	+२।४७	५। ७	१५।३६	३।३३
२९	०।१०।५१	०।१४।३८	०।१८।२५	०।२२।१३	८।२३	४।४७	१६।१७	४।४१
३०	०।२६। १	०।२९।५०	१। ३।४०	१। ७।२९	१३।३६	४। ६	१७। ३	५।५१
दिसं. १	१।११।१८	१।१५। ६	१।१८।५५	१।२२।४३	१७।५९	३। ७	१७।५४	७। २
२	१।२६।३०	२। ०।१६	२। ४। १	२। ७।४५	२१। ७	१।५५	१८।५०	८।१३
३	२।११।२८	२।१५। ९	२।१८।४९	२।२२।२८	२२।४५	−०।३६	१९।५२	९।१९
४	२।२६। ५	२।२९।३९	३। ३।१२	३। ६।४४	२२।४५	+०।४३	२०।५६	१०।१८
५	३।१०।१६	३।१३।४३	३।१७।१०	३।२०।३४	२१।१६	१।५८	२१।५९	११।१०
६	३।२३।५८	३।२७।१९	४। ०।३९	४। ३।५७	१८।३४	३। ४	२२।५९	११।५५
७	४। ७।१४	४।१०।२८	४।१३।४३	४।१६।५४	१४।५८	३।५७	२३।५९	१२।३४
८	४।२०। ६	४।२३।१५	४।२६।२४	४।२९।३१	१०।४७	४।३८	——	१३। ९
९	५। २।३७	५। ५।४२	५। ८।४७	५।११।५०	६।१४	५। ३	०।५६	१३।४०
१०	५।१४।५३	५।१७।५५	५।२०।५६	५।२३।५६	+१।३३	५।१३	१।५०	१४।१०
११	५।२६।५६	५।२९।५५	६। २।५५	६। ५।५३	−३। ७	५।१०	२।४३	१४।४०
१२	६। ८।५१	६।११।४९	६।१४।४७	६।१७।४५	७।३८	४।५३	३।३६	१५।११
१३	६।२०।४३	६।२३।४०	६।२६।३७	६।२९।३४	११।५०	४।२५	४।२९	१५।४६
१४	७। २।३२	७। ५।३४	७। ८।२६	७।११।२४	१५।३५	३।४४	५।२२	१६।१९
१५	७।१४।२२	७।१७।२०	७।२०।१९	७।२३।१८	१८।४४	२।५४	६।१७	१६।५८
१६	७।२६।१७	७।२९।१६	८। २।१५	८। ५।१५	२१। ६	१।५६	७।१२	१७।४२
१७	८। ८।१६	८।११।१६	८।१४।१७	८।१७।१९	२२।३३	+०।५३	८। ५	१८।३०
१८	८।२०।२१	८।२३।२४	८।२६।२७	८।२९।३०	२२।५८	−०।१४	८।५६	१९।२१
१९	९। २।३४	९। ५।३९	९। ८।४५	९।११।५१	२२।१८	१।२१	९।४४	२०।१७
२०	९।१४।५८	९।१८। ७	९।२१।१६	९।२४।२६	२०।३१	२।२४	१०।२७	२१।१४
२१	९।२७।३६	१०। ०।४८	१०। ४। १	१०। ७।१५	−१७।४३	−३।२२	११। ८	२२।१३

तारीख दिस १९६३–६४	चन्द्र				घ. ०मि.		चण्डीगढ़	
	घ. मि. ०।० बजे	घ. मि. ६।० बजे	घं. मि. १२।० बजे	घं. मि. १८।० बजे	क्रान्ति	शर	चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
२२	१०।१०।२९	१०।१३।४५	१०।१७। २	१०।२०।२०	−१४। २	−४।१२	११।४६	२३।१३
२३	१०।२३।३८	१०।२६।५८	११। ०।२०	११। ३।४४	९।३५	४।४९	१२।२१	——
२४	११। ७। ९	११।१०।३५	११।१४। २	११।१७।३०	−४।३५	५।११	१२।५६	०।१५
२५	११।२१। ०	११।२४।३१	११।२८। ३	०। १।३७	+०।४६	५।१६	१३।३२	१।१७
२६	०। ५।१२	०। ८।४८	०।१२।२६	०।१६। ४	६।१३	५। २	१४।१०	२।२१
२७	०।१९।४४	०।२३।२५	०।२७। ६	१। ०।४८	११।२८	४।२९	१४।५२	३।२९
२८	१। ४।३१	१। ८।१५	१।११।५९	१।१५।४३	१६। ८	३।३८	१५।३८	४।३८
२९	१।१९।२७	१।२३।११	१।२६।५६	२। ०।४०	१९।५०	२।३०	१६।३०	५।४७
३०	२। ४।२५	२। ८। ८	२।११।५२	२।१५।३४	२२।११	−१।१३	१७।२९	६।५५
३१	२।१९।१६	२।२२।५६	२।२६।३७	३। ०।१७	२२।५९	+०। ८	१८।३२	८। ०
जन. १	३। ३।५२	३। ७।२६	३।११। ०	३।१४।३३	२२। ९	१।२८	१९।४०	८।५८
२	३।१८। ५	३।२१।३५	३।२५। ४	३।२८।३१	१९।४९	२।३९	२०।४६	९।४७
३	४। १।५७	४। ५।२५	४। ८।५०	४।१२।११	१६।२९	३।४०	२१।४८	१०।३७
४	४।१५।२८	४।१८।४८	४।२२। ४	४।२५।१५	१२।२३	४।२७	२२।५१	११।१४
५	४।२८।२२	५। १।३२	५। ४।४२	५। ७।५०	७।५१	४।५९	२३।४४	११।५२
६	५।१०।५९	५।१४। ५	५।१७।११	५।२०।१५	+३। ५	५।१५	——	१२।२०
७	५।२३।१९	५।२६।२१	५।२९।२३	६। २।२४	−१।४०	५।१४	०।३८	१२।४८
८	६। ५।२४	६। ८।२४	६।११।२२	६।१४।२०	६।१६	५। १	१।३४	१३।२०
९	६।१७।१८	६।२०।१६	६।२३।१३	६।२६।११	१०।३६	४।३६	२।२७	१३।५२
१०	६।२९। ८	७। २। ५	७। ५। ३	७। ८। ०	१४।३०	३।५८	३।२०	१४।२५
११	७।१०।५७	७।१३।५६	७।१६।५५	७।१९।५३	१७।४९	३। ८	४।१४	१५। ४
१२	७।२२।५०	७।२५।४९	७।२८।४९	८। १।४९	२०।२५	२।१४	५। ८	१५।४३
१३	८। ४।४९	८। ७।५०	८।१०।५१	८।१३।५३	२२। ७	१।१२	६। ०	१६।३१
१४	८।१६।५६	८।२०। ०	८।२३। ४	८।२६।१०	२२।५१	+०। ५	६।५३	१७।२०
१५	८।२९।१६	९। २।२२	९। ५।२८	९। ८।३६	२२।२९	−१। २	७।४०	१८।१७
१६	९।११।४५	९।१४।५५	९।१८। ६	९।२१।१८	२०।५८	२।१८	८।२८	१९।१५
१७	८।२४।३०	९।२७।४३	१०। ०।५७	१०। ४।१२	१८।२४	३। ८	९। ९	२०।१६
१८	१०। ७।२८	१०।१०।४५	१०।१४। २	१०।१७।२०	१४।५२	४। ०	९।५९	२१।१६
१९	१०।२०।३९	१०।२३।५९	१०।२७।१९	११। ०।४१	−१०।३४	−४।४०	१०। ०	२२।१७

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण राश्यादि चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

६-६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण राश्यादि चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा० स्टं० टा० दिया गया है)

ता.जन. १९६१	चन्द्र				० घं. ०मि.		चण्डीगढ़	
	० घं. ०मि.	६ घ. ०मि.	१२घ. ०मि.	१८घ. ०मि	क्रान्ति	शर	चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
२०	११। ४। ३	११। ७।२७	११।१०।५१	११।१४।१६	−४।४७	−५। ६	११। ०	२३।१९
२१	११।१७।४१	११।२१। ७	११।२४।३४	११।२८। २	+०।२१	५।१४	११।३४	——
२२	०। १।३१	०। ५। १	०। ८।३१	०।१२। २	५।५१	५। ५	१२। ९	०।२०
२३	०।१५।३३	०।१९। ५	०।२२।३७	०।२६।११	१०। ०	४।३८	१२।५०	१।२१
२४	०।२९।४६	१। ३।२१	१। ६।५६	१।१०।३२	१४।४१	३।५३	१३।३२	२।२८
२५	१।१४। ९	१।१७।४६	१।२१।२३	१।२५। ०	१८।३६	२।५५	१४।२३	३।३६
२६	१।२८।३७	२। २।१४	२। ५।५१	२। ९।२८	२१।२०	१।४३	१५।१५	४।४०
२७	२।१३। ६	२।१६।४३	२।२०।२१	२।२३।५७	२२।४४	−०।२५	१६।१८	५।४४
२८	२।२७।३४	३। १।१०	३। ४।४४	३। ८।१७	२२।३४	+०।५३	१७।२१	६।४२
२९	३।११।५०	३।१५।२२	३।१८।५४	३।२२।२५	२०।५६	२। ७	१८।२५	७।४०
३०	३।२५।५५	३।२९।२३	४। २।५०	४। ६।१६	१८। १	३।१३	१९।३०	८।२४
३१	४। ९।४१	४।१३। ४	४।१६।२६	४।१९।४७	१४।१०	४। ६	२०।३०	९। ८
फर. १	४।२३। ६	४।२६।२४	४।२९।४०	५। २।५४	९।४२	४।४३	२१।३०	९।४२
२	५। ६। ८	५। ९।२३	५।१२।३६	५।१५।४६	+४।५१	५। ५	२२।२६	१०।१७
३	५।१८।५५	५।२२। ०	५।२५। ४	५।२८। ४	०। ०	५।११	२३।२२	१०।४८
४	६। १। ४	६। ४। ९	६। ७।१४	६।१०।१७	−४।४७	५। १	——	११।१९
५	६।१३।२०	६।१६।२०	६।१९।२०	६।२२।१८	९।१८	४।३९	०।१६	११।४५
६	६।२५।१६	६।२८।१३	७। १।११	७। ४। ९	१३।२१	४। ५	१। ९	१२।२२
७	७। ७। ७	७।१०। ४	७।१३। २	७।१६। ०	१६।५४	३।२१	२। ३	१२।५०
८	७।१८।५७	७।२१।५४	७।२४।५२	७।२७।५१	१९।४३	२।२८	२।५७	१३।३६
९	८। ०।५०	८। ३।५१	८। ६।५१	८। ९।५२	२१।४४	१।२९	३।५२	१४।२२
१०	८।१२।५४	८।१५।५८	८।१९। ३	८।२२। ६	२२।४८	+०।२४	४।४३	१५।१३
११	८।२५। ९	८।२८।१७	९। १।२६	९। ४।३२	२२।४६	−०।४२	५।३४	१६। ५
१२	९। ७।३९	९।१०।४९	९।१४।३०	९।१७।१६	२१।३५	१।४७	६।२०	१७। ४
१३	९।२०।३०	९।२३।४६	९।२७। ३	१०। ०।१०	१९।२०	२।४८	७। ७	१८। ४
१४	१०। ३।३७	१०। ६।५६	१०।१०।१६	१०।१३।३६	१५।५९	३।४४	७।४६	१९। ६
१५	१०।१६।५६	१०।२०।१८	१०।२३।४१	१०।२७। ६	११।४६	४।२५	८।२५	२०। ९
१६	११। ०।३३	११। ४। ०	११। ७।२७	११।१०।५५	−६।५५	−४।५५	९। ०	२१।११

तारीख फर. १९६१	चन्द्र				० घं. ० मि.		चण्डीगढ़	
	० घं. ०मि.	६ घं. ०मि	१२घं. ०मि	१८घं. ०मि	क्रान्ति	शर	चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
१७	११।१४।२३	११।१७।५२	११।२१।२१	११।२४।५०	−१।३८	−५। ६	९।३५	२२।१४
१८	११।२८।२०	०। १।५१	०। ५।२२	०। ८।५३	+३।४६	५। ०	१०।११	२३।१८
१९	०।१२।२४	०।१५।५५	०।१९।२७	०।२२।५८	९। २	४।३६	१०।४८	——
२०	०।२६।२९	१। ०। ०	१। ३।३२	१। ७। ४	१३।५०	३।५५	११।३२	०।२२
२१	१।१०।३६	१।१४। ७	१।१७।३८	१।२१। ९	१७।५४	२।५९	१२।१६	१।२६
२२	१।२४।४०	१।२८।१२	२। १।४४	२। ५।१७	२०।५३	१।५४	१३। ९	२।३१
२३	२। ८।५०	२।१२।२१	२।१५।५२	२।१९।२२	२२।३६	−०।४१	१४। ३	३।३२
२४	२।२२।५२	२।२६।२२	२।२९।५२	३। ३।२१	२२।५३	+०।३३	१५। ५	४।३४
२५	३। ६।५१	३।१०।२०	३।१३।४८	३।१७।१६	२१।४४	१।४६	१६। ८	५।२६
२६	३।२०।४३	३।२४। ९	३।२७।३४	४। ०।५९	१९।१६	२।५०	१७।११	६।१७
२७	४। ४।२३	४। ७।४६	४।११। ९	४।१४।३१	१५।४४	३।४७	१८।१४	६।५८
२८	४।१७।५२	४।२१।११	४।२४।३०	४।२७।४७	११।२८	४।२६	१९।१३	७।४०
२९	५। १। ५	५। ४।२१	५। ७।३६	५।१०।४९	६।४०	४।५३	२०।१२	८।१२
मार्च १	५।१४। १	५।१७।११	५।२०।२१	५।२३।२९	+१।४४	५। ३	२१। ८	८।४५
२	५।२६।३८	५।२९।४५	६। २।५१	६। ५।५६	−३।११	४।५७	२२। ४	९।१६
३	६। ९। ०	६।१२। ३	६।१५। ६	६।१८। ७	७।५३	४।३७	२३। ०	९।४७
४	६।२१। ८	६।२४। ८	६।२७। ७	७। ०। ५	१२।११	४। ७	२३।५५	१०।२१
५	७। ३। ३	७। ६। ०	७। ८।५८	७।११।५६	१५।५८	३।२४	——	१०।५५
६	७।१४।५४	७।१७।५२	७।२०।४९	७।२३।४७	१९। ४	२।३३	०।५०	११।३४
७	७।२६।४४	७।२९।४२	८। २।४०	८। ५।३८	२१।२१	१।३७	१।४१	१२।१४
८	८। ८।३७	८।११।३७	८।१४।३८	८।१७।४०	२२।४४	+०।३६	२।३४	१२।५९
९	८।२०।४२	८।२३।४५	८।२६।४८	८।२९।३९	२३। ५	−०।२८	३।२२	१३।५४
१०	९। ३। ०	९। ६। ८	९। ९।१६	९।१२।२७	२२।१८	१।३२	४।१४	१४।५०
११	९।१५।३८	९।१८।५१	९।२२। ५	९।२५।२१	२०।३४	२।३३	४।५५	१५।४८
१२	९।२८।३८	१०। १।५६	१०। ५।१५	१०। ८।३६	१७।२३	३।२७	५।३७	१६।४७
१३	१०।११।५९	१०।१५।२४	१०।१८।५०	१०।२२।१७	१३।२५	४।१३	६।१७	१७।५१
१४	१०।२५।४५	१०।२९।१४	११। २।४४	११। ६।१५	८।३९	४।४३	६।५७	१८।५५
१५	११। ९।४७	११।१३।२०	११।१२।५४	११।१६।३०	−३।१९	−४।५९	७।३४	२०। ५

ग्रहों के निरयण नक्षत्र चरण चार (सं० २०२०)

सूर्य-चार						सूर्य-चार		भौम चार		भौम चार		बुध चार			
नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख
उ.भा. ४	मार्च २८ (१९६३)	पुन. २	जुला. ९	चि. ४	अक्तू. २१	श्र. २	जन. २७	उ.फा. २कन्या	जुलाई १६	मू. ४	दिसं. ९	रेव. ४	अप्रै. ५	आर्द्रा ४	जुला. ९
रे. १	३१	३	१३	स्वा. १	२४	३	३१	३	२१	पू.षा. १	१४	अश्वि. १ मेष	६	पुन. १	१०
२	अप्रैल. ४	पुन. ४कर्क	१६	२	२७	४	फर. ३	४	२७	२	१८	२	८	२	१२
३	७	पुष्य १	२०	३	३१	ध. १	६	ह. १	अग. १	३	२२	३	१०	३	१३
४	१०	२	२३	४	नवं. ३	२	९	२	७	४	२७	४	११	पुन. ४ कर्क	१५
अश्वि. १मेष	१३	३	२७	वि. १	६	ध. ३ कुंभ	१३	३	१२	उ.षा. १	३१	भ. १	१३	पुष्य १	१६
२	१७	४	३०	२	१०	४	१६	४	१७	उ.षा. २ मकर	जन. ४ (१९६४)	२	१५	२	१८
३	२१	आश्ले. १	अग. ३	३	१३	श. १	१९	चि. १	२३	३	९	३	१७	३	२०
४	२४	२	६	वि. ४वृश्चि	१६	२	२३	२	२८	उ.षा. ४	१३	४	१९	४	२१
भ. १	२७	३	१०	अनु. १	१९	३	२६	चि. ३ तुला	सितं. २	श्र. १	१७	कृ. १	२१	आश्ले. १	२३
२	मई १	४	१३	२	२३	४	२९	४	७	२	२१	कृ. २ वृष	२४	२	२५
३	४	म. १सिंह	१७	३	२६	पू. भा. १	मार्च ४	स्वा. १	१२	३	२६	३	२७	३	२६
४	८	२	२०	४	२९	२	७	२	१७	४	३०	४	मई २	४	२८
कृ. १	११	३	२४	ज्ये. १	दिसं. ३	३	१०	३	२२	धनि १	फर. ३	३	११	म. १ सिंह	३०
कृ. २ वृष	१५	४	२७	२	६	पू.भा. ४मीन	१४	४	२७	२	७	२	१७	२	अग. १
३	१८	पू.फा. १	३१	३	९			वि. १	अक्तू. २	धनि. ३कुंभ	१२	कृ. १ मेष	२४	३	३
४	२२	२	सितं. ३	४	१२	भौम चार		२	७	४	१६	कृ. २ वृष	जून ६	४	५
रो. १	२५	३	६	मू. १. धनु	१६	आश्ले. १	अप्रैल १३ (१९६३)	३	११	श. १	२०	३	११	पू. फा. १	७
२	२८	४	१०	२	१९	२	२४	वि. ४वृश्चि.	१६	२	२४	४	१५	२	१०
३	जून १	उ.फा. १	१३	३	२२	३	मई ४	अनु. १	२१	३	२८	रो. १	१८	३	१२
४	४	उ.फा. २क.	१७	४	२६	४	१२	२	२५	४	मार्च ४	२	२०	४	१४
मृ. १	८	३	२०	पू.षा. १	२९	म. १ सिंह	२०	३	३०	पू.भा. १	८	३	२३	उ.फा. १	१७
२	११	४	२४	२	जन. १ १९६४	२	२७	४	नवं. ४	२	१२	४	२५	उ.फा. २कन्	२०
मृ. ३ मिथुन	१५	ह. १	२७	३	४	३	जून ६	ज्ये. १	८	बुध-चार		मृ. १	२७	३	२३
४	१८	२	३०	४	८	४	९	२	१३	उ.भा. २	मार्च २६ (१९६३)	२	२९	४	२६
आर्द्रा १	२२	३	अक्तू. ४	उ.षा. १	११	पू.फा. १	१६	३	१७	३	२८	मृ. ३ मिथु	३०	ह. १	३१
२	२५	४	७	उ.षा. २म.	१४	२	२२	४	२२	४	२९	४	जुला. २	उ.फा. ४	सितं. १३
३	२९	चि. १	१०	३	१७	३	२८	मू. १ धनु	२६	रेव १	३१	आर्द्रा १	४	३	१७
४	जुला. २	२	१४	४	२१	४	जू. ४	२	दिसं. १	२	अप्रैल २	२	६	२	२०
पुन. [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहों के निरयण नक्षत्र चरण चार (सं० २०२०)

बुधचार				बुधचार		शुक्रचार								शुक्रचार	
नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख	नक्षत्र चरण	तारीख
उ.फा. २ कन्या	अक्तू. ५	मू. ३	दिसं. ६	श. २	मार्च ३	पू. भा. १	अप्रै. १०	मृ. २	जू. २९	उ.फा. ३	सितं. १५	मू. ४	दिसं. २	रे. १	फर. १९
३	८	४	८	३	४	२	१३	मृ. ३ मिथुन	जुला. २	४	१८	पू.षा. १	५	२	२२
४	११	पू षा १	११	४	६	३	१६	४	४	ह. १	२१	२	७	३	२५
ह. १	१३	२	१३	पू.भा. १	८	पू.भा. ४ मीन	१८	आर्द्रा १	७	२	२३	३	१०	४	२८
२	१५	३	१६	२	१०	उ.भा. १	२१	२	१०	३	२६	४	१३	अश्वि. १ मे.	मार्च १
३	१७	४	१९	३	१२	२	२४	३	१३	४	२९	उ.षा. १	१५	२	४
४	१९	उ.षा. १	२३	पू.भा. ४ मी	१३	३	२७	४	१५	चि. १	अक्तू. २	उ.षा. २ म.	१८	३	७
चि. १	२१	पू.षा. ४	२८	गुरु चार		४	२९	पुन. १	१८	२	४	३	२१	४	१०
२	२३	३	जन. २ (१९६४)	उ.भा. २	अप्रै. ४ (१९६३)	रे. १	मई २	२	२१	चि. ३ तुला	७	४	२३	भ. १	१३
चि. ३ तुला	२५	२	४	३	१८	२	५	३	२४	४	१०	श्र. १	२६	शनिचार	
४	२७	१	७	४	मई ३	३	८	पुन. ४ कर्क	२६	स्वा. १	१२	२	२९	ध. २	अप्रै. १ १९६३
स्वा. १	२९	मू. ४	१०	रेव. १	१९	४	१०	पुष्य १	२९	२	१५	३	जन. १ १९६४	१	अगस्त ८
२	३१	पू.षा. १	२१	२	जून ६	अश्वि. १ मेष	१३	२	अग. १	३	१८	४	३	श्र. ४	अक्तू. २
३	नवं. २	२	२५	३	२८	२	१६	३	३	४	२०	ध. १	६	ध. १	नवं. १०
४	४	३	२९	२	सितं. २१	३	१९	४	६	वि. १	२३	२	९	२	दिसं. २८
वि. १	६	४	फर. १	१	अक्तू. १७	४	२२	आश्ले. १	९	२	२६	ध. ३ कुंभ	११	ध. ३ कुंभ	जन. २८ १९६४
२	८	उ.षा. १	३	उ.भा. ४	नवं. १९	म. १	२४	२	११	३	२८	४	१४	४	फर्व. २५
३	१०	उ.षा. २ मक.	६	रेव. १	दिसं. २१	२	२७	३	१४	वि. ४ वृश्चिक	३१	श. १	१७	राहुचार	
वि. ४ वृश्चिक	१२	३	८	२	जन. २२ (१९६४)	३	३०	४	१७	अनु. १	नवं. ३	२	२०	पुन. ३ मिथुन	मई १९ (१९६३)
अनु. १	१४	४	११	३	फर. ११	४	जून २	म. १ सिंह	२०	२	५	३	२२	२	जुलाई २१
२	१६	श्र. १	१३	४	२८	कृ. १	४	२	२२	३	८	४	२५	१	सितं. २२
३	१८	२	१५	अश्वि. १ मेष	मार्च १४	कृ. २ वृष	७	३	२५	४	११	पू.भा. १	२८	आर्द्रा ४	नवं. २४
४	२०	३	१७			३	१०	४	२८	ज्ये. १	१३	२	३१	३	जन. २६ १९६४
ज्येष्ठा १	२३	४	२०	शुक्र चार		४	१३	पू.फा. १	३०	२	१६	३	फर. २	केतुचार	
२	२५	धनि १	२२	धनि ४	मार्च २७ (१९६३)	रो. १	१५	२	सितं. २	३	१९	पू.भा. ४ मीन	५	उ.षा. १ ध.	मई १९ १९६३
३	२७	२	२४	शत १	३०	२	१८	३	५	४	२१	उ.भा. १	८	पू.षा. ४	जुला. २१
४	२९	ध. ३ कुंभ	२६	२	अप्रै. २	३	२१	४	७	मू. १ धनु.	२४	२	११	३	सितं. २२
मू. १ धनु	दिसं. १	४	२८	३	४	४	२४	उ.फा. १	१०	२	२७	३	१३	२	नवं. २४
२	४	श. १	मार्च १	४	७	मृ. १	२६	उ.फा. २ कन्या.	१३	३	२९	४	१६	१	जन. २६ १९६४

ग्रहगत युतियें (सं० २०२०)

युतग्रह	तारीख
सु. मं.	१७- २-६४
सू. बु.	३१- ३-६३
,,	१८- ५-६३
,,	१४- ७-६३
,,	२०- ९-६३
,,	४-११-६३
,,	४- १-६४
,,	१३- ३-६४
सू. शु.	३०- ८-६३
सू. श.	१५- २-६४
सू. रा.	१३- ७-६३
सू. के.	२- १-६४
सू. व.	२९- ८-६३
सू. इ	८-११-६३
मं. बु.	७-१२-६३
,,	३०-१२-६३
,,	८- ३-६४
मं. शु.	२१-११-६३
मं. श.	१४- २-६४
मं. के.	२१-१२-६३
मं. व.	५- ६-६३
मं. इ.	३-१०-६३
बु. शु.	८- ६-६३
,,	२८- ६-६३
,,	१७- ९-६३
बु. श.	२८- २-६४
बु. रा.	१३- ७-६३
बु. के.	१५-१२-६३
,,	६- १-६४
,,	२५- १-६४
व. व.	६- ८-६३
बु. इ	७-११-६३
गु. शु.	२९- ४-६३
गु. श.	१०- १-६४
शु. रा.	२३- ७-६३
शु. के	९-१२-६३
शु. व.	२९- ८-६३
शु. इ.	२४-१०-६३

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थानों पर चन्द्रदर्शन, शृङ्गोन्नति के अंश एवं दिशा (सं० २०२०)

मास →	चै. शु.			वै. शु.			ज्ये. शु.			आषा. शु.			श्रा. शु.			भा. शु.			आश्वि. शु.			का. शु.			मार्ग. शु.			पौ. शु.			माघ शु.			फा. शु.		
अक्षांश ↓	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.	दृ. ति.	शृं. उ.	अं. उ.
५°	१ मं.	उ.	२	२ गु.	उ.	४	१ शु.	द.	२	१ श	उ.	८	२ रं.	उ.	१०	१ मं.	उ.	८	२ गु.	उ.	१२	२ श.	उ.	१९	१ र.	उ.	१०	१ मं.	उ.	११	२ गु.	उ.	५	१ शु.	उ.	५
१०°	"	,,	७	"	"	१०	"	उ.	३	"	"	१३	"	"	१६	"	"	१३	"	"	१७	"	"	२३	"	"	१५	"	"	१६	"	"	१०	"	"	१०
१५°	"	"	१२	"	"	१५	,,	"	८	"	"	१८	"	"	२०	"	"	१८	"	"	२२	"	"	२८	"	"	२०	"	"	२१	"	"	१५	"	"	१५
२०°	.	.	१७	"	"	२०	"	"	१४	"	"	२३	"	"	२५	"	"	२४	"	"	२७	"	"	३२	"	"	२५	"	"	२६	"	"	२०	"	"	२०
२५°	"	"	२२	"	"	२५	"	"	१९	"	"	२८	"	"	३१	"	"	२९	"	"	३२	"	"	३७	"	"	३१	"	"	३१	"	"	२५	२ श.	"	२५
३०°	"	"	२७	"	"	३०	"	"	२४	"	"	३३	"	"	३६	"	"	३[illegible]	"	"	३८	"	"	४१	२ चं.	"	३६	"	"	३६	"	"	३१	"	"	३१
३५°	,,	,,	३२	,,	,,	३५	,,	,,	२९	२ र.	,,	३८	,,	,,	४१	२ बु.	,,	३९	,,	,,	४३	,,	,,	४५	,,	,,	४१	२ गु	,,	४१	,,		६	,,		३६

ग्रहों के उदयास्त (सं० २०२०)

ग्रह	उदय ता०	उदय दिशा	अस्त तारीख	अस्त दिशा	ग्रह	उदय ता०	उदय दिशा	अस्त तारीख	अस्त दिशा
मंग	——	—	७-१२-६३	पश्चिम	गुरु	७- ४-६३	पूर्व	–	–
बुध	१२- ४-६३	पश्चिम	९- ५-६३	पश्चिम	शुक्र	–	–	६- ८-६३	पूर्व
,,	२७- ५-६३	पूर्व	२- ७-६३	पूर्व	,,	१६-१०-६३	पश्चिम	–	–
,,	२६- ७-६३	पश्चिम	१३- ९-६३	पश्चिम	श.	–	–	२९- १-६४	पश्चिम
,,	२८- ९-६३	पूर्व	१७-१०-६३	पूर्व	,,	३- ३-६४	पूर्व	–	–
,,	२८-११-६३	पश्चिम	२९-१२-६३	पश्चिम	–	–	–	–	–
,,	१०- १-६४	पूर्व	२६- २-६४	पूर्व	–	–	–	–	–

ग्रहों के वक्र-मार्ग (सं० २०२०)

ग्रह	वक्र मार्ग	तारीख	ग्रह	वक्र मार्ग	तारीख
बुध	वक्री	६- ५-६३	शनि	वक्री	३- ६-६३
,,	मार्गी	३१- ५-६३	,,	मार्गी	२१-१०-६३
,,	वक्री	७- ९-६३	वरुण	मार्गी	१०- ५-६३
,,	मार्गी	२९- ९-६३	,,	वक्री	१६-१२-६३
,,	वक्री	२६-१२-६३	इन्द्र	मार्गी	२५- ७-६३
,,	मार्गी	१५- १-६४	,,	वक्री	१८- २-६४
गुरु	वक्री	९- ८-६३			
,,	मार्गी	५-१२-६३			

॥ लग्नसारिणी ॥ (पलभा ७।१२)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२३	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३५०
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चि.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२९९
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०६
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारिणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारिणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारिणी में देखा तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए। इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इन को ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्ध ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ ॥

```
११)  २  (०।१०।५५
     ६०
    ———
    १२०
    ११०
    ———
     १०
     ६०
    ———
    ६००
    ६०५
    ———
```

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्मलग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना। राशि अंश के नीचे स्पष्टसूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है ॥

॥ दशमलग्न सारिणी ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लङ्कोदयः पलानि
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	०	१९	२७८
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	२९९
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	३२३
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	३२३
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	२९९
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	२७८
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७८
वृश्चि.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	२९९
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	३२३
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	३२३
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	२९९
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	२७८

नोट—हमारे यहां से समीपवर्ती जैसे चण्डीगढ़, अम्बाला, पटियाला, नाभा, लुधियाना, मोगा, शिमला, होशियारपुर, जालन्धर आदि स्थानों में स्वल्पान्तर होने के कारण चरान्तरसारणी से दिनमानादि साधन के बिना भी काम चल सकता है ॥

अथ दशमलग्नसाधनम्—उदयादिष्टकालेषु द्युदलं हि प्रपातयेत् । दशमस्य भवेदिष्टं सारिखांगी-सुखांगने ॥१॥

अर्थः—सूर्योदयात् घटयादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़ कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मान कर इस दशमलग्नसारिणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है ॥

भावसाधनम्—विलग्नतूर्यं षड्भक्तं पंचवारं तनौ क्षिपेत् । एकद्वियुक्तास्ते व्यस्ता भावाः षट्षड्-युताः परे ॥२॥ अर्थः—चतुर्थभावमें लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भसन्धि होगी फिर उसी आरंभसंधि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थ-भाव की आरंभसंधि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की आरंभ सन्धि से लग्न की विरामसन्धि तक १ से ५ पर्यंत केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचमभाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन में उपर्युक्त सन्धिसहित (६) छः ही भावों में (६) छः राशि युक्त करने से सन्धिसहित द्वादशभाव होते हैं ॥

सन्धिसहित (२) छः हो भावों में (३) छः राशि युक्त करने से सन्धिसहित द्वादशभाव होते हैं ॥

अथ वर्षप्रवेश सारणीयम्

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि. ल. प.
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	रा. ल. प.

वर्षफल-साधनप्रकारः—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में बारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्नसारिणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्मसमय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेश का सामयिक गणित एक ही करण ग्रंथ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारिणी से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। **मुन्थानयनप्रकारः**—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपताकीचक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकीचक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गत वर्षों में एक युक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं, परंतु राहु केतु को विपरीत जानना। फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर, भौम के वेध से शरीरपीड़ा होती है, शुभ ग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहें ॥

अथ हर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु. ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **स्वोच्चबल**—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **पुरुष स्त्री बल**—स्त्रीग्रह (च०, बु०, शु०, श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० मं० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रिबल**—दिनके वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। **मित्रशत्रुज्ञान**—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।१० वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५ वें ४५ कला, ३ रे ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५, और १।७ वे पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्र राशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्नको न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो तो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा ॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

"अथ ३२ सा श्री सूर्य यन्त्र विधान ॥ अनार की कलम से हरिद्रा के साथ यंत्र को भूर्जपत्र पर अथवा कागज पर लिखे नीचे अपना मनोरथ अपना कार्य लिखें फिर उस यन्त्र को रुई को खड़ी फलवती में बनाकर रविवार को ज्योत जगावे। फिर हरिद्रा की माला बनाकर बीजमन्त्र का ११०० ग्यारह सौ जप करें, जापमन्त्र—"ह्रीं हंसः" इस मन्त्र का सात या २१ रविवार विधिपूर्वक जप करने से श्री सूर्यनारायण की कृपा से सम्पूर्ण दुःखों की निवृत्ति होगी, अत्यन्त सुख प्राप्त होगा।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

मुद्दा दशा चक्र विधि—जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दे, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है ॥

मुद्दादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीकालीन मुद्दादशा

मं.	पि.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

सबशुभकार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्ध याम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य-रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का काल, पापग्रह का नवांशक, ग्रहण के पहले के ३ दिन, उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त) वर्जित हैं, स्वराशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं।

सब शुभ कार्यों के लिए साधारणतः शुभमुहूर्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान—इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुण्डनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिए ॥ सोमन्तजात-कादीनि प्राशनान्तानि यानि च । न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जेवन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपा-दिकृत्ये । पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥

द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप-दर्शने	सर्वस-त्कार्ये	संग्रामे	विद्या-भ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	गेहात्रे दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूर-कृत्ये	एषु कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णय

वधबंधविषाग्न्यस्त्रच्छेदनो-च्चाटनादि यत् । तुरंगमहि-षोष्ट्रादि कर्म विष्टयां न सिद्धयति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्टयां जीवितार्थी कदा-चन । कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं सर्वतो नाशमाप्नुयात् ॥ आवश्यके परिहारः—दिवा-परार्द्धजा विष्टिःपूर्वार्द्धोत्था यदा निशि । तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषि-तम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ	नै.	ई.	द.	वा.	.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी५कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ले शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे । न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) ॥ एकराशौ गुरौ सूर्ये न विवाहः कदाचन । ऋक्षान्तरे गुरौ सूर्ये तदा दोषो विनश्यति ॥ सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन । मेषस्थिते दिवा-नाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः—मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः । गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि—मकरे च गतो जीवः प्रशस्तः सर्व-कर्मसु । नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहौ प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रता-दिकम् । वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे ॥ अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादश-मेवच । नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिन-त्रयम् । वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे) ।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम् । परतोऽञ्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः । द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः । आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यर चरमोऽशुभः । वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः ।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परम मित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त

गर्भ रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो वह शास्त्रसम्मत शुभ मुहूर्त में करे तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है।

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। **शुभ नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। **शुभ लग्न**—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो।

चित्रा. पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन ; संध्याकाल, मंगल, रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चंद्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १,२,३,५,७.१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १,४, ५,७,९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

गर्भ रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्ण [illegible] पूजा करनी चाहिए।

[illegible] संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अ[illegible]ा अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐभूस्त्वयि दधामि, ॐभुवस्त्वयि दधामि, ॐस्वस्त्वयि दधामि, ॐभूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त–रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. मृ. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त–रेवती, तीनों उत्तरा, रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १,२,३,५,७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है ; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२ वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा, रो. ह. अश्विनी पुष्य, अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९। १०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनीकाटिसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

मन्त्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हारिप्रिये ! इति ॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९या ११ वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं ॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म में से १२वें दिन या १६वें दिन ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टमस्थान शुभ हो, १, ४. ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के करने से मनुष्य के हानिया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका-छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे., ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६. ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. रे, चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठमास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभसमय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथा-कुलधर्मंवः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, भौमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भांड़ इत्यादि वह किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६ १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म. आर्द्रा, पुन. हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले. अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. मं. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा. उ. पा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र सूर्य, बुध, चन्द्र बृ०, शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगवाण को छोड़कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. ध्रु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू फा.	पू. फा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	बानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	बानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	वाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	बानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	बानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना।

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गुणमहादोष की जगह (१) भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष, और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्विचर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मभर्थाङ्कके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष नहीं।

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२४ ३	३३ ०	२७।	१७।। ४	२३।। -४	२२।। -४	२५।।	१६।। ३	१७।। ३	२२।। ३	३०।।	२७	२० +५	२४ ५+	१४।। ३५	०।। ३६	१०।। २३६	१२।। ६	२२	२८ -२	२२	१८।। -६	२४।। -६	१३ ३६	१२।। ३५	२४।। +५	२३ ५+	२०	२६	२०	१९।।	१४।। ३	१५।। ३	१४।। ३४	२३।। ५+	-२६ ४+६
	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६।। -४	१४।। ३४	१७।। ३	२५।।	२५।।	३०।।	२२।। ३	२४।। १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०।। ६	३।। १३६	१३ १३	२८	२९ -०	१८।। -१६	१७।। ३६	१९।। १६	०९।। -१५	१७।। ३५	२५।। ५+	२७।।	२६	१० १२३	९।। १३२	१९।। -१	२३ -२	२२।। २४+	१६।। ३४	२५।। ६४
	कृ ।	२६।।	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१४४	१६।। ४	१९।।	१९।। १	१९।।	२४।।	२६।।	२२।। ३	१५।। ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७।। ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६।। ३६	१९।। -६	२५।। -२	२५ ५+	१९ १२५	१९।। ३१५	१३।। १३	१३।। २३	२५	२४।।	२५।।	१८।। ९	१७।। १४	१९।। १४	१०।। ३४
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८।। १२	२६।।	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१।। ३	२४।।	३०।।	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०।। ३५२	२४।। +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो १	२३।। -४	२३।। -४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६।। ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०।। ३१	२४।।	२७	२५।। ५+	२५।। ५+	१८।। -१५	१७।। -१६	१५ ३६	८ ३१६	६४।। ३१	२९।।	२३।। १	१३।। १२	१९।। ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४।। -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३
	मृ ।।	२३।। -४	१४।। ३४	१८।। -८	२७।।	३५	२८ ३	१८।। ३४	२३।। ०४	२२।। ४+	२६	१९ ३	२१	१९।।	१५।। ३	२४।।	२३ ५+	२५।। ५+	११।। ३५	१०।। ३२	२४।। -६	१७ -२	२३।।	२१।। ३	२४।।	१४।। ६	१०।। ३५	१६।। २६	२९।। २५+	२६ ५+	१२ ३५	१६।। ३	२६।।	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ।।	२६।।	१७।। ३	२१।।	१९ +८	२६।। ४+	१९।। ३४	२८ ३	३३ ०	३१।।	१८।। -८	११।। ३०	१३।। ८	२२।।	१८।। ३	२७।।	३१।।	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९।। ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९।। -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२।। ५+	२८	१७ ३	२६
	आ १	१८।। ३	२०।।	२१।। १	१९ +१४	२४ -४	२५।। ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०।। -४	१२।। १८	२१।। १	२७।।	२०।। ३	२४।। ३	२४।। ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३।। १६	१० २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१।। -६	२२।। -६	१७ -१६	१२ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८।। ३	२६	२६
	पुन ।।।	१८।। ३	२५।।	२१।।	१९ ४+	२२ ४+	२२ ३+	३१।।	२४ ३	२८ ३	१४ -३४ ४०	२१ -८	१५।। +२	२१।। +२	२५।।	१९।। ३	२३।। ३	२४।। ३	२६।।	१९।। ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४।। ६	२०।। २६	६ ३६	१४ २	२७	२७	२१।। -६	२२।। -६	१६।। -६	१८।। +५	१३ ३५	१६ ३५	१७।। ३	२६।।	२६
कर्क	पुन ।	२१।। ३	२८।।	२४।।	२१	२४	२५	१७।। ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८।।	१६।। +२४	२०।। २०	१४।। ३८	१६।। ३	१७।। ३	१९।।	१९	२६।।	२०।।	११ ५+	२५ ५+	१०।। ३५	७।। ३६	२०।। -१	२०।। -६	२६	२७	२१	१२ ६	५।। ३६	९।। ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४।। १+
	पु १	२९।।	२०।। ३	२६।।	२३	२५	१८ ३	१०।। ३४	१८।। ४	२४ १	३४	२८ २	२९ ०	१८।। +८	१४।। ३८	२३।। ५+	२५।।	२५।।	११।। ३	११ ३	२५	२०।।	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७।। ६	१२।। २३६	२०।। ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७।। ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२५	२३ १	२१।। ३	१८ ३	११ ३१	२९	१४।। ४	११।। १४	१२ ४	२७।।	२८	२८ ३	१५ ०५४२	१५।। १४२	१७।। १८	१९।। १	१९।।	२४।।	२४	११ ३	१६ ३	१४।। ३५	१९ -५	२५ -५	२२।। ६	१५।। १९	७।। ३१६	१३ १३	१३ ३	३६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७।। १५	२० १५	१२ ३६
सिंह	म १	१९ +५	१९ १५	१५।। ३५	१६।। ३	[illegible] ३१	२०।।	२०।।	२०।। १	१९।। -२	१६ +२६	१८।। ४+	१६ ३६२	२८ ३	३० ०१	२६।। १	१४।। १८	१४।। ४	१९।। ४	२३।।	१०।। ३	१५।। ३	२४।। ३	२४।।	३२	२८ -५	१९ १५	८।। १३५	३।। ३१६	४।। ३६	१७।। ६	२३।।	२४।।	१७।। २	१७।। १६	१८।। १६	१२ ३६
	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३।।	१५।। ३	१८।। ३	२६।।	२५।। -२	२३।। +२४	१६।। ३४	१६।। -१३६	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०।। ४+	५।। १३६	९।। १३	२४।।	१७।।	२३।। -१	२२।। १	२४।। -१	२० १४+	१७ ३५	२४ ५+	१२ ६	१८।। ६	७।। १३६	९।। १३	१०।।	२३।।	२३।। -६	१६।। ३६	२४।। -६
	उफा ।	२५।। ३५	२५ ५+	२० -१५	२१	२२	२४।।	२७।।	१९।।	१०।।	१४।। ३०	२५।। ४+	१८।। -१४	२६।। -२	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२।। १४२	१६।। १२	२५।।	१६।। १२	२२।। -१२	३०।।	१६।। १३	९।। १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११।। १६	१७।। १	१०।। १३	२५।। ३	१५।। ३६	२६।। -६	२४।। ६-
कन्या	उफा ।।।	११ ३२	२१ १	१६ २६	२०।। +१५	२५।। ५+	२६ ५+	३१।।	२२।। १	२३।। १	१७।। १	२७।।	२०।। १	१५।। १४	२३ ४+	१७ ३८	२८ ३	२७ ३०	२६।। १२+	१६।। १२४	२५।। ६+	१६।। १२४	१८ १२	२१	१२ १३	१४ १३	२९।।	२९।।	२४ +५	२४ ५+	१५।। +१५	१६।। -१६	९।। ३१६	१४।। ३६	१७ ३	२८	२९
	ह १	१३ ०३६	१८।। २	२२ १	२०।। +५	२३।। ५+	२४।। ५+	३०	२८।। ३	२३।। ३	१८।। १	२५।।	२४।।	१६ +८	२०।। ८+	१५ ३८	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६।। ४+	१८।। ४+	२०	२१	१३।। ३	१४ ३	२७	२८।।	२३ +५	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०।। ३६२	१३।। ३६	१६ ३	२४	२६
	चि ।।	१३।। १	८।। १३६	१८।। १	२३ ४+	१८।। १५	१०।। ३५	१८ ३	२२ १	२४।।	१९।।	११।। ३	२५।।	२०।। +८	६।। १३४	१३।। १२४	२४।। १२	२७	२८ ३	११ ३४	१२ ०४	२५।। ६+	२७	३१	५	२७	[illegible] १३	२१ १	१५।। ७५	२७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६।। १६	१९ १	१० १३२	१६

[illegible]

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ॥	२२	१३ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	२०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १२	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२२ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६३	१२ ६
	स्वा १	२९ २४	२८	१६ ३	११ ३६	१४ २६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ .४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६
	वि ।।।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	२६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२९॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२२ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२२॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	२३॥ ६	१८॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ११६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	१९॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१५॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१२॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ .१	२६
	पूषा १	२५॥ +५	१७॥ ३५	१९॥ -१३५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१२ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ .+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२६॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२२॥ -६	२८	२८	१४ १३	८॥ १३६	२० ५	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२२॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
	ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ५	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ५+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२७ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।।।	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ५	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२८	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	२४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	२२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ २४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६६	१९ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२८	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२२॥ +२	३३	२८ १

बिना मेल के विवाह —अयोजिता वन्हिलब्धा क्रीता स्नेहादिनार्पिता । स्वयमेवागता कन्या भयाप्ता बुद्धिमंकके । मनसश्चक्षुषो यस्मिन् बरे यस्या च पोषिति । अन्योन्यो आयत एव मान्यार्थिकीर्च्चित्रिविन्दवः

ग्रहमेलापकविचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उनपर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामच्युतविवाहादिशान्ति विधाय दारयोग्यायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक, तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिए—(१) दारिद्रय, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) सन्तान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़,बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. षा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३, अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचंद्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रयाद्र्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादगर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रांता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उम्र होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर क नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ स अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार—(आगे देखो पृष्ठ ९९ के शुरु में)

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनादर्थः
चरण	४	साधनाद्धितः

मंत्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) र. सो. गु. शु. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह. स्वा. वि अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होन पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्नगण्डान्त—कर्क, सिंह की वृश्चिक, धनु की और मीन, मेष के आदि अन्त की आधी आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। यह भी जन्म में भयप्रद होता है।

समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए। आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। यह भी जन्म में भयप्रद होता है।

(९८ पृष्ठ का शेष) "राश्यभिधानकल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वर:" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिसमें अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारिणी आदि देखकर बदलना चाहिए।

अथ विवाहमास:—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्यो-ऽर्को धनुषश्चान्ये मध्यमा: स्यु: करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेष:। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेध:—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहार: —जातं दिनं दूषयते वसिष्ठ: पञ्चैव गर्ग-स्त्रिदिनं तथात्रि:। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़कर वर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करे।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छ: मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के पीछे छ: मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छ: मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह-दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास, कुल वालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शांति करके अथवा विशेष शांति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिये और कन्या की राशि से चन्द्र गुरु देखिये बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें। "झषचापकुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचर:। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥"

(बृ०)। तुलाराशौ अपूज्यरवि:—धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभन:। आवश्यके पूज्यरविपरिहार:—गार्ग्याङ्गिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चाकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परत: शुभावहा: ॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरु:—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरु:—९।५।११।२।७
नेष्टगुरु:—४।८।१२
श्रेष्ठरवि:—३।६।१०।११
पूज्यरवि:—१।२।५।७।९
नेष्टरवि:—४।८।१२
नेष्टचन्द्र:—४।८ पूज्यचन्द्र:–१२
श्रेष्ठचन्द्र:—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्यावरयो: तैलादि लापने (बन्न) दिनसंख्या

राशि	१।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२
तैलादि ला.	७।५।९।९।५।७।७।९।५।९।५

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेधरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहित-तिथिषु कात्यायनमते अश्वि. चि. श्र. धनि-ष्ठास्वपि शुभम् ॥

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भमुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य और दग्धातिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त लग्न दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

लत्ताबोधज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा:
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाश:	भयम्	मृत्यु:	भयम्	बन्धुनाश:	कार्यहानि:	कुलक्षय:	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहित
०	मृ	अ	कु	भ	कु	अ	रो	भ	भ	अ	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन	आ	म	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पू.फा.	ध	पुष्य	पू.भा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उ.फा	म	
चि	म	ह	०	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	०	पूफा	
मू.	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	श्रवण.	रे.	उभा.	श.	म.	पुन.	म.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीच के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। वह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मू.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये.	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	मृ.	मू.	पुन.	उ. फा.	ह.	श्र. न.

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गलदोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८वें १०वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ स्थूल क्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह०	मि०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चंद्रमा में वा सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण नाम	गतांशाः राशौ	प्रति अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः	
रोग	८।१७।२६		व्रतबन्ध	रवौ रात्रौ	त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९		गेहगोपे	भौमे सदैव	वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२		नृपसेवायां	मन्दे दिवा	त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४		यात्रायां	भौमे रात्रौ	वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८		विवाहे	बुधे संध्ययोः	वर्ज्यम्

१० दग्धातिथिबोधः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षत्रे बांगर)-जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवधस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथ-पुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्ताभ त्यजेद् सिद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः ॥

विशेषपरिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः ॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः) ॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम् ॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) ॥ अथ पापग्रहेण भुक्त-भोग्यक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभा-शुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ जामित्रपरिहारः—(व्यवहार-समुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हृत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम् ॥ मूहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं					चं.	सर्वे	बं मं.				शु.	
पाप	०	०	रा.	०	शु. लग्नेशः		शुभाः लग्नेशः	०	०	०		त्याज्याः
चं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं		चं	विद्धभञ्च				गोधूली त्याज्याः

लग्नभंग योगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखलौ न शस्ताः । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (असोऽब्जगुरुसमौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदा लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—माससून्याह्वयास्तारा राशयो बधिरादयः । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्तरीदोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः ॥ "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरीदोषौ नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमे दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ॥ अपवादान्तरम् । उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश-ग्रहोद्भवाः । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षति-थ्यर्क्षसम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रलग्ना-देकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः ॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३			
६	३	६	२	२	२	६	६	३		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		लग्नं शुभं विवाहे
११			४	४	५	११	११	११	स्थानानि	स्याद्दशविंशोपका-
			५	५	९					धिकम् ।
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकाबलम्

अथ गोधूलिलग्नविचारः—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्व-र्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते । । मार्ग. माघ, फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होन पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है । (१०८)

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तदा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः । "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्यं निषिद्धम् । संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । अत्र तिथिमासवेधभृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांतिविष्ट्यादौ प्राप्तकालेऽपि ना चरेत् ॥ रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३. पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है ।

प्रवेशस्य समयमाह—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२ वीं

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशवासरान्ते एकादशाहं समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुख दक्षिणे निषेधः—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो बन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखेशुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत् ॥

प्रथमस्त्रीसंगममुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे। और विशेषाधिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक दो हो सकती हैं। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड़ भैंस आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वाः पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्यवारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

भूषणघट्टनमुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मृ. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सतिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	८
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाक्रम (नौकरी)-मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र. बु. वृ. शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०।११ सूर्य भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोर्मिथ्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही)-पत्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मू. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. वृ. श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. ऽनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिए। कृ. रो. आर्द्रा, श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट के भट्ठा—ये आग देने या ईंट बनाने में मंगल और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रयमुहूर्तः—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३, आश्ले. रे. एषु. भेषु, सतिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा. पू. षा. पू. भा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फी सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो. कृ. आर्द्रा. भ. ब. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

धामभात् वासकर्तु नंक्षत्र यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभपरीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में. रो. मृ. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में., २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुख	३	पीड़ा असत्

से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं वि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचारः

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानिः	सुपुष्टिः	सप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौवेदाहृतं तद्ध गकेन कार्यम् एका वशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेषे सलिलंच स्वर्गे त्रिशून्य शेषभुवि नस्थितं च भूपस्थितं सुटु वदन्तिविज्ञः

अथ चुल्लिचक्रविचार

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग)-कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्ताभारहित तिथियों में चं, बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वें स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोमुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्यः	मि. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों. उ., रो. ध. श. म. पू.षा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पाप ग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम हैं।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

गणनाक्रम—मध्यपूर्वं आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाहै' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाह वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्वं आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः।

रोगिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन. पु. श्ले. जलाभाव	आग्नेय म. पूफा. उषा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पू. उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि. अनु. ज्ये बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्तं :—

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३. रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३ । ५ । ७ । ८ १०।११।१२।१३ एतत्तिथी शुक्ले १ । २ । ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि-रहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर-(२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ६ । ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ले देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यं ददेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र० ध० मृ० म. अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण-हानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीनाद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोर ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्ती चक्र यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सरालयेत् अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी ॥ दुर्गसंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

पापग्रहमुखहवनकृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय

गां दद्यात् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसी प्रतिमां कृत्वा निक्षिप्तामधोमुखीम्। गोमूत्र-

लतावृक्षाधारोपणमुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. ध.

वारिस्वाह: । पापग्रहमुखहवनकृते शान्ति:—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे । शान्तिं विधाय

गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिप्तेतामधोमुखीम् । गोमूत्रमधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गंद्विगुणां कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना ; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हलप्रवहणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पु. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठयष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)—द्यपादस्थे भूये संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. र. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है ; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. र. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पूर्वा ३. ह. अनु. ज्ये. मू. धनि.. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रमसे शुभाशुभ-फल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्टादि (गृहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम

लतावृक्षाद्यारोपणमुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है । तृणकाष्ठादिसंग्रह निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त

धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है ।

औषध का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्यवारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्त—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा ; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७ ११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म० भ०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हों । अन्यच्च यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं. श.	चं.श.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.	बु. श.	वार:	ज्ये.	पू. भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भक्त्वा शनिवारे शूले गच्छेन्न दोषभाक् ॥२॥

यात्रा में कालज्ञान		योगिनीवासचक्रम्								
शनौ	पूर्वे	पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
शुक्रे	आग्नेय्यां	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि
गुरौ	दक्षिणे									
बुधे	नैर्ऋत्ये									
भौमे	पश्चिमे									
चन्द्रे	वायव्ये									
रवौ	उत्तरे									
सम्मुखे नेष्ट पृष्ठे शुभ										

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ, युद्ध यात्रा की बांयें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रिमें उत्तर को और मध्याह्नकालमें दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त—गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-

घट्यात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द०.	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचंद्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः ॥

सर्वाङ्कसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे।

दिने चतुर्घटिकामुहूर्तम्							रात्रौ चतुर्घटिकामुहूर्तम्							
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध.	बृह.	शुक्र	शनि	घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३॥।	शु.	चं..	का	उ.	अ.	रो.	ल.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८॥।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२॥	ला.	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	श.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बांये दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा समय देखने में शुभ हैं। अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना भैंस पर सवार नंगा मनुष्य यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना,

अथांगविभाग पल्ली—(छिपकली ...

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रामुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तियौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः; वि. कृ. पू ३. म. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि ; ४।९।१४।६। १२।८।३० तिथयः मृ. मं. वारा. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है—विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति ॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
मे.	क.	कु.	मि.	म.	सि.	ध	वृष.	मिथुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृष.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	क.	क.	मि	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष.	चन्द्रघात
का.	मा	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	शु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	ऊं	वृष.	वै.	गं	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातवारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वह ही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्गविभागे पल्ली—(छिपकली, कोड़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी, रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया-पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्काफलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूँघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हानी। छींकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाषे; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जय कारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रे विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम् ॥

अङ्गस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है ।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	आष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हन	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाध	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	उरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	बाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्धमहर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशुहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिनअंधेरा	प्रजाक्षय	गृहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांवबसे	मनु. शून्य हो
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांकी कबूतर-घर में बसे	गृहस्वा. नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश		
रक्तमडल	युद्ध हो	सूर्खीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देखपड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु मंहगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिनकापक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

वाराः	स.	चं	मं०	बु	गु.	शु.	श.
फलम्	तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग
पातन	पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदात्राह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु ।

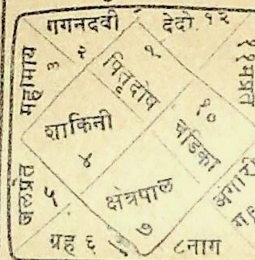
विशेष—यदि प्रतिदिन तैल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्ट कार्य नाश करता है। विशेष कर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल घी मीठा वा नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

अथकाकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत् । त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत् । लाभच्छेदस्तया सौख्यं भोजनं च धनागमम् । निश्शेष-मरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम् ।

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्वपालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर घर में बसें वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोषनिवृत्यर्थ दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो।

मुष्टिचक्र



अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावे या लिखावे। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होव यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना) चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

... दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुजजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन करे शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना. मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश व तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिलें। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर हो कर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और निरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिय कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह ... रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभस्वप्न—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीमपलास के वृक्ष पर चढ़ना रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर लेजाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोगसंकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट गधे भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाहगीतमंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशामें जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदीमें डूबना अथवा नदीके प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतुके वर्षा देखना बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी, का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े महलध्वजा का गिरते देखना अशुभकष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवास्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उसपर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांतसे मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुनिर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करें। दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्मलग्न, होरालग्न से आई आयु ठीक समझे; चरे चरे स्थिरे-द्विःस्वभाव-दीर्घायुः। द्विःस्वभावे-द्विःस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे-स्थिरे, चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११,१,४,७,१०,५,९, इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है, ३।८ में पापग्रह हो, पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु।

३—लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	वृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	वृ.	१	४	०	श.	१	१	९
वृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा.				पु. ऽनु उ. भा.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्र	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	वृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
वृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२
शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं	१	७	०
र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	वृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अ.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	वृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	वृ.	०	११	६	श.	३	२	०
वृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थचक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			आश्ले. ऽनु.पूभा		
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०

भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८		
बुध			शनि			शुक्र			केतु		
भ. म.ज्ये. उभा			कृ. पू.फा.मू.रे.			रो उ.फा.पू.षा.			मृ. ह. उषा		
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

दशा तथा वर्ष
दशेशग्रहाः
जन्म नक्षत्र

अन्तर्दशामासादि
शुभदशा—म धा. भ. सि.
नष्टदशा—पि. भ्रा. उ. सं.

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घटचादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणें, भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दे लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगा।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहफलबोधचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	पु भीः	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौम	व्रणः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदयः	राज्यला.	धनला.	विरो.
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभः	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विघ्नः
गुरुः	सुखम्	धनलाभः	जयः	वाह. ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्तिः	कीर्तिला.	सखला.	धनलाभ	शत्रुभीतिः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला	व्ययः
शनिः	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रप्री.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्तिः	राजभी.	सुखम्	दुःखम	बुद्धिनाशः	शत्रुनाशः	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभः	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मृत्युः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टि.	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनम्	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्राः	लाभः	कष्टम्

सुगम प्रश्न पर विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धतापूर्वक "ॐ श्रीं कीर्त्तिभवान्यै नमः" इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक सात बार पढ़ कर नीचे दिये गये चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अङ्कों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़ कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपने अभीष्ट प्रश्नवाली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकदमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में....इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिये—आपका प्रश्न मुकदमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७, एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है— "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझ।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिये बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा

अंगुली रखने के लिये चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जावेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शत्रु मित्र वालों[?] गमन करो लाभ होगा।
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम।

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और विचार करो।
६ शत्रु उत्पात करेंगे ग्रह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षाका फल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते से लौटा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह हो जावेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

अमुक मनुष्य से रुपया मिलेगा कि नहीं

साहूकार (जिससे नया लेन देन करना है) के नाम के अक्षरों को तीन गुणा करके उसमें अपने नाम के अक्षरों को जोड़ दे, फिर उसी संख्या में तीन का भाग देवें, शेष १ रहे तो रुपया मिले। २ शेष रहे तो न मिले। तीन (०) शेष रहे तो मुद्दत बाद फिरने से मिले।

विवाह होगा कि नहीं—यदि लग्न से २।३।६।७।१०।११ इन स्थानों में चन्द्रमा को बृहस्पति देखे तो विवाह हो जाएगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध, बृहस्पति इन में से कोई देखे अथवा व्ययेश लग्न में और लग्नेश व्यय में हो या लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७ इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा या शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जायेगा।

गुप्त चिन्ता का फल (१०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो।

कर्ज लेने देने का फल (११)
१ यहाँ से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा चैन अब है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

खेती करूं या नहीं फल (१२)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१३)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी हैं।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

गर्भ में क्या है फल (१४)
१ इस गर्भ की मुनासा नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ जोड़ी कन्या जन्मेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

चोरी गई का फल (१५)
१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर स्त्री है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोरने तेरी वस्तु चोर को देदी।
७ माल आधा नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर छोड़ीजामुकाई माल मिलेगा।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)
१ गोद लेने से नाम रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी निभेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बेमुरव्वत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ सुखदाई नहीं है।

अनाज खरीद फल (१७)
१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ सासी व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सवाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल अशुभ है।

विवाह शादी का फल (१८)
१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो, काम चलेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुणवाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल (१९)
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेषपरिश्रमकरनेसेरोजगारहोगा
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ जलमिट्टी.कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ खोटे ग्रहकी दशा है अभी चुप रहो।
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (२०)
१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चित चंचल होगा।
३ यह साधना शुभ नहीं।
४ साधना गुरुकृपा से पूर्ण होगी।
५ प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ इस सिद्धि को खेल मत समझो।

मकान बनाने का फल (२१)
१ मकान बनाना सुखप्रद होगा।
२ बहुत दिनों में पूरा होगा।
३ यह कार्य लाभप्रद नहीं।
४ खर्च अधिक होगा।
५ शत्रु विघ्न करेगा।
६ मकान ठीक नहीं बन पावेगा।
७ इस स्थान को खरीदने से धन मिले।
८ यह मकान झगड़े का कारण होगा।
९ पृथ्वी में धन है, परन्तु तुम्हें नहीं मिलेगा।

बाग लगाने का फल (२२)
१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग लगाना कलह का मूल होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

संतान भाग्य में क्या है ? फल (२३)
१ संतान आपके भाग्य में नहीं।
२ प्रेतशांति से होगी।
३ संतान होगी कमजोर।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से।
५ नेमव्रत से होगी।
६ गया या पिहोए विधि से।
७ होकर नष्ट होने का भय है।
८ संतान की आशा छोड़ो।
९ सप्ताह श्रवण से होगी।

कुआ खोदने का फल (२४)
१ कुंआ बनवाना शुभ है।
२ जल मीठा निकले।
३ जल स्वादु नहीं।
४ ठहरो अभी भय है।
५ जल कम होगा।
६ उत्तम जल है।
७ खर्च और हैरानी होगी।
८ जल दूर निकलेगा।
९ कुंआ अशुभ है।।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथिवार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग देवें शेष ३।७ बचे तो देवता की, २।८ बचे तो पितृबाधा और ६।४ बचे तो भूत प्रेत की बाधा जानना, १।५ बचें तो ग्रहपीड़ा जानना। उदयाद् धटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ता द्वादशभि: शेषे जीवनं भरणं वदेत् ॥ १ ॥ राम (३) बाण (५) रसा (६) ष्टौ (८) च नन्द (९) रुद्रा (११) च जीवति. क (१) पक्ष (२) युगा (४) सप्त (७) दशा (१०) र्का: (१२) नात्र जीवति ॥२॥

प्रश्न–जन्मवर्षादौ कार्यसिद्धिज्ञानम्

लग्नप: कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ। मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥१॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यमन्यथा सन्देहः।

कार्य सिद्ध होगा या नहीं ?

शुभवार में वाम स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। शुक्ल पक्ष में विशेष सिद्धि जाने। अशुभ वार में दक्षिण स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। यदि कृष्ण पक्ष भी हो तो विशेष सिद्धि होती है। विपरीत हो तो कार्य सिद्धि नहीं कहना।

क्या यह बात सच है ?—प्रश्न काल के वारतात्कालिक नक्षत्र और योग के अंकों को जोड़ कर वर्तमान तिथि से गुणा दो फिर उसे ४ से भाग देना शेष १।३ बचे तो बात सच्ची, शेष २ बचे तो झूठी जानो।

देशान्तर से पत्र आवेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उसके द्वितीय तृतीय स्थान शुभग्रह युक्त अथवा दृष्टि हो तो जल्दी आवेगा, मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले। द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो तो पत्र नहीं मिले। प्रश्न लग्न में बुध चन्द्र हों और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

इस वस्तु से लाभ होगा कि नहीं ?

इष्टकी केवल गति घटिकाओं को तीन से गुणा करके उसमें उस वस्तु के अक्षर युक्त कर पांच और जोड़ना फिर चार का भाग देकर शेष विषम रहे तो लाभ हो, सम शेष रहे तो लाभ नहीं होवे।

ध्यान दीजिए—इस सारिणी म दिये गय [illegible]

अक्षरादि सारिणी

ध्यान दीजिए—इस सारिणी में दिये गये पाकिस्तानी शहरों के 'स्टैण्डर्ड अन्तर' पाकिस्तानी स्टैं. टा. एवं लोकल (स्थानीय) टाईम का अन्तर है। पाकिस्तान बनने से पूर्व यह अन्तर भिन्न था।

रेखांश—ग्रीन्विच से अभीष्ट नगर का अंशात्मक पूर्वापरान्तर
देशान्तर—रोपड़ नगर से अभीष्ट नगर का पूर्वापरान्तर मिनटों में
स्टैण्डर्ड अन्तर—वर्तमान स्टैण्डर्ड टाईम का स्थानीय टाईम से अन्तर

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए कराची, लाहौर आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि 'स्टैण्डर्ड अन्तर' उस नगर के रेखांश एवं ८२अंश ३०कला के अंशादि अन्तर को ४से गुणा करने पर प्राप्त होगा।*

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं क.	मि.	मिनट से.		अं क.	अं. क.	मि.	मि. से.		अं. क.	अं क.	मि.	मि. से.
अकोला (सी.पी.)	२०।४२	७७। २	पू. २	–२१।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	पू. ४	–१९।४४	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	प. १	–२५।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	प. ७	–३१।१२	कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	प. १२	–१२।२०	झांसी	२५।२७	७८।३७	पू. ८	–१५।३२
अटक (पा.)	३३।५३	७२।१७	प. १७	–१०।५२	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	प. ३	–२६।३२	झेलम (पा.)	३२।३५	७३।४७	प. ११	– ४।५२
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	प. ७	–३०।४८	कोलम्बो (सीलोन)	६।५६	७९।५६	प. १४	–१०।१६	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	पू. २	–२२। ०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	पू. १	–२२।३२	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	प. ९	–३२।५६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	प. ३	–२६।४०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	पू. २३	– ११ ४	कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	प. १	–२४।५२	डिबाई	२८।१२	७८।१५	पू. ७	–१७। ०
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	प. १३	–११।२०	खंभात	२२।१९	७२।३६	प. १६	–३९।३६	डेराइस्माइलखां (पा)	३१।५१	७०।५६	प. २२	–१६।१६
अलवर	२७।३४	७६।३८	पू. १	–२३।२८	गया	२४।४९	८५। १	पू. ६	+१०। ४	डेरागाजीखां (पा.)	३०। ४	७०।४९	प. २३	–१६।४४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	प. ७	–३०।४८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	प. ७	–१७।२०	ढाका (पा.)	२३।४३	९०।२६	पू. ५६	+ १।४४
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	प. १५	–३९।२८	गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	पू. २८	+ ४।२०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	प. १६	–४०। ८
अलीगढ़ (यू.पी)	२७।५४	७८। ६	पू. ६	–१७।३६	गिलगित	३५।५५	७४।२२	प. ९	–३२।३२	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	प. ९	–१४।५६
आगरा („)	२७।१०	७८। ५	प. ६	–१७।४०	गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	प. १०	– ३।४०	दरभंगा	२६।१०	८५।५७	पू. ३८	+ १३।४८
आजमगढ़ (")	२६। ५	८३।१२	प. २७	+ २।४८	गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	प. ९	– ३। ४	द्वारिका	२२।१४	६९। १	प. ३०	–५३।५६
आबू	२४।४०	७२।४५	प. १५	–३९। ०	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	प. ४	–२८।१२	दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	पू. ४७	+ २३।१२
इटावा	२६।४७	७९। २	प. १०	–१३।५२	गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	प. २८	+ ३।३६	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	पू. ३	–२१।१२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	प. ३	–२६।४०	गोवा	१५।३०	७३।५७	प. १०	–३४।१२	देहरादून	३०।१९	७८। ४	पू. ६	–१७।४४
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	प. ३	–२७। ८	चम्बा	३२।२९	७६।१०	प. १	–२५।२०	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	पू. ६	–१८।१२
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	प. ११	–३५।१२	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	पू. १	–२२।३२	नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	प. १४	–३८।२०
एलिचपुर (सी.पी.)	२१।१८	७७।३३	पू. ४	–१९।४८	चीरापूञ्जी	२५।१७	९१।४७	पू. ६१	+ ३७। ८	नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	प. ७	–३०।५६
औरङ्गाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	प ४	–२८।२८	छतरपुर (वि.प्र.)	२४।५४	७९।३८	पू. १३	–११।२८	नागपुर	२१। ९	७९। ९	पू. ११	–१३।२४
कठुआ (काश्मीर)	३२।१७	७५।३६	प. ४	–२७।३६	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	पू. ३३	+ ८।४४	नाभा	३०।२५	७६। ९	प. १	–२५।२४
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	प. ४	–२८।२०	जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	पू. ४९	+२५। ४	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	प. ११	–३४।३२
करनाल	२९।४२	७७। २	पू. २	–२१।५२	जम्मू	३२।४४	७४।५४	प. ६	–३०।२४	नासिक	२०। २	७३।५०	प. ११	–३४।४०
कराची (पा.)	२४।५१	६७। ४	प. ३८	–३१।४४	जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	पू. १४	–१०। ४	नैनीताल	२९।२३	७९।३०	प. १२	–१२। ०
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	पू. ४८	+२३।३६	जयपुर	२६।५५	७५।५२	प. ३	–२६।३२	पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	पू. ३५	+१०।५२
काठमाण्डू (नैपा.)	२७।४२	८५।१२	पू. ३५	+१०।४८	जालन्धर	३१।१९	७५।१८	प. ५	–२८।४८	पटियाला	३०।२०	७६।२५	प. १	–२४।२०
कानपुर	२६।२७	८०।२४	पू. १६	– ८।२४	जामनगर	२२।२७	७०। ७	प. २६	–४९।३२	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	प. ३	–२७।१२
कालाबाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	प २०	–१३।३६	जींद	२९।१९	७६।२३	प. १	–२४।२८	प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	पू. २२	– २।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	पू. २६	+ २। ०	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	प. २४	–४७।३६	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	पू. १४	–१०।२८
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	प. १	–२४।४८	जैसलमेर	२९।५५	७०।५७	प. २२	–४६।१२	पुञ्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	प. ९	–३३।२८
काकरोली	२५। २	७३।५४	प. १०	–३४।२४	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	प. १४	–३७।४४	पूना	१९। ०	७२।५५	प. १४	–३८।२०
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	पू. १	–२२।४८	जौनपुर	२५।४६	८२।४४	पू. २५	+ ०।५६	पेशावर (पा.)	३४। २	७१।३७	प. २०	–१३।३२

* नगर के रेखांश ८२°।३०' से अधिक या कम होने पर स्टैण्डर्ड अन्तर क्रमशः धन या ऋण होगा।

अक्षांशादि सारिणी

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशांतर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिनट	मि. से.
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	प. २७	−५०।४४
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	पू. १२	−११।३२
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	प. ६	−३०।१२
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	प. ७	−३१।२०
बड़ौदा	२२। ०	७३।३०	प. १२	−३६। ०
बम्बई	१९। ०	७२।५४	प. १४	−३८।२४
बरेली	२८।२२	७९।२७	पू. १२	−१२।१२
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	पू. १२	−११।५२
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	पू. ४५	+२१।२८
बहावलपुर	२८।२४	७१।४७	प. १९	−४२।५२
बिलासपुर (म. प्र.)	२२। ५	८२।१३	पू. २३	− १। ८
बीकानेर	२८। १	७३।२२	प. १३	−३६।३२
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	प. ३	−२६।५२
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	पू. ५	−१९।२८
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	प. ६	−३०। ०
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	पू. ४	−२०। ०
भागलपुर (बि.)	२५।१४	८६।५९	पू. ४२	−१७।५६
भोपाल (म.भा.)	२३।१६	७७।३६	पू. ४	−१९।३६
भूटान (स्टेट)	२७।३०	९०। ०	पू. ५४	+३०। ०
मद्रास	१३। ४	८०।१७	पू. १५	− ८।५२
मथुरा	२७।२८	७७।४१	पू. ५	−१९।१६
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५९	प. २	−२६। ४
मियांवाली (पा.)	३२।३५	७१।३३	प. २०	−१३।४८
मिण्टगुमरी (पा.)	३०।५८	७३।२१	प. १३	− ६।३६
मुल्तान (पा.)	३०।१२	७१।३१	प. २०	−१३।५६
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	पू. ३६	+११।४८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४४	९३।५८	पू. ७०	+४५।५२
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	पू. ९	−१४।४४
मेरठ	२९। १	७७।४५	पू. ५	−१९। ०
मैसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४२	पू. १	−२३।१२
मण्डी (हि. प्र)	३१।४३	७६।५८	पू. २	−२२। ८

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशांतर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिनट	मि. से.
रतलाम	२३।३१	७५। ७	प. ६	−२९।३२
रत्नगिरि	१७। ८	७३।१९	प. १३	−३६।४४
रामेश्वरम्	९।१७	७९।२२	पू. ११	−१२।३२
रावलपिण्डी (पा.)	३३।३७	७३। ६	प. १४	− ७।३६
राजमहेन्द्री (आंध्र)	१७।१०	८१।४८	पू. २१	− २।४८
रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	पू. १	−२३।२०
रेवा (वि.प्र.)	२४।३१	८१।१९	पू. १९	− ४।४४
रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	पू. २१	− ३।१६
राजकोट	२२।१८	७०।५६	प. २२	−४६।१६
रोहतक	२८।५४	७६।३८	पू. १	−२३।२८
रोपड़ (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	पू. ०	−२४।००
लखनऊ	२६।५५	८०।५९	पू. १८	− ६। ४
लायलपुर (पा.)	३१।४४	७३। ५	प. १४	− ७।४०
लाहौर (पा.)	३१।३७	७४।२६	प. ८	− २।१६
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	प. २	−२६।२४
शिकारपुर (सिंध)	२७।५७	६८।४०	प. ३१	−५५।२०
शिमला	३१। ६	७७।१३	पू. ३	−२१। ८
श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	प. ७	−३०।३६
सरगोधा (पा.)	३२। २	७२।४०	प. १५	− ९।२०
सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	पू. ४	−२०।२८
सियालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	प. ८	− १।३६
सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। २	प. १०	−३३।५२
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	पू. ९	−१५। ०
सूरत	२१।१२	७२।५२	प. १५	−३८।३२
सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	पू. ३	−२१।२४
हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	पू. ७	−१७। ८
हिसार	२९।१०	७५।४६	प. ३	−२६।५६
हैदराबाद (सिंध.)	२५।२५	६८।३८	प. ३१	−५५।२८
हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	पू. ८	−१६। ०
होशियार पुर	३१।३२	७५।५७	प. २	−२६।१२
होशंगाबाद (सी.पी.)	२२।४६	७७।४५	पू. ५	−१९। ०

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर देश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टैं.टा. से. देशीय स्टै. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	मि. से.
काबुल (अफगा.)	उ.३४।३०	पू.६९।१८	− १। ०	+ ७।१२
कन्दहार "	उ.३१।३७	पू.६५।३०	− १। ०	− ८। ०
क्वेटा (बिलोचि.)	उ.३०।१८	पू.६७। ०	− ०।३०	−३२। ०
माण्डले (ब्रह्मा)	उ.२१।५९	पू.९६। ८	+ १। ०	− ५।२८
रंगून (ब्रह्मा)	उ.१६।४५	पू.९६।१३	+ १। ०	− ५। ८
सिंगापुर (मलाया)	उ. १।१७	.१०३।५१	+ २। ०	−३४।३६
बगदाद (इराक)	उ.३३।२०	पू.४४।२७	− २।३०	− २।१२
मक्का (अरब)	उ.२१।२५	पू.३९।५४	− २।३०	−२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ.३५।४१	पू.५१।२५	− २। ०	− ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ.३०। २	पू.३१।१५	− ३।३०	+ ५। ०
जेनवा (स्विट्जर पू.)	उ.४६।१३	पू. ६। ७	− ४।४०	−३५।३२
जेरुशलम (इजरा.)	उ.३१।४६	पू.३५।१४	− ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ.४०।४३	प.७४। ०	−१०।३०	+ ४।००
वाशिंगटन "	उ.३८।५५	प.७७। ४	−१०।३०	− ८।१६
बर्लिन (पू.जर्मनी)	उ.५२।३२	पू.१३।२५	− ४।३०	− ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ.४७।२९	पू.१९। ३	− ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ.५१।३०	प. ०। ५	− ५।३०	− ०।२०
ग्रीनविच "	उ.५१।३०	० ०	− ५।३०	० ०
ल्हासा (तिब्बत)	उ.२९।४०	पू.९१ ५	०। ०	+३४।२०
लिस्बन (पुर्त्तगाल)	उ.३८।४४	प. ९। ९	− ५।३०	−३६।३६
ढाका (पू. पाकि.)	उ.२३।४३	पू.९०।२६	+ ०।३०	+ १।४४
कराची (प. पाकि.)	उ.२४।५१	पू.६७। ४	− ०।३०	−३१।४४
नैरोबी (केन्या)	द. १।१८	पू.३६।५२	− २।३०	−३२।३२
मोम्बासा "	द. ४। ०	पू.३९।४०	− २।३०	−२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द. २।३५	पू.३२।५६	− २।३०	−४८।१६
मोशी "	द. ३।२१	पू.३७।२०	− २।३०	−३०।४०
टोकियो (जापान)	उ.३५।४०	.१३९।४५	+ ३।३०	+१९। ०
पेरिस (फ्रांस)	उ.४८।५०	प. २।२०	− ४।३०	−५०।४०
मास्को (रूस)	उ.५५।४५	पू.३७।३७	− २।३०	−२९।३२
रोम (इटली)	उ.४१।५५	पू.१२।२८	− ४।३०	−१०। ८
हांगकांग (चीन)	उ.२२।१२	पू.११४।१	+ २।३०	−२३।१२
पेकिंग	उ.३९।५५	पू.११६।२४	+ २।३०	−१४।२४

॥ श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ॥ वैशा. श. १३ चं. चित्रा ॥॥ऽग. ऽन. (३३ उ.) ऽ॥ल

॥ श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ॥

खचर गतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यान् विविधवचनजालाल्लोकयन् शास्त्र सिद्धान् ।
सकलभरत भूमौकिञ्च पञ्चापदेशे, करकलनमुहूर्त्तालीमहं संलिखामि ॥

सं० २०२० में विवाहादि मुहूर्त्त

समय शुद्धिः—

गुरु अस्त :—वर्षारम्भ में चैत्र शु. १३ शनिवार तक गुरु अस्त रहेगा ।

शुक्र अस्त :—भाद्रपद कृ. १ मंगलवार से प्रथम कार्तिक कृ. १३ मंगलवार तक शुक्र अस्त रहेगा। ग्रहलाघवादि प्राचीन करण ग्रन्थों में गुरुशुक्रोदयास्त ज्ञान के लिए दी गई कालांश पद्धति स्थूल है। इनके यथार्थ उदयास्त जानने के लिए उन्नतांश पद्धति वैज्ञानिक है। यहां हमने इसी पद्धति को अपनाया है। गु. शु. के अस्त से पूर्व तीन दिन वृद्धत्व दोष एवं उदय के पश्चात् भी तीन दिन बाल्य दोष के शुभ कार्यों में वर्जित हैं।

संसर्प एवं क्षयमास :—संसर्प एवं क्षय मास में विवाहादि वर्ज्य हैं। संसर्प मासिक पर्वोत्सवों के लिए ही प्राकृत (शुद्ध) माना गया है। इस वर्ष १८ अक्तू. १९६३ से १६ नवम्बर १९६३ तक संसर्प मास है एवं १७ नवम्बर से १६ दिसम्बर १९६३ तक क्षय मास है।

यहां क्रांतिसाम्य (महापात)-दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पञ्चाङ्ग-कार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। इसीलिए विवाहलग्न दीपक ग्रन्थ में लिखा है कि—**प्रागुक्त संभवस्येत्थं यदिस्याद्गणितागतम्। क्रान्ति साम्यंतदा नेष्टं मध्यमन्यत्र सम्भवे॥ त्र्यस्त्रिंशत्कला ऽल्पत्वे दोषः क्रान्त्यन्तरेतयोः। रवीन्द्वोः क्रान्ति साम्यस्य नाधिके ऽपईरितः॥**

इन मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, दग्धातिथि आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं वहां मुहूर्त्त लगा दिए गए हैं। अश्वि. चि. श्र. ध. नक्षत्रों के विवाह मुहूर्त्त कात्यायन ऋषि के मत से लगाये हैं, जो यजुर्वेदियों के लिए ग्राह्य हैं।

—शुद्ध सपरिहार विवाह मुहूर्त्त—

(सब देशों के लिए)

वैशा. कृ. ८ बु. श्रव. ।ऽ।।।।ऽ।। ल. ८ (अं. ५ उ.), ९, ११, (शं. दा.), १२,
वैशा, कृ. ९ गु. श्रव. ।ऽ।।ऽ नृ. (३ घ. बाद) ।ऽ।। ल. २, एवं धूलिमुख,
वैशा. शु. २ गु. रो. ऽ गु. ।।।ऽ अग्नि ।।।। ल. ११ (श. दा.), १२
वैशा. शु. ३ शु. रो. ऽ गु. ।।।ऽ अग्नि ।।।। ल. ३,
वैशा. शु. ८ बु. म. ।।।ऽश. ऽ रो. ऽ।।। ल. ९ (९ अं. उ.) मं.दा., (क्रां. सा. कुम्भे)
वैशा. शु. ९ गु. भ. ।।।ऽ श.ऽ रो. (२६ या.) ऽ।।। धूलिमुख ९, (मं. दा.)
वैशा. शु. ११ श. उ. फा. ।।ऽशुक्र ।ऽ (अग्नि) ऽ।।। लग्न धूलिमुख (घ. ३० उ.)
वैशा. शु. १२ र. हस्तऽसू. ऽ।ऽ गुरु ऽ गु.ऽ अग्नि (घ. ३१ या.) ।।।। ल. २, ३, ९, (मं. दा.)
वैशा. शु. १३ चं. हस्तऽसू.ऽ।ऽ गु ऽ गु.।।।।ल. २ (अं. २४ या.)
वैशा. शु. १३ चं. चित्रा ।।।ऽ शु. ऽ नृ. (३३ उ.) ऽ।।। ल. ३ (अं. १२ उ.) ९ (मं.दा.) धूलिमुख ११
वैशा. शु. १४ मं. चित्रा ।।।ऽशु.ऽनृ.ऽ।।। ल. ३,
ज्ये.कृ. १० श.उ. भा. (५३ तक, भद्रा) ऽरा. ।ऽगु. ।।।ऽऽ।। ल. १
ज्ये. कृ. ११ र. उ. भा. ऽ रा. ।।।।ऽ नृ. ऽऽ।। ल. धूलिमुख ९ (मं. दा.)
ज्ये. कृ. ११र. रेव. ।।ऽगु.।।ऽ नृ. ।।।। ल १.
ज्ये. कृ. १२ चं. रेव. ।।ऽ गु. ।।।।।। ल. धूलिमुख.
ज्ये. शु. ७ बु. म. ।।।।ऽ श. ऽ नृ. (२४ या.) ऽ।।। ल. धूलिमुख
ज्ये. शु. ९ शु. उ. फा. ऽ मं. ।।ऽगुरु। ऽ चौ. (२९या.) ।।।।ल. गो धू. १२ (चं.दा.)
ज्ये. शु. १० श. हस्त ।।।।ऽ रो. (३३उ.) ।।।। ल. गो. धू.,
ज्ये. शु. ११ चं. स्वा. ऽ सू. ।।।।।।।। ल. धूलिमुख.
ज्ये. शु. १३ बु. अनु. ।।।ऽ बु. शु.. ।।ऽ।। ल. १२,१ (चं. दा.)
आषा. शु. ७ शु. ह, ऽ मं. ।।।ऽ नृ. ।ऽ।ऽ लग्न २
आषा. शु. ८ श. चित्रा ।।।ऽ गु. ऽ नृ. (४७ या.) ऽ।।। ल. १२ (चं. दा.), २,
आषा. शु. ९ र. चित्रा ।।।ऽ गु.।ऽ।।। ल. ६ (अं ८ उ.) गोधू.,
आषा. शु. ९ र. स्वा. ।।।।ऽ चौ. ।।।। ल. १ (अं. ६ उ.) (चं. दा.)
आषा. शु. १० चं. स्वा. ।।।।ऽ चौ. ।।।। ल. ६ (गु. दा.) गोधू. १ (चं. दा.)
माघ शु. २ गु. श्र.।।।।ऽ अ.।।।।ल. धूलिमुख
माघ शु. ५ र. उ. भा. ।।।।।ऽ।।। ल. ८
माघ शु. ६ चं. उ. भा. ।।।।ऽ चौ. (१९ उ.) ऽ।।। ल. १, धूलिमुख,
माघ शु. ६ चं. रेव. ।।ऽगु. ।।ऽ चौ. ऽ।।। ल. ८,
माघ शु. ७ मं. रेव. ।।ऽ गु. ।।ऽ चौ. (१८ या.) ऽ।।। ल. १, धूलि मुख,
माघ शु.८ बु. अश्वि. ।।।।ऽ रो. (१७ उ.) ।ऽ।। ल. १२ (रा. दा.) धूलि मुख.
माघ शु. ११ श. मृ. ऽ गु.।।।ऽ अ.।।ऽ ल. गोधूलि,
माघशु. १२ र. मृ.ऽगु. ।।।ऽ अ.।।ऽ ल. ११,
फाल्गु. कृ. ४ श. उ. फा. ।।ऽ गुरु ऽ शु. ।।ऽ।।ल. १ गोधूलि, ८.

पञ्जाब व द्विगर्त देश के लिये—

आषा. शु. १२ बु. अनु.ऽसू.ऽ।।ऽ रो. ।।।।ल. ६ (गु. दा.) धूलिमु. १२, १, २ (चं. दा.)
श्राव. कृ. ६ शु. उ. भा. ऽचं. रा. ।।ऽ मं. ऽ रो. ।।।। ल. धूलिमुख.
श्राव.कृ. ७ श.उ.भा. ऽ चं. रा. ।।ऽ मं. ऽ रो. ।।।। ल. ६ (अं. १४ या.) चं. गु. दा.
श्राव. कृ. ८ र. अश्वि.ऽ बु. ।।।।।ऽ।ऽ ल. ७ (अं. ११ उ.) चं. दा.
श्राव. कृ. ११ बु. रो. ।।।।।।।।। ल. धूलिमुख,
श्राव. शु. ३ मं. मघा ।ऽ।।ऽ श. ऽ चौ. ऽ।।। ल. ११ चं. मं. दा.,
श्राव.शु. ५ गु. उ. फा. ।।ऽ मं. ऽ गुरु. ।ऽ रो. ऽऽ।ऽ ल. धूलिमुख, २
श्राव. शु. ६ शु. हस्त ।।।।।।।।ऽ ल. ७, धूलिमुख,
श्राव. शु. ९ मं. अनु. ।।।।ऽनृ. ।।।। ल. गोधूलि., २ (चं. दा.)

सब देशों के लिए

फाल्गु. कृ. ५ र. ह. ।।।।।।ऽ।। ल. १२ (अं. १७ या.) चं. दा.,
फाल्गु. कृ. ६ चं. चित्रा ऽ चं. बु. ।।ऽ शुक्रेव ऽ गु.ऽ अग्नि ।।।। ल. १२ (अं. ९ उ.) गोधूलि.

फाल्गु. कृ. ९ शु. अनु. ।।।।ऽ चौ. ।ऽ।। ल. १२ (श. दा.), १ (चं. दा), २ (चं. दा.)
फाल्गु. कृ. १० श. मू. ।ऽ।।।।ऽ।।। ल. ८
फाल्गु. कृ. ११ र. मू. ।ऽ।।ऽरा. ।ऽ।। ल. १२, १,
फाल्गु. शु. ४ चं. रे[illegible]. ।ऽऽ गु. ।।ऽ नृ. ऽऽ।। ल. ८ (अं. ११ तक).
फाल्गु. शु. ४ चं. अश्वि. ।।।।ऽ नृ. ।।।। ल. १०,
फाल्गु. शु. ५ मं. अश्वि. ।।।।।।।।। ल. १२, २ धूलिमुख,
प्र. चैत्र कृ. १ शु. उ. फा. ।।।ऽ गु. ।ऽ चौ. (५१ या.) ।।।। ल. ४ (अं १६ उ.), १०
प्र. चैत्र कृ. २ श. उ. फ. ।।।ऽ गु. ।।।।। ल. १२ (च. दा.) २,
प्र. चैत्र कृ. ३ र. चित्रा ।ऽ।ऽ गु. ऽ रो. (५० या.) ।ऽ।ऽ ल. १०,
प्र. चैत्र कृ. ४ चं. चित्रा ।ऽ।ऽ [illegible] ।।ऽ।ऽ ल. १ चं. दा., ४ (अत्र मे कर्क लग्नयोः गणितेन क्रान्तिसाम्याभावः)
प्र. चैत्र कृ. ७ गु. अनु. ऽ चं. ऽ।।।।।।। ल. ४, धूलिमुख,
प्र. चैत्र कृ. ९ श. मू. ।।।।।।ऽ।। ल. १२.

अशुद्ध विवाह मुहूर्त

ऊपर शुद्ध सपरिहार विवाह-मुहूर्त्त दिए गए हैं। यहाँ हम उन विवाह नक्षत्र एवं दिनों का निर्देश कर रहे हैं जिनमें अपरिहार्य दोष या दोषों के कारण विवाह नहीं हो सकते। साथ[illegible] [illegible]षों का निर्देश भी किया गया है, ताकि उनमें विवाह की अशास्त्रीयता के हेतु का [illegible]न हो सके।

वैशा. कृ. ५ र. मू. राहु वेध
„ ६ चं. मु. राहु वेध
„ ७ मं. उ.षा. } केतुयुति
„ ८ बु. उ.षा. } केतुयुति
„ ९ गु. धनि. } शनियुति
„ १० शु. धनि } शनियुति
वै. शु. ३ शु. मृग } केतुवेध
„ ४ श. मृग } केतुवेध
„ १० शु. उ. फा. भद्रा
„ १४ मं. स्वा. व्यती. लग्नाभाव
„ १५ बु. स्वा. व्यतीपात
ज्ये. कृ. १ गु. अनु. } सूर्यवेध
„ २ शु. अनु } सूर्यवेध
„ ३ श. मू. } राहुवेध
„ ४ र. मू. } राहुवेध
„ ४ चं. उ. षा. } केतुयुति
„ ५ मं. उ.षा. } केतुयुति
„ ६ बु. श्रव. क्रान्ति सा.
„ ६ बु. ध. } भौमवेध
„ ७ गु. ध. } भौमवेध

ज्ये. शु. १ शु. मृ. } केतुवेध
„ २ श. मृ. } केतुवेध
„ ८ गु. म. भद्रा
„ १० श. उ. फा. लग्नाभाव
„ ११ र. हस्त व्यतीपात
„ ११ र. चि. व्यतीपात भद्रा
„ ११ चं. चि. लग्नाभाव
„ १२ मं. स्वा. मृत्यु
„ १४ गु. अनु. भद्रा लग्नाभाव
„ १५ शु मू. } राहुवेध
आषा. कृ. १ श. मू. } राहुवेध
„ ३ चं. उ. षा. } केतुयति
„ ४ मं. उ.षा. } केतुयति
„ ४ मं. श्रव. } भौमवेध
„ ५ बु. श्रव. } भौमवेध
„ ५ बु. ध. } शनियुति
„ ६ गु. ध. } शनियुति
„ ८ श. उ. भा. संक्रान्ति
„ ९ र. उ. भा. नक्षत्रान्त
„ ९ र. रेव. लग्नाभाव
„ १० चं. अश्वि. भौमवेध

आषाढ़शु. ५ बु. म. मृत्यु
„ ६ गु. उ. फा. व्यती.
„ ७ शु. उ. फा. लग्नाभाव
„ ८ श. ह. लग्नाभाव एवं परिघार्ध
„ १३ गु. अनु. लग्नाभाव
चन्द्रग्र[illegible]
श्राव. कृ. ३ म[illegible] } [illegible]
„ ४ बु [illegible] } [illegible]
„ ७ श रे } भौम[illegible]
„ ८ र. रे. } भौम[illegible]
„ ९ चं. अ[illegible] म[illegible]
„ १२ गु. मृ. केतुवेध
श्राव. शु. २ चं. म व्यती.
„ ४ बु. उ. फा. परिघार्ध
„ ५ गु. ह[illegible]त लग्नाभाव
„ ७ श. चि. मृत्यु. लग्नाभाव
„ ८ र. चि भद्रा
„ ८ र. स्वा. लग्नाभाव
„ ८ चं. स्वा. लग्नाभाव
„ १० बु. अनु. क्रान्तिसाम्य
„ ११ गु. मू. } राहुवेध
„ १२ शु. मू. } राहुवेध
शुक्रास्त. संसर्प-[illegible]य मास एवं धनुस्थ:सूर्य
माघशुक्ल २ गु. ध } शनिशुक्रयुति
„ ३ शु. ध. } शनिशुक्रयुति
„ ७ मं. अश्वि. लग्नाभाव
„ १० शु. रो. सूर्यवेध
„ ११ श. रो. सूर्यवेध, भद्रा
फाल्गुन. कृ. २ गु. म भौम सूर्यवेध
„ ३ शु. उ. फा. लग्नाभाव
„ ७ मं. चित्रा भद्रा
„ ७ मं. स्वा भुजङ्गपात
„ ८ बु. स्वा. भुजङ्गपात
„ ८ गु. अनु क्रान्तिसाम्य
फाल्गु. शु. २ श. उ. भा. } शुक्रयुति
„ ३ र. उ. भा. } शुक्रयुति
„ ३ र. रे. भद्रा
होलाष्टक
प्र. चै. कृ. २ श. ह. भुजङ्गपात
„ [illegible]

प्र. च. कृ. ४ चं. स्वा. } भौमसूर्यवेध
„ ५ मं. स्वा. } भौमसूर्यवेध
प्रथमचैत्र ६ बु. अनु. भद्रा
आवश्यक—
भ[illegible] क्रान्तिसाम्य[illegible] [illegible]वेधं तथैव च।
लग्नहीनविवाहन्तु कलौ [illegible] विवर्जयेत्॥

—उपनय[illegible] मुहूर्त—

वै[illegible] कृ. २ गु. [illegible]
वैशा. शु. ३ शु. [illegible]
„ ५ र. [illegible]
„ १० शु. पु[illegible] फ.
ज्ये. शु. ११ चं. चित्रा
आषा कृ. २ र. पू. षा
पौषशु. ९ बु. रे.
माघशु. २ गु. श्रव
फाल्ग. कृ. ३ शु. पू. फा. (घ. ८ बाद रोग)
फाल्गु. कृ ५ र. हस्त

—द्विरागमन मुहूर्त—

वै. कृ. १० शु. शत
वै. शु. ३ शु. रो. (२३।२० तक)
वै. श. ६ चं. पुन (८।२० से २९।४७ तक)
वै. शु. १३ चं. ह.
वै. शु. १३ च. चित्रा (३१।२० तक)
फा. शु. १ शु. शत.
फा. शु. ४ चं. अश्वि.
प्र. चै. कृ. १ शु. उ. फा.
प्र. चै. कृ. ७ गु. अनु. (१५।१५ उ.)
प्र. चै. कृ. १० चं. उ. षा.
प्र. चै. कृ. १२ बु. श्रव.

—गेहारम्भ मुहूर्त—

वै. शु. ११ श. उ. फा. (घ. २० से घ. ३१ तक)
प्र. चै. कृ. १ शु. उ. फा.
„ „ २ श. उ. फा.
„ २ श. हस्त

—नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त—

वै. शु. ११ श. उ. फा. (१९।२७ या भद्रा)
वै. शु. १३ चं. चित्रा (३१।२० या.)
ज्ये. कृ. १० श. उ. भा. (५३।० उ.)

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

ज्ये. कृ. १२ चं. रे.	माघ कृ. ११ शु. अनु.
ज्ये. शु. ९ शु. उ. फा. (४८।५२ उ.)	माघ कृ. १२ श. अनु.
ज्ये. शु. १० श. उ. फा.	माघ शु. ६ चं. उ. भा.
ज्ये. शु. ११ चं. चित्रा	माघ शु. ६ चं. रेव.
माघ कृ. ७ चं. चित्रा	फाल्गु.कृ.९शु.अनु. (७।२०से २५।१७तक)

मुहूर्तों के विषय में कुछ नोट—

नोट : १—यदि साहों में विवाह का लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुंच जानी चाहिए क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शांतिकृत्य और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ॥

नोट : २—विवाहादि मुहूर्तों में बाण विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के गतांशों पर ही किया जाना शास्त्र सम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं।

नोट : ३—यदि गुरु शुक्र के उदयानन्तर ५–७ दिन के भीतर ही विवाहमुहूर्त बनता हो तो माइयाँ पेड़ माथ हस्तादि विवाहाङ्ग कृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहले ही प्रारम्भ कर लेना चाहिए ॥

द्विरागमने विशेषः

सूचना :—यदि दीपावली को दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर आवे तो उसमें कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखे ऐसे समय पतिगृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होता है।

उपनयन के लिए विशेष

अत्यावश्यकता में चन्द्र बल देख कर सत्तीर्थ पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है इसी तरह द्विपितर्पण के समय भी मंत्र दीक्षा एवं जनेऊ लिया जा सकता है—यह शिष्टाचार है।

आचार्य विकाशचन्द्र सूरि जी द्वारा प्राप्त जैन पर्व निर्णय

वीर संवत् २४८९-९० आत्म संवत् ६७-६८ शके १८८५ विक्रम संवत् २०२०

सन् १९६३-६४	तिथि	तारीख
श्रीबुद्धिविजय (बुटराय) जी म.का स्वर्गदिन और श्री विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी म०का जन्मदिन	चैत्र सु. १ मंगल	ता. २६- ३-६३
" सिद्ध चक्र आंबिल ओली शुरु	चैत्र सु. ७ रवि	ता. ३१- ३-६३
" महावीर स्वामी का जन्मदिन (जयंति)	चैत्र सु. १३ शनि	ता. ६- ४-६३
" आंबिल ओली पूर्ण-चैत्रपूर्णिमा-सि. का मेला	चैत्र सु. १५ सोम	ता. ८- ४-६३
" ऋषभदेव वर्षीतप पारणा	वै. सु. ३ शुक्र	ता. २६- ४-६३
" विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी स्व.दिन	ज्ये. सु. ८ गुरु	ता. ३०- ५-६३
" चौमासी अट्ठाइ प्रारम्भ	आषा. सु. ७ शुक्र	ता. २८- ६-६३
" चौमासी चौदस	आषा. सु. १४ शुक्र	ता. ५- ७-६३
" चौमासी अट्ठाइ सम्पूर्ण	आषा. सु. १५ शनि	ता. ६- ७-६३
" नेमनाथ भगवान का जन्मदिन	श्राव. सु. ५ गुरु	ता. २५- ७-६३
" पर्युषणपर्व अट्ठाइ प्रारंभ	भा. व. १२ शुक्र	ता. १६- ८-६३
" कल्पसूत्र [illegible] रात्रि जागरण	" " १४ रवि	ता. १८- ८-६३
" कल्पसूत्र वांचना प्रारंभ	" " ३० सोम	ता. १९- ८-६३
" श्री महावीर जन्म वांचन	" सु. १ मंगल	ता. २०- ८-६३
" संवत्सरी पर्व	" " ४ शुक्र	ता. २३- ८-६३
" जगद्गुरु विजयहीर सूरि स्वर्ग दिन	" " ११ शुक्र	ता. ३०- ८-६३

सन् १९६३-६४	तिथि	तारीख
श्री युगवीर आ. श्रीविजय वल्लभ सूरि स्वर्गदिन	आ. व. ११ शुक्र	ता. १३-९-६३
" सिद्धचक्र आंबिल ओली प्रारंभ	" सु. ७ बुध	ता. २५- ९-६३
" सिद्धचक्र आंबिल ओली संपूर्ण	" " १५ गुरु	ता. ३-१०-६३
" महावीर प्रभु निर्वाण दिवाली पर्व	का.व. ३० गुरु	ता. १७-१०-६३
" गौतम स्वामी केवल ज्ञान–वीर सं० २४९०	" सु. १ शुक्र	ता. १८-१०-६३
" भाई दूज श्री विजय वल्लभ सूरि जन्म दिन	" " २ शनि	ता. १९-१०-६३
" ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	" " ५ बुध	ता. २३-१०-६३
" चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	" " ६ गुरु	ता. २४-१०-६३
" चौमासी चौदश	" " १४ गुरु	ता. ३१-१०-६३
" चौमासी अट्ठाइ पूर्ण कार्तिक पूर्णिमा " सिद्धाचल, हस्तिनापुर, शौरीपुर का मेला	" " १५ शुक्र	ता. १-११-६३
" मौन एकादशी (१५० कल्याणक दिन)	मार्ग.सु. ११ बुध	ता. २७-११-६३
" पौष दशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्मदिन	पौ. व. १० मंगल	ता. १०-१२-६३
" मेरुत्रयोदशी ऋषभदेव मोक्ष दिन	माघवदि १३ रवि	ता. १३- १-६४
" चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	फा. सु. ६ बुध	ता. १९- २-६४
" चौमासी चौदश	" " १४ बुध	ता. २६- २-६४
" चौमासी अट्ठाइ पूर्ण कांगड़ा तीर्थ मेला	" " १५ गुरु	ता. २७- २-६४
" ऋषभदेव जन्म दिन वर्षीतपकी शुरुआत	चै. वदि ८ शुक्र	ता. ६- ३-६४

अनाजघृत—श्रावण में अनाज तेज होकर फिर मन्दी गिरेगा। आगे माघ सुदी में फिर अनाज के भावों में तेजी हो, २५ दिसम्बर के बाद घृतसंग्रह करने वाले आगे आगे लाभ में रहेंगे।

कर्याणा—इस वर्ष पीपल सुपारी लौंग बचतज इलायची यह तेज रहें।

मूंगफली सरसों आदि—१६ मई से पहले मूंगफली एरण्ड मन्दी रहेगी। १७ मई के बाद सरसों मूंगफली आदि तिलहन तेजी की ओर रहेगी।

बिनौला—यह वर्षारम्भ से ही तेजी की ओर रहेगा। १८ मई से विशेष तेजी आवेगी इस तेजी का लाभ जून के शुरू में ही उठा लेना चाहिए। बिनौले का वायदा हो तो १३ जुलाई से ७ दिन में अच्छी तेजी आवेगी। एरण्डा में ४ अप्रैल से ३ मई तक मंदी. आगे ९ जुलाई से १९ जुलाई के मध्य फिर खासी मंदी का योग है अनन्तर तेजी।

भयरोगोपद्रव—इस वर्ष बंगाल बिहार उड़ीसा, पूर्वी पाकिस्तान व आसाम में अग्निकाण्डों से हानि के योग हैं। जापान से फिलिपाइन तक कोई राजनैतिक बवन्डर भी उठेगा। २० अगस्त से २७ सितम्बर तक कहीं कोई भय प्रद घटना घटित होगी और किसी उच्च व्यक्ति के लिए भी भयप्रद है। १८ मई के बाद बहुत जगह मशीनरी में बिगाड़ तथा टूट फूट की अनेक दुर्घटनाएं होंगी। जून से अगस्त तक कहीं विस्फोट से हानि के योग हैं, मई मास प्रमुख सैनिक व्यक्तियों के लिए अशुभ है। १ अक्तूबर से १० नवम्बर तक कई जगह पशुओं में रोग पीड़ा से भय होगा। शुरू अगस्त से नवम्बर तक कई प्रदेशों में सरकारी करों व जरमानों से प्रजा कष्ट पावेगी।

भारत की वर्षा वायु— इस वर्ष १७ मई के करीब पर्वतीय प्रदेश व उत्तरी भाग में कुछ वर्षा होगी। आगे ७ जून से भारत में कहीं न कहीं वर्षा होनी प्रारम्भ हो जाएगी, इसी समय वहाँ बिजाई भी होने लगेगी, वर्षा ऋतु में कहीं नदी नाले खुश्क और कहीं पानी अधिक हो। ६ जुलाई से २० जुलाई तक अच्छी वर्षा के योग हैं फसल अच्छी होगी। २१ जुलाई से २ अगस्त तक खण्डवृष्टि होती रहेगी। ३ अगस्त से १२ अगस्त तक वर्षा बहुत जगह कम होगी। १८ अगस्त से ३० अगस्त तक वर्षा के अच्छे योग हैं। ३१ अगस्त से ६ सितम्बर तक वर्षा से कहीं हानि होगी।

नोट :—उपरोक्त वर्षा का विचार गृह स्थित्यनुसार लिखा है अपने अपने देश की वर्षा का पूर्ण विचार आषाढ़ी पूर्णमासी को देख कर ठीक समझ लेना चाहिए। उसमें फिर गलती नहीं रहेगी।

विज्ञ महोदयो! इस वर्ष घटित होने वाली राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संसार से सम्बन्धित घटनाओं का ज्योतिर्विज्ञान दृष्ट्या और श्री प्रभु कृपा वशात्, जो शुभाशुभ दीख पड़ा है वह मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार यहां उल्लेख कर दिया है आगे "कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तु समर्थः" भविष्य के निर्माता सर्वेश्वर श्री प्रभु ही हैं। उनकी बल मायाशक्ति के सम्मुख अस्मदादि अल्पज्ञ व्यक्ति भविष्य लेखन को क्या क्षमता रख सकता है। "तत्वं चात्रेऽ वरोविन्ति नाहं वेद्मि कदाचन,"

श्रीमार्तण्डभवन,
कुराली
श्रावण शु. ५ रविवार
सं० २०१९ वि०

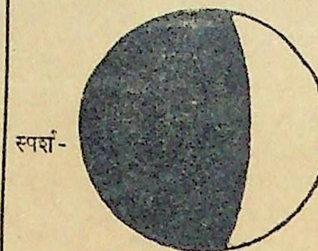
विनीत :—
श्री बघाट नरेशाश्रित
मुकुन्दवल्लभ

ग्रहण विवरण (सं० २०२०)

इस वर्ष भारत में दृश्य दो चन्द्रग्रहण एवं भारत में अदृश्य दो सूर्य ग्रहण होंगे जिनका विवरण निम्न है :—

(१) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण—आषाढ़ शु० १५ शनिवार (६–७ जुलाई की मध्य रात्रि) को होगा।

ग्रहण मध्यकाल में ग्रास स्वरूप

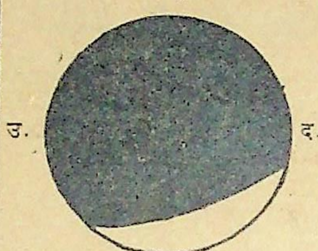


	घं०मि०	
७ जुलाई को स्पर्श	२।४	(I.S.T.)
मध्य	३।३४	
मोक्ष	५।४ प्रातः	
ग्रास =	२१'.२	

फल—पू० षा० नक्षत्र वालोंको शोक कष्टदायक है शान्त्यर्थ जपादि कराना चाहिए। मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, राशि वालों के लिए अशुभ है। शेष राशि वालों के लिए शुभ है।

(२) ग्रस्तोदित—खग्रास—चन्द्रग्रहण—पौष शुक्ल १५ बं०(३० दिसं० १९६३) को होगा।

चन्द्रोदय के समय दिल्ली एवं पंजाब में दृश्य ग्रास



	घं०मि०(I.S.T.)
३० दिसम्बर १९६३ को स्पर्श दिन में	१४।५४
,, सम्मीलन	१५।५८
,, मध्य	१६।३७
(मोक्षघड़ी अनुसार शाम के ६ बज कर २० मिनट पर) उन्मीलन	१७।१६
मोक्ष	१८।२०
ग्रास =	४४। ६

यह ग्रहण भारत में ग्रस्तोदित होगा। यह ग्रहण चन्द्रवार को हो रहा है अतः इसे चूड़ा मणि चन्द्र ग्रहण माना जाएगा। चूड़ा मणि ग्रहण में स्नान-जपादि का विशेष महत्त्व है।

फल :—आर्द्रा नक्षत्र वालों के लिए यह ग्रहण शोक-भय प्रद है। वृष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, कुम्भ, मीन राशि वालों के लिए अशुभ है शेष राशि वालों के लिए अच्छा है।

सूर्य ग्रहण—(भारत में अदृश्य)

(१) खग्रास सूर्य ग्रहण—२० जुलाई १९६३—श्रावण कृष्ण ३० शनिवार को होगा। यह ग्रहण समस्त उत्तरी अमेरिका, मैक्सिको, ग्रीनलैण्ड, वैस्ट इंडीज, न्यु फाउन्ड,

लैण्ड, दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी भाग एवं, जापान में दिखाई देगा। उत्तरी अमेरिका में खग्रास के रूप में दिखेगा।

भूमण्डल पर प्रथम स्पर्श २० जुलाई	घं० मि० २३।३४	(I.S.T.)
,, ,, अन्तिम मोक्ष २१ जुलाई	घं०मि० ४।३७	,,

(२) खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण—माघ कृष्ण ३० मं० (१५ जनवरी १९६४) को खण्ड ग्रास के रूप में केवल, दक्षिणी अमेरिका के अन्तिम दक्षिण छोर, फाकलैण्ड केपहार्न आदि द्वीपों में एवं एण्टार्क टिका में दिखाई देगा। विश्व के अन्य किसी भी राष्ट्र में यह ग्रहण नहीं दीखेगा। इस ग्रहण की भूमण्डल पर प्रथम स्पर्श आस्ट्रेलिया से नीचे समुद्र में अक्षांश –५३° रेखांश +१४१° पर होगा, एवं अन्तिम मोक्ष दक्षिणी अमेरिका के दक्षिण पूर्व की ओर समुद्र में अक्षांश –४५° रेखांश –३९° पर होगा।

प्रथम स्पर्श १५ जनवरी को घं० मि० ०।१३ (I.S.T.), एवं अन्तिम मोक्ष

१५ जनवरी को घं० मि० ३।४९ (I.S.T.) पर होगा।

श्री महालक्ष्मी यन्त्र

इसे विधिपूर्वक निर्मित यन्त्र को गल्ले पेटी में रखने से कारोबार में उत्तम लाभ मिलता है। भेंट ५।)

बालरक्षा यन्त्र

इसके धारण से बालक को नजर आदि दोष नहीं लगते। बच्चे का कल्याण चाहने वाले को चाहिए कि इसे धारण करावें।

शनि शान्ति यन्त्र

इसे धारण करने से शनि कृत अरिष्ट, साढ़ेसाती व ढैया का अशुभ फल शान्त रहता है। भेंट २॥)

मङ्गल शान्ति यन्त्र

इस यन्त्र को मँगलिक स्त्री वा पुरुष भुजापर बांधे तो मंगल कृत अशुभ फल शान्त रहता है। भेंट २॥)

यन्त्रों को धारण करने की विधि एवं नियम यन्त्र के साथ भेजे जाते हैं।

व्यवस्थापक

श्री मार्त्तण्ड कार्यालय

मु० पो० कुराली (अम्बाला) पंजाब

गणक-मार्त्तण्ड

(जन्म पत्री आदि की गणित के लिए नई अद्भुत पुस्तक)

लेखकः— पं० मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य

(सम्पादक—"मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग" आदि)

वर्षों से ज्योतिषियों की मांग थी कि एक ऐसी पुस्तक लिखी जाए जिसमें जन्म-पत्री आदि की कठिन गणित को सरलता एवं लाघव से करने की नवीन विधिएं प्रदर्शित की हों। उनकी इस मांग को पूरी करने के लिए ही इस पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक में ऐसी मौलिक सारणिएं दी गई हैं जिनसे विश्व के किसी भी स्थान का सूक्ष्म से सूक्ष्म लग्न एवं सूर्योदयास्त बिना किसी परिश्रम के जाना जा सकता है। इसमें आपको ऐसी सारणिएं भी मिलेंगी जिनके आधार पर इष्टकालिक चन्द्रमा और अन्य सूर्य आदि ग्रह बहुत ही आसानी से गुणा-भाग के बिना ही स्पष्ट किए जा सकते हैं। ग्रहों की भुक्त-भोग्य दशा के ज्ञान की विलक्षण सारणी आपको इसमें मिलेगी। इनके अतिरिक्त अन्य बहुत से उपयोगी विषय आपको इसमें मिलेंगे—जिन्हें ज्योतिषी लोग सर्वसाधारण को बतलाते नहीं।

अधिकतर ज्योतिषियों को अफ्रीका, मलाया, चीन, इंगलैण्ड आदि विदेशों में उत्पन्न बालक या बालिका की जन्मपत्री बनाने का ज्ञान नहीं होता— इस पुस्तक से वे किसी के निर्देशन के बिना ही विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री बना सकेंगे। इस पुस्तक की कुछ विशेषताएं ये हैं—

(१) पुस्तक की सभी सारणिएं नवीन एवं मौलिक हैं। ये सारणिएं अन्य किसी भी पुस्तक में आपको नहीं मिलेंगी।

(२) जोड़-घटाव तक की गणित जानने वाला व्यक्ति भी इस पुस्तक का उपयोग गुरु की आवश्यकता के बिना ही कर सकता है।

(३) इसमें सरलता एवं लाघव का पूरा २ ध्यान रखा गया है। घण्टों में होने वाली गणित इस पुस्तक के आधार पर मिनटों में हो जाती है। इसके रचयिता विद्वान् की प्रतिज्ञा है कि इस पुस्तक का आश्रय लेकर गणित करने वाले को गणित की कठिनता एवं जटिलता की शिकायत कदापि नहीं होगी।

(४) इस पुस्तक में नवीन (आधुनिक) ज्योतिष सिद्धान्तों का यत्र तत्र उपयोग किया गया है।

ज्योतिषियों के लिए यह बहुत ही उपयोगी पुस्तक है। इस क्षेत्र में ऐसा प्रकाशन अभी तक कहीं भी नहीं हुआ है। पुस्तक छप रही है, शीघ्र ही प्रकाशित होगी— प्रतीक्षा कीजिए।

सर्वसाधारण इसे खरीद सकें—इस दृष्टि से इस पुस्तक का मूल्य केवल २ रुपए ५० नए पैसे रखा गया है। डाक खर्च पृथक् है।

प्रकाशक—

मोतीलाल बनारसीदास

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

बंगलोरोड, जवाहरनगर—दिल्ली-६

हमारे यहाँ मिलने वाली संस्कृत-हिन्दी पुस्तकों का सूचीपत्र

कर्मकाण्ड

नं०	पुस्तक का नाम	मूल्य-रु० न.पै.
१	अर्कीविवाह-भाषा टीका	०-१९
२	अग्निष्टोम पद्धति-आध्वर्य पद्धति, औद्गात्र पद्धति, हौत्र पद्धति	६-००
३	अन्त्यकर्मदीपक-नित्यानन्द	३-००
४	अनुष्ठानप्रकाश-चतुर्थीलाल	१२-००
५	अष्टशान्ति-बम्बई	०-२०
६	आचार रत्न-लक्ष्मणभट्ट कृत	२-००
७	आचाराक (ऋग्वेदीय)-खुला पत्रा	१-५०
८	आचारादर्श-यजुर्वेदियों के आह्निक	१-२५
९	आधान पद्धति-वामन शास्त्री	३-००
१०	आह्निककर्म सूत्रावली-बम्बई	४-००
११	आह्निक पद्धति-पं० नव्य अण्डीदास	१-००
१२	आह्निक सूत्रावली-(शुक्ल यजुर्वेदीय) वैद्यनारायण बम्बई	६-००
१३	आह्निकसूत्रावलि-दौलतराम गौड़ काशी	६-००
१४	आर्याभिविनय-अजमेर	०-३७
१५	आश्लेषा-ज्येष्ठा शान्ति ०-५० तथा	०-२०
१६	उत्सर्जनोपकरण विधि	०-५०
१७	उपनयन पद्धति-(वायुनन्दन) भाषा टीका	०-९४
१८	उपनयन पद्धति-(माध्यन्दिन) श्रीविद्याधर	१-००
१९	उपनयन पद्धति-भाषा टीका	१-५०
२०	उपनयन मार्तण्ड-भा०टी०-पं०विंध्याचल दत्त	०-७५
२१	उपाध्यायरत्नचन्द्रिका	१०-५०
२२	ऋग्वेदीय ब्रह्मकर्म समुच्चय-पत्राकार-मूल-	५-००
२३	ऋग्वेदोक्तनित्य विधि-खुला पत्रा	१-५०
२४	एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग-(सांवत्सरिक)	०-२२, ०-५०
२५	एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग-भाषा टीका	०-२५, ०-३७
२६	एकादशीव्रतोद्यापनप्रकाश	२-२५
२७	कर्मठगुरु-राज ज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ कृत। नित्य कर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रन्थ। पंडितजी के द्वारा अनुभूत अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान भी लिखे गये हैं-जैसे-सिद्धिपुत्रेष्टि विधि। कर्मकाण्ड विषय का ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा	६-०
२८	कर्मकाण्डक्रमावली-सोमशम्भु विरचित	१-५०
२९	कर्मकाण्ड प्रकाशिका-मूल-वर्णवदास	०-६२
३०	कर्म प्रदीप-छान्दोग परिशिष्ट	२-२५
३१	कर्म मीमांसा दर्शन-भाषानुवाद सहित	८-५०
३२	कल्पपूजा	१-१२
३३	कलशप्रतिष्ठा-पूजा विधि	०-२५
३४	कातीय तर्पण पद्धति	०-१५
३५	कातीयष्टि दीपक-(दर्शपौर्णमास पद्धति)	१-५०
३६	कात्यायनी पितृतर्पण-बम्बई	०-२५
३७	कात्यायनी शान्ति	०-२५
३८	कुण्डमण्डप सिद्धि-भा० टी०	०-५०
३९	कुण्डार्क-छः संस्कृत टीका	३-००
४०	कुम्भ विवाह	०-१९
४१	कृत्यसार समुच्चय-श्री अमृतनाथ शर्मा	१-७५
४२	कृत्यसार समुच्चय (अमृतनाथ) पं०गंगाधर	४-५०
४३	कूपाराम मीमांसा भा० टी०	०-६२
४४	कूपोत्सर्गपद्धति-भाषा टीका	०-१५
४५	गयायात्रापद्धति-भाषा	०-४५
४६	गयाश्राद्धपद्धति-मूल	०-६२
४७	गयाश्राद्धपद्धति-भाषा टीका सहित	०-८७
४८	गायत्री पूजा पद्धति-	०-२५
४९	गोदान तुलादान पद्धति-	०-१९
५०	गौडीयश्राद्ध प्रकाश महानिबन्ध-खुला पत्रा	८-००
५१	गृहनिर्माण व्यवस्था-भाषा टीका	०-६२
५२	ग्रहप्रयोग-ग्रहशांति वायुनन्दन	२-२५
५३	ग्रहशान्ति-प्रयोग-दौलतराम गौड़	४-००
५४	चूडाकरण पद्धति-(माध्यन्दिन शाखा)	०-१९
५५	जन्मदिन पूजा पद्धति	०-१२, ०-२५
५६	ज्येष्ठाशान्ति-मूल	०-२५
५७	तीर्थ श्राद्ध विधि-भाषा टीका	०-२५
५८	तुलसी पूजा पद्धति-मूल	०-१३
५९	दशकर्म पद्धति-भाषा टीका	२-००
६०	दशकर्मपद्धति-मूल	१-००
६१	दशकर्म पद्धति-पं० जनार्दन पांडे	८-००
६२	दानखण्डोक्त पुण्याहवाचन-	०-२५
६३	दुर्गा पूजा-श्यामा पूजा पद्धति	०-७५
६४	द्विरागमन-इष्टशोधन दत्तक मुहूर्त व्यवस्था भाषा टीका	०-२५
६५	द्वैत निर्णय सिद्धान्त संग्रह-(भानुभट)	०-५०
६६	धनिष्ठापञ्चक शांति-मूल	०-३७, ०-२५
६७	धर्म संग्रह-(धर्म बोधक श्लोक संचय)	२-२५
६८	नवग्रह विधान पद्धति-मूल-पत्राकार	०-६२
६९	नवरत्न विवाह पद्धति-भाषा टीका	३-००
७०	नान्दीमुख श्राद्ध पद्धति-भाषा टीका	०-३७
७१	नान्दी श्राद्ध प्रयोग-षोडश मातृका पूजादि समेत	०-५०
७२	नारायणबलि-भाषा टीका	१-१३
७३	नित्यकर्म पद्धति-भाषा टीका	०-५०
७४	नित्यकर्म प्रयोग-गोरखपुर	०-४४
७५	नित्य कर्म प्रयोग माला-श्री चतुर्थीलाल	२-००
७६	नित्य-नैमित्तिक-कर्मसमुच्चय-(यजुर्वेदीय)	५-५०
७७	नूतन वास्तु प्रबन्ध-भाषा टीका सहित-	०-६२
७८	पद्य पञ्चाशिका-भा० टी०	०-७५
७९	परिशिष्टोक्त पुण्याहवाचन-भा० टी०	०-२५
८०	पर्वोत्सव विवरण-भाषा	१-००
८१	पञ्चदेवता पूजन-(भा० टी०)	०-१९
८२	पञ्चरत्न विवाह पद्धति-पं० फलाहारि शर्मा	२-००
८३	पञ्चदान-पद्धति-मूल	०-३७
८४	पञ्चमङ्गल-	०-४०
८५	पञ्च महायज्ञ विधि-भा० टी० (आर्य समाज)	०-२५
८६	पञ्चयज्ञ-भाषा टीका समेत	०-५०

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-६

८७ पञ्चाङ्ग पद्धति—मूल ०–२५, ०–३७

८८ पार्थिव पूजन विधान–भा० टी० ०–१९

८९ पार्वण श्राद्ध प्रयोग–भा० टी० ०–५०, ०–३७

९० पितृकर्म निर्णय–पं० त्रिलोकनाथ ३–००

९१ पुत्तलविधान पद्धति–मूल ०–३१ भाषाटीका ०–३७

९२ पूतना शांति–भा० टी० ०–१३

९३ पौरोहित्य कर्म सार— १–५०

९४ प्रतिष्ठा संग्रह–मूल–पं० रामलाल ७–००

९५ प्रतिष्ठामहोदधि–वायुनंदन ६–००

९६ प्रपञ्चसार विवेक—पत्राकार मूल– १–७५

९७ प्रयोगरत्न–नारायण भट्टी—ऋग्वेदीय ३–५०

९८ प्रयोग पारिजात–षोडशसंस्कार ७–००

९९ प्रेतमञ्जरी–(यजुर्वेदीनां) भा० टी० १–५०, १–०

१०० ब्रह्मकर्म समुच्चय–हिरण्यकेशीय (३८८) ५–००

१०१ मंगलाष्टक शाखोच्चार— ०–२०

१०२ महालक्ष्मी पूजन विधि— ०–१९

१०३ महालक्ष्मी पूजा पद्धति–भाषाटीका १–००

१०४ मूल शान्ति विधि—मूल ०–३१

१०५ यज्ञोपवीत पद्धति–भा० टी० ०–७५

१०६ यज्ञोपवीत पद्धति–भा० टी० पं० रामस्वरूप १–५०

१०७ रुद्रविधान पद्धति—मूल खुला पन्ना ०–६२

१०८ लम्बोदरी होम पद्धति –मूल खुला पन्ना ०–३१

१०९ लक्ष्मी पूजन प्रयोग १–००

११० वर्षकृत्य—रुद्रधर शर्मा दो भाग ९–००

१११ वर्षकृत्य दीपक–पं० नित्यानन्द ७–००

११२ वास्तु पूजा पद्धति–गृहप्रवेश ०–३७

११३ वास्तु शान्ति प्रयोग ०–७५

११४ वास्तु प्रतिष्ठा संग्रह २–५०

११५ वासिष्ठी हवन पद्धति—हिन्दी टीका ०–७५

११६ वासिष्ठी हवन पद्धति–मूल ०–३५

११७ विनय पद्य पञ्चाशिका–भाषा टीका सहित ०–७५

११८ विवाह पद्धति—चतुर्थीलाल भा० टी० १–१२

११९ विवाह पद्धति–भयाराम कृत भा० टी० २–००

१२० विवाह पद्धति—आर्यसमाज ०–५०

१२१ विवाहसोपाङ्गविधि भा० टी० ३–००

१२२ विज्ञप्ति रत्नावली—अन्वयार्थ सहित १–००

१२३ वेदोक्त गृह वास्तु पद्धति–मूलखुलापत्रा ०–८७

१२४ वैवाह पद्यावली—भाषा टीका सहित १–५०

१२५ शांतिप्रकाश चतुर्थीलाल ६–५०

१२६ शिलान्यास पद्धति–पं० विद्याधर गौड़ ०–२५

१२७ शिलान्यास पद्धति–देहली न्यास ०–३७

१२८ शिवार्चन पद्धति (शुक्लयजुर्वेदीय) १–५०

१२९ शुक्ल यजुशाखीय कर्मकाण्ड प्रदीप ७–००

१३० शूद्रदश गात्र इकादशाह—वृषोत्सर्ग ०–३७

१३१ शूद्र पार्वण—एकोदृष्ट पद्धति वायुनन्दन मिश्र ०–१९

१३२ श्राद्धपद्धति—वाचस्पति १–७५

१३३ श्रावणी प्रयोग—वायुनन्दन १–५०

१३४ श्राद्धप्रयोगदीपिका १–२५

१३५ श्राद्धविवेक—रुद्रधर २–००

१३६ श्राद्ध संग्रह–भाषा टीका ६–००

१३७ षोडश-संस्कार-विधि—सनातन (भाषाटीका सहित) पं० गंगा प्रसाद ४–००

१३८ सपिण्डी निर्णयेष्टिका–श्रीशिवदयाल कृत मूल ०–४४

१३९ सापिण्ड्य दीपक—म० म० नित्यानन्द ०–३७

१४० सन्ध्या—यजुर्वेदीय मूल ३ न. पै. भा. टी. ०–०६

१४१ सन्ध्या–(शु० यजुर्वेदीय) तर्पण भा०टी० ०–२५

१४२ सन्ध्याभाष्य समुच्चय—षट्भाष्य सहित ३–००

१४३ संस्कार कौस्तुभ—मूल खुलापन्ना अनन्तदेव ३–५०

१४४ संस्कारदीपक–३ भाग नित्यानन्द पर्वतीय कृत १५–००

१४५ संस्कार पद्धति–भास्कर शास्त्री संशोधित ३–७५

१४६ संस्कारविधि—श्री दयानन्द सरस्वती निर्मित ०–८७

१४७ सन्यास पद्धति हि. टीका १–२५

१४८ संस्कार प्रकाश—चतुर्थीलाल ४–५०

१४९ संक्षिप्तदीक्षा पद्धति–तुलादान पद्धति सहित ०–२०

१५० स्वस्त्ययन कलश प्रतिष्ठा— ०–१९

१५१ हरदी मातृ पूजा—भा० टी० ०–१९

१५२ होमपद्धति—गणपति पूजा सहित ०–१३

१५३ त्रिकाल संध्या—यजुर्वेदीय ०–१९

१५४ त्रिपिण्डी श्राद्धपद्धति—वायुनन्दन ०–६२

धर्मशास्त्र

१५५ अग्निहोत्र चन्द्रिका–वामन शास्त्री देवव्रातभाष्य ४–८१

१५६ आङ्गिरसस्मृति—ए० एन० कृष्णा अयंगर १२–००

१५७ अब्धिनौयान मीमांसा—श्री वेंकटाचल शास्त्री २–००

१५८ अशौचनिर्णय— ०–२५

१५९ आचारार्क–बम्बई १–२५

१६० आचारादर्श—बम्बई १–२५

१६१ आचारभूषण—(त्र्यम्बक) हिरण्यकेश्यान्हिक ६–५०

१६२ आचारमयूख—(नीलकंठ भट विरचित) १–२५

१६३ आपस्तम्बधर्मसूत्र–हरदत्तकृत उज्ज्वला वृत्ति १२–००

१६४ आपस्तम्बीयधर्मसूत्र—मूल, पाठभेद, टिप्पणी, उज्ज्वल वृत्ति के उद्धरण तथा सूत्र अनुक्रमणिका ३–००

१६५ आचारेन्दु—त्र्यम्बक विरचित ६–००

१६६ आधानपद्धति—वामन शास्त्री प्रणीत मूल ३–००

१६७ आर्यविद्यासुधाकर—यज्ञेश्वर चिम्मणभट विरचित तथा डा० मंगलदेव शास्त्री द्वारा सम्पादित १०–००

१६८ उत्सर्गमयूख—(नीलकंठभट) मूल ०–२५

१६९ कर्मविपाक–(नक्षत्र चरण) भाषाटीका ३–००

१७० कात्यायन मत संग्रह–नारायण चन्द्र बन्द्योपाध्याय सम्पादित अंग्रेजी भूमिका, टिप्पणी सहित २–२५

१७१ कालतत्त्व विवेचन दो भाग ७–५०

१७२ कालमाधवकारिका—(माधवाचार्य प्रणीत) ०–७५

१७३ कालमाधव—माधवाचार्य कृत सटिप्पण ३–००

१७४ क्रमदीपिका–(केशवभटाविरचित) श्रीगोविन्द भट्टाचार्यकृत विवरण सहित–३ भागों में ६–००

१७५ कृत्यकल्पतरु–लक्ष्मीधर विरचित १ से ११ खंड ब्रह्मचारिकांड ११ रु० गृहस्थकांड १२ रु० नियतकाल काण्ड १९.५० श्राद्धकाण्ड १५ रु० दानकाण्ड ९ रु० व्रतकाण्ड १७ रु० तीर्थविवेचनकांड ८ रु० शुद्धिकाण्ड ९.३८ राजधर्मकांड १० रु० व्यवहारकाण्ड २६.७५ मोक्षकाण्ड १२ रु० १४९–६२

१७६ कृत्यरत्नाकर–श्री चण्डेश्वर ठक्कुर विरचित ६–००

१७७ क्यूं (धर्मदिग्दर्शन) माधवाचार्य दूसरा भाग ८–००

१७८ गौतम धर्मसूत्र–मिताक्षरा ४–५०

१७९ गौतम धर्म सूत्र परिशिष्ट (द्वितीय प्रश्न)–अंग्रेजी भूमिका टिप्पणी सहित–ए०एन० कृष्ण १२–००

१८० गृहस्थ रत्नाकर–चण्डेश्वर ५–२५

१८१ चतुर्वर्गचिंतामणि–प्रायश्चित खंड हेमाद्रि—१२–००

१८२ चतुर्विंशतिमत संग्रह—भट्टोजी दीक्षित संकलित [illegible]
१८३ जयसिंह कल्पद्रुम—मूलमात्र बम्बई १२—००
१८४ जाति भास्कर—भाषाटीका बम्बई ८—००
१८५ टोडरानन्द—(सर्ग सौख्य,अवतार सौख्य)प्रथम १०—०
१८६ तिथ्यर्क-दिवाकरकृत—तिथियों के निर्णय आदि २—००
१८७ तिथिचिन्तामणि ०—७५
१८८ तिथिनिर्णय—भट्टोजी दीक्षित १—५०
१८९ तीर्थचिन्तामणि—वाचस्पति मिश्र ३—७५
१९० दण्डविवेक (वर्धमान कृत) १२—००
१९१ दत्तकमीमांसा—नंद पण्डितकृत मंजरी व्याख्या ५—५०
१९२ दर्शपूर्णमास प्रकाश—प्रथमभाग धूर्तस्वामी भाष्यवृत्ति तथा रुद्रदत्तप्रणीत सूत्रदीपिका सहित—पूना १०—००
१९३ दानक्रिया कौमुदी—गोविन्दानन्द-प्रणीत २—२५
१९४ दानचंद्रिका—मूल १—१२
१९५ दानदीपिका—भाषाटीका ०—५०
१९६ दानमयूख—(नीलकंठ भट) मूल २—५०
१९७ दानसागर—(बल्लालसेन) ४ भाग सम्पूर्ण ३०—००
१९८ दानसंग्रह मूल ३—५०
१९९ दीक्षातत्त्वमीमांसा—पं० वेणीराम शर्मा १—५०
२०० दीक्षाप्रकाशिका—श्री विष्णु भट विरचित १—००
२०१ धर्मकल्पद्रुम—स्वा० दयानन्द कृत सनातन धर्म का अत्युत्तम ग्रन्थ १—३ भाग, पंचम, ७—८ १०—००
२०२ धर्मकोष—व्यवहार कांड व्यवहार मातृका, विवाद पदानि तीन खंडों में पं० लक्ष्मण शास्त्री कृत ५२—०
२०३ धर्म कोष संस्कारकाण्ड प्रथम ४५—००
२०४ धर्मतत्व निर्णय—(वासुदेव शास्त्री) पूना २—२५
२०५ धर्मतत्वनिर्णय परिशिष्ट—(वासुदेव शास्त्री) १—२५
२०६ धर्म प्रदीप—मूलमात्र २—००
२०७ धर्मविज्ञान—स्वा० दयानन्द कृत तीन भाग में (सनातन धर्म) १३—००
२०८ धर्मसिन्धु—मूल बम्बई ४—००
२०९ धर्म सिन्धु—हिन्दी टीका सहित बम्बई १२—००
२१० धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पत्र संग्रह— १०—००
२११ धार्मिक विमर्श समुच्चय—(नरहरि शास्त्री) ३—५०
२१२ धार्मिक विमर्शसमुच्चय—द्वितीय ५—००
२१३ निर्णयसिन्धु—मूलमात्र खेमराज ५—००
२१४ निर्णयसिन्धु—(कमलाकर भट प्रणीत) पाठान्तर टिप्पणी आदि सहित नारायण आचार्य ९—००
२१५ निर्णयसिन्धु—(कमलाकर भट) कृष्ण भट कृत संस्कृत व्याख्या सहित सम्पूर्ण २२—००
२१६ निर्णयसिन्धु—पं० ज्वालाप्रसाद कृत हिन्दी १४—००
२१७ निर्णयसिन्धु—भा०टी० पं० मिहिरचन्द्र १५—००
२१८ निर्णयामृत—मूल ३—५०
२१९ नीतिमयूख—नीलकंठ भट प्रणीत १—२५
२२० पश्वालम्भ मीमांसा—वामन शास्त्री विरचित-मूल १—०
२२१ पाराशर स्मृति—भा० टीका १—५०
२२२ पुरुषार्थ चिन्तामणि—विष्णुभट प्रणीत बम्बई ४—००
२२३ प्रायश्चित कदम्ब—भा० टी० १—००
२२४ प्रायश्चित प्रकाश बम्बई १—७५
२२५ प्रायश्चित मयूख—(नीलकंठ भट) सटीक २—००
२२६ प्रायश्चितेन्दुशेखर कुण्डाकंच—नागोजी भट २—५०
२२७ प्रायश्चित प्रदीप—कृत्यप्रदीप—शुद्धिप्रदीप १—५०
२२८ बौधायन धर्मसूत्र—गोविन्द कृत विवरण ८—००
२२९ ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड—हिन्दी टीका सहित १०—००
२३० बृहस्पति स्मृति—अंग्रेजी भूमिका, टिप्पणी, अनुक्रमणिका सहित—श्री रंगस्वामि संकलित १८—००
२३१ मदन महार्णव—(कर्म विपाक के ऊपर) २४—००
२३२ मदनरत्नप्रदीप—मदनसिंहकृत व्यवहार कांड १२—००
२३३ मनुस्मृति—कुल्लूक भट कृत मन्वर्थ मुक्तावलि, टिप्पणी,पाठान्तर,आदि सहित—नारायण सं० ७—००
२३४ मनुस्मृति—मणि प्रभा हिन्दी टीकासहित ५—००
२३५ मनुस्मृति—सान्वय हिन्दी ीका बम्बई ६—००
२३६ मनुस्मृति—हिन्दी टीका सहित १—४अध्याय २—००
२३७ मनस्मृति—(द्वितीयोध्यय) सं० हिं० ीका ०—७५
२३८ यति धर्म संग्रह—(विश्वेश्वर सरस्वती) २—७५
२३९ यज्ञ तत्त्व प्रकाश—चिन्नस्वामि शास्त्री ३—००
२४० यज्ञ मीमांसा—भा० टी० २—५०
२४१ याज्ञवल्क्यस्मृति—वीरमित्रोदयतथा मिताक्षरा १२—००
२४२ याज्ञवल्क्य स्मृति—मिताक्षरा तथा अन्य प्राच्य टीका
२४३ पाठान्तर टिप्पणी बंबई ८—००
२४४ याज्ञवल्क्यस्मृति—अपरार्क टीका—पूना १९—५०
२४५ याज्ञवल्क्यस्मृति—सुबोधिनी और बालंभटी व्याख्या 'मिताक्षरा' तथा उससे भी प्राचीन विश्वरूपाचार्य कृत बालक्रीड़ा सहित १७—००
२४६ याज्ञवल्क्यस्मृति—बालम्भटी व्याख्या समलंकृत मिताक्षरा टीका सहित व्यवहाराध्याय सम्पूर्ण १६—५०
२४७ राजधर्म कौस्तुभ—(अनन्तदेव) अंग्रेजी भूमिका १५—००
२४८ वनमाला—जीवनायझा हिन्दी टीका ०—२५
२४९ वाशिष्ठ धर्मशास्त्र—सटिप्पण १—००
२५० विधान परिजात(अनन्तदेव) ७०—००
२५१ विधानमाला—नृसिंह भट शंकर ६—२५
२५२ विधानसंग्रह— ०—५०
२५३ विवादचिन्तामणि—मूल २—५०
२५४ विवाद रत्नाकर—चंडेश्वर कृत ६—००
२५५ वीरमित्रोदय—परिभाषाप्रकाश-संस्कारप्रकाश २५—००
२५६ वीरमित्रोदय—आन्हिक प्रकाश (मित्र मिश्रप्रणीत) १२-०
२५७ वीरमित्रोदय—तीर्थप्रकाश ९—००
२५८ वीरमित्रोदय—पूजा प्रकाश ८—००
२५९ वीरमित्रोदय—भक्ति प्रकाश ४—००
२६० वीरमित्रोदय—लक्षणप्रकाश १४—००
२६१ वीरमित्रोदय—राजनीति प्रकाश १०—००
२६२ वीरमित्रोदय—व्यवहार प्रकाश १२—००
२६३ वीरमित्रोदय—शुद्धिप्रकाश ६—००
२६४ वीरमित्रोदय—समय प्रकाश ६—००
२६५ वीरमित्रोदय—श्राद्धप्रकाश ८—००
२६६ व्यवहार चिन्तामणि—वाचस्पतिमिश्र २५—००
२६७ व्यवहार निर्णय—वरदराज सटिप्पण—के० वी० रंगस्वामी संपादित अंग्रेजी भूमिका सहित ३०—००
२६८ व्यवहार मयूख—(नीलकंठ) मूल १—५०
२६९ व्यवहारमयूख (श्री नीलकंठ) पी० वी० काणे संपादित पाठान्तर तथा अंग्रेजी टिप्पणी सहित १०—००
२७० व्यवहारमाला—पूना १—५०
२७१ व्रतकोश—जगन्नाथ शास्त्री संग्रहीत ४—००
२७२ व्रतचन्द्रिका—हिन्दी गौरीशंकर उपाध्याय २—००
२७३ व्रतराज—हिन्दी टीका सहित जिल्ददार १६—००
२७४ व्रतार्क—भाषा टीका सहित ८—००
२७५ व्रात्यताप्रायश्चित निर्णय तथा व्रात्यता शुद्धि संग्रह २—००
२७६ शांतिमयूख—(नीलकंठ) वायुनंदन संपादित २—५०

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर (पो० बा० १५८६), दिल्ली-६

२७७ शांतिसार—दिनकरभट ३–५०
२७८ शास्त्रतत्वनिर्णय—नीलकंठ कृत—श्रीसदाशिव कातरे कृत अंग्रेजी भूमिका सहित संपादित ५–००
२७९ शुद्धिमयूख—नीलकंठ—मूल १–००
२८० श्राद्ध कल्पलता—नन्द पंडित ६–००
२८१ श्राद्धक्रियाकौमुदी—गोविंदानन्द प्रणीत ५–२५
२८२ श्राद्ध चन्द्रिका—दिवाकर भट ४–००
२८३ श्राद्ध मयूख—नीलकंठ—मूल १–५०
२८४ श्राद्धमञ्जरी—बापू भट विरचित ३–००
२८५ षडशीति—(आदित्याचार्य) शुद्धिचन्द्रिका टीका ३–००
२८६ सत्यार्थ प्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती ३–००
२८७ सनातन धर्मोद्धार—चार भागों में ४०–००
२८८ सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन १–२५
२८९ समय मयूख—नीलकंठ–मूल २–००
२९० संस्कार पद्धति—पूना ३–७५
२९१ संस्कार मयूख— १–५०
२९२ संस्कार रत्नमाला—दो भाग संपूर्ण पूना १८–५०
२९३ संस्कार गणपति–श्री रामकृष्णप्रणीत १५–००
२९४ स्मृति कौस्तुभ—अनन्तदेव (सम्वत्सर-दीधिति) ५–००
२९५ स्मृति समुच्चय—(२७ स्मृतियों का संग्रह)–पाठान्तर निर्देश आदि सहित संशोधित ७–५०
२९६ स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य प्रणीत २–५०
२९७ स्मृतिसारोद्धार—श्री विश्वम्भर त्रिपाठी कृत ८–००
२९८ हिन्दू संस्कार–(हिन्दी)–डा० राजबली पांडे १५–००
२९९ त्रिशच्छ्लोकी—शंकर शास्त्री विरचित ४–५०
३०० त्रिस्थली सेतु—तीर्थेन्दु शेखर मोक्ष विचार १–५०
३०१ त्रिस्थली सेतु—नारायण भट प्रणीत ५–५०

– – – –

महापुराण-उपपुराण

३०२ अग्निपुराण–मूल मात्र संपूर्ण पूना १०–००
३०३ अष्टादश पुराण दर्पण—भाषा ६–००
३०४ अष्टादश पुराण परिचय–श्रीकृष्णमणि २–००
३०५ आदि पुराण—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ४–५०
३०६ कल्कि पुराण—भा० टी० २–००
३०७ काशी खंड—संस्कृत टीका खुला पत्रा १५–००
३०८ काशी खण्ड—भाषा टीका खुला पत्रा २०–००
३०९ काशी खंड—केवल भाषा बुकसाइज १०–००
३१० केदार खंड—मूल बम्बई १०–००
३११ केदार खंड—भा० टी० „ २०–००
३१२ केदार खंड—केवल भाषा „ ९–००
३१३ गरुड़ पुराण—१६ अध्याय भा० टी० खुला २–५०
३१४ गरुड़पुराण—३४ अध्याय भा० टी० „ १–५०
३१५ गरुड़ पुराण —सारोद्धार संस्कृत टीका २–७५
३१६ देवी भगवत मूल—गुटका काशी ६–००
३१७ देवी भागवत—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ४०–००
३१८ देवी भागवत—केवल भाषा बुक साइज २०–००
३१९ पद्म पुराण—मूल ४ भागों में सम्पूर्ण पूना ३०–००
३२० पुराणतत्व मीमांसा–श्री कृष्णमणि १०–००
३२१ पुराण दिग्दर्शन—माधवाचार्य शास्त्री विरचित ८–००
३२२ पुराण विषयानुक्रमणिका–राजनीति १५–००
३२३ पुराणरहस्यम्—(श्री अनदाचरण) संस्कृत १–५०
३२४ पुराण संहिता–आलमंदार संहिता, बृहत्सदाशिव संहिता, सनत्कुमार संहिता काशी ८–००
३२५ पुराणों में गंगा—रामप्रताप त्रिपाठी हिन्दी ३–५०
३२६ प्रेमसुधा सागर–भागवत दशमस्कन्ध हिन्दी ३–५०
३२७ ब्रह्मवैवर्तपुराण-मूल बुकसाइज पूना २ भाग १४–२५
३२८ ब्रह्माण्ड पुराण—खुला पत्रा मूल १४–००
३२९ ब्रह्मोत्तर खंड—भा० टी० ३–५०
३३० भविष्य पुराण–मूल बुक साइज २५–००
३३१ भागवत—गुटका निर्णय सागर बम्बई ९–००
३३२ भागवत—मोटा अक्षर मूल बड़ा साइज ६–००
३३३ भागवत—सचूर्णिका सं० टीका बम्बई खुला २५–००
३३४ भागवत—चूर्णिका संस्कृत टीका काशी २४–००
३३५ भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका खुला २४–००
३३६ भागवत—भाषा टीका सामयिकी पत्रात्मक २०–००
३३७ भागवत–सरस्वती भाषा टीका दृष्टान्त और प्रकाश टिप्पणी से अलंकृत श्रीकृष्ण पूजन, भागवत हवन विधान, प्रत्येक अध्यायसार, प्रतिस्कन्ध श्रवण-माहात्म्य आदि विषयों से विभूषित ३०–००
३३८ भागवत–शालिगराम कृत भा० टी० खुला पत्रा मोटा अक्षर बढ़िया कागज बम्बई ४०–००
३३९ भागवत—भा० टी० बुकसाइज दो भाग—१५–००
३४० भागवत—सामयिकी भा० टी०–पं० रामतेज १५–००
३४१ भागवत सुधा सागर—केवल भाषा ८–५०
३४२ भागवत—केवल भाषा अनेक रंगीन चित्रों सहित २ भाग इलाहाबाद १६–००
३४३ भागवत—दशमस्कन्ध भा० टी० खुला बम्बई १०–००
३४४ भागवत—दशमस्कन्ध भा० टी० खुला काशी ८–००
३४५ भागवत—एकादशस्कन्ध भा० टी० खुला बम्बई ४–००
३४६ भागवत—एकादश स्कन्ध प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद २ भाग काशी ६–५०
३४७ भागवत एकादशस्कन्ध–हिन्दी १–०० जिल्द १–३७
३४८ भागवत–राधेश्याम तर्ज—श्रीलाल कृत ५–२५
३४९ भागवत कथा– पं० राममूर्ति १०–००
३५० मत्स्य पुराण—खुला पत्रा मूल १४–००
३५१ मत्स्य पुराण—केवल हिन्दी राम प्रताप २०–००
३५२ मन्त्र भागवत—नीलकंठ सटीक पत्रात्मक ०–८७
३५३ महा भागवत—देवी पुराण मूल खुला पत्रा २–००
३५४ मार्कण्डेय पुराण भा० टी० खुला १५–००
३५५ युग पुराण— २–००
३५६ रामाश्वमेध—मूल (पद्मपुराणान्तर्गत) मोटा अक्षर–खुला पत्रा बम्बई ४–२५
३५७ रामाश्वमेध–भा० टी० खुला पत्रा ११–००
३५८ रामाश्वमेध—(पद्मपुराणान्तर्गत) भाषा ४–५०
३५९ लघुभागवतामृत—रूपगोस्वामी कृत भा० टी० ४–००
३६० ललितोपाख्यान—ब्रह्माण्ड पुराणान्तागत मूल ३–५०
३६१ वामनपुराण—खुला पत्रा मूल ६–००
३६२ वामनपुराण—केवल भाषा वार्तिक ९–००
३६३ वायुपुराण—खुला पत्रा, मोटा अक्षर १२–००
३६४ वायुपुराण–केवल भाषा पं० रामप्रताप शास्त्री १२–००
३६५ विष्णुपुराण—भा० टी० गोरखपुर ४–००
३६६ विष्णु धर्मोत्तर पुराण—मूल खुला पत्रा १८–००
३६७ विष्णुधर्मोत्तर–३सरा कांड चित्र प्रकरण—डा० पी० शाह द्वारा सम्पादित दो भाग ४०–००
३६८ शिवपुराण—भा० टी० खुला पत्रा ५०–००
३६९ शिवपुराण—केवल भाषा बम्बई २०–००
३७० शिवभारत—संस्कृत २–२५

३७१ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य [illegible]
३७२ स्कन्दमहापुराण—मूल सम्पूर्ण खुला पत्रा बम्बई नेट ३५०-००
३७३ सुखसागर—(भागवत) सरल भाषा सचित्र २०-००
३७४ सुखसागर—मोटा अक्षर मथुरा १६-०, १२-००
३७५ सुखसागर—मध्यम लखनऊ १०-००
३७६ शुकसागर—सरल भाषा लाला शालिगराम कृत सफेद कागज बड़ा साइज बढ़िया बम्बई २८-००
३७७ शुकसागर—ला० शालिग्राम गुटका, बारीक १२-००
३७८ शुक सुधासागर—मोटा अक्षर रंगीन चित्र २०-००
३७९ सौर पुराण—मूल पूना ४-५०
३८० हरिवंशपुराण—संस्कृत टीका पत्रात्मक २०-००
३८१ हरिवंश पुराण—नीलकंठी सं० टी० बकसाईज ४०-००
३८२ हरिवंश पुराण—भाषा टीका खुला ३२-००
३८३ हरिवंश पुराण भाषा—सम्पूर्ण लखनऊ १६-००
३८४ हरिवंश पुराण—भाषा बंबई १२-००
३८५ हरिलीलामृत—श्रीबोपदेव प्रणीत सटीक २-००

रामायण-महाभारत

३८६ अद्भुतरामायणभा० टी० २-००
३८७ अध्यात्म रामायण—मूल २-००
३८८ अध्यात्म रामायण—संस्कृत टीका खुला पत्रा ७-००
३८९ अध्यात्म रामायण—भा० टी० बुक साईज ३-००
३९० अध्यात्म रामायण—हिन्दी टीका मोटा अक्षर १०-००
३९१ आनन्द रामायण—भा० टी० बुकसाइज १६-००
३९२ काशीतिहास—पं० भाउ शास्त्री बझे संस्कृत १-५०
३९३ गर्ग संहिता—मूल—खुला ११-००
३९४ गर्ग संहिता—भा० टी० खुला २०-००
३९५ जैमिनी अश्वमेध—मूल खुला ४-५०
३९६ जैमिनी अश्वमेध—भा० टी० खुला ११-००
३९७ नासिकेतोपाख्यान—हिन्दी टीका सहित १-००
३९८ भारतसार—केवल मूल मात्र ३-५०
३९९ मन्त्र रामायण—सटीक गुटका २-००
४०० महाभारत—मूल—संपूर्ण १८ पर्व ४ जिल्दों में गोरखपुर २२-५०
४०१ महाभारत—नीलकंठी संस्कृत टीका संपूर्ण बुकसाइज [illegible]
४०२ महाभारत—आदिपर्व—हि० टी० सातवलेकर ७-००
४०३ महाभारत—सभापर्व—भा० टी०—सातवलेकर ३-५०
४०४ महाभारत—शांति पर्व पूर्वार्द्ध—सातवलेकर १०-००
४०५ महाभारत—केवल हिन्दी छोटा टाइप १० जिल्दों में संपूर्ण पं० द्वारकाप्रसाद कृत २०-००
४०६ महाभारत—केवल हिन्दी भाषा, सम्पूर्ण, मोटा अक्षर सचित्र १० बड़ी जिल्दों में प्रयाग ९०-००
४०७ महाभारत—आर्य संगीत—सरदारयशवन्त सिंह ४-००
४०८ महाभारत की समालोचना—पं सातवलेकर १-५०
४०९ महाभारत संम्पूर्ण भाषा मोटा अक्षर ४५-००
४१० मूल रामायण—भाषा टीका ०-२५
४११ मूल रामायण—शीलनिरुपगाध्याय सं० हि० ० ६२
४१२ रामाश्वमेध—मूल खुलापत्रा ४-२५
४१३ रामाश्वमेध—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ११-००
४१४ रामाश्वमेध—केवल भाषा वार्तिक ४-५०
४१५ बाल्मीकी रामायण—मूल गुटका ८-००
४१६ बाल्मीकी रामायण—मूल खुला मोटा अक्षर १७-००
४१७ बाल्मीकी रामायण—गोविन्द राजीय, (भूषण) रामानुजि तनिश्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्या व्याख्या चतुष्टय सहित खुला पत्रा रु. ६०-०० बुक साइज ३ बड़ी जिल्दों में मोटा अक्षर ६०-००
४१८ बाल्मीकी रामायण—पं० ज्वालाप्रसाद कृत भा० टी० खुला बम्बई ४०-००
४१९ बाल्मीकी रामायण—भाषा टीका काशी २४-००
४२० बाल्मीकि रामायण—हिन्दी भाषानुवाद सहित—१० भाग में—पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी २४-००
४२१ बाल्मीकि रामायण—बालकांड—पं०सातवलेकर ६-००
४२२ बाल्मीकि रामायण—अयोध्याकांड—भा टी १२-००
४२३ बाल्मीकि रामायण—किष्किन्धा सातवलेकर ६-००
४२४ बाल्मीकि रामायण—अरण्यकांड—सातवलेकर ६-००
४२५ बाल्मीकि रामायण—युद्धकांड २भागसातवलेकर १२-०
४२६ बाल्मीकि रामायण—उत्तरकांड सातवलेकर ६-००
४२७ बाल्मीकि रा०—सुन्दरकाण्ड—मूल गु० बम्बई २-५०
४२८ बाल्मीकि रामायण—सुन्दरकांडमूल काशी २-००
४२९ बाल्मीकि रामायण—सुन्दर कांड—मूल—खुला ४-००
४३० बाल्मीकि रा०—सुन्दरकांड भा०टी०रामतेज ३-००
४३१ बाल्मीकि रा०—सुन्दरकांड भा०टी० पत्रात्मक ५-५०
४३२ बाल्मीकि रामायण—केवल भाषा मोटा अक्षर दो जिल्दों में बम्बई २५-००
४३३ बाल्मीकि रा०—भाषा मोटा अक्षर लखनऊ २२-००
४३४ बाल्मीकि रामायण—सम्पूर्ण भाषा इलाहाबाद १३-०
४३५ बाल्मिकि रामायण मूल गोरखपुर ७-५०
४३६ ,, ,, भा.टी. .. १७-५०
४३७ ,, ,, ,, ,, ११-००
४३८ ,, ,, आलोचनात्मक बालकांड ४०-००
४३९ रामायण कालीन समाज—हिन्दी ४-००
४४० रामायणकालीन संस्कृति—हिन्दी ४-००

व्रत, कथा, महात्म्य आदि

४४१ अनन्त व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
४४२ अन्नपूर्णा व्रत कथा—भा० टी० ०-४०
४४३ अक्षय नवमी व्रत कथा—भा० टी० ०-१५
४४४ आदित्य व्रत कथा—भा० टी० ०-१९
४४५ इतिहास—गुरु खालसा हिन्दी ५-००
४४६ उत्तर काशी माहात्म्य ०-३१
४४७ ऋषि पञ्चमी व्रत कथा—भा० टी० ०-५०
४४८ एकादशी माहात्म्य— भा० टी० ३-०
४४९ एकादशी महात्म्य केवल भाषा ०-७५
४५० करवा चतुर्थी—भा० टी० ०-२५
४५१ कृष्ण जन्माष्टमी—भा० टी० ०-३७
४५२ कार्तिक महात्म्य—भा० टी० १-५०, २-०, ३-०
४५३ कार्तिक महात्म्य—३५ अध्याय क्षेमंकारी ४-५०
४५४ कार्तिक शक्ल रविषष्ठी व्रत कथा ०-१९
४५५ काशी यात्रा—भाषा, सचित्र ०-८७
४५६ काशी केदार महात्म्य—भा० टी० ३-००
४५७ गणेश चतुर्थी मा मास—हिन्दी टीका ०-१३
४५८ गणेशचतुर्थी भाद्र मास—हिन्दी टीका ०-१३
४५९ गया महात्म्य—गया पद्धति सहित—हिन्दी टीका १-७५
४६० गया महात्म्य—मूल ०-८७
४६१ चन्दनषष्ठी—सूर्य षष्ठी कथा हिन्दी टीका सहित ०-२५
४६२ चान्द्रायण व्रत कथा—हिन्दी टीका सहित ०-३१

४६३ चित्रगुप्त कथा–हिन्दी टीका ०–१३
४६४ जन्माष्टमी व्रतकथा–भा० टी० ०–३७
४६५ जीवित्पुत्रिका–व्रतकथा–भा० टी० ०–१९
४६६ ज्येष्ठमासमहात्म्य–भा० टी० ३–००
४६७ पञ्चकोशी या त्रा ०–३१
४६८ पुरुषोत्तम महात्म्य–भा० टी० अधिक ३–०, २–७५
४६९ प्रेमसागर—भाषासचित्र ४–००
४७० प्रेमसुधासागर—भाषा सचित्र गोरखपुर ३–५०
४७१ बहुला व्रतकथा–भा० टी० ०–१९
४७२ बुद्धाष्टमी व्रतकथा–भा० टी० ०–३१
४७३ भक्तमाल–नाभाजी सटीक ३–५०
४७४ भक्तमाल–रामरसिकावली कवित्त दोहा १०–००
४७५ भाद्रपद गणेश चतुर्थी–भा० टी० ०–१९
४७६ भारतीय व्रतोत्सव—हिन्दी ३–००
४७७ भीष्मपञ्चक व्रत प्रयोग ०–२५
४७८ मङ्गला गौरी व्रत कथा—भा० टी० ०–२५
४७९ महालक्ष्मी व्रतकथा— भा०टी० ०–२५
४८० माघ महात्म्य–भा ०टी०, २–५०
४८१ माघ भादौ गणेश चौथ ०–१९
४८२ मुक्ता भरण सप्तमी–भा० टी० ०–२५
४८३ मार्गशीर्ष महात्म्य—भा०टी० ३–००
४८४ रविषिष्ठ व्रत कथा—भा० टी० ०–१३
४८५ रामनवमी व्रतकथा— ०–१९
४८६ वट सावित्री व्रत कथा—भा० टी० ०–३७
४८७ वामन द्वादशी व्रत कथा— वायुनन्दन ०–१९
४८८ विश्राम सागर— ५–००
४८९ व्यतीपात कथा—मूल ०–१९
४९० व्यतीपात कथा—भा० टी० ०–३७
४९१ व्रतराज—भा० टी० १६–००
४९२ व्रतार्क—भा० टी० ८–००
४९३ वशाख महात्म्य—भा० टी० ३–००
४९४ शनि प्रदोष–पक्ष प्रदोष व्रत कथा—भा० टी० ०–२५
४९५ शिवरात्रि महात्म्य—भा० टी० ०–७५
४९६ श्रावण मास महात्म्य—भा० टी० ४–००
४९७ सङ्कट गणेश चतुर्थी व्रत कथा—मूल ०–४४
४९८ संकट गणेश चतुर्थी भा० टी० ०–७५, १–२५
४९९ सत्यनारायण इतिहास समुच्चय—०–६२, १–००
५०० सत्यनारायण पूजा कथा—मूल ०–२५
५०१ सत्यनारायण—व्रतकथासप्ताध्यायी भा०टी० ०–४४
५०२ सत्यनारायण कथा—भा० टी० ५ अध्याय ०–३१
५०३ सत्यनारायण–भा०टी०५ अध्याय वायुनन्दन ०–५०
५०४ सत्यनारायण कथा—भाषा राधेश्याम ०–५०
५०५ सावित्री व्रत कथा–भा० टी० ०–३७
५०६ सोमवती अमावस्या कथा—भा० टी० ०–५०
५०७ सोमावती कथा—भा० टी० ०–३१
५०८ हरितालिका व्रत कथा—भा० टी० ०–२५
५०९ हरिलीलामृत—बोपदेव २–००
५१० हलषष्ठी व्रत कथा—भा० टी० ०–१३
५११ होलिका कथा—भा० टी० ०–१९

वेदान्त

(शांकर, रामानुज, वल्लभाचार्य आदि)

५१२ अच्युत लेखमाला–विद्वानों के लेख हिन्दी २–००
४१३ अणुभाष्य–वल्लभाचार्य प्रणीत श्रीधरकृत बालबोधिनी टीका सहित दो भागों में ६–२५
५१४ अद्वैत ब्रह्म सिद्धि–(सदानन्द यति) ४–६९
५१५ अद्वैतरत्नरक्षणम्–(मधसूदन सरस्वती) ०–७५
५१६ अद्वैत तत्व शुद्धि–अद्वैतामोदादि परीक्षा पर्याय–म० म० अनन्त कृष्ण शास्त्री कृत १५–००
५१७ अद्वैत सिद्धान्त सार संग्रह–सदानन्द ६–००
५१८ अद्वैत सिद्धि–(मधुसूदन सरस्वती) गौड़ ब्रह्मानन्दी, विट्ठलेशीयोपाध्यायी तथा सिद्धि नामक व्याख्याओं व अनन्त कृष्ण शास्त्री संग्रहीत न्यायामृताद्वैतसिद्धि तरङ्गिणी लघु चन्द्रिका सहित २५–००
५१९ अद्वैतामोद–वासुदेव शास्त्री प्रणीत ३–००
५२० अद्वैतामृत–भा० टी० १–००
५२१ अध्यात्म प्रकाश—भाषा ०–३७
५२२ अनुभव प्रकाश–(बनानायकृत) हिन्दी पद्योंमें १–७५
५२३ अपरोक्षानुभूति–भा० टी० बम्बई १–२५
५२४ अपरोक्षानुभूति–हिन्दी टीका सहित गोरखपुर ०–१५
५२५ अभिलाष सागर—भाषा ४–००
५२६ आत्मबोध–(शंकराचार्य) अन्वय–भाषार्थसहित ०–५०
५२७ आनन्दामृत वर्षिणी–स्वामी आनन्दगिरि भाषा २–००
५२८ ओंकारमहिमाप्रकाश–(ऊंकार से वर्णाक्षर) १–५०
५२९ उपदेश साहस्री–(शंकराचार्य प्रणीत) भा०टी० २–००
५३० काथ बोध–(दत्तात्रय समुदायानुगत)–सटीक ०–५०
५३१ कायपरिशुद्धि–वासुदेव शास्त्री प्रणीत २–००
५३२ क्रम दीपिका—केशव भट ६–००
५३३ कुण्डलिया–गिरधर– (१०० कुण्डलिया छंद) ०–१९
५३४ कुंडलिया–गिरधर (नीति, वैराग्य उपदेश आदि विषयक ४५७ कुण्डलियां छंद) बबई १–००
५३५ खंडन खण्ड खाद्य–भा० टी. ८–००
५३६ गूढार्थ दीपिका–धनपति सूरी ८–००
५३७ चंद्रकान्त–(वेदान्त) भाषा इच्छाराम सूयराम देसाइ ३ खंडों में ०–००
५३८ चैतन्य चरितावली–५ भागसचित्र ४–३७
५३९ ड़ाईहजार अनमोल बोल–हिंन्दी ०–६२
५४० तत्वचिन्तामणि–भा० टी० जयदयाल ५–९४
५४१ तत्वदीपन–(पञ्चपादिका विवरण पर व्याख्या) अखंडानन्द मुनि कृत १२–००
५४२ तत्वप्रदीपिका–(चित्सुखी) नयन प्रसादिनी व्याख्या तथा स्वा० योगोन्द्रानन्द कृत सटिप्पणसरल हिन्दी अनुवाद सहित काशी १२–००
५४३ तत्वबोध शंकराचाय भा०टी० ०–३७, ०–२२५, ०–३
५४४ तत्व सन्दर्भ–भा०टी० १–५०
५४५ तत्वानुसंधान –भाषा स्वामी चिदघनानन्द ७–००
५४६ दर्शन सर्वस्व–शंकर चतन्य भारती प्रणीत २–२५
५४७ दहरविद्या प्रकाशिका–(शिवेन्द्र सरस्वती) ०–५०
५४८ दास बोध–भाषा ३–००
५४९ दृष्टान्त दीपक—(दृष्टान्त संख्या ४३२) भाषा २–०
५५० दृष्टान्त मंजूषा–भाषा स्वा० परमानन्द २–००
५५१ न्याय मकरंद–आनन्द बोध व्याख्या ८–००
५५२ नवधा भक्ति–हिन्दी ०–१३
५५३ नारद भक्ति सूत्र–भा० टी० ०–१९
५५४ नष्कर्म सिद्धि–सरल हिन्दी टीका सहित काशी १–७५
५५५ निर्भय विलास–भाषा पद्य २–५०
५५६ पंचदशी—पं० पीताम्बर भा.टी. ८–००

 मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहर नगर, (पो० बा० १५८६), दिल्ली-६

५५७ पञ्चदशी—पं० मिहिरचंद कृत हिन्दी टीका ६–००
५५८ पचीकरण—केवल भाषा ३–००
५५९ परमार्थ पत्रावली—भाषा जयदयाल १–५०
५६० पक्षपात रहित–अनुभव प्रकाश स्वामी विशुद्धानन्द जी–काली कमली वाले ८–००
५६१ प्रकरणपञ्चक–श्री शंकराचार्य (आत्मबोध–प्रबंधानुभूति–तत्वो०) भा० टी० ०–७५
५६२ प्रणवकल्प–(स्कन्दपुराणान्तर्गत) प्रकाश भाष्य २–००
५६३ प्रत्यक्तत्व चिन्तामणि–सदानन्द व्यासकृत तथा स्वोपज्ञ व्याख्या सहित ५–००
५६४ पूजातत्व–म० म० श्री गोपीनाथ जी कविराज द्वारा प्रकाशित अध्यात्म जीवन व साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी ४–००
५६५ प्राणसंगली–श्री गुरुनानक साहिब–संत सम्पूर्ण सिंह जी कृत टिप्पणी सहित ३ भाग में ८–००
५६६ प्रकरणग्रन्थसंग्रह–श्रीशंकराचार्य के अनेक ग्रन्थ १२–५०
५६७ प्रमेय रत्नावली–बलदेव कृत २–५०
५६८ प्रस्थान भेद–मधुसूदन सरस्वती कृत ०–२५, ०–३१
५६९ प्रस्थान रत्नाकर–(पुरुषोत्तमजी) ४–००
५७० प्राणतत्व –भाषा १–००
५७१ प्रमपत्तन–चैतन्य सम्प्रदाय सव्याख्या १–२५
५७२ प्रेम योग—वियोगी हरी हिन्दी १–५०
५७३ प्रेम दर्शन–भा० टी० (भक्तिसूत्र) ०–३१
५७४ बृहदारण्यक वार्तिकसार—श्री विद्यारण्य मुनि विरचित–भा० टी० सहित दो भाग १२–००
५७५ ब्रह्मवाद संग्रह–शुद्धाद्वैत परिष्कार (वल्लभाचार्य सम्मत)—भा० टी० १–००
५७६ ब्रह्ममीमांसा भाष्य–अर्थात् निम्बार्काचार्य प्रणीत ब्रह्मसूत्र पर वेदान्त पारिजात सौरभ भाष्य २–००
५७७ ब्रह्मसिद्धि–मंडनमिश्र–शंखपाणि व्याख्या ७–७५
५७८ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य–पाठान्तर, टिप्पणी मूल ८–००
५७९ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य–भामती, कल्पतरु–परिमल व्याख्या तथा सूत्र, भाष्य उद्धृत वचन कोश २८–००
५८० ब्रह्मसूत्र–शंकर–आनन्दगिरि २ भाग पूना १८–००
५८१ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य, रत्नप्रभा, भामती, न्याय २०–००
५८२ ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य–चतुःसूत्र्यन्त पूर्णानन्दीयव्याख्या द्वितीय अध्याय द्वितीय पाद तक ८–००
५८३ ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्यम्–चतुःसूत्र्यन्त पूर्णानन्दीय व्याख्या—श्री गोविन्दानन्द प्रणीत रत्नप्रभा व्याख्या तथा वाचस्पति मिश्र कृत भामती ११–००
५८४ ब्रह्मसूत्र–विज्ञान भिक्षुभाष्य सम्पूर्ण १२–००
५८५ ब्रह्मसूत्र–भाष्य निर्णय–श्री चिद्घनानन्द पुरी विरचित तृतीयपाद तक ५–६२
५८६ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–(ब्रह्मतत्वप्रकाशिका) सदाशिवेन्द्र ३–५०
५८७ ब्रह्मसूत्रीयवेदान्तवृत्ति–श्री रामानन्दप्रणीत २–००
५८८ ब्रह्मसूत्र–तात्पर्य विवरण श्री भरव शर्मा २–२५
५८९ ब्रह्मसूत्र—मरीचिका वृत्ति ४–००
५९० ब्रह्मसूत्र दीपिका–शंकरानन्द विरचित ४–००
५९१ ब्रह्मसूत्र–सुन्दर भट द्वैताद्वैतसिद्धान्त सेतुका वृत्ति तथा देवाचार्य प्रणीत सिद्धान्त जान्हवी टीका सहित ६–००
५९२ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–शंकर शिष्य प्रणीत अद्वैत मंजरी १–००
५९३ ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्यार्थ रत्नमाला सुब्रह्मण्यकृत ६–२५
५९४ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–हरिदीक्षित कृत ३–७५
५९५ ब्रह्मसूत्र–ब्रह्मामृतवर्षिणी ६–७५
५९६ ब्रह्मसूत्र–श्रीगोविन्दानन्द कृत भाष्यार्थ प्रदीपिका (हिन्दी) टीका सहित (प्रथमाध्याय मात्र) ४–००
५९७ ब्रह्मसूत्र–भाष्य सिद्धान्त संग्रह १–५०
५९८ ब्रह्मसूत्र–रत्नप्रभा भोले बाबाकृत हिन्दी अनुवाद सहित केवल तीसरा भाग ५–५०
५९९ ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्य (चतुःसूत्री) भाषानुवाद २–२५
६०० ब्रह्मसूत्रभाष्य–श्री कंठाचार्यकृत शिवाकर्मणदीपक सहित सम्पूर्ण दो भागों में २५–००
६०१ ब्रह्मसूत्र–मराठी टीका सहित ३ भाग में ३६–००
६०२ बोधैक्य सिद्धि–अच्युतराय सटीक ६–००
६०३ भक्त नामावली ०–१९
६०४ भक्ति चन्द्रिका–शांडिल्य सूत्र व्या० दो भाग १–२२
६०५ भक्ति चन्द्रिका–भाषा पद्यात्मक–गणेश सिंह १–००
६०६ भक्ति दर्शन (शांडिल्य)–स्वामी ज्ञानानन्दकृत १–२५
६०७ भक्ति निर्णय–(अनन्तदेव) तथा नाम महात्म्य ०–३१
६०८ भक्तिप्रकाश–पौराणिक–भा० टी० गोपालदास २–००
६०९ भक्त्यधि करण माला–(नारायण तीर्थकृत) ०–६२
६१० भक्ति मुक्तावली–गुरुपाद शेखर कृत १–००
६११ भक्ति रसायन–मधुसूदन–सटीक ३–००
६१२ भगवन्नाम कौमुदी–लक्ष्मीधर कृत–प्रकाश टीका ०–७५
६१३ भगवन्नाम महात्म्य–(रघुनाथ यति) सटीक १–३७
६१४ भगवत चर्चा–हनुमान दास पोद्दार–६ भाग सादा ४–६ जिल्द ६–३१
६१५ भगवान पर विश्वास–भाषा ०–२५
६१६ भव रोग की रामबाण दवा–भाषा ०–३१
६१७ भामती–(ब्रह्मसूत्रशंकरभाष्यव्याख्या) वाचस्पति ३–५०
६१८ भावरसामृत–(संत गुलाब सिंह) भाषा पद्यात्मक ०–३७
६१९ भावरसामृत–बोधप्रकाश स्वा० गुलाबसिंह ०–५६
६२० भेद साम्राज्य–श्री रंग रामानुज विरचित १–५०
६२१ मध्वतन्त्र मुख मर्दन–अप्पय दीक्षित विरचित २–५०
६२२ मध्वतन्त्रमुख मर्दन–अप्पय दीक्षित कृत १–५०
६२३ मध्व मुखालंकार–वनमालि मिश्र विरचित ०–७५
६२४ मध्व मंत्र रत्नाकर–टी० आर० कृष्णाचार्य ५–००
६२५ महानय प्रकाश–शितिकंठ (शाक्त मत) ०–६२
६२६ महावाक्यरत्नावली–(दशोपनिषत्सार मत) ०–५०
६२७ महावाक्यरत्नावली–अष्टोत्तरशतोपनिषत्सार ०–३७
६२८ महावाक्य विवरण–भा० टी० १–१३
६२९ मोक्षसाधन और योगाभ्यास सान्याल ०–३७
६३० यतीन्द्रमत दीपिका–श्रीनिवासदास प्रकाश व्या.स. २–०
६३१ यतीन्द्रमत दीपिका–सटिप्पण ०–४४
६३२ योग रसायन भाषा १–२५
६३३ योगवासिष्ठ–तात्पर्य प्रकाश–सं०टी० खुला २५–००
६३४ योगवासिष्ठ–भा० टी० द्वितीय १०–००, तृतीय १०–० चतुर्थ १०–०० पाचवां ८–००
६३५ योगवासिष्ठ–भाषा–२ भाग में बम्बई २५–००
६३६ योगवासिष्ठ–हिन्दी भाषा २ भाग लखनऊ २२–००
६३७ योगवासिष्ठ–सार भाषा वार्तिक बम्बई ४–५०
६३८ योगवासिष्ठ और उसके सिद्धान्त–डा० आत्रेय १०–००
६३९ योगानन्द सत्संग–भाषा पद्य–सरलानुवाद सहित २–५०
६४० युग्मतत्व समीक्षा ४–५०
६४१ युक्तिप्रकाश–भाषा साधु निश्चलदास २–००
६४२ रत्नपञ्चक–शंकराचार्य प्रणीत–सभाष्य ०–३७
६४३ लघुयोगवासिष्ठ–वासिष्ठ चन्द्रिका व्याख्या सहित ६–०
६४४ लघुवासुदेवमनन–(भाषा)–वासुदेव यतीन्द्र विरचित

अद्वैत सिद्धान्त ग्रंथ ०–८७
६४५ लोक परलोक सुधार-भाषा ५ भाग २–२५
६४६ वाक्यवृति–शंकराचार्यप्रणीत–विश्वेश्वर टी० ०–७५
६४७ विचार–चन्द्रोदय–पीताम्बरी भाषा बम्बई ३–००
६४८ विचार चन्द्रोदय–स्वा० निगमानन्द सरल हिन्दी १–२५
६४९ विचार दीपक–ब्रह्मानन्द स्वामी–भाषा २–००
६५० विचार माला–स्वा० गोविन्द दास सटीक २–००
६५१ विचार सागर–निश्चलदास प्रणीत–निगमानन्द परमहंसकृत सरल हिन्दी व्याख्या सहित नेट ३–५०
६५२ विचार सागर–पीताम्बर टीका बम्बई १०–००
६५३ विद्वन्मण्डन–विट्ठलनाथ दीक्षित–सुवर्णसूत्र व्या५–००
६५४ विवरणोपन्यास–रामानन्द सरस्वती– ४–००
६५५ विवरण प्रमेय संग्रह–(विद्यारण्य) हिन्दीटीका ६–००
६५६ विवेक मार्त्तण्ड–विश्वरूपदेव ०–६२
६५७ विवेक चूड़ामणि–भा० टी० बम्बई २–२५
६५८ विवेक चूड़ामणि–भा० टी० गोरखपुर ०–३१
६५९ विशिष्टाद्वैतधिकरण माला–पं० सुदर्शनाचार्य १–००
६६० वेदान्त कौमुदी–रामाद्वयाचार्य प्रणीत–(ब्रह्मसूत्र शाकर भाष्य चतुःसूत्री की विषद व्याख्या) १३–५०
६६१ वेदान्त कौस्तुभ–प्रभा सटीक ९–००
६६२ वेदान्त छन्दावली–५ भाग–भोले बाबा हिन्दी २–३७
६६३ वेदान्त दर्शन–भा० टी० स्वामी दर्शनानंद ३–००
६६४ वेदान्त दर्शन–ब्रह्ममुनि भाष्य सहित ३–००
६६५ वेदान्त दर्शन–(माधवाचार्य)–श्री भाष्यानुसार वेदांत पदार्थ प्रकाश भाषा व्याख्या सहित २–५०
६६६ वेदान्त दर्शन–भा० टी० गोरखपुर २–००
६६७ वेदान्तदर्शन–(ब्रह्मसूत्र की भूमिका) म० म० गोपीनाथ कविराज १–००
६६८ वेदांत रत्न मंजषा–(निम्बार्काचार्य विरचित दशश्लोकी की व्याख्या)–पुरुषोत्तमाचार्य ४–००
६६९ वेदात सूत्र मुक्तावलि–ब्रह्मानंद सरस्वती–पूना ३–५६
६७० वेदांत संज्ञा–भा० टी० ०–८७
६७१ वेदान्तसार–(सदानद) भावबोधिनी सं०हिं० १–५०
६७२ वेदांतसार–जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव कृत हिन्दी टीका सहित २–५०
६७३ वेदान्तसार रामानुज–सटिप्पण २–५०
६७४ वेदान्त सिद्धान्त कल्पवल्ली–हिन्दी टीका सहित ०–७५
६७५ वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली–भा० टी० १५–००
६७६ वेदान्त सिद्धान्त संग्रह–वनमाली कृत ६–००
६७७ वृत्ति प्रभाकर–निश्चलदास भाषा ७–००
६७८ वृत्ति प्रभाकर–स्वा० आत्मानंदकृत सरल हिंदी ६–००
६७९ वैयासिक न्यायमाला–अर्थात् वेदांताधिकारणन्याय माला तीर्थमुनि प्रणीत ३–००
६८० शांकरग्रन्थावलि–६ भाग में (प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्) हर एक का ६–५०
६८१ शंकर दिग्विजय (विद्यारण्य विरचित)–धनपति सूरि कृत डिण्डिमाख्या टीका सहित ९–००
६८२ शांकर पादभूषण–रघुनाथ सूरि–दो भाग १२–५०
६८३ शंकराचार्यकृत–प्रकरण ग्रन्थ (संग्रह) ७० ग्रंथ १२–५०
६८४ शतश्लोकी–पूर्णानन्द प्रणीत–संजीवनी भाष्य १–२५
६८५ शुद्धाद्वैत मार्तण्ड–(श्री गिरिधरजी विरचित) प्रकाश व्याख्या तथा प्रमेय रत्नार्णव २–००
६८६ श्रीकरभाष्य–वीर शैव भाष्य २ भाग १८–००
६८७ श्रीभाष्य–यतीन्द्र मत दीपिका श्रीनिवासाचार्य ३–००
६८८ श्री भाष्य—केवल दूसरा भाग १०–००
६८९ श्रीभाष्य प्रकाशिका–श्री निवासाचार्य विर० ६–५०
६९० श्री सुबोधिनी–श्री वल्लभाचार्य ४–५०
६९१ श्रुत्यंतु कल्पवल्ली–पुरुषोत्तमदास ४–००
६९२ श्रुत्यन्त सुरद्रम—पुरुषोत्तम ६–००
६९३ श्रुति कल्पलता–वामन कृत वेद स्तुति व्याख्या ३–५०
६९४ संक्षेप शारीरिक–अन्वयार्थ काशिका व्याख्या ८–००
६९५ संक्षेप शारीरिक–मधुसूदनी टीका ८–००
६९६ संक्षेप शारीरिक–सुबोधिनी तथा अन्वयार्थ बोधिनी दो संस्कृत टीक पूना १३–५०
६९७ संक्षेप शारीरिक–नृसिंहाश्रमकृत तत्वबोधिनी ४–६
६९८ संक्षेप शारीरिक–स्वा. रामानंद तथा स्वा. योगीन्द्रानंद कृत संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित १०–००
६९९ सत्यदर्शन–स्वामी कालिकानंद (हिन्दी) ५–००
७०० सनत्सुजातीय–शंकर भगवत्पाद भाष्य सटीक १–२५
७०१ स्वानुभवादर्श–माधवाश्रम विरचित सटीक ४–००
७०२ स्वरूपानुसन्धान–गौरीशंकर उदयशंकर हिन्दी ५–००
७०३ स्वर्ग का विमान–सरल हिन्दी ५–००
७०४ सत्तत्वरत्नमाला–सटीक (मध्व) मंत्रात्मक ६–२५
७०५ सत्संग के बिखरे मोती–भाषा ०–७५
७०६ सत्संग माला— ०–२५
७०७ सर्व वेदांत सार संग्रह–(संस्कृत) श्यामसुन्दरझा २–००
७०८ साधन पथ–भाषा ०–१६
७०९ साधन संकेत–भाषा ०–५०
७१० सारसंग्रह–गौड़ वैष्णवसिद्धान्तग्रंथ रुपकविराज ६–००
७११ सारुक्तावली–(भाषा) ०–७५
७१२ सिद्धान्तदर्शन–विश्वदेवाचार्यकृत निरञ्जनभाष्य २–०
७१३ सिद्धान्तलेश संग्रह–भा० टी० ६–००
७१४ सिद्धान्त बिन्दु–वासुदेव अभ्यंकर सं० टी० २–५०
७१५ सिद्धान्त बिन्दु–भा० टीका सहित २–७५
७१६ सिद्धान्त बिन्दु–न्यायरत्नावली तथा लघुव्याख्या ५–०
७१७ सिद्धांतसार–रामावतारकृत हिन्दी टीका सहित १–५०
७१८ सिद्धित्रयम्–आत्म सिद्धि २–००
७१९ सुखीजीवन–भाषा ०–५०
७२० सुन्दर विलास–भाषा पद्य लखनऊ १–००
७२१ सुन्दर विलास „ बंबई २–५०
७२२ सूक्तावली–सारुक्तावली भा० टीका १–५०
७२३ सूक्तावली–सारुक्तावली ०–५०
७२४ सूक्तिसुधाकर–भाषा ०–६२
७२५ सूतसंहिता–तात्पर्य दीपिका सहित ७–००
७२६ ज्ञानमाला–भाषा ०–३७
७२७ ज्ञानवैराग्य प्रकाश–स्वा० परमानंद भाषा २–००

तंत्र, मंत्र

७२८ अघोरी तन्त्र–हिन्दी टीका सहित १–००
७२९ अनुष्ठान प्रकाश–चतुर्थी लाल विरचित खुला १२–००
७३० अष्ट सिद्धि–हिन्दी टीका सहित १–३७
७३१ आनंद लहरी–श्री श्यामानन्द कृत टीका १–२५
७३२ इन्द्रजाल भाषा— ३–००
७३३ उड्डीश तन्त्र–भाषा टीका ०–७५
७३४ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल १–७५
७३५ कर्पूरादिस्तोत्र–विमलानन्द स्वामी कृत भूमिका टिप्पणी तथा आ० एवलन कृत अंग्रेजी ४–००
७३६ कार्तवीर्यार्जुनोपासनाध्याय—मूल मात्र ३–५०

७३७ काम बोध—पाजनी कृत टीकोपेत
७३८ कामकला विलास—पुण्यानंद विरचित सटीक १—२५
७३९ कामरत्न—हिन्दी भाषा ५—००
७४० काली नित्यार्चन—भाषा श्री श्यामनन्द २—००
७४१ काली स्वतमंजरी—श्री रमादत्त शुक्ल संपादित २—५०
७४२ कालीस्वरूपतत्व—भाषा श्री श्यामानन्द नाथ ०—३७
७४३ क्रियोड्डीशतंत्र—हिन्दी टीका सहित १—२५
७४४ कौलावली निर्णय—(हिन्दी) श्री रमादत्त शुक्ल ३—०
७४५ क्रम दीपिका—केशव भट कृत काशी ४—५०
७४६ गायत्री तन्त्र—कवचादि युक्त ०—७५
७४७ गायत्री तन्त्र—भाष्यभाष्य समेत ०—८७
७४८ गायत्री तत्व विमर्श—(भाषा) श्री श्यामानन्द १—००
७४९ गायत्री पंचांग—मूल बंबई २—२५
७५० गायत्री पुरश्चरण विधि— ०—२५
७५१ गायत्रीपूजापद्धति—(तान्त्रिकी) विभाकराचार्य ०—२५
७५२ गुप्त साधन तंत्र—हिन्दी बम्बई ०—६२
७५३ चक्रपूजा—भाषा (श्री भद्रशील शर्मा) १—५०
७५४ चक्रपूजा के स्तोत्र—श्री भद्रशील शर्मा
७५५ चतुर्विंशति गायत्री ०—५०
७५६ चिद्गगन चन्द्रिका—(महाकवि कालिदास विरचित) त्रिविक्रम तीर्थ सम्पादित १—००
७५७ तत्वनिधि—कृष्ण राज संगृहीत बम्बई ७—००
७५८ तन्त्रसार—(हिन्दी) दो भाग २—००
७५९ तन्त्रसार—कृष्णानन्द अपूर्ण संस्कृत २—००
७६० तंत्रसार—अभिनव गुप्त कृत २—५०
७६१ तंत्रसार संग्रह—(विषनारायणीय) सव्याख्या १५—२५
७६२ तंत्रालोक—अभिनव गुप्त कृत १२ भाग में जयरथ कृत व्याख्या सहित ३९—००
७६३ तारा कर्पूरराज स्तोत्र—संस्कृत हिन्दी टीका सहित ०—४४
७६४ तारा नित्यार्चन—भाषा श्री रामादत्त शुक्ल १—५०
७६५ तारा स्तव मंजरी—श्रीरमादत्त शुक्ल सम्पादित १—७५
७६६ तारा स्वरूप तत्व—(भाषा) श्यामानन्द नाथ १—००
७६७ तारा रहस्य—(ब्रह्मानंद विरचित) मूल-कल. १—२५
७६८ दत्तात्रय तंत्र—भा० टी० ०—७५, ०—५०
७६९ दुर्गा पञ्चाङ्ग—मूल—मातृप्रसाद पाण्डेय ०—६२
७७० दुर्गा पूजा—श्यामा पूजा—पद्धति ०—७५

७७१ दुर्गा सप्तशती—गुटका मूल
७७२ दुर्गा सप्तशती—गुटका निर्णयसागर १—०० २—२५
७७३ दुर्गा सप्तशती—पत्रात्मक १—००
७७४ दुर्गा सप्तशती—पत्रात्मक २—००, १—५०, ०—८७
७७५ दुर्गा सप्तशती—मूल बम्बई खुला ३—५० जिल्द ४—००
७७६ दुर्गा सप्तशती—भाषा टीका सहित ३—००, २—५०
७७७ दुर्गा सप्तशती—पंडित रामेश्वर भाषा टीका २—००
७७८ दुर्गोपासनाकल्पद्रुम—मूल खुला पत्रा १२—००
७७९ देवीसूक्त—आंगल अनुवाद सहित ०—५०
७८० देवी शतकम—म० म० कृष्णनाथ प्रणीत ०—७५
७८१ धन्वन्तरी तंत्रशिक्षा—हिन्दी टीका सहित २—५०
७८२ नित्योत्सव—उमानन्द कृत ६—००
७८३ निष्पन्न योगावलि—(भयाकरगुप्त) बौद्धतन्त्र १०—००
७८४ नेत्रतंत्र—क्षेमराज कृत व्याख्या दो भाग ६—००
७८५ पञ्चमकार तथा भावत्रय—भाषा २—००
७८६ परशुराम कल्पसूत्र—रामेश्वर प्रणीत व्याख्या १९—००
७८७ पुरश्चरण दीपिका—(काशीनाथ भट विरचित) ०—३१
७८८ बगला तन्त्रम्—मूल ०—५०
७८९ बगला नित्यार्चन—भाषा सहित १—००
७९० बगला पूजा—पद्धति (वैदिक) १—००
७९१ बगला विधान—पं० विश्वेश्वर दयालु वैद्य ०—२५
७९२ बटुकभैरवोपासनाध्याय—मूल खुला पत्रा ३—००
७९३ बालास्तव मंजरी— १—२५
७९४ बृहत इन्द्रजाल—अर्थात् कौतुकरत्न भण्डागार ४—००
७९५ बृहद्-ब्रह्म संहिता—पूना २—७५
७९६ बृहत्साबरतंत्र—शिवोक्त हिन्दी टीका १—००
७९७ भगवती गीता—भाषा ३—००
७९८ भुवनेश्वरी नित्यार्चन—भाषा पं० योगीन्द्रकृष्ण २—००
७९९ भैरवोपदेश भाषा—बाबा मोतीलाल जी २—५०
८०० मंत्रसिद्धि का उपाय—(भाषा) भद्रशील शर्मा १—००
८०१ महानिर्वाणतन्त्र—हिन्दी टीका सहित ८—५०
८०२ महामृत्युञ्जय जपविधि—भा० टी० ०—३७
८०३ महामृत्युञ्जय पञ्चाङ्ग—मातृ प्रसाद पाण्डेय ०—६२
८०४ महायक्षिणी साधन—भा० टी० १—७५
८०५ महालक्ष्मी पञ्चाङ्ग मूल ०—८७
८०६ महात्रिपुर सुन्दरी पूजा कल्प— १—१२

८०७ ...तु उपासना—भाषा श्री रामचरण १—५०
८०८ मालिनी विजय तन्त्र—आगम शास्त्र ३—५०
८०९ माहेश्वर तन्त्र—श्री कृष्णप्रियाचार्य ६—५०
८१० माहेश्वरी तन्त्र—हिन्दी टीका सहित ०—६८
८११ मुमुक्षु-मार्ग—१—३ भाग (हिन्दी) ६—००
८१२ मृगेन्द्रतन्त्र—विद्यापाद-योगपाद व्याख्या ३—००
८१३ योगिनी तन्त्र—हिन्दी टीका सहित ७—००
८१४ रत्नगोत्र विभागोमहायानोत्तरतन्त्र— ८—००
८१५ रुद्रयामल तन्त्र—भाषा टीका बम्बई १—००
८१६ ललित सहस्रनाम—मूल मात्र बम्बई ०—५०
८१७ ललितास्तवमणिमाला—बम्बई ०—५०
८१८ लक्ष्मीतन्त्र—पाञ्चरात्र २०—००
८१९ वन्देमातरम्—आद्याप्रसाद १—००
८२० वंध्यातंत्र—भाषा टीका ०—४४
८२१ वर्ण बीज प्रकाश—(सब तन्त्र ग्रन्थों का कोष) ३—०
८२२ वामकेश्वरीमत विवरण—जयरथ कृत ०—५०
८२३ वाममार्ग—हिन्दी भाषा २—००
८२४ विनय—सुधा—(सत्यान्वेषी) १—००
८२५ वृत्तमाला स्तुति—ज्ञान श्रीमित्र विरचित ०—७५
८२६ शाक्तानन्दतरंगिणी—(हिन्दी) मूलधर्मका परिचय २—०
८२७ शाक्तानन्द तरंगिणी—बंगला अक्षरों में १—७५
८२८ शतचण्डी विधान—भाषा १—७५
८२९ श्यामा पूजा पद्धति—(भाषा) रमादत्त शुक्ल २—००
८३० श्यामा सपर्या वासना—भाषा श्यामानन्द नाथ ३—००
८३१ शाक्तप्रमोद—दशमहाविद्या का ग्रन्थ मूलमात्र १४—००
८३२ शाबर चिन्तामणि १—२५
८३३ शव प्रमोद—चन्द्रशेखर शुक्ल ०—२५
८३४ शैव मनोरंजिनी—चारों भाग ३—००
८३५ श्रीविद्या रत्नमाला— १—००
८३६ श्रीविद्यानित्यार्चन—भाषा सहित २—५०
८३७ श्रीविद्या नित्याह्निकम— ५—७५
८३८ श्रीविद्यामंत्र भाष्य त्रिकाण्ड सारार्थबोधिनी व्या- १—७५
८३९ श्रीविद्यासपर्या पद्धति—दो भाग ५—६२
८४० श्रीविद्यास्तव मंजरी— २—५०
८४१ सप्तशती रहस्य—श्यामानन्द नाथ २—५०
८४२ सर्वोल्लास तंत्र—मूलमात्र ५—००

८४३	सात्वत तंत्र--		१-५०
८४४	साधक का संवाद-भाषा सत्यान्वेषी कृत		३-५०
८४५	सावरि तन्त्र-(सेवड़े का जादू) भाषा		३-००
८४६	स्वच्छन्द तंत्र-क्षेमराज कृत व्याख्या सात भाग		१६-५०
८४७	सौन्दर्य लहरी-स्वा० विष्णुतीर्थ कृत हिन्दी		५-००
८४८	सौन्दर्य लहरी-अंग्रेजी अनु. सचित्र अमरीका		३७-५०
८४९	सौन्दर्य लहरी-लक्ष्मीधर व्याख्या-भास्कर भाष्या		३-७५
८५०	सार्थ सौंदर्य लहरी-(बाबा मोतीलाल) हिन्दी		२-५०
८५१	सौन्दर्य लहरी-कवल्याश्रमकृतया सौभाग्यवर्धन्या लक्ष्मीधराचार्य कृतया लक्ष्मीधरया, कामेश्वर सूरि कृतया अरुणामोदिन्या आंगल अनुवाद		२५-००
८५२	सौभाग्य-लक्ष्मी-भाषा टीका सहित		१-००
८५३	हनुमदुपासना-मूलमात्र बम्बई		३-५०
८५४	हंसविलास-हंसमिट्टू कृत		८-०
८५५	हिन्दुओं की पोथी-देवीदत्त शुक्ल		२-००
८५६	ज्ञानार्णव तंत्र-मूलमात्र पूना		२-००

स्तोत्र

८५७	अन्नपूर्णा स्तोत्र—		०-१२
८५८	अपराजिता स्तोत्र	०-१९,	०-१९
८५९	अपामाजनस्तोत्र—		०-२२
८६०	आदित्यहृदय-मोटाअक्षर		०-३७
८६१	आदित्यहृदय-छोटाअक्षर		०-१२
८६२	आदित्यहृदय-नवग्रह सहित		०-०९
८६३	आदित्यहृदय-भाषा टीका		०-४४
८६४	आपदुद्धारकबटुकभैरवस्तोत्र		०-१२
८६५	आरतीसंग्रह-भाषा		०-१९
८६६	आलवदार स्तोत्र	०-१२,	०-०६
८६७	ऋणमोचन मंगलस्तोत्र		०-०९
८६८	इन्द्राक्षीस्तोत्र		०-१२
८६९	ककारादि कृष्ण सहस्रनाम		१-००
८७०	कमलनेत्र स्तोत्र-भाषा		०-०९
८७१	कर्पूर स्तोत्र स हिन्दी टीका		०-३१
८७२	कालीकवच स्तोत्र	०-९,	०-१२
८७३	कालिकासहस्रनाम		०-५०
८७४	कुञ्जिकास्तोत्र		०-१९
८७५	गंगालहरी-मूल		०-१२
८७६	गंगालहरी-पीयूषलहरी सं० टीका	०-५०,	०-४४
८७७	गंगालहरी-भाषा टीका		०-१९
८७८	गजेन्द्रमोक्ष-भाषा टीका		०-२५
८७९	गणपतिस्तोत्र-गणेशमहिम्न		०-१९
८८०	गणेशकवच		०-१२
८८१	गणेशमहिम्न स्तोत्र		०-०९
८८२	गणेशसहस्रनामावली		०-२५
८८३	गणेश सहस्रनाम-सटीक		१-२५
८८४	गणेशसहस्रनाम—मूल		०-२५
८८५	गणेश सरस्वती स्तोत्र		०-१२
८८६	गणेशाष्टक		०-०६
८८७	गायत्री रामायण		०-०६
८८८	गायत्री सहस्रनाम-नामावली		०-५०
८८९	गोपाल सहस्रनाम-मूल	०-३७, ०-०५,	०-७१
८९०	गोपाल सहस्र नाम-भा० टी०		०-५०
८९१	गोपाल सहस्रनामावली		०-५०
८९२	चर्पटपजरी		०-१२
८९३	दत्तात्रयस्तोत्र	०-१२,	०-१९
८९४	देवीकवच-भा० टी०		०-१६
८९५	देवी सहस्रनामावली		०-२५
८९६	देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र		०-१२
८९७	देवीपुष्पांजली स्तोत्र	०-१२,	०-०६
८९८	दुर्गाकवच		०-०९
८९९	नर्मदाष्टक		०-०६
९००	नवग्रह स्तोत्र विष्णुपंजर		०-०६
९०१	नवग्रहस्तोत्र-बड़ा बम्बई		०-६२
९०२	नवग्रहस्तोत्र-यन्त्रमन्त्र कवच आदि सहित		०-७५
९०३	नारायण कवच	०-१२, ०-१९,	०-२५
९०४	नारायण वर्म		०-३१
९०५	नृसिंह कवच		०-१२
९०६	प्रत्यंगिरास्तोत्र		०-१६
९०७	पुरुषोत्तम सहस्रनाम		०-३१
९०८	पञ्चमुखी हनुमान कवच		०-१९
९०९	बद्रीनारायण स्तोत्र		०-१९
९१०	बगुलामुखी स्तोत्र		०-१३
९११	बटुकभैरव सहस्रनामस्तोत्र ना०		०-५०
९१२	ब्रह्मज्ञानावली		०-०६
९१३	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर-मोटा अक्षर काशी		३-००
९१४	,,,, ,,,, बम्बई		३-५०
९१५	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर सचित्र गुटका केवल दूसरा भाग		३-०
९१६	भवानी सहस्रनाम		०-५०
९१७	भवानी मानसिक पूजन		०-१२
९१८	भैरवसहस्रनाम		०-२२
९१९	महाकालशनिमृत्युंजय		०-१२
९२०	महामृत्युंजय जपविधि		०-२५
९२१	,, ,, प्रकाश		०-६२
९२२	मृत्युञ्जय स्तोत्र		०-१२
९२३	महाविद्यास्तोत्र	०-९,	०-१२
९२४	महालक्ष्मीस्तोत्र	०-९,	०-१२
९२५	महालक्ष्म्यष्टक		०-०६
९२६	महिम्नस्तोत्र		०-१२
९२७	महिम्नस्तोत्र-मधुसूदनी टीका		०-६२
९२८	यमुनाष्टक		०-०६
९२९	राम सहस्रनाम		०-१६
९३०	रामस्तवराज मूल		०-१९
९३१	,, ,, भाषाटीका		०-३७
९३२	रामरक्षास्तोत्र		०-०९
९३३	रामनामसहस्रनाम स्तोत्र		०-१३
९३४	ललितासहस्रनाम स्तोत्र		०-५०
९३५	,, सटीक		२-५०
९३६	,, नामावली-सहित		०-६९
९३७	लक्ष्मीनारायण हृदय	०-३१,	०-५०
९३८	विष्णु सहस्रनाम मूल	०-०९, ०-५०,	०-४४
९३९	,, भाषा टीका		०-३१
९४०	,, शंकरभाष्य भाषा टीका		०-८७
९४१	,, नामावली		०-३७
९४२	,, भगवद्गुणदर्पणभाष्य		८-५०
९४३	शनिस्तोत्र		०-०९
९४४	शिवकवच		०-२५
९४५	शिवसहस्रनाम मूल		०-३१
९४६	शिवस्तोत्र		०-०९

९४७ शिवताण्डव स्तोत्र ०-१९
९४८ शिवताण्डव भाषा टीका ०-१९
९४९ शिवमहिम्न स्तोत्र मूल ०-१२, ०-१९
९५० „ „ भाषाटीका १०-१९
९५१ „ „ भा०टी०-स्वा० प्रकाशानन्द ०-५७
९५२ शिवसहस्रनामावली ०-३७
९५३ शीतलाष्टक ०-०९
९५४ संतानगोपालस्तोत्र ०-०९, ०-२५
९५५ स्तवमाला सभाष्य ३-००
९५६ स्तोत्ररत्नावली हि. टी. ०-५०
९५७ „ रामानुज दो भाग ६-००
९५८ सर्वदेवस्तोत्र ०-१२
९५९ सरस्वती स्तोत्र ०-२५
९६० सिद्ध सरस्वती स्तोत्र ०-१२
९६१ सूर्यद्वादशस्तवी ०-१६

अच्युत ग्रन्थमाला

९६२ भगवन्नामकौमुदी–श्रीलक्ष्मीधर, अनन्तदेव सं० ०-७५
९६३ शुल्बसूत्र–(कात्यायनश्रौत का परिशिष्ट अंश) म. म. पं. विद्याधर गौड़ वि०स० सं० वृत्ति ०-३७
९६४ कात्यायन श्रौतसूत्र–पं. विद्याधर गौड़ कृत सरलसंस्कृत वृत्ति सहित ८-००
९६५ खण्डन खण्ड ख द्य हिन्दी टीका सहित ८-००
९६६ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि–सदानन्द व्यासकृत स्वोपज्ञ स. व्याख्या सहित दो भाग ५-००
९६७ तिथ्यर्क—तिथियों के निर्णय पर अपूर्व ग्रन्थ श्रीदिवाकर विरचित २-००
९६८ परमार्थसार–सटीक–श्रीपतञ्जलि कृत ०-५०
९६९ प्रेमपत्तन–श्री रसिकोत्तमकृत तथा अद्भुत प्रणीत टीका सहित १-२५
९७० काशीकेदारमाहात्म्य–ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गत-हिन्दी टीका सहित ३-००
९७१ सिद्धान्तबिन्दु–श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित–भाषानुवाद सहित २-७५
९७२ प्रकरणपञ्चक–श्री शंकराचार्य के आत्मबोध, प्रौढ़ानुभूति, तत्त्वोपदेश हि. अनु. ०-७५

९७३ [illegible] भाग मिलता है ५-५०
९७४ विवरण प्रमेय संग्रह–श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित तथा हिन्दी अनुवाद सहित ६-००
९७५ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली–श्री सदाशिवेन्द्र सरस्वती विरचित भाषा टीका ०-७५
९७६ बृहदारण्यकवार्तिकसार–दो भागों में। श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित हिन्दी टीका १२-०० परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए। केवल प्रमेय परीक्षान्त भाग पृथक। ३-००
९७७ अच्युतलेखमाला–महात्माओं तथा विद्वानों के सुन्दर लेख में हिन्दी २-००
९७८ भगवद्गीता–श्रीशंकरानन्द विरचित शंकरानन्दी संस्कृत टीका सहित तथा श्रीभोलेबाबाकृहिन्दीत अनुवाद सहित नया संस्करण ८-००
९७९ षट्सन्दर्भ–तत्त्वसन्दर्भ–व्याख्याद्वयेपेतः १-५०
९८० योगवासिष्ठ–सरल हिंदी अनुवाद सहित द्वितीय १०) तृतीय १०) चतुर्थ १०) पंचम—८-००
९८१ भागवतएकादशस्कन्ध–प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद २ भाग ६-५०
९८२ नैष्कर्म्यसिद्धि–श्री सुरेश्वराचार्य विरचित हिन्दी अनुवाद सहित १-७५
९८३ जिवस्तुति–श्री गोकुलनाथ विरचित संस्कृत तथा हिंदी अनुवाद सहित ०-६२
९८४ सिद्धान्तलेशसंग्रह–हिन्दी अनुवाद सहित ६-००

ज्योतिष

९८५ अंकविद्या–गणेशकुमार ओझा हिन्दी ३-००
९८६ अंगविज्जा–प्राकृत भाषा में–मु.पुण्यविजय जीसं. २१-०
९८७ अर्घ मार्तण्ड–राज ज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जी कुराली वालों की अभूत पूर्ण पुस्तक दूसरा संस्करण विशेष परिवर्द्धित-यन्त्रस्थ। १२-००
९८८ अर्घ प्रकाश–भा० टी० ०-६०
९८९ अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्योतिष–भगवानदास भाषा ४-००
९९० अखण्ड भाग्योदयदर्पण „ „ ३-००
९९१ अवकहोडाचक्र–भाषा टीका ०-३१
[illegible] अहिबल चक्र–हिन्दी टीका सहित ०-२५
९९३ आर्यासप्तति–(भट्टोत्पल) सटीक ०-५०
९९४ आशुबोध ज्योतिष ०-३७
९९५ उपपत्तीन्दुशेखर–शिरोमणि परिष्कार १५-००
९९६ करणकुतूहल –(भास्कराचार्य) सव्याख्या १-२५
९९७ करण कौस्तुभ–कृष्णदैवज्ञ ०-७५
९९८ करणपद्धति–मूल ०-३१
९९९ करण प्रकाश–ब्रह्मदेव विरचित १-५०
१००० करलक्खण–सामुद्रिक–भाषाटीका ०-७५
१००१ कर्मविपाक–नक्षत्रचरणगत भा० टी० ३-००
१००२ कुटाकारशिरोमणि–(देवराज) सं. व्याख्या १-००
१००३ कुण्डलीदर्पण–हिन्दी–अनूपमिश्र १-५०
१००४ कुण्डलीशिक्षक–पं० हरदेव ०-३७
१००५ केतकी ग्रहगणित–केतकर परिमलभाष्य १५-००
१००६ केवल ज्ञानप्रश्न चूड़ामणि–हिन्दी टीका सहित ४-००
१००७ केरल तत्त्व प्रश्नसंग्रह–भाषाटीका ०-५०
१००८ केरल प्रश्न संग्रह–भाषा टीका ०-५०
१००९ केरलीयजातक–हिन्दी ०-५०
१०१० केरलीय प्रश्नरत्न–भाषा टीका १-००
१०११ केशवीय जातक पद्धति–भाषा टीका २-७५
१०१२ खण्डखाद्यक– २-५०
१०१३ खण्डखाद्यक–(ब्रह्मगुप्ताचार्य टीका) ३-५०
१०१४ खट कौतुक–भाषाटीका ०-१९
१०१५ गणक तरंगिणी–सुधाकर द्विवेदी १-७५
१०१६ गणित का इतिहास–सुधाकर द्विवेदी हिन्दी २-५०
१०१७ गणितकौमुदी– दूसरा भाग २-००
१०१८ गर्गजातक–भाषाटीका ०-३१
१०१९ गर्गमनोरमा–भाषाटीका ०-१९, ०-२२
१०२० गोलतत्त्व प्रकाशिका–भाषाटीका १-७५
१०२१ गोलपरिभाषा–पं० सीताराम ०-२५
१०२२ गोलाध्याय–भास्कराचार्य दो भाग पूना ८-७५
१०२३ गौरीजातक–भाषा टीका ०-२५
१०२४ ग्रहगोचर–भाषाटीका ०-२५
१०२५ ग्रहफलदर्पण–भा० टी० १-००
१०२६ ग्रहचार निबन्धन–श्रीहरिदत्त १-१२
१०२७ ग्रहफलदर्पण–भाषा टीका १-५०

१०२८	ग्रहरत्नभूषण–रामेश्वरदत्त	०–६२
१०२९	ग्रहलाघव–सं० टीका तथा हिन्दी टीका	३–५०
१०३०	ग्रहलाघव–भा० टी० बम्बई	३–५०
१०३१	ग्रहलाघवसारिणी	१–७५
१०३२	चन्द्रवाक्यानि–वररुचि	३–००
१०३३	चन्द्रसारिणी–गोरखप्रसाद	२–००
१०३४	चमत्कार चिन्तामणि–भाषाटीका	०–५०
१०३५	चमत्कार ज्योतिष	१–२५
१०३६	चापीयत्रिकोणगणित–अच्युतानन्द	१–५०
१०३७	जयपाहुड–निमित्त शास्त्र–प्राकृत	६–६०
१०३८	जन्मपत्री के फार्म (तीन का सेट)	०–१९
१०३९	जन्मपत्रदीपक–भाषा टीका	१–२५
१०४०	जन्मपत्रव्यवस्था–भाषा टीका	०–७५
१०४१	जन्मांग नक्षत्रदीपिका–लक्ष्मीनारायण	१–५०
१०४२	जातकतत्त्वम्–भाषा टीका	७–००
१०४३	जातक चन्द्रिका–भाषाटीका	१–१५
१०४४	जातक पद्धति–भाषा टीका	२–७५
१०४५	जातक पारिजात–संस्कृत तथा हिंदी टीका	१२–००
१०४६	जातक शिरोमणि–भाषा टीका	३–५०
१०४७	जातक संग्रह–भाषा टीका	५–००
१०४८	जातकाभरण–भाषाटीका काशी	४–००
१०४९	जातकालंकार–संस्कृत तथा हिन्दी टीका १–०,	०–७५
१०५०	जातकालंकार–भा० टी०	०–६५
१०५१	जैमिनीय सूत्र–संस्कृत हिन्दी टीका	२–००
१०५२	जैमिनीय सूत्र भाषा टीका	१–२५
१०५३	ज्योतिनिबन्ध–शिवराज विरचित	६–००
१०५४	ज्योतिषकल्पद्रुम–हिन्दी	२–६२
१०५५	ज्योतिषतत्वविवेक निबन्ध–भाषा टीका	२–५०
१०५६	ज्योतिष प्रबोध–गणेशदत्त	०–३७
१०५७	ज्योतिषतत्त्वसुधार्णव–भाषा टीका	७–००
१०५८	ज्योतिषरत्नमाला—	१२–००
१०५९	ज्योतिष विज्ञान–विशुद्धानन्द	६–००
१०६०	ज्योतिषश्यामसंग्रह–भाषा टीका	६–००
१०६१	ज्योतिषसर्वसंग्रह–भाषा टीका	२–००
१०६२	ज्योतिषसार–भाषा टीका बम्बई	३–००
१०६३	ज्योतिष सिद्धान्तसंग्रह–संस्कृत	३–००
१०६४	ज्योतिस्तत्त्व–भाषा टीका दो भाग	५०–००
१०६५	तत्त्वप्रदीप जातक : भाषा टीका	०–२५
१०६६	ताजिकनीलकंठी–सं० हि०	३–५०
१०६७	ताजिकनीलकंठी–जलदगर्जना सं० तथा हिन्दी	४–५०
१०६८	ताजिकनीलकंठी–सं० टीका खुला	२–००
१०६९	ताजिक नीलकंठी–भाषा टीका बम्बई	३–५०
१०७०	ताजिक भूषण–भाषा टीका	१–००
१०७१	ताजिक नीलकंठी–संस्कृत टीका	२–२५
१०७२	ताजिक संग्रह–भाषा टीका	०–७५
१०७३	तिथि चिन्तामणि–भाषा टीका	०–५०
१०७४	तिथिचिन्तामणि–गणेशदैवज्ञ	०–८०
१०७५	तिलविचार–हिन्दी	१–००
१०७६	तेजीमन्दी विचार–हिन्दी रतलाम	१–५०
१०७७	दयाविलास–महन्तदयाराम जी	४–००
१०७८	दीर्का–शुद्धदीपिका–भाषा टीका	३–५०
१०७९	दैवज्ञ कामधेनु–संस्कृत	४–५०
१०८०	दैवज्ञवल्लभ–भाषा टीका	०–८०
१०८१	दैवज्ञविनोद–पं० मणीराम	५–२५
१०८२	दैवज्ञाभरणम्–संस्कृत	६–२५
१०८३	द्वात्रिंशद्योगावलीजातक–भा० टी०	०–१२
१०८४	धराचक्र–भाषा टीका	०–३७
१०८५	नरपतिजयचर्या–सं० टीका	४–२५
१०८६	नष्टजन्मांगदीपिका–पंचांगदीपिका	०–३१
१०८७	नन्दिदत्त पंचविंशतिका—	०–१३
१०८८	पंचस्वरा–सुबोधिनी सं०	१–७५
१०८९	पंचांगपद्धति–वायुनंदन	०–३७
१०९०	पंचांगमंजूषा–भाषा टीका	०–७५
१०९१	पंचांगविज्ञान–भाषाटीका	०–५०
१०९२	पत्रीमार्गप्रदीपिका–वर्षदीपक भाषाटीका	२–२५
१०९३	पत्रीमार्गप्रदीपिका वर्षदीपकंच–महादेव शर्मा	३–००
१०९४	पद्मकोश–भाषा टीका	०–३७
१०९५	परीक्षा चक्रावलीभाषाटीका	०–५०
१०९६	परीक्षा विचार–हिन्दी	०–१२
१०९७	प्रश्नचण्डेश्वर–भाषा टीका	१–२५
१०९८	प्रश्नज्ञानप्रदीप–भाषा टीका	१–५०
१०९९	प्रश्नभूषण–संस्कृत हिन्दी टीका	०–७५
११००	प्रश्न वैष्णव–भाषा टीका	१–५०
११०१	प्रश्नांकचूडामणि	०–१२
११०२	प्रस्तारचक्र–भाषाटीका	०–१२
११०३	फलित संग्रह–रामयत्न भाषाटीका	१–००
११०४	बालबोध ज्योतिष–भाषा टीका	१–५०
११०५	बालबोध ज्योतिषसार संग्रह भा० टी०	१–२५
११०६	बीजगणित–संस्कृत–हिन्दी टीका	८–००
११०७	बृहज्जातक–भाषाटीका	३–५०
११०८	बृहज्जातक–दशाध्यायी सटीक	२–५०
११०९	बृहज्ज्योतिषसार–भाषा टीका	४–५०
१११०	बृहत्संहिता भाषा टीका काशी	९–००
११११	बृहत्–होडाचक्रविवरण–भाषाटीका	०–५०
१११२	बृहदवकहडाचक्र भा० टी० बंबई	०–८७
१११३	बृहद्यवनजातक–भाषाटीका	२–५०
१११४	बृहद्यावनोक्त स्त्रीजातक –भाषाटीका	०–८७
१११५	भद्रबाहुसंहिता–मूलमात्र ५–७५ भा टी.	८–०
१११६	भविष्यफलभास्कर–भाषाटीका	३–५०
१११७	भाग्यरहस्य–हिन्दी	१–५०
१११८	भारतीय कुण्डली विज्ञान–हिन्दी	४–५०
१११९	भारतीय ज्योतिष–नेमिचन्द्र हिन्दी	६–००
११२०	भारतीय ज्योतिष–(दीक्षित) मराठी का हिन्दी अनुवाद	८–००
११२१	भारतीय ज्योतिष का इतिहास–गोरखप्रसाद	४–००
११२२	भावकुतूहल–भाषाटीका	३–००
११२३	भावप्रकाश–भाषा टीका	१–२५
११२४	भावफलाध्याय–भाषा टीका	०–२५
११२५	भुवनदीपक–सं० हिन्दी टीका	०–७५
११२६	भृगुसंहिता–मथुरा का छापा इसकी सत्यता असत्यता पर हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं	५०–००
११२७	भृगुसंहिता–योगावली खंड संस्कृत	५–२५
११२८	भृगुसंहिता पद्धति–नवग्रह जन्मांग कुण्डली नवीन रचना	१०–००
११२९	मकरन्दसारणी–भाषा टीका	२–००
११३०	मनुष्यजातक–सव्याख्या	२–००
११३१	मयूरचित्रकम्–वराहमिहिर	०–५०
११३२	महाभास्करीयम् (भास्कराचार्य) सव्याख्या	२–००

११३३	मघमाला–भड्डली	०–५०
११३४	मानसागरी–भाषा टीका काशी	८–००
११३५	मानसागरी–भाषा टीका बम्बई	६–००
११३६	मुहूर्तकल्पद्रुम–विट्ठलदीक्षित	०–७५
११३७	मुहूर्त गणपति–भाषा टीका	५–००
११३८	मुहूर्त चिन्तामणि–प्रमिताक्षरा सं० टी०	३–००
११३९	मुहूर्त चिन्तामणि–पीयूषधारा	५–००
११४०	मुहूर्त चिन्तामणि–भाषा टीका काशी	३–००
११४१	मुहूर्तचिन्तामणि–भाषा टीका बम्बई	२–५०
११४२	मुहूर्तदीपक–सव्याख्या	०–५०
११४३	मुहूर्त प्रकाश–भाषा टीका	३–५०
११४४	मुहूर्तमंजरी–भाषा टीका	०–६२
११४५	मुहूर्तमार्तण्ड–भाषा टीका	३–००
११४६	मुहूर्तसंग्रहदर्पण–भाषा टीका	३–५०
११४७	यन्त्रचिन्तामणि–भा० टी०	१–३७
११४८	यन्त्रराज–यन्त्रशिरोमणि (महेन्द्र)	२–००
११४९	योगायर्दीय	०–२५
११५०	योगिनी जातक–भाषा टीका	०–३१
११५१	रणदीपक–(कमारगणक)	०–३१
११५२	रत्नगर्भाचक्र–भाषाटीका	०–१९
११५३	रत्नदीपिका–लक्ष्मीनारायण	१–००
११५४	रत्नदीपिका–रत्नशास्त्र प्राचीन	२–२५
११५५	रत्नोद्योत भाषाटीका	०–७५
११५६	रमलगुलजार–केवल हिन्दी	४–००
११५७	रमलनवरत्न–भाषा टीका	२–००
११५८	रमलमार्तण्ड–हिन्दी	०–६३
११५९	रमलरहस्य	९–००
११६०	रमलशास्त्र–वचाणप्रसाद	२–००
११६१	लग्नचन्द्रिका–भाषाटीका	२–००
११६२	लग्नप्रदीप–प्रथम भाग	०–३१
११६३	लग्नरत्नाकर–भाषाटीका	०–३७
११६४	लग्नवाराही–भाषा टीका	०–१२
११६५	लघुजातक–सं०हिन्दी टीका	१–५०
११६६	लघुजातक–भाषा टीका	१–००
११६७	लघुपाराशरी–मध्य पाराशरी भा० टी०	१–२५
११६८	लघपाराशरी–भा० टी०	०–५६
११६९	लघुभास्करीय–(भास्कराचार्य) सटीक	२–००
११७०	लघुभास्करीय–शंकर विवरण	१–८८
११७१	लघुमानस–परमेश्वर व्याख्या	०–८७
११७२	लघुसंग्रह–भाषाटीका	१–५०
११७३	लीलावती–विवरण व्याख्या दो भाग	४–७५
११७४	लीलावती–भा० टी० पं० सीताराम	३–००
११७५	वनमाला–भाषा टीका	०–२५
११७६	वर्षदीपकपत्रीमार्गप्रदीपिका भाषाटीका	३–००
११७७	वर्षपद्धति–मूलमात्र	२–००
११७८	वर्षयोगसमूह–भा० ट०	१–२५
११७९	वाशिष्ठसंहिता (वृद्धवासिष्ठ)	३–५०
११८०	वाराहीसंहिता (बृहत्संहिता) भा० टी०	९–००
११८१	वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिसाधनम्	१–५०
११८२	वास्तुमुक्तावली–भाषा टीका	०–७५
११८३	वास्तुरत्नावली–सं० हिं० दोनों टीका	२–५०
११८४	वास्तुराजवल्लभ–भाषा टीका	२–५०
११८५	वास्तुसारिणी–भाषाटीका	३–००
११८६	विमण्डलवक्रविचार	२–००
११८७	विवाहवृन्दावन–सं० हिं० टीका	२–५०
११८८	विश्वकर्मप्रकाश–भाषा टीका	२–५०
११८९	विश्वकर्मविद्याप्रकाश	०–६२
११९०	विशोत्तरीदशा–रामनरेश प्रसाद	१–५०
११९१	वृन्दावली–भा० टी०	०–५०
११९२	शकुनविचार	०–२५
११९३	शनिविचार हिन्दी	०–७५
११९४	शम्भुहोराप्रकाश–भाषाटीका	४–५०
११९५	शिवजातक–भाषाटीका	०–१२
११९६	शिशुबोध–भाषाटीका	०–६२
११९७	शीघ्रबोध–भाषाटीका	१–००
११९८	शुद्धिदीपिका–भाषा टीका	०–५०
११९९	षटपंचाशिका –सं० हिं० टीका	०–५०
१२००	सन्ततिसम्पथविचार–हिन्दी	१–००
१२०१	संवत्सरनिर्णय	०–८८
१२०२	संकेतनिधि–सं०हिन्दी टीका	३–५०
१२०३	समरसार–सं० हिन्दी टीका	१–७५
१२०४	सरलत्रिकोणमिति–वापुदेव	४–५०
१२०५	सर्वतोभद्रचक्र–भाषा टीका	१–५०
१२०६	सर्वार्थचिन्तामणि–भाषा टीका	६–००
१२०७	सर्वसंग्रह–भाषा टीका	४–५०
१२०८	सामुद्रिक दर्पण–हिन्दी	१–००
१२०९	सामुद्रिकरहस्य–भाषाटीका	३–००
१२१०	सामुद्रिकशास्त्र भाषा टीका	३–००
१२११	सारावली–भाषा टीका सफेद	९–००
१२१२	सिद्धान्तदैवज्ञविनोद–सं० हिन्दी टीका	५–२५
१२१३	सिद्धान्त शिरोमणि–मध्यमाधिकारान्त	३–००
१२१४	सिद्धान्तशिरोमणि–(भास्कराचार्य) वासनाभाष्य	६–०
१२१५	सिद्धान्त शिरोमणि–प्रभा-वासना प्रथमभाग	५–००
१२१६	सिद्धान्तशिरोमणि–ग्रहगणिताध्याय–वासनाभाष्य–शिरोमणिप्रकाश दो भाग	६–५०
१२१७	सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय-वासना भाष्य–मरिचि व्याख्या दो भाग	८–७५
१२१८	सिद्धान्तशेखर–(श्रीपति) सव्याख्या दो भाग	२४–३७
१२१९	सुगम ज्योतिष प्रवेशिका-गोपेश्वर	५–००
१२२०	सुलभविषय विज्ञान	०–६०
१२२१	सूर्यसिद्धान्त सं० हिं० टीका	५–००
१२२२	स्त्रीजातक–हिन्दी टीका बड़ा	२–५०
१२२३	स्त्रीजातक–भा० टी० काशी	१–२५
१२२४	हस्तपरीक्षा–हिन्दी पामिस्ट्री रतलाम	६–५०
१२२५	हस्तरेखाविज्ञान	८–००
१२२६	हस्तसामुद्रिक शास्त्र	६–००
१२२७	हायनचन्द्रोदय भा० टी०	०–५०
१२२८	हायनफलरत्न–भाषा टीका	०–५०
१२२९	हायनरत्न–मूलखुला पत्रा	३–५०
१२३०	हायनबोध–भाषाटीका	०–६२
१२३१	हायनभास्कर–भाषा टीका	१–००
१२३२	हिन्दु गणितशास्त्र का इतिहास	३–००
१२३३	हनुमान ज्योतिष–भाषा टीका	०–६२

चिकित्सा

१२३४	अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भट्टाचार्य	१०–००
१२३५	अगदतन्त्र–रमानाथ द्विवेदी	०–७५
१२३६	अचार चटनी और मुरब्बा–	१–२५

१२३७	अभ्रक चिकित्सा के प्रयोग–जानकीशरण	२–५०
१२३८	अजीर्णतिमिरभास्कर–हिन्दी	०–६२
१२३९	अजीर्णमंजरी–हिन्दी टीका	०–४७
१२४०	अञ्जननिदान हिन्दी टीका	१–००
१२४१	अनुभूतयोगावली	१–३१
१२४२	अनुपानदर्पण–हिन्दी टीका	२–२५
१२४३	अनुपानविधि–श्यामसुन्दर	०–५०
१२४४	अनुभूतयोग–दो भाग में	२–००
१२४५	अनुभूतयोगचिन्तामणि–दो भाग डा.गणपतिसिंह	८–२५
१२४६	अनुभूतयोग प्रकाश–गणपति सिंह	६–२५
१२४७	अपूर्वचिकित्सा विधान–महेन्द्रनाथ	६–००
१२४८	अभिनव बूटीदर्पण–(सचित्र)	१०–००
१२४९	अभिनव विकृति विज्ञान–रघुवीर	२२–००
१२५०	अ० शरीर क्रियाविज्ञान–प्रियव्रतशर्मा	७–५०
१२५१	अभिनव शवच्छेद विज्ञान–हिन्दी	१५–००
१२५२	अमरविद्या–गणपति सिंह	३–००
१२५३	अमृतसागर बम्बई	९–००
१२५४	अरिष्ठक (रीठा) गुणविधान	०–५०
१२५५	अर्क (आक) गुण विधान–हिन्दी	१–५०
१२५६	अर्क प्रकाश–रावण भाषा टीका	२–५०
१२५७	अर्शरोग चिकित्सा–हिन्दी	०–५०
१२५८	अश्व शास्त्रम्–संस्कृत (नकुल)	१२–००
१२५९	अष्टांगसंग्रह–निदान स्थान सटीक	३–००
१२६०	अष्टांगसंग्रह–शरीरस्थान सटीक	३–००
१२६१	अष्टांग संग्रह–(सूत्र स्थान) छांगाणी भा टी.	८–००
१२६२	अष्टांग संग्रह–अत्रिदेव दो भाग हिन्दी	३६–००
१२६३	अष्टांगहृदय–मूल मोटा अक्षर	५–००
१२६४	अष्टांगहृदय–मूलगुटका काशी	४–००
१२६५	अष्टांगहृदय–हिन्दी टीका सहित.	१५–००
१२६६	अष्टांगहृदय–दासपंडितसंस्कृत व्या दो भागमें	११–००
१२६७	आदर्श आहार–डा०एस० सी० दास	१–००
१२६८	आदर्श भोजन–श्रीकेदारनाथ	१–२५
१२६९	आदिशास्त्र अर्थात रतिशास्त्र–	१–५०
१२७०	आधुनिक एलोपैथिक गाइड–बंसल	८–५०
१२७१	आधुनिक चिकित्सा विज्ञान–आशानंद दो भाग	२०–००
१२७२	आम्रगुण विधान–डा० गणपति सिंह	१–२५
१२७३	आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा	१–२५
१२७४	आयुर्वेद चिन्तामणि–(निघण्टु)	४–५०
१२७५	आयुर्वेद प्रदीप–राजकुमार द्विवेदी	१०–००
१२७६	आयुर्वेद विज्ञानसार–हिंदी टीका	१–५०
१२७७	अत्रिदेव बड़ा	११–००
१२७८	आयुर्वेद का इतिहास–अत्रिदेव	३–५०
१२७९	आयुर्वेदसार संग्रह हिन्दी–चिकित्सा, औषध निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य	७–००
१२८०	आसव विज्ञान–ले० हरिशरनानन्द	१–५०
१२८१	आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका	११–००
१२८२	आयुर्वेदीय हितोपदेश–	२–५०
१२८३	आरोग्य विज्ञान–डा० लक्ष्मीनारायण	२–००
१२८४	आयुर्वेद सूत्र–पं० रामप्रसाद कृत	०–८७
१२८५	आयुर्वेदिक इंजेक्शन चिकित्सा–श्यामसुन्दर	२–५०
१२८६	आयुर्वेदीय औषध संशोधन–धामणकर	१–००
१२८७	आयुर्वेदीय क्रिया शरीर–रणजीतराय	१३–००
१२८८	आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान–रणजीतराय	६–००
१२८९	आयुर्वेदीय परिभाषा–	१–२५
१२९०	आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान–वै० यादवजी	८–५०
१२९१	आर्गेनन–हिन्दी, डा० सुरेशप्रसाद	४–००
१२९२	आरोग्यप्रकाश–श्रीरामनारायण	२–००
१२९३	आरोग्य शिक्षा–पं० मुरलीधर हिंदी	०–५०
१२९४	आसवारिष्ट संग्रह–हिन्दी	१–७५
१२९५	इंजेक्शन–डा० सुरेशप्रसाद	१०–००
१२९६	इंजक्शन तत्त्व प्रदीप–गणपतिसिंह	५–००
१२९७	इन्द्रायणगुणविधान–हिन्दी	०–६२
१२९८	इलाजुलगुर्बा–यूनानी इलाज	३–५०
१२९९	उपचारपद्धति और पथ्य–रवीन्द्र	०–८८
१३००	उपदंशविज्ञान–पं० बालकराम	१–००
१३०१	एकऔषधिगुण विधान–गणपति सिंह	१–८७
१३०२	एकौषधिचिकित्सा	४–००
१३०३	एनीमा और कैथेटर–डा० सुरेशप्रसाद	०–३७
१३०४	एलोपैथिक गाईड–ले० डा० रामनाथ वर्मा, ऐसी उपयोगी पुस्तक एलोपैथिक संबन्धी आज तक नहीं छपी। यही कारण है कि यह इसका छठा संस्करण भी प्रायः समाप्त है। परिवर्धित संस्करण	१२–००
१३०५	एलोपैथिक चिकित्सा–डा० रामनाथ	१२–००
१३०६	एलोपैथिक योगरत्नाकर– ,,	१३–००
१३०७	एलोपैथिक निघंटु–अर्थात् एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका–ले० डा० रामनाथ वर्मा परिवर्द्धित चतुर्थसंस्करण	१२–००
१३०८	एलोपैथिक चिकित्सा–सुरेशप्रसाद	१०–००
१३०९	एलोपैथिक पाकेट गाईड–डा० सुरेश	३–००
१३१०	एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका–शिवदयाल	१२–००
१३११	एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा	१–५०
१३१२	एलोपैथिक पेटेन्ट मेडिसिन–अयोध्यानाथ पाठक	३–२५
१३१३	एलोपैथिक पेटेन्ट प्रस्काईबर–रमानाथ	६–०
१३१४	एलोपैथिक मिक्सचर–राजकुमार.	२–००
१३१५	एलोपैथिक सफल औषधियां	३–५०
१३१६	औषधिगुणधर्म विवेचन–कालेडा बोगला का अजिल्द ३ रु० सजिल्द	४–५०
१३१७	औषध गुणधर्म विज्ञान–हरिशरणानन्द	१–००
१३१८	कूपीपक्वरसनिर्माण–हरिशरणानन्द	५–००
१३१९	कफपरीक्षा (कफ की परीक्षा पद्धतियों का वर्णन) डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत	१–२५
१३२०	कब्ज या कोष्ठबद्धता–बालेश्वर सिंह	१–००
१३२१	कब्ज और मलावरोध–महेन्द्रनाथ	०–५०
१३२२	कब्जकोष्ठबद्धता—	०–७५
१३२३	कम्पाउण्डर्ज गाइड–द्वारकाप्रसाद	३–००
१३२४	करिकल्पलता–छन्दोबद्ध,हाथियों की चिकित्सा	३–२५
१३२५	कषाय कल्पना विज्ञान	१–५०
१३२६	कामकला के भेद–चतुरसेन शास्त्री	५–००
१३२७	कामरत्न–नित्यनाथ हिन्दी टीका	५–००
१३२८	कामविज्ञान–जगन्नाथ प्रसाद	१–२५
१३२९	कामसूत्र–वात्स्यायन प्रणीत यशोधरकृत जयमंगला संस्कृत व्याख्या तथा पं० माधवाचार्य कृत मूल तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी	२०–००
१३३०	क्लीनिकल मेडिसिन–एम, बी. बी. एस. तथा उसकी समकक्ष श्रेणियों के छात्रों को पूर्वी और पाश्चात्य निदान और चिकित्सा प्रणाली का सम्यक ज्ञान कराने वाला हिं०भा० में पहला और अद्वितीय ग्रन्थ अत्रिदेव गुप्त द्वारा, दो	

हजार पृष्ठ के लगभग संपूर्ण २ भाग

१३३१ क्वाथमणिमाला—हिन्दी टीका १—५०
१३३२ कालज्ञान—हिं० टी० ०—५०
१३३३ काश्यप संहिता—(बृ०) भा० टी० १६—००
१३३४ कीकर गुणविधान— ०—५०
१३३५ कुचुमारतन्त्र—हिन्दी टीका ०—७५
१३३६ कुमारतन्त्र हिन्दी टीका ०—७५
१३३७ कुल्लियात—हकीम दलजीतसिंह १—२५
१३३८ कूट मुद्गर ०—२५
१३३९ केलिकुतूहल—मूल संस्कृत ले० म. म. पं० मथुरा प्रसाद दीक्षितकृत संस्कृत में २—००
१३४० केवल भोजन द्वारा स्वास्थ्य १—२५
१३४१ कोकसार—वैद्यक नारायण प्रसाद ५—००
१३४२ कौमार नृत्य—रघुवीरशरण ८—००
१३४३ गंगयतिनिदान—सरल हिन्दी में निदान विषय बड़ी सरलता से समझाया है। हर रोग का निदान दिया है जिसे अनजान भी समझ सकता है ६—००
१३४४ गांवों में औषधरत्न—प्रथम २—०० द्वितीय ३—५० तृतीय ४—५०
१३४५ गुणों की पिटारी—परमानन्द २—००
१३४६ गुप्तयोगरत्नावली—डा० गणपति वर्मा २—५०
१३४७ गूलरगुण विकास—(आरोग्यप्रकाश) १—००
१३४८ ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणालीके रोग—श्रीमहेन्द्रनाथहि. १—००
१३४९ ग्राम्य चिकित्सा—श्री केदारनाथ ०—६२
१३५० ग्रामीणों का स्वास्थ्य—केदारनाथ १—००
१३५१ घर का वैद्य—अमोलकचन्द्र शुक्ल ६—००
१३५२ घरेलू चिकित्सा—— १—५०
१३५३ घरेलू डाक्टर—चार डाक्टरों द्वारा ४—००
१३५४ घावचिकित्सा—श्यामसुन्दर हि० १—००
१३५५ घृत गुण विधान—हिन्दी ०—८८
१३५६ चक्रदत्त हिन्दी टीका काशी १०—००
१३५७ चक्रदत्त—भा० टी० बम्बई ७—००
१३५८ चर्याचन्द्रोदय—हिन्दी टीका ४—२५
१३५९ चरक—मूल बंबई ७—००
१३६० चरकसंहिता—चक्रपाणिकृत आयुर्वेददीपिकाबंबई २२—०
१३६१ चरकसंहिता—आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालंकार [illegible] सम्पूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में—इससे बढ़कर सरल हिन्दी अनुवाद आजतक नहीं छपा। ६ संस्करण ३०-००
१३६२ चरकसंहिता—मूल एवं हिंदी, अंग्रेजी और गुजराती में अनुवाद, इतिहास, सामान्य विवरण तथा परिशिष्ट आदि सहित ६ भाग ७५—००
१३६३ चरक संहिता का अनुशीलन २—००
१३६४ चिकित्सा चन्द्रोदय—ले० हरिदास वैद्य सम्पूर्ण चिकित्सा सात भाग ४८—००
१३६५ चिकित्सातत्वप्रदीप—दो भाग १७—००
१३६६ चिकित्साधातुसार—हिन्दी ०—६०
१३६७ चिकित्सांजन—हिन्दी १—१२
१३६८ जन्मनिरोध—सचित्र ६—००
१३६९ जनस्वास्थ्य विज्ञान ४—००
१३७० ज्वरचिकित्सा—श्रीमहेन्द्रनाथ २—७५
१३७१ ज्वरतिमिरनाशक—भाषा टीका १—७५
१३७२ ज्वरमीमांसा—ले० श्रीहरिशरणानन्द १—५०
१३७३ ज्वर-विवेचन अर्थात् ज्वरनिदान चिकित्सा आयुर्वेदीय लाक्षणिक चिकित्सा ग्रन्थ पं० लीलाधर १०—००
१३७४ ज्वरविज्ञान—(हिं०) ३—५०
१३७५ ज्वरचिकित्सा—अयोध्यानाथ २—००
१३७६ जीवतिक्त विमर्श—ले० हरिश्चन्द्र १—२५
१३७७ जुकाम—ले० श्री महेन्द्रनाथ (हिं०) १—७५
१३७८ टोटका विज्ञान—केदारनाथ (हिं०) ०—३७
१३७९ टोटका अमोलकचन्द ०—७५
१३८० डाक्टरी गाइड—कविराज प्रेमनारायण ४—००
१३८१ डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा—(एलोपैथी तथा होमियो) (हिं०) ४—५०
१३८२ डाक्टरी नुस्खे—— २—५०
१३८३ तपेदिक—श्री महेन्द्रनाथ ४—००
१३८४ तापमान—राजकुमार ०—२५
१३८५ तुवर और चालमोग्रा— ०—७५
१३८६ तुलसी चिकित्सा विधान— ०—३६
१३८७ तुलसी विज्ञान—सरल भाषा ०—५०
१३८८ थर्मामीटर—हिन्दी ०—२५
१३८९ दन्तविज्ञान (हिं०) पं० गोपीनाथ ०—३७
१३९० द्रव्यगुणविज्ञान—ले० आचार्य यादवजी विक्रमजी पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव विज्ञानात्मक) ३—५०
१३९१ द्रव्यगुण विज्ञान—प्रियव्रत १८—००
१३९२ द्रव्यगुणशतक—हिन्दी ०—६२
१३९३ दुग्धगुण विधान—हिन्दी १—००
१३९४ दूध से सर्व रोगों के इलाज ०—७५
१३९५ देहाती अनुभूत योग संग्रह—— १३—००
१३९६ देहाती इलाज—श्री रमेशवेदी १—००
१३९७ देहातियों की तन्दुरुस्ती—केदारनाथ ०—७५
१३९८ देहाती प्राकृतिक चिकित्सा अमोलक ५—००
१३९९ नन्दिनी रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा ४—००
१४०० दोष कारणत्व मीमांसा—श्रीप्रियव्रत १—००
१४०१ धतूरागुण विधान— ०—७५
१४०२ धात्री विज्ञान २—५०
१४०३ धातुरोग और इसका इलाज—महेन्द्रनाथ २—००
१४०४ नपुंसकचिकित्सा व यौवन गुप्तरहस्य ३—००
१४०५ नपुंसक चिकित्सा—हिन्दी टीका ०—६०
१४०६ नपुंसकामृतार्णव—हिं० टी० २—००
१४०७ नवपरिभाषा—उपेन्द्रनाथदास १—७५
१४०८ नव्यजन स्वास्थ्यविज्ञान—ले०—डाक्टर मुकुन्द स्वरूप वर्मा। स्वास्थ्य विज्ञान विषय पर नवीनतम तथा अपटूडेट ग्रन्थ। अनेकों चित्र देकर हर विषयको बड़ी सरलता से समझाया है। विद्यार्थियों को तो इस विषय को समझने के लिये अद्वितीय पुस्तक है। ८—००
१४०९ नव्यरोगनिदान माधवनिदान परि० ०—७५
१४१० न्युमोनिया प्रकाश—देवकरण ०—३७
१४११ नाड़ी तत्व दर्शन—नाड़ी विज्ञान की रहस्यपूर्ण प्रामाणिक पुस्तक—ले० श्री सत्यदेववशिष्ठ ५—००
१४१२ नाड़ीदर्पण—भाषाटीका १—००
१४१३ नाड़ीदर्शन—श्रीवैद्य ताराशङ्करजी कृत आधुनिकतम आविष्कारों सहित सचित्र अत्युपयोगी २—५०
१४१४ नाड़ी परीक्षा—हिन्दी टीका ०—३१
१४१५ नाड़ीविज्ञान—(कणादविरचित) हिं० ०—२५
१४१६ नाड़ी ज्ञानतरंगिणी—अनुपानतरंगिणी २—००

१४१७ नाड़ीज्ञानदर्पण—हिन्दी टीका ०—५०

१४१८ निम्बूगुणविधान—गणपतिसिंह ०—७५

१४१९ नित्योपयोगी चूर्ण संग्रह १—२५

१४२० नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह १—२५

१४२१ नीम के उपयोग १—००

१४२२ नीमगुणविधान—अब्दुल्ला ०—९४

१४२३ नीम चिकित्सा ०—६२

१४२४ नेत्ररक्षा—नेत्ररोग चिकित्सा १—००

१४२५ नेत्ररोगविज्ञान—यादवजी हंसराज १५—००

१४२६ नेत्रसुधार—डा० अग्रवाल ४—००

१४२७ नेत्ररोगचिकित्सा ०—७५

१४२८ पंचभूत विज्ञान—उपेन्द्रनाथ दास ३—००

१४२९ पंचसायक—ज्योतीश्वराचार्य १—००

१४३० पंचसायक—हिं० टीका ३—५०

१४३१ पथ्यापथ्य—(विश्वनाथ) हिं० टी० २—००

१४३२ पथ्यापथ्यनिर्णय—हिन्दी टीका खूबचन्द ०—७५

१४३३ परिभाषा प्रबन्ध—जगन्नाथ प्रसाद २—५०

१४३४ परीक्षित प्रयोग—दो भाग २—००

१४३५ पलाण्डुगुणविधान—हिन्दी ०—५०

१४३६ प्लीहा रोगचिकित्सा—ले० ज्ञानचन्द ०—२५

१४३७ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा ०—३१

१४३८ पशुचिकित्सा— ४—००, ३—००

१४३९ पशुचिकित्सा २—००

१४४० पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज ६—००

१४४१ पशुचिकित्सा विज्ञान—डा० राजेन्द्रसिंह १—८७

१४४२ पशु संक्रामक रोग चिकित्सा—डॉ०राजेन्द्रप्रसाद ३—००

१४४३ पशुओं का इलाज— ०—५०

१४४४ पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश १—१२

१४४५ पाकविलास—हिन्दी १—००

१४४६ पाकविज्ञान—ऋषिकुमार ३—००

१४४७ पाचन प्रणाली के रोग—महेन्द्रनाथ २—२५

१४४८ पायोरिया चिकित्सा—दाऊदयाल १—००

१४४९ पाश्चात्य द्रव्यगुण-विज्ञान—मैटेरिया मेडिका श्री राम सुगीलसिंह कृत २ भागों में ४५—००

१४५० पीपल गुणविधान—अब्दुल्ला ०—५०

१४५१ पुरान रोगों की गृह चिकित्सा— ४—००

१४५२ पुरुष रोग चिकित्सा—चन्द्रशेखर ३—५०

१४५३ पेटेन्ट प्रेस्क्राइबर—डा० रमानाथ ६—००

१४५४ पेटेण्ट अदवियात—बंसल ६—००

१४५५ पैसे पैसे के चुटकुले—ले० गणपतिसिंह ३—००

१४५६ प्रत्यक्ष शरीर कोष—श्री सेन गुप्त ८—००

१४५७ प्रति संस्कृतनिदान चिकित्सा—संस्कृत १—००

१४५८ प्रताप कंठाभरण १—५०

१४५९ प्रमेहविवेचन—श्रीमहेन्द्रनाथ हिं० २—००

१४६० प्रसूति विज्ञान—रमानाथ द्विवेदी ९—००

१४६१ प्राकृतिक चिकित्सा—केदारनाथ गुप्त ४—००

१४६२ प्राकृतिकचिकित्सा—हिं० रामनारायण ०—७५

१४६३ प्रारम्भिक उपचार—गणेशदत्त १—००

१४६४ प्रारंभिक उद्भिदशास्त्र (वनस्पति) बलवन्तसिंह ४—५०

१४६५ प्रारम्भिक भौतिकी—निहालकरण ५—५०

१४६६ प्रारम्भिक रसायन—फलदेवसहाय ४—५०

१४६७ फलों से इलाज—गणपतिसिंह २—५०

१४६८ फलों द्वारा चिकित्सा २—००

१४६९ फिटकरी— ०—३७

१४७० फिटकरी गुण विधान—ले० अब्दुल्ला १—५०

१४७१ फेफड़ों की परीक्षा, रोग, चिकित्सा—शिवचरण ५—००

१४७२ बच्चों की रक्षा—लुई कुने हिन्दी ०—३७

१४७३ बच्चों के रोग और उनका इलाज—महेन्द्रनाथ २—००

१४७४ बबूल चिकित्साविधान— ०—३७

१४७५ बबूल गुणविधान—मु० अब्दुल्ला ०—५०

१४७६ बरगद—रमेश बेदी ०—७५

१४७७ बस्तिशालाका प्रवेश ०—३७

१४७८ बायोकेमिक चिकित्सा—सुरेश प्रसाद ४—००

१४७९ बायोकेमिक पाकेट गाइड—डा० सुरेशप्रसाद हिं० १—००

१४८० बालतन्त्र—(कल्याण वैद्य विरचित) २—५०

१४८१ बालरोग चिकित्सा ५—००

१४८२ बालरोग चिकित्सा—पं० महावीर १—००

१४८३ बालरोग चिकित्सा—ऋषीकुमार ०—७५

१४८४ बोपदेव शतक ०—८७

१४८५ बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक २—५०

१४८६ बृहन्निघंटुरत्नाकर हिं० टी० प्रथम भाग ८—५०

१४८७ ,, ,, चतुर्थ भाग ८—००

१४८८ ,, ,, पंचम भाग १६—००

१४८९ ,, ,, छठा भाग १२—००

१४९० ,, ,, ७—८ भाग शालिग्राम निघण्टु भूषण १६—००

१४९१ बृहद्योग तरंगिणी त्रिमल्लभट १६—२५

१४९२ बृहत् रसराज सुन्दर हिन्दी १२—००

१४९३ भस्मविज्ञान—हरिशरनानन्द १०—००

१४९४ भेलसंहिता—मल १०—००

१४९५ भारतीय जड़ी-बूटी डा० गनपतसिंह ५—५०

१४९६ भारतीय रस पद्धति—अत्रिदेव १—५०

१४९७ भारतीय जनता का स्वास्थ्य और आयुर्वेद ०—७५

१४९८ भावप्रकाश—पं० लालचन्दजी कृत अद्वितीय हिंदी टीका, विशेष वक्तव्य तथा यूनानी निघण्टु १६—००

१४९९ भावप्रकाशनिघण्टु—सटिप्पण मूल १—५०

१५०० भावप्रकाशनिघण्टु—आचार्य श्रीविश्वनाथजी द्विवेदी कृत ललितार्थकरी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित परिवर्धित तृतीयावृत्ति ७—००

१५०१ भावप्रकाश—मूलस्थूलाक्षर ८—००

१५०२ भूलोक में अमृत ०—५०

१५०३ भैषज्यकल्पना—ले० श्री अत्रिदेव गुप्त १—७५

१५०४ भैषज्यकल्पना विज्ञान ५—००

१५०५ भैषज्यरत्नावली—अनेक ग्रन्थों के सिद्धहस्त टीकाकार सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को खोलने वाली हिन्दी टीका सहित जितने योग इस में हैं उतने आज तक किसी संस्करण में नहीं छपे। सातवां संस्करण बहुत परिवर्धित होकर ग्लेज कागज पर छपा है १२—००

१५०६ भैषजसार—ले० डा० सुरेशप्रसाद २—००

१५०७ भोजन विधि—रोग और पथ्यापथ्य—केदारनाथ २—००

१५०८ भोजन ही अमृत है—ले० श्री महेन्द्रनाथ १—७५

१५०९ मकरध्वज ०—६२

१५१० मट्ठा उसके गुण तथा उपयोग— १—००

१५११ मट्ठा या छाछ १—००

१५१२ मदनपाल निघंटु—भाषा टीका बंबई ४—००

१५१३ मधु के उपयोग—केदारनाथ १—००

१५१४ मधुगुणविधान—डा० गणपति सिंह १—५०
१५१५ मन्थरज्वरविज्ञान—श्री हरिशरणानंद २—००
१५१६ मर्मविज्ञान—ले० श्रीरामरक्षपाठक ३—५०
१५१७ मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा—एलोपैथिक ३—००
१५१८ मलेरिया—श्री मनमोहन धूप—मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) २—२५
१५१९ मलेरिया और कालाजार चिकित्सा १—७५
१५२० महामारी विवेचन—हिन्दी टीका सहित ०—६०
१५२१ माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट—डा० एम०एल० गुजराल हिन्दी अनुवाद एलोपैथिक चिकित्सा २०—००
१५२२ माधव निदान—सटिप्पण १—५०
१५२३ माधव परिशिष्ट ०—७५
१५२४ माधवनिदान—मधुकोष आतंकदर्पण ७—००
१५२५ माधवनिदान—मधुकोष सं० टीका तथा मधुकोष का हिन्दी अनुवाद सहित पं० दीनानाथ कृतसंपूर्ण तथा प्रश्नपत्र सहित ३ भाग १८—००
१५२६ माधवनिदान—मधुकोष तथा विद्योतनी हिन्दी १५—००
१५२७ माधवनिदान—माधवी हिन्दी टी० २—५०
१५२८ माधवनिदान—पं० लालचन्द हिन्दी ४—५०
१५२९ माधव निदान—मधुकोष मनोरमा हिन्दी ६—००
१५३० माधवनिदान—पं० दत्तराम चौबे ५—००
१५३१ मानवसंतति प्रसूतिशास्त्र—बलवन्त सिंह कृत ०—७५
१५३२ मिक्सचर (एलोपैथिक)—डा० सुरेशप्रसाद २—२५
१५३३ मिर्च—ले० रसवेदी हिन्दी १—००
१५३४ मिट्टी सब रोगों की रामबाण दवा ०—६५
१५३५ मिडवाइफरी बसन्तीरानी ३—५०
१५३६ मीजान तिब्ब—सर्वाङ्ग चिकित्सा ३—५०
१५३७ मेघविनोद—श्रीमेघमुनिप्रणीत—सरल हिन्दी म । हर बीमारी का शर्तिया सरल इलाज — दवाइयां भी वह जो आसानी से बाजार में मिल सकें ६—००
१५३८ यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा २—००
१५३९ यूनानी चिकित्सा विधि—अर्थात् यूनानी का फार्माकोपिया लेखक हकीम मन्साराम । हर रोग के लिये यूनानी इलाज किस प्रकार करना चाहिये उसी का पूरा तरीका दिया है किस हालत में कौन दवाई देनी । शरीर परिचय सहित हिंदी ५—००

१५४० यूनानी चिकित्साविज्ञान—डा० दलजीत सिंह ८—५०
१५४१ यूनानी चिकित्सासागर—लेखक हकीम मन्साराम— इसमें यूनानी के प्रायः सभी आजमाये हुए नुस्खे दिये हैं । जिस रोग पर काम आते हैं वह भी लिखा है । उनके बनाने के तरीके भी लिखे हैं । हर प्रकार के अर्क, शर्बत, माजून, चटनी इत्यादि कोई भी चीज छूटी नहीं अर्थात् यूनानी में जो भी जानने योग्य नुस्खा है इसमें सब दिया है १०—०
१५४२ यूनानीद्रव्य गुणविज्ञान—दलजीतसिंह २२—००
१५४३ यूनानी शब्दकोष—फारसी से हिन्दी ०—३७
१५४४ यूनानीसिद्धयोगसंग्रह—श्री दलजीत सिंह २—५०
१५४५ यूनानी चिकित्सा सार—हकीम दलजीत सिंह ४—५०
१५४६ योग चिकित्सा—अत्रिदेव गुप्त ३—५०
१५४७ योगचिन्तामणि—हिन्दी टीका सहित ४—००
१५४८ योगतरंगिणी (त्रिमल्लभट कृत) ६—००
१५४९ योग रत्नाकर—मूल संस्कृत ६—००
१५५० योगरत्नाकर भा० टी० १८—००
१५५१ योगशतक ०—६०
१५५२ रतिरत्न प्रदीपिका—मूल १—००
१५५३ रतिरहस्य—श्रीकोक्कोक विरचित सं० ३—००
१५५४ रसचिन्तामणि—हिन्दी टीका सहित ३—५०
१५५५ रसतन्त्रसार व सिद्धयोग संग्रह— कालेडा बोगला वालों का प्रथम भाग ९—००
१५५६ „ „ दूसरा भाग ६—००
१५५७ रसतरंगिणी—लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज नरेन्द्रनाथ जी के आदेशानुसार प्राणाचार्य श्री सदानन्द जी विरचित तथा श्री पं० हरिदत्तजी कृत संस्कृत टीका तथा कविराज श्री धर्मानन्दजी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित । पुस्तक कितनी उपयोगी है इसी से सिद्ध है कि यह इसका पांचवां संस्करण सफेद कागज पर छपा है । इसमें केवल अनुभूत प्रयोग ही लिखे हैं सभी जगह पाठ्यग्रन्थ है १०—००
१५५८ रसहृदयतन्त्र—भाषा टीका ५—००
१५५९ रसप्रदीप—हिन्दी टीका सहित ०—५०
१५६० रसरत्नसमुच्चय—मूलसंस्कृत ३—००

१५६१ रसरत्नसमुच्चय—पं० धर्मानंद जी कृत अत्यन्त उपयोगी तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित १०—००
१५६२ रसरत्नाकर—भाषापद्य १—००
१५६३ रसराजमहोदधि—सम्पूर्ण पांचों भाग बंबई ८—००
१५६४ रसादिपरिज्ञान—जगन्नाथ प्रसाद २—००
१५६५ रसाध्याय—संस्कृत टीका सहित ०—६२
१५६६ रसामृत—ले० वै० यादवजी त्रिकमजी आचार्य । आचार्य जी का यह जीवनपर्यन्त का रसशास्त्र सम्बन्धी अनुभव है । हिन्दी टीका सहित । यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्यग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि, रसयोग आदि के ठीक निर्माण में उपयुक्तमार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है । अभी अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५—००
१५६७ रसायनखंड—नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ०—५०
१५६८ रसायनसार—ले० श्यामसुन्दराचार्य ८—००
१५६९ रसार्णव—नाम रसतन्त्र—सटिप्पण २—००
१५७० रसेन्द्रचिन्तामणि—(ढुंढकनाथ) हिन्दी टीका ३—५०
१५७१ रसेन्द्रपुराण—पं० रामप्रसाद कृत ७—००
१५७२ रसेंद्रसारसंग्रह—सटिप्पण १—५०
१५७३ रसेंद्रसार संग्रह भा. टी. रामप्रसाद ६—००
१५७४ रसेन्द्रसारसंग्रह—विस्तृत हिन्दी घनानन्द पन्त ११—००
१५७५ रसेन्द्रसारसंग्रह—रसायनी भाषाटीका ३—००
१५७६ रसेन्द्रसारसंग्रह—रसचन्द्रिका भा० टी० ६—००
१५७७ राजकीय औषध योग संग्रह— ७—००
१५७८ राजनिघंटु—नरहरि कृत संस्कृत टीका ३—१२
१५७९ राजनिघंटु संहिता—धन्वन्तरीयनिघंटु ९—५०
१५८० राजवल्लभनिघंटु—हिन्दी टीका २—५०
१५८१ रामविनोद—भाषा बंबई २—५०
१५८२ राष्ट्रीयचिकित्सा—सिद्धयोगसंग्रह १—५०
१५८३ रिलिजनशिप—ले० डा० श्यामसुन्दर २—००
१५८४ रीठा गुणविज्ञान ०—५०
१५८५ रोगनामावली—कोष वैद्यकीय मान तौल ३—५०
१५८६ रोगी सुश्रुषा—महेन्द्रनाथ २—५०
१५८७ रोगी की सेवा और पथ्य—डा० सुरेश ३—००
१५८८ रोगी परीक्षाविधि—श्री प्रियव्रत ६—००

१५८९ रोगों की अचूक चिकित्सा–जानकीशरण ७–००
१५९० रोगों की सरल चिकित्सा–विट्ठलदास ३–००
१५९१ रोगी मृत्यु विज्ञान–पं० मथुराप्रसाद १–५०
१५९२ लवंगगुण विधान–डा० गणपतिसिंह ०–२५
१५९३ वंगसेन–हिन्दी टीका सहित १८–००
१५९४ वनौषधि चन्द्रोदय–१० भाग ४०–००
१५९५ वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा–घर बैठे डाक्टरी ज्ञान कराने वाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों हकीमों के लिये भी समान उपयोगी। डा० रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति १२–००
१५९६ वसवराजीयम्–पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध भाषा ८–५०
१५९७ वात्स्यायन के योग–केदारनाथ पाठक ०–७५
१५९८ विषचिकित्सादर्पण–हिन्दी ०–५०
१५९९ विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश–हि० टी० १–७५
१६०० विषविज्ञान–अगदतन्त्र १–७५
१६०१ वीरसिंहावलोक–मूलसंस्कृत ३–५०
१६०२ वृन्दमाधव–सिद्धयोग कण्ठदत्तकृत संस्कृत व्या० १०–००
१६०३ वृन्दवैद्यक–(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ७–००
१६०४ वृषकल्पद्रुम अथात् पशुचिकित्सा– ३–३७
१६०५ वैद्यकीय सुभाषितावली–डा० मेहता २–००
१६०६ वैद्यक परिभाषा प्रदीप–भा०टी०बंबई२–००, १–५०
१६०७ वद्यकरसराजमहोदधि–सम्पूर्ण ८–००
१६०८ वैद्यजीवन–(लोलिंबराज) हिंदी टीका १–२५
१६०९ वैद्य जीवन–संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई २–५०
१६१० वैद्यमनोत्सव–हिंदी (नैनसुख) ०–५०
१६११ वैद्यरहस्य–(विद्यापति) हिन्दी टीका ५–००
१६१२ वैद्यवल्लभ–हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका १–००
१६१३ वैद्यविनोदसंहिता–शंकरभट ३–२५
१६१४ वद्यमनोरमा धाराकल्प–हिन्दी टीका १–७५
१६१५ व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान–युगलकिशोर ४–५०
१६१६ व्याधिविज्ञान–डा० आशानन्द। रोगों के ज्ञान के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित प्रथम भाग छठा संस्करण १०–००, दूसरा भाग ९–००
१६१७ शरीर प्रदीपिका–डा० मुकुन्दस्वरूप ५–००
१६१८ शरीरविज्ञान, तात्कालिक चिकित्सा–केदारनाथ १–००
१६१९ शल्य प्रदीपिका–डा० मुकुन्दस्वरूप कृत–सर्जरी अर्थात् शल्य चिकित्सा पर डाक्टर साहिब की यह नवीनतम तथा सविस्तृत पुस्तक है। अनेकों चित्र देकर समझाया गया है। चीर-फाड़ करने के लिए यह अद्वितीय पुस्तक है। शल्य चिकित्सा को समझने के लिए इससे बढ़ कर पुस्तक आज तक नहीं छपी–७५० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य कपड़े की जिल्द सहित केवल १२–५० है।
१६२० शहद के गुण और उपयोग–महेन्द्रनाथ ०–७५
१६२१ शार्ङ्गधर संहितामूल अंजन निदान सहित गुटका २–००
१६२२ शार्ङ्गधर संहिता–दो सं० व्याख्या ८–००
१६२३ शार्ङ्गधर संहिता–रामप्रसाद हिं० टी० ६–००
१६२४ शार्ङ्गधर संहिता–श्यामा हिन्दी टीका ४–००
१६२५ शार्ङ्गधर संहिता–भाषाटीका ६–००
१६२६ शालिहोत्र–संस्कृत भोजविरचित ८–००
१६२७ शालिहोत्र–बड़ा सचित्र बम्बई ५–२५
१६२८ शालाक्यतन्त्र–श्रीरमानाथ द्विवेदी ९–००
१६२९ शालिग्रामौषधि शब्दसागर–आयुर्वेदीय शब्दकोष ४–५०
१६३० शिवनाथसागर हिन्दी–डा० शिवनाथ ७–००
१६३१ शिलाजीत विज्ञान ०–७५
१६३२ शिशुपालन–बलवन्तसिंह १–७५
१६३३ शिशुपालन ०–५०
१६३४ शीतला परिहार २–५०
१६३५ शुभसन्ततियोगप्रकाश–हिन्दी टीका २–५०
१६३६ श्वासरोग चिकित्सा–गोकुलप्रसाद ०–३७
१६३७ संक्रामक पशुरोगचिकित्सा–डा० राजेन्द्रप्रसाद ३–००
१६३८ संक्रामक रोग विज्ञान ६–००
१६३९ संतरा गुणविधान–हिन्दी ०–३७
१६४० सचित्र नेत्र रोग विज्ञान–डा० शिवदयाल ८–००
१६४१ संतानशास्त्र–पं० गणेशदत्त ५–००
१६४२ सन्यासी चिकित्सा शास्त्र–अथवा साधू की चुटकी ५–००
१६४३ सर्पविषविज्ञान १–२५
१६४४ सरलचिकित्सा–गोयल ३–००
१६४५ सरलचिकित्साविज्ञान ३–२५
१६४६ संक्षिप्त औषधपरिचय–हिन्दी ०–५०
१६४७ संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा ३–२५
१६४८ संक्षिप्तशल्यविज्ञान–डा० मुकुन्दस्वरूप हिन्दी ८–००
१६४९ सिद्धपरीक्षा–पद्धति–प्रथमखण्ड कालेडा बोगला ६–००
१६५० सिद्धभैषज्यसंग्रह–युगलकिशोर गुप्त ८–००
१६५१ सिद्धमृत्युञ्जयरोग–५३ सिद्धप्रयोग १–००
१६५२ सिद्धयोगसंग्रह–आचार्य यादव जी त्रिकमजी २–७५
१६५३ सिद्धरसायन–भोरे वैद्यरत्न हिं० ५–००
१७५४ सुश्रुतसंहिता–मूलशस्त्र परिचायक परिशिष्ट १०–००
१६५५ सुश्रुतसंहिता–कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त कृत हिन्दी अनुवाद तथा पं० लालचन्दजी कृत परिवर्द्धित १५–००
१६५६ सुश्रुतसंहिता–(शारीरस्थान) डा० जे०डी०शर्मा कृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्यमत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५–००
१६५७ सुश्रुतसंहिता–केवलशारीरस्थान–डा०घाणेकर १०–००
१६५८ सुश्रुतसंहिता-सूत्रस्थान, डा०घाणेकर १०-००
१६५९ सूचीवेध–राजकुमार १–५०
१६६० सूर्यभेदन व्यायाम ०–७५
१६६१ सूचीवेधविज्ञान-आचार्य श्री रमेशचन्द्र। इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण ७–५०
१६६२ सूर्यरश्मिचिकित्सा (अर्थातसूर्यकिरण चिकित्सा) १-०
१६६३ सूर्य चिकित्सा ०–३७
१६६४ स्टैथस्कोप नाड़ी परीक्षा–जोशी ०–७५
१६६५ स्वास्थ्य शिक्षा–हरनामदास ०–५०
१६६६ स्वप्नदोष और उसकी चिकित्सा १–२५
१६६७ सोंठ–श्री रामेशवेदी हिन्दी १–५०
१६६८ सौश्रुती–रामनाथ द्विवेदी ८–५०
१६६९ सौ रोगों का सरल इलाज १–५०
१६७० स्टैथेस्कोपविज्ञान–डा० श्यामसुन्दर १–००
१६७१ स्वप्नदोषरक्षक–हिन्दी इन्द्र विरचित ०–५०
१६७२ स्वप्नदोषविज्ञान–सरल हिन्दी २–००
१६७३ स्वास्थ्यविज्ञान–अजमेर १–२५
१६७४ स्वर्णक्षीरी गुणविधान–ले० गणपति ०–७५
१६७५ स्वस्थ्यवृत्त समुच्चय-राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका ६-५०
१६७६ स्वास्थ्य और जल चिकित्सा–केदारनाथ २–००

१६७७ स्वास्थ्य और व्यायाम—केदारनाथ २—००
१६७८ स्वास्थ्य और सदवृत्त—ले० श्री अत्रिदेव २—००
१६७९ स्वास्थ्य रक्षा—ले० श्री हरिदास वैद्य ५—००
१६८० स्वास्थ्य विज्ञान—ले० डा० घाणेकर ७—५०
१६८१ स्वास्थ्य संहिता—श्रीनानकचन्द हिं० २—५०
१६८२ स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग—ले० श्री अत्रिदेव गुप्त —युवतियों के जानने योग्य ३—००
१६८३ स्त्रीचिकित्सा—हिन्दी टीका सहित ०—६०
१६८४ स्त्री रोग विज्ञान—डा० रमानाथ ३—००
१६८५ स्त्री रोग चिकित्सा— १—२५
१६८६ हम सौ वर्ष कैसे जीवें !—केदारनाथ २—००
१६८७ हमारा भोजन—ले० श्री महेन्द्रनाथ ४—००
१६८८ हमारे बच्चे—ले० श्री महेन्द्रनाथ १—७५
१६८९ हमारे भोजन की समस्या—रामअवध १—५०
१६९० हमारे भोजन की समस्या—अत्रिदेव १—७५
१६९१ हस्त्ययायुर्वेद—पालकाप्य मुनि विरचित ११—००
१६९२ हारीत्वयादिनिघंटु ६—००
१६९३ हारीत संहिता—हिन्दी टीका ८—५०
१६९४ हिम्मत प्रकाश-संस्कृत टीका सहित ३—००
१६९५ हितोपदेश वैद्यक—श्रीकण्ठकृत हिन्दी ३—००
१६९६ हृदय परीक्षा—डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत, आधुनिक प्रणालियों से हृदय परीक्षा को सरलतम रूप में समझानेवाली, सचित्र उपयोगी पुस्तक स्टेथ-स्कोप का प्रयोग चुटकी बजाते आ जायगा। २—००
१६९७ हैजा चिकित्सा ०—७५
१६९८ होमियोगृह चिकित्सा २—२५
१६९९ होमियो मेटेरिया मेडिका ३—७५
१७०० होमियो इंजक्शन चिकित्सा—ले० डा०सुरेशप्र. १—७५
१७०१ होमियो कम्परेटिव प्रिंस मेटेरिया मेडिका— ९—००
१७०२ होमियो चिकित्सा विज्ञान—बालकृष्ण ३—५०
१७०३ होमियो टाइफाइड चिकित्सा ०—७५
१७०४ होमियो थाइसिस चिकित्सा ०—७५
१७०५ होमियो निमोनिया चिकित्सा ०—७५
१७०६ होमियो पशु चिकित्सा—डा० गंगाधर २—१२
१७०७ होमियो पाकेट गाइड—सुरेन्द्र प्रसाद १—००
१७०८ होमियोपैथिक इंजेक्शन गाइड ५—००
१७०९ होमियोपैथिक नुस्खा—श्यामसुन्दर १—५०
१७१० होमियोपैथिक सारसंग्रह— १—००
१७११ होमियो पारिवारिक चिकित्सा—भट्टाचार्य १०—०
१७१२ क्षारनिर्माण विज्ञान—हरिशरणानन्द ०—७५
१७१३ त्रिदोषतत्त्वविमर्श—रामरक्ष पाठक २—६२
१७१४ त्रिदोषमीमांसा—ले० हरिशरणानन्द २—५०
१७१५ त्रिदोषालोक—विश्वनाथ द्विवेदी २—००
१७१६ त्रिफला—ले० श्री रमेशवेदी ३—२५
१७१७ त्रिशतिवैद्यक—सं० हिं० टीका २—५०

गुण तथा उपयोगी सीरीज—

१७१८	दूध	२—००	१७४२	हल्दी	०—८७
१७१९	आक	२—५०	१७४३	मूली	०—७५
१७२०	फिटकरी	२—५०	१७४४	तरबूज	०—६२
१७२१	नीम	१—२५	१७४५	सन्तरा	०—५०
१७२२	रीठा	०—८७	१७४६	सेब	०—५०
१७२३	धतूरा	१—१२	१७४७	सिरस	१—१२
१७२४	बबूल	०—८७	१७४८	कौडी	०—७५
१७२५	प्याज	०—७५	१७४९	तम्बाकू	१—२५
१७२६	घृत	०—८६	१७५०	कद्दू	०—६२
१७२७	पीपल	०—७५	१७५१	त्रिफला	१—५०
१७२८	अरण्ड	१—२५	१७५२	अनार	०—६२
१७२९	बादाम	०—७५	१७५२	लहसुन	०—६२
१७३०	बरगद	०—८७	१७५३	मधु	२—५०
१७३१	धनिया	०—५०	१७५४	गुलाब-अमो	१—००
१७३२	मेंहदी	०—७५	१७५५	घीगवार	२—५०
१७३३	पियाबांसा	१—२५	१७५६	आम के गुण	१—५०
१७३४	नींबू	०—७५	१७५७	मिर्च	०—६२
१७३५	नमक	०—५०	१७५८	अंगूर	०—७५
१७३६	सत्यानाशी	०—७५	१७५९	तुलसी	२—५०
१७३७	गडूंबा (इंद्रायण)		१७६०	शहतूत	१—५०
१७३८	सौंफ	१—२५	१७६१	मट्ठा (छाछ)	०—७
१७३९	गाजर	०—६२	१७६२	ढाक अमोल	०—७५
१७४०	दही	२—५०	१७६३	कदली—स्वर्णक्षी	-५
१७४१	पलांडु	०—७५			

१५८९ रोगों की अचूक चिकित्सा–जानकीशरण ७–००
१५९० रोगों की सरल चिकित्सा–विट्ठलदास ३–००
१५९१ रोगी मृत्यु विज्ञान–पं० मथुराप्रसाद १–५०
१५९२ लवंगगुण विधान–डा० गणपतिसिंह ०–२५
१५९३ बंगसेन–हिन्दी टीका सहित १८–००
१५९४ वनौषधि चन्द्रोदय–१० भाग ४०–००
१५९५ वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा–घर बैठे डाक्टरी ज्ञान कराने वाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों हकीमों के लिये भी समान उपयोगी। डा० रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति १२–००
१५९६ वसवराजीयम्–पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध भाषा ८–५०
१५९७ वात्स्यायन के योग–केदारनाथ पाठक ०–७५
१५९८ विषचिकित्सादर्पण–हिन्दी ०–५०
१५९९ विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश–हि० टी० १–७५
१६०० विषविज्ञान–अगदतन्त्र १–७५
१६०१ वीरसिंहावलोक–मूलसंस्कृत ३–५०
१६०२ वृन्दमाधव–सिद्धयोग कण्ठदत्तकृत संस्कृत व्या० १०–००
१६०३ वृन्दवैद्यक–(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ७–००
१६०४ वृषकल्पद्रुम अथात् पशुचिकित्सा– ३–३७
१६०५ वैद्यकीय सुभाषितावली–डा० मेहता २–००
१६०६ वैद्यक परिभाषा प्रदीप–भा०टी०बंबई२–००, १–५०
१६०७ वद्यकरसराजमहोदधि–सम्पूर्ण ८–००
१६०८ वैद्यजीवन–(लोलिंबराज) हिंदी टीका १–२५
१६०९ वैद्य जीवन–संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई २–५०
१६१० वैद्यमनोत्सव–हिंदी (नैनसुख) ०–५०
१६११ वैद्यरहस्य–(विद्यापति) हिन्दी टीका ५–००
१६१२ वैद्यवल्लभ–हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका १–००
१६१३ वैद्यविनोदसंहिता–शंकरभट ३–२५
१६१४ वद्यमनोरमा धाराकल्प–हिन्दी टीका १–७५
१६१५ व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान–युगलकिशोर ४–५०
१६१६ व्याधिविज्ञान–डा० आशानन्द। रोगों के ज्ञान के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित प्रथम भाग छठा संस्करण १०–००, दूसरा भाग ९–००
१६१७ शरीर प्रदीपिका–डा० मुकुन्दस्वरूप ५–००
१६१८ शरीरविज्ञान, तात्कालिक चिकित्सा–केदारनाथ १–००
१६१९ शल्य प्रदीपिका–डा० मकुन्दस्वरूप कृत–सर्जरी अर्थात् शल्य चिकित्सा पर डाक्टर साहिब की यह नवीनतम तथा सविस्तृत पुस्तक है। अनेकों चित्र देकर समझाया गया है। चीर-फाड़ करने के लिए यह अद्वितीय पुस्तक है। शल्य चिकित्सा को समझने के लिए इससे बढ़ कर पुस्तक आज तक नहीं छपी–७५० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य कपड़े की जिल्द सहित केवल १२–५० है।
१६२० शहद के गुण और उपयोग–महेन्द्रनाथ ०–७५
१६२१ शार्ङ्गधर संहितामूल अंजन निदान सहित गुटका २–००
१६२२ शार्ङ्गधर संहिता–दो सं० व्याख्या ८–००
१६२३ शार्ङ्गधर संहिता–रामप्रसाद हिं० टी० ६–००
१६२४ शार्ङ्गधर संहिता–श्यामा हिन्दी टीका ४–००
१६२५ शार्ङ्गधर संहिता–भाषाटीका ६–००
१६२६ शालिहोत्र–संस्कृत भोजविरचित ८–००
१६२७ शालिहोत्र–बड़ा सचित्र बम्बई ५–२५
१६२८ शालाक्यतन्त्र–श्रीरमानाथ द्विवेदी ९–००
१६२९ शालिग्रामौषधि शब्दसागर–आयुर्वेदीय शब्दकोष ४–५०
१६३० शिवनाथसागर हिन्दी–डा० शिवनाथ ७–००
१६३१ शिलाजीत विज्ञान ०–७५
१६३२ शिशुपालन–बलवन्तसिंह १–७५
१६३३ शिशुपालन ०–५०
१६३४ शीतला परिहार २–५०
१६३५ शुभसन्ततियोगप्रकाश–हिन्दी टीका २–५०
१६३६ श्वासरोग चिकित्सा–गोकुलप्रसाद ०–३७
१६३७ संक्रामक पशुरोगचिकित्सा–डा० राजेन्द्रप्रसाद ३–००
१६३८ संक्रामक रोग विज्ञान ६–००
१६३९ संतरा गुणविधान–हिन्दी ०–३७
१६४० सचित्र नेत्र रोग विज्ञान–डा० शिवदयाल ८–००
१६४१ संतानशास्त्र–पं० गणेशदत्त ५–००
१६४२ सन्यासी चिकित्सा शास्त्र–अथवा साधू की चुटकी ५–००
१६४३ सर्पविषविज्ञान १–२५
१६४४ सरलचिकित्सा–गोयल ३–००
१६४५ सरलचिकित्साविज्ञान ३–२५
१६४६ संक्षिप्त औषधपरिचय–हिन्दी ०–५०
१६४७ संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा ३–२५
१६४८ संक्षिप्तशल्यविज्ञान–डा० मुकुन्दस्वरूप हिन्दी ८–००
१६४९ सिद्धपरीक्षा–पद्धति–प्रथमखण्ड कालेडा बोगला ६–००
१६५० सिद्धभैषज्यसंग्रह–युगलकिशोर गुप्त ८–००
१६५१ सिद्धमृत्युञ्जयरोग–५३ सिद्धप्रयोग १–००
१६५२ सिद्धयोगसंग्रह–आचार्य यादव जी त्रिकमजी २–७५
१६५३ सिद्धरसायन–भोरे वैद्यरत्न हिं० ५–००
१७५४ सुश्रुतसंहिता–मूलशस्त्र परिचायक परिशिष्ट १०–००
१६५५ सुश्रुतसंहिता–कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त कृत हिन्दी अनुवाद तथा पं० लालचन्दजी कृत परिवर्द्धित १५–००
१६५६ सुश्रुतसंहिता–(शारीरस्थान) डा० जे०डी०शर्मा कृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्यमत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५–००
१६५७ सुश्रुतसंहिता–केवलशारीरस्थान–डा० घाणेकर १०-००
१६५८ सुश्रुतसंहिता-सूत्रस्थान, डा० घाणेकर १०-००
१६५९ सूचीवेध–राजकुमार १–५०
१६६० सूर्यभेदन व्यायाम ०–७५
१६६१ सूचीवेधविज्ञान-आचार्य श्री रमेशचन्द्र। इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण ७–५०
१६६२ सूर्यरश्मिचिकित्सा (अर्थातसूर्यकिरण चिकित्सा) १-०
१६६३ सूर्य चिकित्सा ०–३७
१६६४ स्टैथस्कोप नाड़ी परीक्षा–जोशी ०–७५
१६६५ स्वास्थ्य शिक्षा–हरनामदास ०–५०
१६६६ स्वप्नदोष और उसकी चिकित्सा १–२५
१६६७ सोंठ–श्री रामेशवेदी हिन्दी १–५०
१६६८ सौश्रुती–रामनाथ द्विवेदी ८–५०
१६६९ सौ रोगों का सरल इलाज १–५०
१६७० स्टैथेस्कोपविज्ञान–डा० श्यामसुन्दर १–००
१६७१ स्वप्नदोषरक्षक–हिन्दी इन्द्र विरचित ०–५०
१६७२ स्वप्नदोषविज्ञान–सरल हिन्दी २–००
१६७३ स्वास्थ्यविज्ञान–अजमेर १–२५
१६७४ स्वर्णक्षीरी गुणविधान–ले० गणपति ०–७५
१६७५ स्वस्थवृत्त समुच्चय-राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका ६-५०
१६७६ स्वास्थ्य और जल चिकित्सा–केदारनाथ २–००

 मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, (पो० बा० १५८६), दिल्ली-६

१६७७ स्वास्थ्य और व्यायाम—केदारनाथ २—००
१६७८ स्वास्थ्य और सदवृत्त—ले० श्री अत्रिदेव २—००
१६७९ स्वास्थ्य रक्षा—ले० श्री हरिदास वैद्य ५—००
१६८० स्वास्थ्य विज्ञान—ले० डा० घाणेकर ७—५०
१६८१ स्वास्थ्य संहिता—श्रीनानकचन्द हिं० २—५०
१६८२ स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग—ले० श्री अत्रिदेव गुप्त —युवतियों के जानने योग्य ३—००
१६८३ स्त्रीचिकित्सा—हिन्दी टीका सहित ०—६०
१६८४ स्त्री रोग विज्ञान—डा० रमानाथ ३—००
१६८५ स्त्री रोग चिकित्सा— १—२५
१६८६ हम सौ वर्ष कैसे जीवें !—केदारनाथ २—००
१६८७ हमारा भोजन—ले० श्री महेन्द्रनाथ ४—००
१६८८ हमारे बच्चे—ले० श्री महेन्द्रनाथ १—७५
१६८९ हमारे भोजन की समस्या—रामअवध १—५०
१६९० हमारे भोजन की समस्या—अत्रिदेव १—७५
१६९१ हस्त्यायुर्वेद—पाल्काप्य मुनि विरचित ११—००
१६९२ हारीत्यादिनिघंटु ६—००
१६९३ हारीत संहिता—हिन्दी टीका ८—५०
१६९४ हिकमत प्रकाश—संस्कृत टीका सहित ३—००
१६९५ हितोपदेश वैद्यक—श्रीकण्ठकृत हिन्दी ३—००
१६९६ हृदय परीक्षा—डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत, आधुनिक प्रणालियों से हृदय परीक्षा को सरलतम रूप में समझानेवाली, सचित्र उपयोगी पुस्तक स्टेथ-स्कोप का प्रयोग चुटकी बजाते आ जायगा। २—००
१६९७ हैजा चिकित्सा ०—७५
१६९८ होमियोगृह चिकित्सा २—२५
१६९९ होमियो मेटरिया मेडिका ३—७५
१७०० होमियो इंजक्शन चिकित्सा—ले० डा०सुरेशप्र. १—७५
१७०१ होमियो कम्पेरेटिव प्रिंस मेटेरिया मेडिका— ९—००
१७०२ होमियो चिकित्सा विज्ञान—बालकृष्ण ३—५०
१७०३ होमियो टाइफाइड चिकित्सा ०—७५
१७०४ होमियो थाइसिस चिकित्सा ०—७५
१७०५ होमियो निमोनिया चिकित्सा ०—७५
१७०६ होमियो पशु चिकित्सा—डा० गंगाधर २—१२
१७०७ होमियो पाकेट गाइड—सुरेश प्रसाद १—००
१७०८ होमियोपैथिक इंजेक्शन गाईड ५—००
१७०९ होमियोपैथिक नुस्खा—श्यामसुन्दर १—५०
१७१० होमियोपैथिक सारसंग्रह— १—००
१७११ होमियो पारिवारिक चिकित्सा—भट्टाचार्य १०—०
१७१२ क्षारनिर्माण विज्ञान—हरिशरणानन्द ०—७५
१७१३ त्रिदोषतत्त्वविमर्श—रामरक्ष पाठक २—६२
१७१४ त्रिदोषमीमांसा—ले० हरिशरणानन्द २—५०
१७१५ त्रिदोषालोक—विश्वनाथ द्विवेदी २—००
१७१६ त्रिफला—ले० श्री रमेशवेदी ३—२५
१७१७ त्रिशतिवैद्यक—सं० हिं० टीका २—५०

गुण तथा उपयोगी सीरीज—

१७१८	दूध	२—००	१७४२	हल्दी	०—८७
१७१९	आक	२—५०	१७४३	मूली	०—७५
१७२०	फिटकरी	२—५०	१७४४	तरबूज	०—६२
१७२१	नीम	१—२५	१७४५	सन्तरा	०—५०
१७२२	रीठा	०—८७	१७४६	सेव	०—५०
१७२३	धतूरा	१—१२	१७४७	सिरस	१—१२
१७२४	बबूल	०—८७	१७४८	कौडी	०—७५
१७२५	प्याज	०—७५	१७४९	तम्बाकू	१—२५
१७२६	घृत	०—८६	१७५०	कद्दू	०—६२
१७२७	पीपल	०—७५	१७५१	त्रिफला	१—५०
१७२८	अरण्ड	१—२५	१७५२	अनार	०—६२
१७२९	बादाम	०—७५	१७५२	लहसुन	०—६२
१७३०	बरगद	०—८७	१७५३	मधु	२—५०
१७३१	धनिया	०—५०	१७५४	गुलाब—अमो	१—००
१७३२	मेंहदी	०—७५	१७५५	घीगवार	२—५०
१७३३	पियाबांसा	१—२५	१७५६	आम के गुण	१—५०
१७३४	नीबू	०—७५	१७५७	मिर्च	०—६२
१७३५	नमक	०—५०	१७५८	अंगूर	०—७५
१७३६	सत्यानाशी	०—७५	१७५९	तुलसी	२—५०
१७३७	गडूंबा (इंद्रायण)		१७६०	शहतूत	१—५०
१७३८	सौंफ	१—२५	१७६१	मट्ठा (छाछ)	०—७
१७३९	गाजर	०—६२	१७६२	ढाक अमोल	०—७५
१७४०	दही	२—५०	१७६३	कदली—स्वर्णक्षी	-५
१७४१	प्लांडु	०—७५			

प्यारी बहिनों

अपना बच्चा ! प्यारा बच्चा ! ! एक विवाहित स्त्री के लिये सन्तान कितनी प्रिय वस्तु है ! ! ! परन्तु कितनी ही स्त्रियाँ ऐसी हैं जो कि संतान उत्पत्ति के योग्य हैं किन्तु उनके यहां संतान नहीं। विवाह को कई वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु इस प्रिय वस्तु को तरसती हैं या एक दो बच्चे पैदा होने के पश्चात् फिर बच्चा पैदा नहीं हुआ। निम्नलिखित नुस्खा ऐसी ही बे-औलाद बहिनों के लिये है। यह गर्भ धारण कराने में अत्यन्त सहायक है। इसके सेवन करने से न जाने कितनी ऐसी स्त्रियों के संतान पैदा हुई है जो कि अज्ञानता से अपने आपको बांझ समझे हुई थीं। शक्ति, यौवन तथा स्वास्थ्य की वृद्धि के लिये भी यह दवा बहुत गुणकारी है। निरोग रहने के लिये इसे प्रत्येक स्त्री को सेवन करना चाहिये।

नुस्खा यह है:—कपूर, दूधिया, बच, नागरमोथा, मीठा चिरायता, गिलोय, देवदारू, हल्दी, अतीस, दारू-हल्दी, पीपरामूल, चीते की जड़ की छाल, धनियाँ, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गज पीपर, सोंठ, पीपर, गोल मिर्च, सोना माखी की शुद्ध भस्म, जवाखार, सज्जीखार, सेंधा नोंन, काला नोंन और बिड़नोंन—हरेक ३-३ माशे। निसोथ, दन्ती, तेजपात, दालचीनी, बीज इलायची और बंसलोचन १०-१० माशे। भस्म फौलाद (१०१ आँच की) २० माशे, मिश्री २ तोले, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोले और शुद्ध गुगल ५ तोले। सब दवाओं को कूट पीसकर कपड़े से छान करके ३-३ रत्ती की गोलियाँ बनालें। एक गोली प्रतिदिन दूध के साथ सेवन करें। याद रखिये कि सभी दवायें, विशेषत शिलाजीत और भस्म फौलाद लिखे अनुसार होनी चाहिये। अशुद्ध अथवा बाजारू दवाओं से बजाय लाभ के हानि हो सकती है।

प्रिय पाठको ! आप इसे साधारण दवा मत समझें। यह नुस्खा मेरा स्वयं परीक्षित है और इसे मैंने हजारों बहिनों पर आजमाया है। विवाह के एक वर्ष पश्चात् दुर्भाग्य से मैं भी कई एक विकारों में फँस गई। थी जिनके कारण मैं प्रतिदिन कमजोर होती जा रही थी। चेहरे का रंग पीला पड़ गया था। हर समय सिर चकराता, कमर दर्द करती और बदन टूटता रहता था। प्रायः पेट और नलों में दर्द रहता। मैंने सुपारी पाक, कारडियल राउ कई एक औषधियाँ सेवन कीं, किन्तु अन्त में इस नुस्खे के प्रयोग से न केवल मेरे स्वास्थ्य सम्बन्धी सब विकार ही दूर हो गये बल्कि मेरे यहाँ एक बालक ने भी जन्म लिया। अब मैं इस नुस्खे को अपनी अन्य बहिनों की भलाई के लिए प्रकाशित कर रही हूँ। यदि कोई बहन अज्ञानता या समय अभाव के कारण स्वयं तैयार न कर सकें तो मुझे लिखें मैं उसे इस नुस्खे से निर्मित अपनी दवा "स्त्री कल्याण" वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। मूल्य एक शीशी २ रुपये ८८ नये पैसे। डाक खर्च अलग।

सूचना :—यदि कोई व्यक्ति यह साबित कर दे कि मेरी दवा 'स्त्री कल्याण' उपरोक्त नुस्खे के अनुसार तैयार नहीं होती, तो उसे एक हजार रुपया इनाम।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पञ्जाब)



पांच नये पैसे

आप को अपने स्वास्थ्य की, अपनी शारीरिक अवस्था की या अपनी किसी बीमारी की चिन्ता सता रही है? आपको, आप के परिवार में या आप के किसी सम्बन्धी को कोई ऐसी शिकायत है जिसे आप किसी से कहते शरमाते या झिझकते हैं? कोई ऐसा रोग, समस्या या जटिल बिकार है जिस का आप इलाज कराना चाहते हैं तो आप को चाहिये कि आप एक लिफाफा में या पाँच नये पैसे के एक पोस्ट कार्ड पर ही बीमारी के लक्षण रोगी की उमर और दशा लिख कर हमारे पास भेज दें। हमारे चिकित्सा विभाग से आप को मुफ्त सलाह दी जायेगी कि ऐसी हालत में आप को क्या करना चाहिए, क्या दवाएें लेना ठीक होंगी और क्या पथ्य परहेज करना होगा। पत्र व्यवहार संयत रखने का आश्वासन! इस लिये आप जो कुछ भी हो, साफ साफ लिखें।

हमारे यहाँ स्त्री पुरुषों की अनेक शिकायतों का इलाज, शक्ति व स्वास्थ्य वर्धक नुस्खे, शरीर के प्रत्येक रोग की विश्वसनीय तथा परीक्षित औषधियाँ, बालों के कई प्रकार के तेल, सौन्दर्य वर्धक पदार्थ तथा अन्य रस, रसायन व दवाईयों का निर्माण होता है। स्त्रियों के लिये हमारी औषधि 'स्त्री कल्याण' तो आज सर्वप्रसिद्ध है। केवल इस एक औषधि की वार्षिक बिक्री एक लाख रुपये से ऊपर है। अब आप स्वयं अनुमान लगा लें कि हमारी दूसरी औषधियाँ कितनी लाभप्रद व अनुपम होंगी। इस लिये जो बहिन या भाई बीमारी के लक्षण लिखते समय हमें दवा भेजने के लिये भी कहते हैं उन्हें उचित औषधि उचित दामों में वी-पी पार्सल द्वारा भेज दी जाती है।

दवा मंगवाने तथा मुफ्त परामर्श लेने का पताः—

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पंजाब)

तीसरी पंचवर्षीय योजना (१९६१-६६)

तीसरी पंचवर्षीय योजना, आत्मनिर्भर तथा आत्म-चालित अर्थ-व्यवस्था की दिशा में और अधिक तीव्र विकास की दशाब्दी का प्रथम चरण है। तीसरी योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

१—राष्ट्रीय आय में ५ प्रतिशत से अधिक की वार्षिक वृद्धि करना;

२—खाद्यान्नों के सम्बन्ध में देश को स्वावलम्बी बनाना और कृषि की उपज इतनी बढ़ाना ताकि उससे उद्योग और निर्यात दोनों ही की आवश्यकताएं पूरी हो सकें;

३—इस्पात रासायनिक उद्योग ईंधन और बिजली सरीखे बुनियादी उद्योगों का विस्तार करना और यन्त्र सामग्री बनाने की क्षमता इतनी बढ़ाना ताकि दस वर्षों के अन्दर भावी उद्योगीकरण की समस्त आवश्यकताएं स्वदेशी साधनों से ही पूरी हो सकें;

४—देश की जन-शक्ति का यथासम्भव पूरा-पूरा उपयोग करना और रोजगार के अवसरों में पर्याप्त वृद्धि करना;

५—अवसरों की क्रमशः अधिकाधिक समता प्रदान करना, आय और धन की विषमता में कमी करना और आर्थिक शक्ति का अधिक समान वितरण करना।

मुख्य-मुख्य कार्यों के लिए व्यय वितरण इस प्रकार है :—

क्षेत्र	व्यय (करोड़ रुपयों में)	कुल का प्रतिशत
कृषि और सामुदायिक विकास	१०६८	१४
सिंचाई और बिजली	१६६२	२२
ग्राम्य और लघु उद्योग	२६४	४
उद्योग, खनिज, परिवहन और संचार	३००६	४०
समाज सेवाएं और विविध	१३००	१७
इन्वैण्टरियां	२००	३
योग	७,५००	१००

खाद्यान्नों के उत्पादन में ३२ प्रतिशत वृद्धि होने की सम्भावना है। यानी १९६०-६१ के ७ करोड़ ६० लाख टन से बढ़ कर १९६५-६६ में १० करोड़ टन हो जायेगा। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए २०० लाख एकड़ भूमि में सिंचाई की सुविधाएं बढ़ायी जायेंगी ताकि कुल सिंचित क्षेत्र ९०० लाख एकड़ तक पहुंच जाये। खाद्य उत्पादन बढ़ाने के अन्य उपायों के साथ ही रासायनिक उर्वरकों तथा खादों का अधिकाधिक प्रयोग करने और खेती के नये ढंग अपनाने को प्रोत्साहन दिया जायेगा। ग्रामीण विकास के ढांचे में सेवा सहकारी समितियों को इस तरह गठित किया जायेगा कि वे ग्राम समुदाय की प्रमुख प्राथमिक इकाई के आधार के रूप में काम कर सकें। १९६१-६२ में अनाज की उपज ७९० लाख टन से ८०० लाख टन हो गई। कृषि कार्यक्रम को और भी बढ़ाया जा रहा है।

तीसरी योजना में सम्मिलित प्रमुख औद्योगिक योजनाएं धातुकर्म, औद्योगिक मशीनरी, मशीनी औजार, उर्वरक, बुनियादी रसायन, आवश्यक दवाइयां और पैट्रोलियम शोधन के क्षेत्रों की हैं। तैयार इस्पात का उत्पादन १९६१-६२ में अल्यूमीनियम, औद्योगिक मशीनों, मशीनी औजारों, उर्वरकों तथा सीमेन्ट जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों की संस्थापित क्षमता में काफी वृद्धि हुई है। कुल औद्योगिक उत्पादन ५ प्रतिशत बढ़ा है।

१९६५-६६ में बिजली की संस्थापित क्षमता को १२७ लाख किलोवाट तक बढ़ा दिया जायेगा जबकि दूसरी योजना के अंत तक यह क्षमता ५७ लाख किलोवाट की थी। तीसरी योजना के प्रथम वर्ष में ३,१०० अतिरिक्त गांवों तथा कस्बों को बिजली दी गई।

परिवहन और संचार के विकास के सम्बन्ध में भी काफी महत्वपूर्ण कार्यक्रम तीसरी योजना में शामिल किया गया है। १९६१-६२ में रेलों में ६८ लाख टन अतिरिक्त माल ढोया गया। २९५ रेल-इंजिन, १६१० सवारी डिब्बे और १९,११४ माल-डिब्बे और बने। जहां पहले परस्पर रेल-लाइन सम्बन्ध नहीं था, वहां ७० मील और रेल लाइनें बिछाई गईं और ५ मुख्य पुलों का निर्माण हुआ तथा ३०० मील लम्बे राजपथों को सुधारा गया।

तीसरी योजना के अंतर्गत सभी स्तर की शिक्षण सुविधाएं बढ़ाने का इरादा है। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बात यह होगी कि ६ से ११ वर्ष के आयु समूह के बालकों के लिए मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा तथा बड़े पैमाने पर छात्रवृत्तियां देने की योजना शुरू की जायगी। १९६१-६२ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की संख्या ३४३ लाख से ३७८ लाख तक बढ़ गई।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में तीसरी योजना का उद्देश्य आस-पास के क्षेत्रों की सफाई व्यवस्था को और अधिक व्यवस्थित करना, संचारी रोगों की रोक-थाम, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं, परिवार नियोजन के क्षेत्र में और अधिक काम करना, चिकित्सा औ स्वास्थ्य सम्बन्धी कर्मचारियों को प्रशिक्षण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ जल की व्यवस्था अ कार्यक्रमों को और अधिक बढ़ाना है। १९६१-६२ में डाक्टरों की संख्या ७१,५१ ७४,५००; रोगी शय्याओं की संख्या १,८६,००० से १,९३,००० और न संख्या २७,००० से २९,४१० हो गई।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में जो कार्यक्रम सम्मिलित किये गये हैं, आश उनसे १४० लाख अधिक रोजगार उपलब्ध हो सकेंगे। प्रथम वर्ष में लगभग नये रोजगार दिये गये।



पांच नये पैसे

आप को अपने स्वास्थ्य की, अपनी शारीरिक अवस्था की या अपनी किसी बीमारी की चिन्ता सता रही है? आपको, आप के परिवार में या आप के किसी सम्बन्धी को कोई ऐसी शिकायत है जिसे आप किसी से कहते शरमाते या झिझकते हैं? कोई ऐसा रोग, समस्या या जटिल विकार है जिस का आप इलाज कराना चाहते हैं तो आप को चाहिये कि आप एक लिफाफा में या पाँच नये पैसे के एक पोस्ट कार्ड पर ही बीमारी के लक्षण रोगी की उमर और दशा लिख कर हमारे पास भेज दें। हमारे चिकित्सा विभाग से आप को मुफ्त सलाह दी जायेगी कि ऐसी हालत में आप को क्या करना चाहिए, क्या दवाएं लेना ठीक होंगी और क्या पथ्य परहेज करना होगा। पत्र व्यवहार संयत रखने का आश्वासन! इस लिये आप जो कुछ भी हो, साफ साफ लिखें।

हमारे यहाँ स्त्री पुरुषों की अनेक शिकायतों का इलाज, शक्ति व स्वास्थ्य वर्धक नुस्खे, शरीर के प्रत्येक रोग की विश्वसनीय तथा परीक्षित औषधियाँ, बालों के कई प्रकार के तेल, सौन्दर्य वर्धक पदार्थ तथा अन्य रस, रसायन व दवाईयों का निर्माण होता है। स्त्रियों के लिये हमारी औषधि 'स्त्री कल्याण' तो आज सर्वप्रसिद्ध है। केवल इस एक औषधि की वार्षिक बिक्री एक लाख रुपये से ऊपर है। अब आप स्वयं अनुमान लगा लें कि हमारी दूसरी औषधियाँ कितनी लाभप्रद व अनुपम होंगी। इस लिये जो बहिन या भाई बीमारी के लक्षण लिखते समय हमें दवा भेजने के लिये भी कहते हैं उन्हें उचित औषधि उचित दामों में वी-पी पार्सल द्वारा भेज दी जाती है।

दवा मंगवाने तथा मुफ्त परामर्श लेने का पता:—

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पंजाब)

तीसरी पंचवर्षीय योजना (१९६१-६६)

तीसरी पंचवर्षीय योजना, आत्मनिर्भर तथा आत्म-चालित अर्थ-व्यवस्था की दिशा में और अधिक तीव्र विकास की दशाब्दी का प्रथम चरण है। तीसरी योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

१—राष्ट्रीय आय में ५ प्रतिशत से अधिक की वार्षिक वृद्धि करना;

२—खाद्यान्नों के सम्बन्ध में देश को स्वावलम्बी बनाना और कृषि की उपज इतनी बढ़ाना ताकि उससे उद्योग और निर्यात दोनों ही की आवश्यकताएं पूरी हो सकें;

३—इस्पात रासायनिक उद्योग ईंधन और बिजली सरीखे बुनियादी उद्योगों का विस्तार करना और यन्त्र सामग्री बनाने की क्षमता इतनी बढ़ाना ताकि दस वर्षों के अन्दर भावी उद्योगीकरण की समस्त आवश्यकताएं स्वदेशी साधनों से ही पूरी हो सकें;

४—देश की जन-शक्ति का यथासम्भव पूरा-पूरा उपयोग करना और रोजगार के अवसरों में पर्याप्त वृद्धि करना;

५—अवसरों की क्रमशः अधिकाधिक समता प्रदान करना, आय और धन की विषमता में कमी करना और आर्थिक शक्ति का अधिक समान वितरण करना।

मुख्य-मुख्य कार्यों के लिए व्यय वितरण इस प्रकार है :—

क्षेत्र	व्यय (करोड़ रुपयों में)	कुल का प्रतिशत
कृषि और सामुदायिक विकास	१०६८	१४
सिंचाई और बिजली	१६६२	२२
ग्राम्य और लघु उद्योग	२६४	४
उद्योग, खनिज, परिवहन और संचार	३००६	४०
समाज सेवाएं और विविध	१३००	१७
इन्वेंण्टरियां	२००	३
योग	७,५००	१००

खाद्यान्नों के उत्पादन में ३२ प्रतिशत वृद्धि होने की सम्भावना है। यानी १९६०-६१ के ७ करोड़ ६० लाख टन से बढ़ कर १९६५-६६ में १० करोड़ टन हो जायेगा। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए २०० लाख एकड़ भूमि में सिंचाई की सुविधाएं बढ़ायी जायेंगी ताकि कुल सिंचित क्षेत्र ९०० लाख एकड़ तक पहुंच जाये। खाद्य उत्पादन बढ़ाने के अन्य उपायों के साथ ही रासायनिक उर्वरकों तथा खादों का अधिकाधिक प्रयोग करने और खेती के नये ढंग अपनाने को प्रोत्साहन दिया जायेगा। ग्रामीण विकास के ढांचे में सेवा सहकारी समितियों को इस तरह गठित किया जायेगा कि वे ग्राम समुदाय की प्रमुख प्राथमिक इकाई के आधार के रूप में काम कर सकें। १९६१-६२ में अनाज की उपज ७९० लाख टन से ८०० लाख टन हो गई। कृषि कार्यक्रम को और भी बढ़ाया जा रहा है।

तीसरी योजना में सम्मिलित प्रमुख औद्योगिक योजनाएं धातुकर्म, औद्योगिक मशीनरी, मशीनी औजार, उर्वरक, बुनियादी रसायन, आवश्यक दवाइयां और पैट्रोलियम शोधन के क्षेत्रों की हैं। तैयार इस्पात का उत्पादन १९६१-६२ में अल्यूमीनियम, औद्योगिक मशीनों, मशीनी औजारों, उर्वरकों तथा सीमेन्ट जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों की संस्थापित क्षमता में काफी वृद्धि हुई है। कुल औद्योगिक उत्पादन ५ प्रतिशत बढ़ा है।

१९६५-६६ में बिजली की संस्थापित क्षमता को १२७ लाख किलोवाट तक बढ़ा दिया जायेगा जबकि दूसरी योजना के अंत तक यह क्षमता ५७ लाख किलोवाट की थी। तीसरी योजना के प्रथम वर्ष में ३,१०० अतिरिक्त गांवों तथा कस्बों को बिजली दी गई।

परिवहन और संचार के विकास के सम्बन्ध में भी काफी महत्वपूर्ण कार्यक्रम तीसरी योजना में शामिल किया गया है। १९६१-६२ में रेलों में ६८ लाख टन अतिरिक्त माल ढोया गया। २९५ रेल-इंजिन, १६१० सवारी डिब्बे और १९,११४ माल-डिब्बे और बने। जहां पहले परस्पर रेल-लाइन सम्बन्ध नहीं था, वहां ७० मील और रेल लाइनें बिछाई गईं और ५ मुख्य पुलों का निर्माण हुआ तथा ३०० मील लम्बे राजपथों को सुधारा गया।

तीसरी योजना के अंतर्गत सभी स्तर की शिक्षण सुविधाएँ बढ़ाने का इरादा है। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बात यह होगी कि ६ से ११ वर्ष के आयु समूह के बालकों के लिए मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा तथा बड़े पैमाने पर छात्रवृत्तियां देने की योजना शुरू की जायगी। १९६१-६२ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की संख्या ३४३ लाख से ३७८ लाख तक बढ़ गई।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में तीसरी योजना का उद्देश्य आस-पास के क्षेत्रों की सफाई व्यवस्था को और अधिक व्यवस्थित करना, संचारी रोगों की रोक-थाम, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं, परिवार नियोजन के क्षेत्र में और अधिक काम करना, चिकित्सा औ[र] स्वास्थ्य सम्बन्धी कर्मचारियों को प्रशिक्षण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ जल की व्यवस्था अ[...] कार्यक्रमों को और अधिक बढ़ाना है। १९६१-६२ में डाक्टरों की संख्या ७१,५१[...] ७४,५००; रोगी शय्यायों की संख्या १,८६,००० से १,९३,००० और न[...] संख्या २७,००० से २९,४१० हो गई।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में जो कार्यक्रम सम्मिलित किये गये हैं, आश[ा] उनसे १४० लाख अधिक रोजगार उपलब्ध हो सकेंगे। प्रथम वर्ष में लगभग [...] नये रोजगार दिये गये।

योजना के लिए बचतें

हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत जो देश में विभिन्न परियोजनाएं और कार्य चल रहे हैं उन्हें पूरा करने के लिए बहुत बड़ी रकम की जरूरत है। इसके लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र अधिक से अधिक बचत करे। अल्प-बचत योजना, छोटी-बड़ी सभी प्रकार की रकमों को लाभदायक और आकर्षक मदों में लगाने का सर्वश्रेष्ठ अवसर प्रदान करती है। इससे होनेवाली आय पर आयकर नहीं लगता।

१२ वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत पत्र

ये बचत पत्र ५, १०, ५०, १००, ५००, १,०००, ५,००० और २५,००० रुपये के मिलते हैं। खरीदने के १२ वर्ष बाद पकने पर इनका मूल्य क्रमशः ८.२५, १६.५०, ८२.५०, १६५, ८२५, १,६५०, ८,२५०, और ४१,२५० रुपये हो जाता है।

१०-वर्षीय राजकोष बचत जमा पत्र (ट्रेजरी सेविंग्स डिपाजिट सर्टिफिकेट)

इन बचत-पत्रों पर ४ प्रतिशत प्रति वर्ष ब्याज मिलता है तथा ये एक व्यक्ति द्वारा ५० रु० अथवा ५० रु० की गुणक राशि के २५,००० रुपये तक खरीदे जा सकते हैं।

बढ़नेवाली सावधिक जमा योजना

इसमें यदि आप ५, १०, २०, ५०, १००, २०० या ३०० रुपये मासिक किसी डाकघर में जमा करवाते रहें तो ५, १० या १५ वर्ष की निश्चित अवधि पूरी होने के बाद आपको आकर्षक ब्याज सहित रकम वापस मिल जाती है। जीवन बीमा प्रीमीयम तथा प्रावीडेण्ट फण्ड में जमा रकम की तरह ही १० और १५ वर्षीय खातों में जमा रकम पर आयकर सम्बन्धी छूट मिलती है। इसके साथ ही १० और १५ वर्षीय खातों में जमा रकम पर प्रति वर्ष क्रमशः ३.८ प्रतिशत और ४.३ प्रतिशत चक्रवृद्धि ब्याज भी दिया जाता है।

डाकघर बचत बैंक खाता

१ अगस्त, १९६२ से डाकघर बचत बैंक के सभी खातों पर ब्याज दर में ½ प्रतिशत वृद्धि कर दी गई है। एक व्यक्ति के खाते में १०,००० रुपये (संयुक्त खाते में २०,००० रु०) तक के शेष पर २॥ प्रतिशत के स्थान पर अब ३ प्रतिशत ब्याज दिया जाता है। १०,००० रुपये से अधिक और १५,००० रुपये (संयुक्त खाते में ३०,००० रुपये) तक के शेष पर २ प्रतिशत के स्थान पर अब

नाप-तोल की मेट्रिक प्रणाली

जम्मू कश्मीर राज्य को छोड़ कर सारे देश में नाप-तौल के मेट्रिक बाटों का प्रयोग १ अप्रैल, १९६२ से अनिवार्य हो गया है। जम्मू-कश्मीर में भी यह कार्यक्रम अप्रैल, १९६३ से लागू हो जाएगा। सारे देश में नाप-तौल की एक समान और प्रतिमाणित प्रणाली लागू करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण चरण है। ऐसी प्रणाली सरल होने के साथ-साथ सब जगह समान होगी।

लम्बाई नापने के मेट्रिक पैमानों का प्रयोग भी अक्तूबर, १९६२ से अनिवार्य हो गया है। कुछ चुने हुए क्षेत्रों में तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमानों का प्रयोग अप्रैल, १९६१ से लागू किया गया था, यह अप्रैल, १९६३ से अनिवार्य हो जायेगा। इस प्रकार दिन-प्रति-दिन के सभी लेन-देन में मेट्रिक प्रणाली ला करने का कार्य पूरा हो जायेगा।

सभी संगठित उद्योगों, व्यापारों तथा रेलवे, डाक-तार, बंदरगाह, केन्द्रीय उत्पादन कर विभाग, सीमा शुल्क आदि जैसे सरकारी संस्थानों ने अपना सारा कार्य मेट्रिक-प्रणाली में करना शुरू कर दिया है।

मेट्रिक-प्रणाली का पूरा पूरा लाभ उठाने के लिए यह जरूरी है कि लोग अपने लेन-देन मेट्रिक इकाइयों में करें। खरीदारी के समय लोगों को चीजें पूर्ण मेट्रिक इकाइयों में (जिसे १ किलोग्राम, ५०० ग्राम, २०० ग्राम—१ लिटर, ५०० मिलिलिटर, २०० मिलिलिटर आदि) खरीदनी चाहिएं: पुराने तौल के बराबर के मेट्रिक तौल में नहीं। यदि पूर्ण मेट्रिक इकाइयों में ही चीजें खरीदी जाएं तो सिक्कों की दाशमिक प्रणाली के कारण कीमतों का हिसाब लगाने में बहुत आसानी होगी। इससे काम—काज सुविधा व शीघ्रतापूर्वक होगा।